Vol.-13 Issue-52 July.-Sep., 2025

CHHAVI

National Journal of Higher Education

ISSN :- 2319-9679
PEER REVIEWED

October 2025

SERIC
BIKANER

Prof. (Dr.) Rajendra Kumar Shrimali

Editor in Chief
09414742973, 09413471252

Published by :-
Shubham Education, Research & Information Centre
B/H KARNI MATA TEMPLE, O/S JASSUSAR GATE, BIKANER-334004, RAJ
E-mail : shrimalidrrajendra@gmail.com Website : www.chhavinjhe.in

CHHAVI National Journal of Higher Education (ISSN : 2319-9679) PEER REVIEWED

OUR REVIEWER BOARD

DR. RANJEET KHINCHI
Educationist, Hindoli, District-Bundi

Sh. P.D. YADAV
Educationist, Neem Ka Thana, Sikar

DR. SANJAY KUMAR VERMA
Educationist, Haryana

DR. ASHOK K. GODARA
Educationist, Jhunjhunu

DR. YOGESHWAR S. YADAV
Educationist, Kotputli-Behror

DR. SUMAN SHARMA
Educationist, Malsisar, Jhunjhunu

AD. ARUN KUMAR
Educationist, Behror

DR. MITHILESH K. SHRIVASTAV
Educationist, Ajmer

राजस्थान सरकार के पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमान भंवरसिंह भाटी छवि पत्रिका के वेबसाईट का लोकार्पण व त्रैमासिक अंक का विमोचन करते हुए

शुभम एज्युकेशन, रिसर्च एवं इन्फोरमेशन सेन्टर के तत्वावधान में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां

महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय परिसर, बीकानेर

एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

शि.सं.उ. न्यास, नई दिल्ली से डॉ. अतुल कोठारी

केन्द्रीय कानून मंत्री श्री अर्जुनरामजी मेघवाल

पूर्व शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला

DISCLAIMER

The accountability of the research matter articulated in this journal is entirely of the author(s) concerned. The view expressed in the research papers/articles in this journal does not essentially correspond to the views of the publisher/editor, The publisher/editor of the journal is not liable for errors or any consequence arising from the exercise of information contained in it.

-Chief Editor

हमारे सदस्यगण

CHHAVI National Journal of Higher Education

ISSN :- 2319-9679
Published by
International Education & Research Centre, Bikaner

1. डॉ. आशु सिंह, आई.एफ.एस., बीकानेर
2. श्री पी.डी. यादव, नीम का थाना, सीकर
2. डॉ. कमलाकान्त यादव, वाराणसी
3. डॉ. रूपा यादव, हरियाणा
4. डॉ. नमामीशंकर आचार्य, बीकानेर
5. डॉ. उषा गोदारा, हनुमानगढ़
7. डॉ. मोहन सिंह शेखावत, झुन्झुनूं
8. डॉ. नरेन्द्र सिंह शेखावत, सीकर
9. श्री रवि बिजारणिया, सीकर
10. श्री जगवीर सिंह खंगारोत, पाली
11. डॉ. श्रीराम, हनुमानगढ़
12. डॉ. अनुराधा बिस्सु, हनुमानगढ़
13. डॉ. (श्रीमती) सुखपाल कौर, बीकानेर
14. डॉ. गुरमीत सिंह, हनुमानगढ़
15. डॉ. प्रहलाद सोनी, राजसमंद
16. डॉ. श्रवण कुमार शर्मा, चूरू
17. डॉ. संजय शर्मा, बिसाऊ, झुन्झुनूं
18. डॉ. निहालचन्द, घड़साना
19. डॉ. रेणु शर्मा, बीकानेर
20. डॉ. जयश्री शर्मा, बीकानेर
21. डॉ. सुनील कुमार शर्मा, जयपुर
22. डॉ. गणेश शर्मा, अनूपगढ़, श्रीगंगानगर
23. डॉ. (श्रीमती) विद्यावती, चूरू
24. डॉ. बी.एल. सैनी, श्रीमाधोपुर, सीकर
25. श्री औंकार सिंह राठौड़, नागौर
26. डॉ. मोहम्मद उस्मानी, जोधपुर
27. डॉ. सुनीता डूडी, श्रीगंगानगर
28. डॉ. प्रवीण कुमार जैन, प्रतापगढ़
29. डॉ. संजू श्रीमाली, बीकानेर
30. डॉ. कृष्णा आचार्य, बीकानेर
31. डॉ. ओम प्रकाश मेहराडा, अनूपगढ़
32. डॉ. नवनीत सिंह भदौरिया, बीकानेर
33. डॉ. प्रेम कंवर चारण, रतनगढ़
34. डॉ. प्रकाश चान्दावत, अजमेर
35. डॉ. ललित श्रीमाली, उदयपुर
36. डॉ. अरूण शर्मा, बाँसवाड़ा
37. डॉ. गिरीराज भोजक, लाडनूं
38. डॉ. विभा पारीक, जयपुर–बीकानेर
39. डॉ. अंजली पारीक, जयपुर
40. डॉ. मनोज झाझड़िया, झुझुंनू
41. डॉ. प्रभुसिंह सारण, सरदारशहर
42. डॉ. पूजा बागड़ी, अजमेर
43. डॉ. राजेश बाबू, जोधपुर
44. डॉ. विजय कुमार, संगरिया, हनुमानगढ़
45. डॉ. सुमन जोशी, बीकानेर
46. डॉ. सरोज अरोड़ा खत्री, बीकानेर
47. डॉ. बृजरतन जोशी, बीकानेर
48. डॉ. आर.पी. सैनी, जयपुर
49. डॉ. सरोज चौधरी, सरदारशहर
50. डॉ. नरेन्द्र श्रीमाली, बीकानेर

CONTENTS

S. No.	AUTHOR(S) NAME AND TITLE	PAGE NO.
1.	विज्ञान एवं कला संकाय के महाविद्यालयी शिक्षकों में अंधश्विास की भावना का अध्ययन – आरती कुमार गौतम, डॉ. श्याम मनोहर गौतम	1–4
2.	वेदों, पुराणों, संहिताओं, धर्म सूत्रों, उपनिषदों, ब्रह्मण ग्रंथों, स्मृतियों, रामायण, महाभारत एवं यज्ञों में पर्यावरण का महत्त्व – डॉ. महेश आमेटा	5–10
3.	किशोर विद्यार्थियों के विकास में सोशल मीडिया की भूमिका एवं चुनौतियां – विभा कुमारी, प्रो. सपना जोशी	11–15
4.	नारी शक्ति : समाज और राष्ट्र की प्रगति की दुरी – डॉ. रंजना गुप्ता	16–17
5.	जिला स्तरीय वालीबॉल खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर रणनीति निर्माण का प्रभाव – नलिनी दशोरा, ओम सिंह राठौड़	18–21
6.	**Personal Values and Their Influence on Professional Ethics of Senior Secondary School Teachers - Anjula Swami, Dr. Rajender Kumar Godara**	22–23
7.	जीवन में सामाजिक बुद्धिमता का महत्व – शैली शर्मा, डॉ. वंदना जैन	24–28
8.	माध्यमिक शिक्षा के विद्यालयों के अध्यापकों की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) पद्धति के प्रति जागरूकता का अध्ययन – डॉ. गोपाल प्रसाद पाठक	29–36
9.	मोबाइल आनलाइन गेम की आदत का महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव – **Safeena Azeez**	37–38
10	भारत में वर्ण–व्यवस्था : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और समकालीन प्रभाव – डॉ. महेन्द्र कुमार	39–44
11	हिंदी साहित्य में नारी का योगदान – ईशा मीना	45–46
12	सेना व सुरक्षा के क्षेत्र में नारी शक्ति का पूर्ण योगदान – नीशू दुबे	47–48
13.	**The Effect of Hath Yoga Training on Endurance and Flexibility of Cricket Player- Ojash Sharma, Prof. B.S. Chouhan**	49–50

CONTENTS

S. No.	AUTHOR(S) NAME AND TITLE	PAGE NO.
14.	बी.एड. पाठ्यक्रम में इन्टर्नशिप का कार्यक्रम की वस्तु–स्थिति, एवं प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षकों का तुलनात्मक अध्ययन – सन्तोष यादव, डॉ. विभा देवपुरा	51–53
15.	माध्यमिक स्तर पर शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त करने में विद्यालय एवं पारिवारिक वातावरण की भूमिका का अध्ययन (राजकीय महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यमिक विद्यालयों के सदंर्भ में) – मनीष कुमार शर्मा, डॉ. महेश कुमार शर्मा	54–56
16.	छात्राध्यापकों में शिक्षण के प्रति अभिवृति तथा मूल्यों को प्राप्त करने में शिक्षण प्रशिक्षण की भूमिका का अध्ययन करना – नम्रता शर्मा, डॉ. महेश कुमार शर्मा	57–58
17.	भौतिक विज्ञान शिक्षण में सम्प्रत्यय मानचित्रण विधि की प्रभावशीलता का विश्लेषण – सीमा तिवारी, डॉ. रचना राठौड़	59–65
18.	संस्कृत विषय में कक्षा नवीं के अध्येताओं की शैक्षिक उपलब्धि पर बहूमाध्य अनुदेशनात्मक विधियों की प्रभावशीलता का अध्ययन – इला पारीक, डॉ. महेश कुमार शर्मा	66–68
19.	शिक्षक शिक्षा में ऑनलाइन गैजेट्स के उपयोग की वस्तुस्थिति, अभिधारकों का अभिमत एवं भावी संभावनाओं का अध्ययन – डॉ. आदेश भटनागर, शान्ता मेघवाल	69–70
20.	उदयपुर सम्भाग में ''पी.एम.श्री स्कूलों'' के प्रति विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन – लकी व्यास, डॉ. हरीश चन्द्र चौबसा	71–78
21.	**M.C. Mehta and Making of India's Green Jurisprudence : A Journey Through Landmark Environmental Rulings - Adv. Sucheta Jain, Dr. Vikram Kumar**	79–87
22.	भारतीय शिक्षा में आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयाम : पंडित मदन मोहन मालवीय के दृष्टिकोण एवं नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में – विनोद कुमार पाण्डेय, डॉ. कमला दीक्षित, डॉ. महेन्द्र कुमार उपाध्याय	88–93

CONTENTS

S. No.	AUTHOR(S) NAME AND TITLE	PAGE NO.
23	**Assessing and Advancing Cybersecurity Posture and Maturity in Higher Education Institutions - Dr. Krishna Kumar Bohra**	94—99
24.	बी.एड. के महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं और उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन – धर्मेन्द्र गहलोत प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली	100—105
25	दसवीं कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की योग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन – मोहनलाल, प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली	106—109
26	संदीप जोशी कृत शिक्षा में नवाचार (नई शिक्षा नीति 2020 में समाहित भारतीय संस्कृति, शिक्षा एवं सभ्यता के संदर्भ में) –जहीर खान, प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली	110—113
27	उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा एवं व्यवसायिक आकांक्षा के संदर्भ में अध्ययन – भगवान सिंह राठौड़, प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली	114—118
28	डॉ. जाकिर हुसैन के शैक्षिक दर्शन का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन – घेवाराम, प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली	119—120
29	डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास – जीवन और कृतित्व का समालोचन – हरप्रीत सिंह कौर, डॉ. नारायण सिंह राव	121—123
30	किशोर विद्यार्थियों में व्याप्त शक्ति एवं आत्मविश्वास के भाव से खतरे, चुनौतियां, कमजोरियां एवं जोखिम उठाने की क्षमता का अध्ययन – गोरधन राम, प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली	124—127
31	शिक्षा का दार्शनिक दृष्टिकोण एवं भारतीय दर्शन में ईश्वर की अवधारणा – अम्बालाल जेदिया, प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली	128—130
32	बी.एड. छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण और मूल्यों का अध्ययन – वैष्णव शशिबाला, प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली	131—133
33	विभिन्न स्तर की अध्ययन आदतें वाले विद्यार्थियों की करियर–अनुकूलशीलता का अध्ययन – कमलेश वैष्णव, डॉ. प्रमिला पूर्बिया	134—141

CONTENTS

S. No.	AUTHOR(S) NAME AND TITLE	PAGE NO.
34	**A Comparative study on online and offline business models in modern era- Dr. Madhuri Soni**	**142–145**
35	**Revisiting India Aesthetics Through Indian Literatures in English - Kishan Suthar**	**146–148**
36	**A Correlational study of Scientific Aptitude and Academic Achievement among senior secondary boys and girls after virtual Chemistry teaching- Dr. Reetu Gupta**	**149–151**
37	विभिन्न संकाय के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन – जल सिंह, डॉ. पंकज शर्मा	**152–156**
38	**Analysis of Loopholes in Indian Labour Laws and Their Impact on Workers (2019-2014) : A Comprehensive Study - Dr. Meenu Bhati**	**157–161**
39	हिन्दी साहित्य में नामवर सिंह की आलोचना दृष्टि– राजेश कुमार	**162–166**

विज्ञान एवं कला संकाय के महाविद्यालयी शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना का अध्ययन।

डॉ. श्याम मनोहर गौतम
अस्सिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षा संकाय
जवाहर लाल नेहरु टी टी कॉलेज,
कोटा, राजस्थान

आरती कुमारी गौतम
शोधार्थी
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा
राजस्थान

प्रस्तावना–

प्रश्न उठता है कि अंधविश्वास क्या है ? इसे किन तत्वों से मदद मिलती है ? इससे किस तरह का समाज निर्मित होता है? किस तरह के कला रुप जन्म लेते है ? और इसका विकल्प क्या है ? ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखे तो पायेंगे कि अंधविश्वास की धारणा का बुनियादी सारतत्व एक जैसे रहा है। मिश्र, यूनान और भारत में अंधविश्वासों की शुरुआत तकरीबन एक ही तरह से हुई है। अंधविश्वास की बुनियादी विशेषता है अंधानुकरण, वैज्ञानिक विवेक का त्याग और स्वतंत्र चिंतन का विरोध। कौटिल्य का अंधविश्वास में विश्वास नहीं था किंतु उन्होंने राज्य के कौशल के तौर पर अर्थशास्त्र में अंधविश्वास की चर्चा की है। उनका न तो राजा के दैवी अधिकार और उसकी सर्वज्ञता की सच्चाई में विश्वास था और न वे यह चाहते थे कि स्वयं शासक इस तरह की बात को सच मानें। वे सुझाव देते है कि राज्य को अपनी आंतरिक और बाह्य स्थितियों को सुदृढ करने के लिए सामान्य लोगों की अंधमान्यताओं का लाभ उठाना चाहिए।

अन्धविश्वास का शाब्दिक अर्थ है– अन्धा विश्वास। जब कोई व्यक्ति या समाज किसी तर्कहीन, अर्थहीन, अनर्गल चमत्कारी बातों पर विश्वास करने लगता है तो उस विश्वास को अन्धविश्वास अथवा अंधश्रद्धा कहते हैं । भारतीय समाज में अंधविश्वास युग–युगान्तर प्राचीन समय से फैला हुआ है। समाज के कुछ व्यक्ति कुछ तिथि जैसे पड़वा, चौथ, अमावस्या, कुछ विशेष दिन जैसे शनिवार, मंगलवार, कुछ विशेष रंग जैसे नीला ,काला, सफेद आदि को अशुभ मानते हैं। यही अन्धश्रद्धा भय को जन्म देती है और यह भय विभिन्न प्रकार की मानसिक बीमारी, रोजगार हानि , आर्थिक हानि आदि को जन्म देती है।

प्राचीन समय में व्यक्तियों को प्राकृतिक घटनाओं के घटित होने के विषय में एवं बीमारियों के विषय में कोई जानकारी नहीं हुआ करती थी कि कोई बीमारी हुई है तो इसका कारण क्या हो सकता है कोई घटना घटित हुई है तो इसका कारण क्या हो सकता है जैसे भूकंप – भूकंप की घटना किस प्रकार घटित होती है तो वे इस घटना को किसी देवी देवता का प्रकोप मानते थे। इसी प्रकार व्यक्ति या पशु , पक्षियों में बीमारी फैलने का कारण भी किसी देवी देवता का प्रकोप मानते थे । ये बात तो हम प्राचीन समय की मान लेते हैं परंतु वर्तमान परिपेक्ष्य में 21वीं सदी में आज हमारा समाज हमारा भारत शिक्षित युवाओं का एक देश है एक अच्छी शिक्षा प्रणाली यहाँ पर व्यवस्थित है अच्छी टेक्नोलॉजी यहां विद्यमान है, उसके बावजूद भी कुछ बीमारियों को देवी देवताओं का प्रकोप मान लिया गया है। जैसे कि अभी हाल ही में घटित हुई कोरोना महामारी को कुछ व्यक्तियों ने देवी–देवता का प्रकोप मानकर विभिन्न स्थानों पर कोरोना देवी के मंदिरों की स्थापना की और हवन आदि के द्वारा कोरोना से निजात पाने का प्रयास किया। जबकि करोना महामारी का कारण गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम कोरोना वायरस–2 विषाणु है। अपने भारतीय समाज में शिक्षित एवं अशिक्षित सभी लोगों में अंधश्रद्धा की भावना देखने को मिलती है । समाज के प्रत्येक व्यक्ति में थोड़ा बहुत तो अंधविश्वास होता ही होता है। यहाँ तक कि शिक्षक वर्ग जो कि विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की कलाओं का ज्ञान कराते हैं विभिन्न

प्रकार की शिक्षाऐं प्रदान करते हैं, विभिन्न प्रकार के क्षेत्र में उन्हें पारंगत करने की शिक्षाऐं प्रदान करते है, वह भी कहीं ना कहीं थोड़ा बहुत अंधविश्वास के शिकार होते हैं। यदि शिक्षा में संकाय के आधार पर देखा जाए तो विज्ञान, वाणिज्य एवं कला संकाय के विद्यार्थियों एवं उनको पढ़ाने वाले शिक्षक वर्ग में भी अंधविश्वास की भावना कम या अधिक रूप से हो सकती है।

समस्या का औचित्य

शोध हेतु चयन की गयी किसी भी समस्या के औचित्य पर विचार करना अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि औचित्य ही समस्या की उपादेयता को सिद्ध करता है। शोधार्थी के दृष्टिकोण से प्रस्तुत समस्या के औचित्य पर विचार किया है। आज के संदर्भ में देखें तो ज्ञात होता है कि सामान्य व्यक्ति ही नही अपितु शिक्षकों में भी अंधविश्वास की भावना देखी जाती है जो कि उनकी तथा देश की भावी पीढ़ियों के उन्नति के मार्ग में भी बाधक सिद्ध होती है। ऐसे में अन्धविश्वास रहित नयी पीढी का निर्माण करने में शिक्षकों का अंधविश्वास से मुक्त होना आवश्यक है। इसलिए प्रस्तुत शोधकार्य शोधार्थी के द्वारा विभिन्न संकाय के संदर्भ में महाविद्यालयी शिक्षको में अंधविश्वास की भावना का अध्ययन करने का प्रयास किया है, क्योंकि दैनिक जीवन में अंधविश्वास के कारण अनेक घटनाएँ देखने को मिलती है,जिनका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जीवन मे प्रभाव दृष्टिगोचर होता हैं।

संबंधित साहित्य का अध्ययन –

1 थाई इण्डिया पत्रिका य (2018) ग्राहकों में अंधविश्वास का अध्ययन।

उद्देश्य

1 शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के ग्राहकों में अंधविश्वास की भावना का अध्ययन करना।

निष्कर्ष –ग्रामीण क्षेत्र के ग्राहकों में अंधविश्वास की प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है।

2 वीरेंद्र बरियार ज्योति सरिता य (2014) अंधविश्वास का हवाई जहाज।

उद्देश्य –

1 शिक्षित व्यक्तियों में अंधविश्वास की प्रवृत्ति ज्ञात करना।

निष्कर्ष – शिक्षित व्यक्ति भी अन्धविश्वास में फँस जाता है, और समायोजित होने पर मानसिक स्वास्थ्य भी सुदृढ़ रहता है।

3 स्वरूप सम्पत (2008) अंधविश्वास के बादल।

उद्देश्य –

1 भारत में अंधविश्वास की स्थिति ज्ञात करना।

निष्कर्ष– भारत का कोई भी परिवार अंधविश्वास की प्रवृत्ति से परे नहीं है कहीं न कहीं थोड़ा बहुत अंधविश्वास प्रत्येक परिवार में देखने को मिलता है।

4 आर भूषण (1985) अंधविश्वास के मनोवैज्ञानिक कारणों का अध्ययन।

उद्देश्य –

व्यक्तियों में अंधविश्वास के मनोवैज्ञानिक कारण ज्ञात करना।

निष्कर्ष –व्यक्ति अपने घर, परिवार एवं समाज में जिन परंपराओं, मान्यताओं को बचपन से देखता एवं सुनता है वह उन्हीं का पालन करने लगता है। यह अंधविश्वास उसके मन–मस्तिष्क पर अत्यंत गहरा प्रभाव डालता है।

शोध के उद्देश्य–

1 विज्ञान एवं कला संकाय के शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना का अध्ययन करना।

2 लिंग भेद के आधार पर विज्ञान व कला संकाय के शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ–

1 विज्ञान एवं कला संकाय के शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

2 लिंग भेद के आधार पर विज्ञान एवं कला संकाय के शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

शोध में प्रयुक्त कठिन शब्दों का परिभाषीकरण–

अंधविश्वास – अंधविश्वास से अभिप्राय विवेकहीन विश्वास से है ।

महाविद्यालय शिक्षक – महाविद्यालयों में अध्ययन करवाने वाले महिला एवं पुरुष वर्ग से है।

शोध का परिसीमन– प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने जयपुर शहर के महाविद्यालयी शिक्षकों का चयन किया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने महाविद्यालयी शिक्षकों का चयन किया है जिसमें कुल न्यादर्श की संख्या 80 है जिसमें से 40 विज्ञान संकाय के 20 पुरुष व 20 महिला शिक्षक हैं एवं 40 कला संकाय से 20 पुरुष व 20 महिला शिक्षक है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोधार्थी ने एल.एन.दुबे एवं बी.एम.दीक्षित द्वारा निर्मित अंधविश्वास मापनी का प्रयोग किया है । मापनी की विश्वसनीयता स्पीयर मैन ब्राउन फार्मूला के अनुसार 0.82 है वह कुडर रिचर्डसन फार्मूला के अनुसार 0.84 है। मापनी की वैद्यता 0.73 है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए शोधार्थी ने मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी–परीक्षण आदि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया है –

परिकल्पना–1 विज्ञान एवं कला संकाय के शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना में सार्थक अंतर नही है।

सारणी सं. 4.1

क्र. स.	चर	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप–विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	विज्ञान संकाय के शिक्षक	40	44.40	17.53	17.02	0.05 पर अस्वीकृत
2.	कला संकाय के शिक्षक	40	96.15	7.98		

df = 78

df 78 पर 0.05 सार्थकता स्तर पर मान= 1.99

df 78 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर मान= 2.64

विश्लेषण– उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त टी का मान 17.02 है जो कि सारणी के 0.05/0.01 स्तर के मान क्रमशः 1.99/2.64 से बहुत अधिक है। अतः स्पष्ट है कि विज्ञान एवं कला संकाय के शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना के आधार पर सार्थक अंतर है। इस आधार पर यह परिकल्पना पूर्णरुप से अस्वीकृत की जाती है।

उपर्युक्त परिकल्पना के सत्यापन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि संकाय भेद के आधार पर महाविद्यालयी शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना भिन्न–भिन्न होती है।

परिकल्पना 2 लिंग भेद के आधार पर विज्ञान एवं कला संकाय के शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना में सार्थक अंतर नही है।

सारणी संख्या 4.2

क्र. स.	चर	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप–विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	विज्ञान एवं कला संकाय के पुरुष शिक्षक	40	38.13	11.55	5.73	.0.05पर अस्वीकृत
2.	विज्ञान एवं कला संकाय की महिला शिक्षक	40	61.58	23.17		

df=78

df 78 पर 0.05 सार्थकता स्तर पर मान=1.99

df 78 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर मान=2.64

विश्लेषण– उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त टी का मान 5.73 है जो कि सारणी के 0.05/0.01 स्तर के मान क्रमशः 1.99/2.64 से अधिक है अतः स्पष्ट है कि लिंग–भेद के आधार पर विज्ञान एवं कला संकाय के शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना के आधार पर सार्थक अंतर है। इस आधार पर यह परिकल्पना पूर्णरुप से अस्वीकृत की जाती है। उपर्युक्त परिकल्पना के सत्यापन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि लिंग–भेद के आधार पर महाविद्यालयी शिक्षकों में अंधविश्वास की भावना भिन्न–भिन्न होती है।

शोध के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष–

परिकल्पना 1 विज्ञान एवं कला संकाय के शिक्षकों अंधविश्वास की भावना में सार्थक अंतर नही है।

उपर्युक्त परिकल्पना से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि संकाय भेद के आधार पर विज्ञान संकाय के महाविद्यालयी शिक्षकों में कला संकाय के महाविद्यालयी शिक्षकों की अपेक्षा अंधविश्वास की भावना कम पायी गई।

परिकल्पना 2 लिंगभेद के आधार पर विज्ञान एवं कला संकाय के शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना में सार्थक अंतर नही है।

उपर्युक्त परिकल्पना से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि लिंगभेद के आधार पर पुरुष महाविद्यालयी शिक्षकों में महिला महाविद्यालयी शिक्षकों की अपेक्षा अंधविश्वास की भावना कम पायी गई।

शोध के निहितार्थ –

1 वर्तमान शोध में स्नातक स्तर के शिक्षकों में अंध–विश्वास की भावना का अध्ययन किया गया है। शिक्षक चाहे किसी

भी स्तर पर कार्यरत हो उनके लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह अंध–विश्वास की भावना को दूर करें। तथा इनके निराकरण के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे।

2 प्रस्तुत शोधकार्य से प्राप्त निष्कर्षों का उपयोग शिक्षा जगत में किया जा सकता है सर्वप्रथम तो शिक्षक को विद्यार्थियों से अंतः क्रिया करते समय ध्यान देना चाहिए कि वह स्वयं किसी भी प्रकार के अंधविश्वास पर आधारित व्यवहार न करे,यदि विद्यार्थी में ऐसी प्रवृति का अवलोकन करें तो उन प्रवृतियों को रोकने की योजना बनाने का प्रयास करें ।अपने विद्यार्थी के व्यवहार की अनदेखी न करें।

भावी शोध हेतु सुझाव–

1 यह अध्ययन राजस्थान राज्य के जयपुर शहर के महाविद्यालयों तक सीमित हैं। यह अन्य राज्य के महाविद्यालयों शिक्षकों पर भी किया जा सकता है ।

2 प्रस्तुत अध्ययन में केवल अंध–विश्वास की भावना का अध्ययन किया गया है अतः यह अध्ययन अन्य कारकों पर भी किया जा सकता है।

3 प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षकों के विचारों का अध्ययन किया गया है। अतः यह अध्ययन विद्यार्थी तथा परिवार के मुखिया के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन के रूप में भी किया जा सकता है।

4 इस अध्ययन को राजकीय विद्यालयों के माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर पृथक–पृथक भी किया जा सकता है।

5 स्नातकोतर स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अंध–विश्वास की प्रवृत्ति को जानने के लिये भी अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. अंजली देवारा मई 2014 असम अब उग्रवाद नहीं अन्धविश्वास हावी।
2. सुनीत गोस्वामी 2009 बृहस्पतिवार व्रत कथा अंधविश्वास को बढावा – सरिता दिल्ली प्रेस।
3. स्वरुप संपत 2008 अंधविश्वासों के बादल आहा जिन्दगी।
4. गुप्ता विनोद 2008 अंधविश्वास कैसे कैसे सरिता।
5. वीरेन्द्र बरियार ज्योति सरिता 2006 अंधविश्वासों का हवाई जहाज सरिता।
6. सोनिया जार्ज और कृष्ण प्रसाद श्रीधर 2006 भूमण्डलीकरण और अंधविश्वास की व्याप्तता।
7. दैनिक भास्कर 18 दिसंबर 2004 भूकम्प के लिये राष्ट्रपति जिम्मेदार।
8. पाठक पी.डी.2002 भारतीय शिक्षा और उनकी समस्याए, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
9. भल्ला, आर. एल. 2001 सामाजिक राजस्थान अजमेर कुलदीप प्रकाशन।
10. शर्मा विरेन्द्र प्रकाश 1998 रिसर्च मैथडोलॉजी जयपुर, पंचशील प्रकाशन जयपुर।
11. मित्र, कैलाश 1995 आओं गाँव चलें जयपुर राजस्थान पत्रिका प्रकाशन।
12. सिंह, रामगोपाल 1994 सामाजिक न्याय एवं दलित संघर्ष राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
13. उर्सुल उवेर 1989 क्या नौकरी से आप उभर चुके है?
14. उर्सुल उवेर 1989 क्या नौकरी से आप उभ चुके है ।
15. करलिंगर, एफ.एम. 1964 फाउन्डेशन ऑफ व्हेवियर रिसर्च (हाल्ट)
16. शर्मा, कैलाश नाथ, 1958 भारतीय समाज और संस्कृति जयपुर राजस्थान ग्रंथ अकादमी
17. शर्मा, आर.ए. शोध प्रबन्ध लेखन, मेरठ लायलबुक डिपो,
18. श्री राम शर्मा आचार्य मिथ्या मान्यताओं भ्रांत धारणाओं से क्या लाभ अंधविश्वास को उखाड़ फेकिये।
19. भारत भूषण श्रीवास्तव छलावा है ज्योतिष सरिता ।
20. खुरशीद आलम अंधविश्वास का मारा सभ्य समाज ।
21. Richaral Wiseman- 2004, measuring superstion belief why lucky charm malter-onlinehttp://www-richarluiseman-com/resoureas/PAID&cham,pdf.

वेदों, पुराणों, संहिताओं, धर्म सूत्रों, उपनिषदों, ब्रह्मण ग्रंथों, स्मृतियों, रामायण, महाभारत एवं यज्ञों में पर्यावरण का महत्त्व

डॉ. महेश आमेटा
शोध सहायक, आइकन ऑफ एशिया
संस्कृत विभाग, साहित्य संस्थान
जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड–टू–बी–विश्वविद्यालय), उदयपुर
मो. 9571470288
ई–मेल–maheshameta99@gmail.com

वेद पृथ्वी पर अत्यन्त प्राचीन और सम्माननीय पवित्र ग्रंथ है जो हिन्दू धर्म के प्रामाणिक पथदर्शक है। इसी के आधार पर दुनिया में कई अन्य धर्मों की स्थापना हुई, जिन्होंने वेदों के ज्ञान को अपने अपने तरीके से भिन्न भिन्न भाषा में प्रचारित किया। वेद ईश्वर द्वारा ऋषियों को सुनाए गए ज्ञान पर आधारित है, इसलिए इसे श्रुति कहा गया है। सामान्य भाषा में वेद का अर्थ 'ज्ञान' होता है। वेद पुरातन, ज्ञान, विज्ञान का अथाह भण्डार है। इसमें मानव की हर समस्या का समाधान है, वेदों में ब्रह्म, ईश्वर, ब्रह्माण्ड, ज्योतिष, गणित, भूगोल, राष्ट्र, प्रकृति, धार्मिक नियम आदि सभी विषय का ज्ञान भरा पड़ा है, वेद मानव सभ्यता के लगभग सबसे पुराने लिखित दस्तावेज है, इन्हें चार भागों में बांटा गया है। चार भाग–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। 1

भारतीय संस्कृति के इतिहास में वेदों का स्थान नितान्त गौरवपूर्ण है श्रुति की दृढ़ आधार शिला के उपर भारतीय धर्म तथा सभ्यता का भव्य विशाल प्रासाद प्रतिष्ठित है। हिन्दुओं के आचार–विचार, रहन–सहन, धर्म–कर्म, को भली भांति समझने के लिये वेदों का ज्ञान विशेष आवश्यक है।

'वेद' शब्द 'विद् ज्ञाने' धातु से घंज् प्रत्यय होकर बना है। अतः ज्ञान का विषय ज्ञेय–पदार्थ एवं ज्ञान के साधन ये तीनों ही 'वेद' के वाच्य कहे जाते है और गीता के अनुसार कहा भी गया है– न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। (गीता–4 अध्याय, 38 श्लोक)2

श्रीमद्भगवदगीता में कहा गया है–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

इस भागवदुक्ति के अनुसार जब जब वैदिक सत्यविद्या अज्ञान–धूम से आवृत्त होने लगती है और मोहवश जनता का विश्वास हटने लगता है, तब तब परमेश्वर की प्रेरणा से कोई न कोई शक्ति प्रकट होकर सत्य–विद्या व सत्य–धर्म को राहु ग्रास से मुक्त कर अज्ञान का नाश कर देती है। वेद एक सत्य विद्या है और वैदिक धर्म एक सत्य धर्म है। इनकी रक्षा का आयोजन ईश्वर की और से सदा होता रहता है, जिसका साक्षी इतिहास है। वेद सत्यविद्या का निधान है, सब प्रकार के विज्ञानों का मूल स्रोत है।3

पर्यावरण – पर्यावरण शब्द सात व्यंजनों की सहायता से उच्चारित होता है। यह सात स्वर और व्यंजन पर्यावरण के घटकों का बोध कराते है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश। व्यंजन पांचवा पर्यावरण के कल्याण का सूचक और संरक्षण का द्योतक है। परि तथा आवरण इन दो शब्दों के मेल से बने ''पर्यावरण'' शब्द का अभिप्राय है चारों तरफ का घेरा। परि उपसर्ग है। इसका अर्थ है चारों और आच्छादित एवं सब दिशाओं में और 'आवरण' का अर्थ घेरना है। यानी चारों ओर से घेरने वाला पर्यावरण चारों और की भूमि, वायु और पानी ही हमारा पर्यावरण है।

जीवों की अनुक्रियाओं को प्रभावित करने वाली समस्त भौतिक तथा मानवीय परिस्थितियों के योग को 'पर्यावरण' कहा गया है। अर्थात् हमारे विकास को प्रभावित करने वाले चारों और विद्यमान संपूर्ण जड़ और चेतन पदार्थों का सामूहिक नाम ''पर्यावरण'' है।

वेदों में पर्यावरण–वैदिक काल में वैदिक रीति एवं ग्रंथों के अनुसार ही कार्य करते थे। इसे वह अपना धर्म समझते थे। इस कारण पर्यावरण शुद्ध रहता था, पर्यावरण शुद्ध

रखने के लिए हर निवास पर वैदिक रीति से हवन किये जाते थे। जल को देवता रूप मानकर शौच उससे बहुत दूर किया जाता था। वनों को तपोवन एवं ऋषियों का निवास मानने के कारण उनका संरक्षण होता था। वैज्ञानिक युग होने के कारण वर्तमान काल में किए गये प्रयास क्रिया के रूप में अधिक हैं। वर्तमान समय में इस बात की आवश्यकता है कि वैदिक युग की विचारधारा का अनुसरण किया जाए। उस समय की धारणा के अनुसार पवित्र स्थान एवं घर को देवता का निवास स्थान बताया गया है। वैदिक पद्धति से आधुनिक समय में यदि पर्यावरण शुद्ध रखने के प्रयास किये जाये तो हम पर्यावरण को सुरक्षित रखने में जरूर सफल होगें।4

वरूण शब्द की निष्पति 'वृ' धातु से होती है, जिसका अर्थ आच्छादित या आवृत्त करना है। वरूण ने सूर्य की रचना की, अग्नि और जल का निर्माण किया तथा पर्वतों पर सोमवल्ली को उत्पन्न किया। वरूण रात्रि और दिन का अधिष्ठाता है और जलों का नियमन करता है। वायु उसके आदेश में रहकर ध्वनि करती है। चन्द्रमा उसी के आदेश से प्रकाशित होता है। तारे वरूण का आदेश मानते है। नदियाँ उसकी आज्ञा से बहती है। समुद्र उसके नियन्त्रण में रहकर वेला का उल्लघंन नहीं करता और मेघ उसके आदेश से बरसकर पृथ्वी को सींचते है। कुछ भी उसकी दृष्टि से ओझल नहीं है।5

वैदिक ऋषियों ने जीवन और पर्यावरण के सम्बन्ध का ज्ञान रखते हुए देवी–शक्तियों से प्रार्थना की है, जिससे इन समस्त देवी शक्तियों की सहायता और संरक्षण प्राप्त हो सके।6 स्वास्थ्य और दीर्घायु के विषय में इस प्रकार कहा गया है–है अग्ने! मेरे शरीर की रक्षा करो। तुम आयुदाता हो, अतः मेरी अकाल मृत्यु को दूर कर पूर्ण आयु प्रदान करो।7 साथ ही ओजस्वी एवं आदर्श जीवन की प्रार्थना भी की है।

अथर्ववेद के चोदहवां मंत्र में पृथ्वी, रोदसी, स्वर्ग, जल, वृक्ष, पौधे सभी देव प्रणेता द्वारा की गई शान्तियों (यज्ञों) द्वारा दारूण एवं बुरे प्रभाव दूर हो। वे सभी (प्रकृति के तत्व) हमारे लिए सुखप्रद हो। इस प्रकार के अनेकों मंत्र वेदों मे पर्यावरण की धारणा को स्पष्ट करते है। वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण सरंक्षण हेतु ज्ञान वेदों में दिया है। पर्यावरण सरंक्षण की धारण वैदिक काल से ही चली आ रही है।

पुराणों में पर्यावरण –पुराणों में पर्यावरण की सुरक्षा सम्पूर्ण रूप में उपलब्ध होती है। धर्म, अंहिसा, शांति, पंचतत्व शांति, पशु–पक्षी एवं वृक्ष वनस्पति की सुरक्षा और यज्ञ की धारणा मिलती है। पुराणों ने हिंसापूर्ण धर्म को अधर्म बताया है। जो कार्य हिंसामय हो उसे ऋषिगणों ने रोकने का प्रयास किया है। पशु–पक्षी की सुरक्षा बनाये रखने के लिए पुराणों में नरक के विशेष कष्टों का वर्णन मिलता है। जो पशुओं को बुरी तरह से मारते है वह नरक गमन करने वाले होते है। जो पुरूष गाय का वध करते है वह पांच कल्प तक नरक की घोर यातनाओं को झेलते है।8

वनस्पतियों के विषय में इस कहा गया है कि विषम जंगलों के पत्रों को तोड़ डालना भी उपपातक है।9 गुरुड़ पुराण के अनुसार तृप, लता, बल्ली के त्वक का हर्ता या हनन करने वाला मानव जड़ और वृक्ष की योनि में जाता है। इस प्रकार वेदों और पुराणों में पर्यावरण की सुरक्षा एवं रक्षा के अनेकों वर्णन मिलते है।

अतः भारतीय संस्कृति और सभ्यता इस तथ्य का पुष्ट प्रमाण है कि यहा सभी धर्म और संप्रदायों को सदैव आदर की दृष्टि से देखना चाहिये तथा समस्त धर्मों का एकमात्र शाश्वत सत्य है–''जीओ और जीने दो''। जीओं और जीने दो का यह शंखनाद केवल प्राणियों तक ही सीमित नहीं है अपितु उसकी सीमा सभी चर–अचर, जीव जड़ एवं प्रकृति तक है। संसार की सभी वस्तुएँ एवं जीव परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से किसी न किसी से यह संबंधित है। अतः मनुष्य जीवन और प्रकृति में सामजस्य रहने से मनुष्य प्रकृति का अंग बनकर रहे और उससे केवल उतना ही ले जितनी उसकी आवश्यकता है।

आज के युग में मनुष्य जाति क्षेत्र व राष्ट्र की सीमाओं में जकड़ता जा रहा है। अतः समय रहते नए विचारों का प्रतिपादन करने की आवश्यकता है। इसमें व्यापक स्तर पर यह सहमति हो कि सभी पृथ्वी पर रहने वाले बगैर लिंग, जाति, प्रजाति, राष्ट्रीयता के लिए यह समझे कि प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने से ही पर्यावरण

संरक्षण संभव है, जो हमे वर्तमान एवं भविष्य में होने वाले दुष्परिणामों से बचा सकते है।10

संहिताओं में पर्यावरण– वेदों के उपरान्त संहिताओं का समय आरंभ होता है। वैदिक मंत्रों का एक ही अर्थ निकाला जाता था, परन्तु वैदिक संहिताओं में एक मंत्र के अनेकों भाव और अर्थ होते है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति संहिताओं में अनेक धारणाएँ उपलब्ध है। सुख–शांति, अंहिसा और कल्याण के अभिलाषी विद्वानों ने प्रकृति में रहने वाले जड़ चेतन और पंचभूतों में जो सामर्थ्य होता है–उसका क्षय (विनाश) न हो सके इसलिए परमात्मा से अनेकों प्रार्थना की गई है।11

इसके अतिरिक्त समस्त तत्त्वों के प्रति शांति प्राप्ति की धारण उपलब्ध होती है–दिव्य और पृथिवस्थि पदार्थ हम सबकों सुख प्रदान करें। चारों दिशाएँ शांतिदायक हो, ध्रुव स्थित पर्वत शांतिदायक एवं नदियों का जल–प्रवाह सुखकारी हो। सूर्य और चन्द्र प्राण और अपान सुख प्रदान करें, हम सबका कल्याण करें और सेवन करने योग्य वायु का सुख प्रदान करें। जो लोग नित्य–धर्म नियमों का पालन करते है और करवाते है वे ही ऐश्वर्य से बसाने और उनकी रक्षा करने में सक्षम होते है।12 इसलिए संहिताओं में संरक्षण के साथा सबके साथ मिलकर सुख, शांति, कल्याण को धारण करने का बताया गया है।

धर्म–सूत्रों में पर्यावरण– धर्म सूत्रों में भूमि–शुद्धि, शौच और अंहिसा के प्रति धारणा उपलब्ध होनी चाहिये। अन्य पाप–कर्मों और उनके प्रायश्चित के विषय में भी धारणाएँ होती है। पाप से विरक्ति का ध्येय बनाया गया है और निरन्तर इन सभी बातों का ध्यान भी रखा गया है कि प्रायश्चित् का भय दिखाकर पाप दूर रकने का उपाय भी बताया गया है। परलोक का भय मनुष्य के आचरण को निरंतर सही दिशा की और प्रेरित करता है।13

धर्मसूत्र आदेश प्रदान करता है कि जिस कार्य में हानि हो, प्राण संकट में हो, वह कार्य न करो। क्योंकि मनुष्य का जीवन महत्वपूर्ण है। सभी प्रकर के उपायों से अपनी रक्षा करना धर्म है।

उपनिषदों में पर्यावरण – धर्म सूत्रों के पश्चात् उपनिषदों में भी पर्यावरण के बारे में बताया गया है कि उपनिषद् काल में पर्यावरण का रूप स्वच्छ होता था क्योंकि उस समय ऋषि–मुनि आत्मसाक्षात् के लिए वनों में ही रहते थे। वहां गुरु और शिष्य शान्त वातावरण में आत्म रहस्य के प्रश्न और उत्तर किया करते थे क्योंकि आध्यात्मिक ज्ञान के लिए शांत एवं स्वच्छ वातावरण का होना अनिवार्य होता है।

उपनिषदों में भी यज्ञ की महत्ता अधिक थी। यज्ञ के विषय में बताय गया है कि जो नियम विरूद्ध हवन करते है तो समय पर अग्निहोत्र नहीं करता और उसके लोक का सात वर्ष तक नाश ही होता है। उपनिषदों में सत्य, धर्म, समृद्धि, स्वाध्याय, एकात्म दर्शन और आत्मकल्याण करते हुए आलस्य न करने की उत्तम धारणा बतायी गयी है साथ ही उपदेश–वेद रहस्य एवं शिक्षा है। इसी आदर्श को भविष्य के जीवन में सर्वदा रखने का उपदेश दिया गया है।14

ब्राह्मण ग्रंथों में पर्यावरण–ब्राह्मण ग्रंथों में पर्यावरण के प्रति उत्तम जानकारी प्राप्त होती है। प्रकृति के पंचभूतों–पृथ्वी, जल, आकाश, वायु और अग्नि–का संतुलन बनाए रखने के लिए एवं दूषित होने से उसके संरक्षण के लिए यज्ञ क्रिया को अनिवार्य माना गया है। ब्राह्मणकाल में यज्ञ की महत्ता अत्यधिक थी इसीलिए यज्ञ को सूर्य के समान तेजस्वी बताया गया है।15

यज्ञ करने से फल प्राप्त होता है और न करने से उसकी भी धारणा उपलब्ध होती है। जहां यज्ञ होता है, वहां इच्छा करने के समय वर्षा होती है। जहां यज्ञ करते है वहां वृक्ष फल वाले होते है तथा जहां यज्ञ होता है वहां क्षेम कुशल रहती है। इन्हीं मंत्रों में प्रकृति के संतुलन बनाये रखने से है क्योंकि मनुष्य ही पशु का संरक्षण एवं उनकी वृद्धि कर सकते है। पशु पक्षी एवं जीव–जन्तु का आधार ही वन है।

स्मृतियों में पर्यावरण–स्मृति काल में पर्यावरण का महत्व उत्कृष्ट है। जल शुद्धि, वायु शुद्धि, भूमि शुद्धि के विषय में अनेक वर्णन मिलते है। अत्रि–स्मृति में अत्रिजी त्रिलोकी के कल्याण के विषय में सम्पूर्ण पाप सन्देहों का नाश करने वाले सनातन धर्म शास्त्र का वर्णन करते है। जल शुद्धि के विषय में इस प्रकार वर्णन किया है–जलाशय, बावड़ी,

कुआं, तालाब मृत इत्यादि के स्पर्श से दूषित हो जाते है या अस्थि और चर्म एवं गर्दभ कुत्ते बीच में गिरकर मर गए हो तो उनकी शुद्धि छः सौ घड़े जल भरकर बाहर निकालने और सम्पूर्ण उदक निकालने से तथा पंचगव्य डालने से होती है।16

स्मृतियों में वृक्ष, वनस्पति–संरक्षण की धारणा बनाए रखने के लिए दण्ड एवं प्रायश्चित् विधान का वर्णन किया गया है। उनके सुखी दुःखी आदि के होने का वर्णन उपलब्ध होता है। पूर्व जन्म के कारण पेड़ पौधे अत्यधिक तमोगुण से युक्त अन्तश्चेतना वाले तथा सुख दुःख अनुभव से युक्त होते है।17 इस प्रकार अनेक प्रकार के पशु–पक्षी का वध करने पर दण्ड प्रायश्चित्, दान करने की प्रबल धारणा स्मृतियों में बतायी गई है।

रामायण में पर्यावरण–रामायण में पर्यावरण के बारे में बड़ा ही सजीव रूप में उपलब्ध होता है। रामायण में धर्म, लोक कल्याण, प्रकृति–प्रेम, अंहिसा एवं पशु–पक्षी संरक्षण के प्रति उत्तम धारणा मिलती है। रामायण में अनेक प्रकार के वर्णन मिलते है जिनमें प्रकृति प्रेम लक्षित होता है। कोई भी कार्य मर्यादा के अनुसार करने की धारणा उपलब्ध होती है जिससे देश धर्म और तपोवन धर्म में बाधा न आए। उस समय प्रकृति के अनुकूल कार्य करने की धारण मिलती थी।18

महाभारत में पर्यावरण –अंहिसा, कल्याण, पशु–पक्षी के रक्षा और वृक्ष वनस्पति की सुरक्षा की बनाये रखने के लिए महाभारत में अनेक रूपों में धर्म के द्वारा मार्ग प्रदर्शित किया गया है। कल्याण की इच्छा करने वाले मनुष्य को वृक्ष लगाने व उनकी पुत्र के समान रक्षा करनी चाहिये। प्रकृति की सुरक्षा के लिए वेदव्यास जी ने अनेक श्लोकों की रचना के माध्यम से मनुष्य प्रकृति से प्यार करता था। उसकी सुरक्षा के लिए कल्याण और अंहिसा की भावना को स्वीकार किया करते है।19

यज्ञ की महत्ता

वैदिक युग में यज्ञ की महत्ता है, जो व्यक्ति को पावन, पवित्र और कर्मठ बनाती है। यज्ञ की सम्पन्नता अग्नि से होती है। अग्नि की प्रत्यक्ष शक्ति से वे परिचित थे। अतः वे अग्नि के उपासक थे। अग्नि के दो प्रकार है–(1) स्मार्ताग्नि, जिससे प्रत्येक गृहस्थ अथवा विवाहित व्यक्ति गृह्याग्नि में क्रियमाण यज्ञ (अथवा पाकयज्ञ) सम्पन्न करता है तो (2) श्रौताग्नि–जिसमें श्रौत यज्ञों की संयोजना की गई है। इसके चार अवांतर है–गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि और सम्याग्नि। स्मार्त और श्रौत कर्मी की सम्मिलित संख्या इक्कीस है–सात पाकयज्ञ, सात हवियज्ञ और सात सोमयज्ञ। 'अग्न्याधान' का अनुसरण करने वाला व्यक्ति ही इन यज्ञों को सम्पन्न कर सकता था। ऋग्वेद और यजुर्वेद से स्पष्ट होता है कि विश्व की प्रक्रिया यज्ञ से संचालित होती है, जिसमें निरन्तर पांच अग्निया प्रज्वलित हैं और आहुतियाँ डाली जा रही हैं। सर्वाधिक बड़ी अग्नि द्युलोक है जिसमें श्रद्धा की आहूति पड़ रही है। चन्द्रलोक का उद्‌भव इसी से हुआ है, जिसे पितृलोक भी कहते हैं। दूसरी अग्नि इन्द्र है जिसमें चन्द्रमा की आहुति है, इससे वर्षा होती है। तीसरी अग्नि पृथ्वी है, जिसमें वर्षा आहुति बनती है। अन्न की उत्पत्ति इसी से हाती है। मनुष्य चौथी अग्नि है, जिसमें अन्न आहुति का काम करता है। इससे बीज उत्पन्न होता है। पांचवी अग्नि पत्नी है, जिसमें बीज आहुति रूप में पहुँचता, जिससे सन्तान उत्पन्न होती है। यही सृष्टि का क्रम है, जो पंचाग्नि विद्या के अन्तर्गत है। प्रकृति की क्रिया अश्वमेध के रूप में मानी गई है तथा जीवन का क्रम सोम यज्ञ के रूप में। मनुष्य जीवन के प्रथम चौबीस वर्ष सोम का प्रातः सेवन कहा गया है, तत्पश्चात् चौवालीस वर्ष माध्यन्दिन सेवन है। और अन्तिम अड़तालीस वर्ष तृतीय सेवन। अतः जगत् और जीवन दोनों ही यज्ञ हैं, जिसमें प्राण और भूत का अन्तर्मिलन है तथा दोनों एक दूसरे में अन्तर्भूत होकर एक दूसरे को आत्मसात् करते हैं। ऐसी स्थिति में समस्त संसार यज्ञमय है।20

नव चण्डी – यह बेहद शक्तिशाली और बड़ा यज्ञ है, जिससे देवी माँ की अपार कृपा होती है। नवचण्डी पूजा एक विस्तृत, विशिष्ट और असीम पूजा है, आमतौर पर नवरात्रि के समय की जाती है। यज्ञ को करने वाला ब्राह्मण विद्वान होना चाहिए, जो पाठ का शुद्ध उच्चारण कर सके, जिसके करने से लाभ की प्राप्ति हो। अगर पाठ का अशुद्ध उच्चारण हुआ तो तत्काल हानि होने सम्भावना होती है।

चंडीविधान का अर्थ–

श्री दुर्गादेवी का एक नाम है –चंडी। मार्कण्डेय पुराण में चंडीदेवी का माहात्म्य बताया गया है, जिसमें उसके अवतारों का एवं पराक्रमों का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसमें सात सौ श्लोकों को एकत्र कर श्री सप्तशती नामक एक ग्रन्थ देवी की उपासना के लिए अलग से बनाया गया है। ऐसा कहा गया है कि सुख, लाभ, जय इत्यादि अनेक कामनाओं की पूर्ति के लिए इस सप्तशती का पाठ करना चाहिए। यह पाठ विशेषतः चैत्र और आश्विन मास की नवरात्रि में करते हैं। पाठ करने के उपरान्त हवन करना भी आवश्यक है। इस प्रक्रिया को 'चंडीविधान' कहते हैं। 9 दिन प्रतिदिन सप्तशती का पाठ और उसका दशांश हवन करते हैं, जिसे नवचंडी कहते हैं।

नवचंडी यज्ञ एक नव दुर्गा के निमित पूजा है। यह पूजा अपनी इच्छाओं को सच करने, स्वास्थ्य, धन, शक्ति, जीवन में समृद्धि, सफलता, समस्याएँ एवं कष्टों से छुटकारा, यह यज्ञ शत्रु और बुरे ग्रहों के परिणाम को दूर करता है, शान्तिपूर्ण, शक्तिशाली और स्वस्थ वातावरण बनाने के लिए हवन करते हैं। भगवान गणेश, भगवान शिव, नवग्रह और नव दुर्गा, भक्त को आशीर्वाद देते हैं। पुरोहित वास्तु स्थापना पूजा के साथ इसकी समाप्ति करते हैं। वास्तु भगवान, परिवार को पृथ्वी के नकारात्मक शक्तियों से बचाता है। नवचंडी यज्ञ सनातन धर्म में बहुत शक्तिशाली है। इस यज्ञ के बाद, कोई दुश्मन कुछ भी नुकसान नहीं पहुँचा सकता है। मुहूर्त पूजन, नन्दी श्राद्ध आदि का भी पूजन किया जाता है। चंडीविधान के प्रकार– अ–नवचंडी,– आ–शतचंडी, इ–सहस्रचंडी, ई–लक्षचंडी आदि।

यज्ञ का लाभ–

व्यक्ति अपनी सभी इच्छाओं को पूरा करने के लिए नवचंडी पूजा करते हैं। स्वस्थ और लम्बे जीवन जीने के लिए, नाम और धन की प्राप्ति, अशुभ ग्रहों व बुरे प्रभावों को दूर कर मन, शरीर और आत्मा की पवित्रता मिलती, यह पर्यावरण को शुद्ध और शान्त बनाने में भी मदद करता है। यज्ञ कुण्ड से उठने वाला धुआ पर्यावरण और प्रकृति के लिए बहुत लाभदायक होता है, जब धुआ प्रकृति मैं फैलता है तो चारों तरफ वातावरण शुद्ध हो जाता है और रोग आदि नष्ट हो जाते है।

साथ ही शरीर में मस्तिष्क की नसों और रक्त वाहिकाओं को पुनर्जीवित किया जाता है तथा उचित स्वर में इसका जाप करने से तरंगें निकलती हैं, जो मनुष्य को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। ये तरंगें पाठक के चारों और एक सुरक्षात्मक चक्र बनाती हैं। नव चंडी पूजा करते हैं। चंडी पाठ का जाप करने के बहुत सारे फायदे हैं।

हवन करने से उत्पन्न औषधीय धुआं हानिकार जीवाणुओं को नष्ट कर वातावरण को शुद्ध करता है जिससे बीमारी फैलने की आशंका काफी हद तक कम हो जाती है। लकड़ी और औषधीय जड़ी बूटियाँ को साथ मिश्रण कर हवन करने से वातावरण में जहां शुद्धता आ जाती है वहीं हानिकारक जीवाणु 94 प्रतिशत तक नष्ट हो जाते हैं। उक्त आशय यह है कि हवन के धुऐ से वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव लगभग 30 दिन तक बना रहता है। इस अवधि में जहरीले कीटाणु नहीं पनपते। इस औषधीय धुएं से व्यक्ति के स्वास्थ्य पर अच्छा असर पड़ता है साथ ही खेती करने वाले किसान लोग अपनी फसल को नुकसान पहुंचाने वाले हानिकारक जीवाणुओं से भी इस धुएं से निजात पाते है तथा मनुष्य को दी जाने वाली दवाओं की तुलना में अगर औषधीय जड़ी बूटियाँ और औषधि युक्त हवन के धुएं से कई रोगों को खत्म किया जा सकता है। अतः आज की नव पीढ़ी के लिए भारतीय वैदिक संस्कृति का संरक्षण एवं सवर्धन को इन नवचण्डी यज्ञ एवं आदि यज्ञों के माध्यम से अधिक से अधिक करवाना होगा।

अतः भारतीय परम्परा में यज्ञ का महत्व बहुत अधिक रहा है। अग्नि के आविष्कार से सामाजिक जीवन में बहुत क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए है। यज्ञों से मनुष्य की इहलोकिक और पारलौकिक कामनाओं की पूर्ति की जाती है, इसलिए सामान्य व्यक्तियों को अपने सामाजिक सर्म्पकों को स्वस्थ्य और जीवत बनाये रखने के लिए पंच महायज्ञ की परिकल्पना की गई। जिसमें राष्ट्र रक्षा और समृद्धि के लिए राजसूय यज्ञ, वाजपेय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ, आदि कर राष्ट्र को विजयी और समृद्ध बनाने की योजनाएँ बनाई गई। प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए वर्षा यज्ञ, इत्ती–भत्ति के निर्माण के लिए भी यज्ञों का विधान किया गया। मनुष्य के स्वास्थ्य एवं मानसिक उन्नयन के लिए भी

विविध प्रकार के यज्ञों का प्रचलन वैदिक काल से होता रहा है। जिससे वेदों में ब्रह्माण्ड के समस्त जीव–जन्तुओं के कल्याण एवं संरक्षण, पृथ्वी पर प्राकृतिक अनुकूलता तथा मनुष्यों के सकल कामनाओं व रोग शत्रु के नाश तथा सर्वत्र विजय भावना के लिए यज्ञ का विधान है। इस प्रकार यज्ञों की परम्परा मनुष्यों के व्यक्तिगत, सार्वजनिक, सामाजिक, शैक्षिक और सर्वाजनित उन्नति के लिए निरन्तर किये जाते है।21

भारत के प्राचीन ऋषि–मुनियों व मनीषियों के द्वारा प्रतिपादित मूल्यों, सभ्यताओं एवं संस्कृति को समझने से केवल भारत के ही नहीं बल्कि विश्व पर्यावरण को शुद्ध रखा जा सकता है। अतः वेदों, पुराणों व यज्ञ आदि ग्रंथों में वर्णित पद्धतियों से ही पर्यावरण की सुरक्षा की जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. वैदिक संस्कृति पर दृगस्पर्श–आचार्य चतुरसेन–सन्मार्ग प्रकाशन नई दिल्ली–प्रथम संस्करण 1983, पृं.सं. 17
2. वैदिक माड्.मय में नारी–लेखिकी–सुषमा शुक्ला–विद्यानिधि प्रकाशन–संस्करण 2002, पृ.सं. 1–3
3. वैदिक साहित्य और संस्कृति–डॉ. किरण कुमारी–प्रथम भाग–न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन दिल्ली–प्रथम संस्करण–2001, पृं.सं.1
4. पुराण–साहित्य में पर्यावरण–संरक्षण–नंजला राठोड़–डीसेन्ट बुक, नई दिल्ली–पृ.सं. 60,61
5. वेद वातस्य वर्तनिमुरात्रऋष्वस्य बृहतः। वेदा ये अध्यासते।, ऋग्वेद–दसवां मण्डल, नवां श्लोक।
6. मेधामहं प्रथमां ब्रह्मणवेती ब्रह्मजूतामृषिष्टुताम। प्रपीतां ब्रह्मचारिभिदेवानामवसे हुबे। अथर्ववेद–6 मण्डल, 108, 2 श्लोक।
7. तनपा अग्नेऽसि तन्वं में पाहि। आयुर्दा अग्नेऽस्ययुर्मे देहि–यजुर्वेद–तीसर मण्डल, 17 वां श्लोक।
8. नारद पुराण–प्रथम अध्याय, श्लोक–76।
9. तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियज्न्विमवसेहमहे व्याम। ऋग्वेद–संहिताए (प्रथम अध्याय, 14, 89, 5)
10. पुराण–साहित्य में पर्यावरण–संरक्षण–नंजला राठोड़–डीसेन्ट बुक, नई दिल्ली–पृ.सं. 99
11. न स्वस्ति मिमीताम् भागः स्वस्ति। स्वस्ति पूषा दद्यातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतना। ऋग्वेद संहिता, अध्याय 7, 4, 51, 11।
12. गौतम धर्म सूत्राणि, पृ. सं. 23, 24
13. तैतिरिय उपनिष्, अनु–11, मंत्र 7, पृ. सं. 61
14. शतपत ब्राह्मण 2, 6, 13, 2।
15. अत्रि स्मृति, श्लोक 270
16. मनु स्मृति, प्रथम अध्याय, श्लोक –49,
17. पुराण–साहित्य में पर्यावरण–संरक्षण–नंजला राठोड़–डीसेन्ट बुक, नई दिल्ली–पृ.सं. 60,61
18. वृथा पशु सभालम्भी वंनदाहस्य कारकः। महाभारत शान्ति पर्व, अध्याय–35, श्लोक–6।
19. विषभारण्यपत्राणां सततं.....।। शिव पुराण–द्वितीय अध्याय–18
20 वैदिक साहित्य और संस्कृति–डॉ. किरण कुमारी–प्रथम भाग–न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001, पृ. सं. 184–185
21. ऋग्वेदभाष्यम्–महर्षि दयानन्द सरस्वती–प्रकाशक–विश्व मानव उत्थान परिषद्, नई दिल्ली, संस्करण–2005, श्लोक–30, अष्टम् मण्डल, 25 सुक्त, पृ. 901

किशोर विद्यार्थियों के विकास में सोशल मीडिया की भूमिका एवं चुनौतियां

विभा कुमारी
(शोधार्थी)
(कोटा विश्वविद्यालय,कोटा) राजस्थान
Vibhatailor57@gmail-com
9875071204

प्रो. सपना जोशी
(पर्यवेक्षक)
(कोटा विश्वविद्यालय,कोटा) राजस्थान
Joshisleo@gmail-com
Mo. 9413732982

सारांश

आधुनिक डिजिटल युग में सोशल मीडिया किशोर विद्यार्थियों के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। यह न केवल सूचना और ज्ञान के आदान–प्रदान का माध्यम है, बल्कि रचनात्मकता, आत्म–अभिव्यक्ति और सामाजिक जुड़ाव को भी प्रोत्साहित करता है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, व्हाट्सऐप और अन्य प्लेटफॉर्म विद्यार्थियों को वैश्विक दृष्टिकोण, त्वरित संचार और सीखने के नए अवसर प्रदान करते हैं। हालांकि, इसके साथ ही कई चुनौतियां भी सामने आती हैं, जैसे–पढ़ाई में एकाग्रता की कमी, साइबर बुलिंग, गलत या भ्रामक जानकारी का प्रसार, गोपनीयता का खतरा और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव। इस शोध में किशोर विद्यार्थियों के विकास में सोशल मीडिया की सकारात्मक और नकारात्मक दोनों भूमिकाओं का विश्लेषण किया गया है तथा इसके सुरक्षित और संतुलित उपयोग के लिए सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं। उद्देश्य यह है कि सोशल मीडिया के माध्यम से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित किया जाए, साथ ही इसके दुष्प्रभावों को कम करने के लिए उचित रणनीतियां अपनाई जाएं।

जीवन में शिक्षा का महत्व बहुत गहरा है। शिक्षा इंसान को अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाती है और सही–गलत में फर्क करना सिखाती है। यह न केवल रोजगार के अवसर प्रदान करती है बल्कि व्यक्तित्व का विकास भी करती है। शिक्षा से आत्मविश्वास बढ़ता है और समाज में सम्मान मिलता है। यह व्यक्ति को नैतिक मूल्य और संस्कार देती है। शिक्षा जीवन की समस्याओं का समाधान खोजने की क्षमता विकसित करती है। यह हमारे सोचने–समझने की शक्ति को बढ़ाती है। शिक्षा से ही देश का विकास और प्रगति संभव है। यह इंसान को जागरूक नागरिक बनाती है। वास्तव में शिक्षा ही जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है।

किशोरावस्था जीवन का ऐसा संवेदनशील और निर्णायक चरण है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास तीव्र गति से होता है। इस समय विद्यार्थी नई–नई चीजें सीखने, स्वयं को पहचानने और समाज में अपनी भूमिका समझने की प्रक्रिया से गुजरते हैं। तकनीकी युग में सोशल मीडिया किशोर विद्यार्थियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है, जिसने उनके सीखने के तरीकों, संवाद शैली और सामाजिक संपर्क के स्वरूप को गहराई से प्रभावित किया है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, व्हाट्सऐप, टेलीग्राम और अन्य प्लेटफॉर्म अब सिर्फ मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि ज्ञान, सूचना और व्यक्तित्व विकास के भी सशक्त माध्यम बन चुके हैं।

आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम और व्हाट्सऐप किशोर विद्यार्थियों के लिए ज्ञान एवं सूचना का सबसे तेज और सुलभ माध्यम बन गए हैं। पहले जहाँ विद्यार्थियों को नई जानकारी प्राप्त करने के लिए पुस्तकालयों, पत्रिकाओं या शिक्षकों पर निर्भर रहना पड़ता था, वहीं अब वे कुछ ही सेकंड में अपने मोबाइल या कंप्यूटर के माध्यम से किसी भी विषय से संबंधित सामग्री तक पहुँच सकते हैं। यूट्यूब पर उपलब्ध शैक्षणिक चौनल गणित, विज्ञान, भाषा, कला और तकनीकी विषयों के ट्यूटोरियल से लेकर प्रतियोगी

परीक्षाओं की तैयारी तक हर क्षेत्र में विद्यार्थियों को सहायता प्रदान करते हैं। फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म पर शैक्षणिक पेज, लाइव सेशन और वेबिनार विद्यार्थियों को करियर संबंधी मार्गदर्शन और नवीनतम अवसरों की जानकारी उपलब्ध कराते हैं। व्हाट्सऐप ग्रुप और टेलीग्राम चौनल नोट्स, प्रश्नपत्र और महत्वपूर्ण अपडेट साझा करने में सहायक हैं, जिससे विद्यार्थियों की पढ़ाई अधिक व्यवस्थित और प्रभावी हो जाती है।

इन प्लेटफॉर्म का प्रभाव केवल शैक्षणिक सामग्री तक ही सीमित नहीं है, बल्कि ये विद्यार्थियों में संवाद कौशल, प्रस्तुति क्षमता और वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करने में भी अहम भूमिका निभाते हैं। ऑनलाइन समूह चर्चाओं और बहस में भाग लेने से किशोर विद्यार्थी विभिन्न दृष्टिकोणों को समझना सीखते हैं और अपने विचारों को स्पष्ट व आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करने की क्षमता विकसित करते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री और विभिन्न संस्कृतियों से परिचय उन्हें अधिक संवेदनशील, खुले विचारों वाला और वैश्विक नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करता है इसलिए, यह आवश्यक है कि शिक्षक और अभिभावक विद्यार्थियों को सोशल मीडिया का जिम्मेदारीपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण उपयोग करने के लिए प्रेरित करें। उन्हें यह सिखाना चाहिए कि कैसे वे सही और विश्वसनीय स्रोतों से जानकारी प्राप्त करें, समय का संतुलित प्रबंधन करें और नकारात्मक या हानिकारक सामग्री से बचें। यदि सोशल मीडिया का उपयोग संतुलित और शिक्षाप्रद दिशा में किया जाए, तो यह किशोर विद्यार्थियों के शैक्षणिक, सामाजिक और व्यक्तिगत विकास में अत्यंत प्रभावी साधन सिद्ध हो सकता है।

शिक्षा के क्षेत्र में सोशल मीडिया ने किशोर विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर पर उपलब्ध संसाधनों तक पहुँच प्रदान की है। आज कोई भी विद्यार्थी अपने विषय से संबंधित ट्यूटोरियल, शैक्षणिक व्याख्यान, प्रोजेक्ट सामग्री और शोध कार्य तक आसानी से पहुँच सकता है। यूट्यूब पर मौजूद शैक्षणिक चौनल, ऑनलाइन कोर्स प्लेटफॉर्म और ई–लर्निंग पोर्टल विद्यार्थियों को पारंपरिक पाठ्यक्रम के साथ–साथ अतिरिक्त ज्ञान अर्जित करने का अवसर देते हैं। इससे न केवल उनकी पढ़ाई में रुचि बढ़ती है, बल्कि रचनात्मकता और समस्या–समाधान की क्षमता भी विकसित होती है।

सोशल मीडिया ने किशोर विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ाने में भी योगदान दिया है। जब वे अपने विचार, रचनात्मक कार्य या प्रोजेक्ट वैश्विक मंच पर साझा करते हैं, तो उन्हें सकारात्मक प्रतिक्रिया और प्रोत्साहन मिलता है, जिससे उनकी अभिव्यक्ति क्षमता और नेतृत्व कौशल विकसित होते हैं। समूह चर्चाओं, ऑनलाइन समुदायों और शैक्षणिक नेटवर्क के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न सांस्कृतिक, भाषाई और सामाजिक पृष्ठभूमियों के लोगों से जुड़ते हैं, जिससे उनका दृष्टिकोण व्यापक होता है और वे वैश्विक नागरिकता की भावना से परिचित होते हैं। इसके अलावा, सोशल मीडिया ने सूचना और समाचार तक पहुँच को भी आसान बना दिया है। किशोर विद्यार्थी किसी भी विषय पर अद्यतन जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, जिससे वे सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूक बनते हैं। यह जागरूकता उन्हें समाज के प्रति जिम्मेदार दृष्टिकोण अपनाने और भविष्य के लिए बेहतर निर्णय लेने में मदद करती है।

किशोर मनोविज्ञान पर डिजिटल शिक्षा का प्रभाव गहराई तक पड़ता है जैसे सिक्के के दो पहलू होते हैं वैसे ही इस प्रभाव के भी सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलते हैं।

सकारात्मक प्रभाव

1. डिजिटल शिक्षा ने किशोरों के सीखने के तरीके को पूरी तरह बदल दिया है। अब वे केवल पाठ्यपुस्तकों और कक्षा–व्याख्यानों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इंटरैक्टिव वीडियो, वर्चुअल सिमुलेशन और ऑनलाइन क्विज के माध्यम से विभिन्न विषयों की जानकारी आकर्षक और रोचक तरीकों से प्राप्त करते हैं। उदाहरण के लिए, विज्ञान पढ़ने वाला विद्यार्थी यूट्यूब या किसी ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म पर 3D एनिमेशन द्वारा रासायनिक अभिक्रियाएँ देख सकता है, जिससे उसकी समझने की क्षमता, विश्लेषणात्मक सोच और समस्या–समाधान कौशल में स्वाभाविक वृद्धि होती है।

2. ऑनलाइन संसाधनों की उपलब्धता किशोरों में आत्मनिर्भरता की भावना भी जगाती है। जैसे कोई विद्यार्थी यदि गणित के किसी कठिन अध्याय को समझने में असमर्थ है, तो वह अपने समयानुसार खान एकेडमी या बायजूस जैसे प्लेटफॉर्म से पढ़ाई करके अपनी शंकाओं का समाधान कर सकता है। इससे वे न केवल आत्मनिर्भर बनते हैं, बल्कि अपने अध्ययन के प्रति जिम्मेदार रवैया भी अपनाते हैं।

3. डिजिटल शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण योगदान किशोरों में तकनीकी कौशल का विकास है। वे कंप्यूटर साक्षरता, इंटरनेट पर सही जानकारी खोजने की क्षमता और डिजिटल संवाद के विभिन्न तरीकों में दक्ष हो जाते हैं। उदाहरण के तौर पर, ऑनलाइन प्रोजेक्ट बनाते समय वे प्रेजेंटेशन टूल्स, ग्राफिक्स डिजाइन और डेटा विश्लेषण जैसे कौशल सीखते हैं, जो उनके भविष्य के करियर के लिए उपयोगी हैं।

4. भावनात्मक रूप से भी डिजिटल शिक्षा का प्रभाव स्पष्ट है। कभी–कभी ऑनलाइन प्रतिस्पर्धा, कठिन असाइनमेंट और तकनीकी दिक्कतों के कारण किशोर तनाव और चिंता महसूस करते हैं। उदाहरण के लिए, धीमे इंटरनेट या लॉग–इन की समस्या के कारण समय पर असाइनमेंट जमा न कर पाने से उनमें आत्म–संदेह और हताशा की भावना उत्पन्न हो सकती है। इसके बावजूद, डिजिटल शिक्षा में ऐसे नवाचार मौजूद हैं जो किशोरों के सीखने को प्रेरक और मनोरंजक बनाते हैं। वीडियो लेक्चर, गेमिफिकेशन, एनिमेटेड लेसन और इंटरैक्टिव क्विज से पढ़ाई एक खेल की तरह लगने लगती है। उदाहरण के लिए, इतिहास पढ़ने वाला विद्यार्थी किसी मोबाइल एप के माध्यम से क्विज खेलते–खेलते ऐतिहासिक घटनाओं को आसानी से याद कर सकता है। इस तरह डिजिटल शिक्षा किशोरों में जिज्ञासा, नवाचार और निरंतर सीखने की स्वाभाविक प्रेरणा को बढ़ावा देती है।

नकारात्मक प्रभाव

1. अत्यधिक स्क्रीन समय और ध्यान भटकाव –डिजिटल शिक्षा में जहाँ अनेक अवसर उपलब्ध हैं, वहीं इसका एक नकारात्मक पहलू यह भी है कि अत्यधिक स्क्रीन समय और ध्यान भटकाने वाले ऐप्स के कारण कई किशोरों का पढ़ाई पर से फोकस हटने लगता है। सोशल मीडिया के निरंतर उपयोग और ऑनलाइन गेम्स जैसी गतिविधियाँ उनके अध्ययन के समय को प्रभावित करती हैं, जिससे उनका शैक्षिक प्रदर्शन गिर सकता है।

2. डिजिटल डिवाइड की समस्या– हर विद्यार्थी को डिजिटल उपकरणों और तेज इंटरनेट की सुविधा समान रूप से उपलब्ध नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों या आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के किशोर इस असमानता के कारण ऑनलाइन पढ़ाई में पिछड़ सकते हैं। यह 'डिजिटल डिवाइड' उनकी शिक्षा में एक गंभीर बाधा बन जाता है।

3. आमने–सामने बातचीत की कमी–लंबे समय तक केवल ऑनलाइन कक्षाओं पर निर्भर रहने से किशोरों में आमने–सामने संवाद करने का आत्मविश्वास घटने लगता है। वर्चुअल मंचों पर सक्रिय रहने के बावजूद, वे वास्तविक जीवन में अपनी बात प्रभावी ढंग से रखने, उचित भाव–भंगिमा और शारीरिक भाषा (Body Language) का प्रयोग करने में कठिनाई महसूस कर सकते हैं। इसके चलते उनकी मौखिक संचार क्षमता और सार्वजनिक रूप से बोलने का कौशल कमजोर पड़ सकता है।

4. तनाव, चिंता और अकेलापन–डिजिटल शिक्षा के साथ जुड़ाव ने कई किशोरों में तनाव और अकेलेपन की भावना को बढ़ाया है। निरंतर स्क्रीन के सामने रहने से मानसिक थकान और एकरसता महसूस होती है। आमने–सामने बातचीत, खेलकूद और समूह में पढ़ाई की कमी के कारण उनका सामाजिक–भावनात्मक विकास प्रभावित होता है, जिससे अवसाद और चिड़चिड़ापन जैसी समस्याएँ भी जन्म ले सकती हैं।

5. तकनीकी बाधाएँ और हीनभावना–ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान नेटवर्क का बाधित होना, असाइनमेंट समय पर न भेज पाना, या खुद को अन्य विद्यार्थियों की तुलना में पीछे महसूस करना, किशोरों में नकारात्मक आत्मबोध और हीनभावना पैदा कर सकता है। इससे उनका आत्मविश्वास कमजोर पड़ता है और वे अपनी क्षमताओं को लेकर संदेह करने लगते हैं।

6. साइबरबुलिंग का खतरा–साइबरबुलिंग का अर्थ है

इंटरनेट, सोशल मीडिया, चौटिंग ऐप्स या ईमेल के माध्यम से किसी व्यक्ति को धमकाना, अपमानित करना या मानसिक रूप से परेशान करना। तकनीकी रूप से सक्रिय लेकिन भावनात्मक रूप से संवेदनशील किशोर इसके शिकार हो सकते हैं। इससे उनका आत्मसम्मान घटता है, मानसिक स्वास्थ्य पर असर पड़ता है और कभी–कभी वे पढ़ाई से भी दूरी बना लेते हैं।

7. ऑनलाइन सुरक्षा और डेटा संरक्षण–ऑनलाइन शिक्षा के दौरान डेटा चोरी, पहचान की जालसाजी, फिशिंग, मैलवेयर अटैक और निजी जानकारी का दुरुपयोग जैसे खतरे बने रहते हैं। चूंकि छोटे विद्यार्थी और किशोर ऑनलाइन दुनिया की जटिलताओं को पूरी तरह नहीं समझ पाते, इसलिए वे आसानी से धोखाधड़ी या हानिकारक सामग्री के प्रभाव में आ सकते हैं। इसीलिए विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों के लिए ऑनलाइन सुरक्षा के प्रति सतर्क रहना अनिवार्य है।

ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियाँ

डिजिटल शिक्षा ने जहाँ विद्यार्थियों को सीखने के अनगिनत अवसर प्रदान किए हैं, वहीं इसके साथ कई गंभीर चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं, जो विशेष रूप से किशोर विद्यार्थियों को प्रभावित करती हैं।

सबसे पहली चुनौती है अत्यधिक स्क्रीन समय। लंबे समय तक मोबाइल, लैपटॉप या टैबलेट के सामने बैठकर पढ़ाई करने से आँखों में तनाव, सिरदर्द और शारीरिक थकान जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। उदाहरण के लिए, कई विद्यार्थी 4–5 घंटे ऑनलाइन कक्षाओं में बैठने के बाद भी होमवर्क और असाइनमेंट के लिए फिर से स्क्रीन का उपयोग करते हैं, जिससे उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है।

दूसरी बड़ी समस्या है डिजिटल डिवाइस। हर विद्यार्थी के पास स्मार्टफोन, कंप्यूटर और हाई–स्पीड इंटरनेट की सुविधा नहीं होती। ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थी, जहाँ नेटवर्क कमजोर है, लाइव क्लास या वीडियो लेक्चर के दौरान बार–बार डिस्कनेक्ट हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, एक छोटे कस्बे का विद्यार्थी खराब नेटवर्क के कारण शिक्षक की बात बीच–बीच में ही सुन पाता है, जिससे पढ़ाई का प्रवाह टूट जाता है।

ध्यान भटकने की समस्या भी ऑनलाइन शिक्षा में आम है। पढ़ाई के दौरान सोशल मीडिया नोटिफिकेशन, ऑनलाइन गेम्स और वीडियो देखने का प्रलोभन विद्यार्थियों का ध्यान भंग कर देता है। कई बार वे पढ़ाई के समय ही यूट्यूब पर मनोरंजन से जुड़े वीडियो देखने लगते हैं। इसके अलावा, सामाजिक संपर्क की कमी भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। पारंपरिक कक्षाओं में विद्यार्थी सहपाठियों से बातचीत, समूह कार्य और खेल–कूद में भाग लेकर सामाजिक कौशल विकसित करते हैं, जबकि ऑनलाइन माध्यम में यह अवसर सीमित हो जाता है। उदाहरण के लिए, जो विद्यार्थी पहले स्कूल में सक्रिय और मिलनसार थे, वे घर में अकेले रहकर धीरे–धीरे संकोची और चुप रहने वाले हो सकते हैं।

तकनीकी समस्याएँ भी विद्यार्थियों को निराश करती हैं। अचानक बिजली चले जाना, इंटरनेट का धीमा होना या डिवाइस में खराबी आ जाना, पढ़ाई में रुकावट पैदा करता है। एक अन्य गंभीर चुनौती है साइबर सुरक्षा और साइबरबुलिंग। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर कई बार विद्यार्थी अनजाने में हानिकारक लिंक पर क्लिक कर देते हैं, जिससे उनका डेटा चोरी हो सकता है। इसके अलावा, चौट या सोशल मीडिया ग्रुप में अपमानजनक संदेश भेजकर उन्हें परेशान किया जा सकता है, जो उनके मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचा सकता है।

अंत में, भावनात्मक दबाव और तनाव भी ऑनलाइन शिक्षा में देखा गया है। निरंतर स्क्रीन के सामने रहना, तकनीकी दिक्कतें और प्रतिस्पर्धा का माहौल कई किशोरों में चिंता, हताशा और अकेलेपन की भावना पैदा करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया आधुनिक युग का एक शक्तिशाली उपकरण है, जो किशोर विद्यार्थियों को सीखने, सोचने, अभिव्यक्त करने और समाज से जुड़ने के असीम अवसर प्रदान करता है। संतुलित उपयोग के साथ यह उनके बौद्धिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को नई दिशा देने में सक्षम है और उन्हें 21वीं सदी की प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया के लिए तैयार करता है।

संदर्भ

1. Kaur, H. & Sharma, R- (2022)- Impact of Social Media on Academic Performance of Adolescents- International Journal of Education and Technology] 14(2)] 45–53-

2. UNESCO (2021)- Social Media and Education: Opportunities and Challenges- UNESCO Publishing.

3. Panjeti&Madan, V. N., & Ranganathan, P- (2023)- Impact of screen time on children*s development: Cognitive] language] physical] and social and emotional domains- Multimodal Technologies and Interaction] 7(5)] 52- https://doi-org/10-3390/mti7050052 MDPI

4. Dai, Y., & Ouyang, N- (2025)- Excessive screen time is associated with mental health problems and ADHD in US children and adolescents: Physical activity and sleep as parallel mediators [Preprint]- arXiv- https://doi-org/10-48550/arXiv-2508-10062 arXiv

5. Zhaleh, R., & Nillas, L. A. (2021)- Digital divide: Low&income students and online learning- Illinois Wesleyan University- https://digitalcommons-iwu-edu/jwprc/2021/schedule/46/ Illinois Wesleyan University

6. Li, X., & Zhang, Y- (2020)- Family conditions and the accessibility of online education: The digital divide between urban and rural areas in China- Sustainability] 13(15)] Article 8590- https://doi-org/10-3390/su13158590 MDPI

7. The digital divide in online education: Inequality in digital readiness- (n-d-)- In PMC- https://doi-org/10-3390 (Note: Specific author and year not provided) PMC

8. Remote schooling and screentime during COVID-19- (n.d.)- In PMC- https://doi-org/10-3390 (Note: Specific author and year not provided) PMC

नारी शक्ति : समाज और राष्ट्र की प्रगति की दुरी

Dr Ranjana Gupta
Assistant professor
Aklank College of Education,Basant Vihar,
Kota Mob. 6.9001917299
g.ranjan2207@gmail.com

सारांश :

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक नारी शक्ति समाज और राष्ट्र की प्रगति की आधारशिला रही है। भारतीय संस्‍ति में नारी को 'शक्ति स्वरूपा' के रूप में मान्यता प्राप्त है। शिक्षा, राजनीति, विज्ञान, सामाजिक सुधार, उद्यमिता, खेलकूद तथा संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। महिला सशक्तिकरण मात्र सामाजिक आवश्यकता नहीं, बल्कि यह राष्ट्रीय विकास का अनिवार्य अंग है।

प्रमुख शब्द

नारी शक्ति, शिक्षा, राजनीति, विज्ञान, उद्यमिता, सामाजिक परिवर्तन, खेलकूद, संस्कृति, महिला सशक्तिकरण

भूमिका

भारतीय समाज में नारी को आदिकाल से ही सम्मानजनक स्थान प्राप्त रहा है। वेदों और पुराणों में नारी को गृह लक्ष्मी' और 'शक्ति स्वरूपा' के रूप में चित्रित किया गया है। किंतु इतिहास के अनेक कालखंडों में उन्हें सामाजिक बंधनों और रूढ़िवादिता का सामना करना पड़ा। समय–समय पर भारतीय महिलाओं ने सामाजिक कुरीतियों को चुनौती दी और अपने संघर्षों के बल पर नई राहें प्रशस्त कीं।

आज नारी शक्ति केवल पारिवारिक दायरे तक सीमित न रहकर राष्ट्र निर्माण, ज्ञान सृजन, सांस्कृतिक संरक्षण और आर्थिक विकास में अग्रणी भूमिका निभा रही है।

1. शिक्षा के क्षेत्र में योगदान

स्त्री शिक्षा को समाज सुधार का सबसे सशक्त माध्यम माना गया है। सवित्रीबाई फुले ने स्त्री शिक्षा की नींव रखकर एक नई क्रांति की शुरुआत की। आधुनिक समय में अनेक महिला वैज्ञानिक, शोधार्थी और प्रोफेसर वैश्विक स्तर पर अपने अनुसंधान से समाज को दिशा प्रदान कर रही हैं।महिला शिक्षा न केवल परिवार का बौद्धिक स्तर उठाती है, बल्कि यह राष्ट्र की उन्नति का भी आधार बनतीं है।

2. सामाजिक क्षेत्र में योगदान

नारी शक्ति ने समाज सुधार और परिवर्तन आंदोलनों में अग्रणी भूमिका निभाई। स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का प्रमुख साधन बने। दहेज, बाल विवाह, पर्दा प्रथा जैसी कुरीतियों के विरुद्ध जनजागरण में महिलाओं ने सक्रिय भागीदारी निभाई।

आज महिलाएँ सामाजिक सेवा संगठनों, गैर–सरकारी संस्थाओं तथा जनकल्याणकारी योजनाओं में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही है ।

3. राजनीतिक क्षेत्र में योगदान

स्वतंत्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई, कस्तूरबा गांधी, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली जैसी विभूतियों का योगदान अमूल्य रहा। स्वतंत्र भारत में इंदिरा गांधी पहली महिला प्रधानमंत्री के रूप में विश्व राजनीति में पहचान बनीं।प्रतिभा पाटिल (भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति), सुषमा स्वराज और स्मृति ईरानी जैसी नेत्रियों ने लोकतांत्रिक व्यवस्था में महिलाओं की नेतृत्व क्षमता को स्थापित किया।

4.विज्ञान और प्रौद्योगिकी में योगदान

कल्पना चावला ने अंतरिक्ष विज्ञान में भारत का नाम विश्व पटल पर अंकित किया। टेसी थॉमस को

'मिसाइल वुमन ऑफ इंडिया' कहा जाता है। गीता गोपीनाथ जैसी विद्वान महिलाओं ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की वैज्ञानिक एवं आर्थिक पहचान को मजबूत किया। इसरो (ISRO) और डी.आर.डी.ओ. में महिलाओं की भागीदारी लगातार बढ़ रही है।

आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्र में योगदान

महिला उद्यमिता भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ बन रही है। किरण मजूमदार शॉ, फाल्गुनी नायर और वंदना लूथरा जैसी उद्यमियों ने उद्योग जगत में नया आयाम जोड़े हैं। महिलाएँ आज स्टार्टअप, वित्तीय क्षेत्र और कॉर्पोरेट जगत में अपनी पहचान बना रही हैं।

6. खेलकूद और सांस्कृतिक क्षेत्र में योगदान

भारतीय महिला खिलाड़ियों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्णिम उपलब्धियाँ हासिल की हैं। पी.टी. ऊषा, साइना नेहवाल, पी.वी. सिंधु, मीराबाई चानू, मैरीकॉम जैसी खिलाड़ी देश का गौरव बनीं।

कला, साहित्य, संगीत और सिनेमा के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान भी अविस्मरणीय है। साहित्य में महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम, संगीत में लता मंगेशकर, और सिनेमा में अनेक महिला कलाकारों ने समाज को नई दृष्टि प्रदान की।

नारी शक्ति की प्रगति केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज और राष्ट्र की समग्र उन्नति का प्रतीक है। शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण महिलाओं को स्वतंत्र बनाता है। राजनीति और विज्ञान में उनकी भागीदारी से राष्ट्र को नई दिशा मिलती है। खेलकूद और संस्कृति में उनकी सफलता भारतीय पहचान को विश्व पटल पर मजबूत करती है।

फिर भी चुनौतियाँ अभी शेष हैं– जैसे लिंग असमानता, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की कमी, सामाजिक रूढ़िवादिता और रोजगार में अवसरों की असमानता। इन बाधाओं को दूर करना ही वास्तविक महिला सशक्तिकरण की ओर कदम होगा।

निष्कर्ष

नारी शक्ति आज विश्व स्तर पर मेहनत, संघर्ष और नेतृत्व क्षमता के बल पर नई ऊँचाइयाँ छू रही है। भारतीय समाज और राष्ट्र की प्रगति तभी संभव है जब महिलाओं को समान अवसर, संसाधन और सम्मान मिले। शिक्षा, राजनीति, विज्ञान, अर्थव्यवस्था और संस्ःति . सभी क्षेत्रों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी संतुलित और सतत विकास के लिए अनिवार्य है।

नारी शक्ति वास्तव में समाज और राष्ट्र की प्रगति की धुरी है।

संदर्भ सूची

1. अग्निहोत्री, एस. (2019). भारतीय समाज और शिक्षा में महिला का योगदान. नई दिल्लीरू प्रकाशन संस्थान।

2. गुप्ता, आर. (2018). भारतीय राजनीति में महिला नेतृत्व. जयपुर, साहित्य सदन।

3. चतुर्वेदी, ए. (2022). स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएँ. वाराणसी ज्ञानगंगा प्रकाशन।

4. जोशी, पी. (2020). महिला उद्यमिता और भारतीय अर्थव्यवस्था. मुंबई आर्थिक सर्वेक्षण प्रकाशन।

5. कुमार, एस. (2020). सामाजिक परिवर्तन और महिला आंदोलन. दिल्ली समाजशास्त्र भवन।

6. मिश्रा, ए. (2017). भारतीय खेल और महिला शक्ति. पटना खेल साहित्य केंद्र।

7. नायर, वी. (2021). भारतीय विज्ञान में महिलाएँ. चेन्नईः टेक्निकल पब्लिकेशन।

8. सेन, क. (2022). भारतीय संस्कृति और नारी योगदान. कोलकाता : संस्कार पब्लिकेशन।

9. शर्मा, डी. (2021). शिक्षा में महिलाओं की भूमिका. भोपाल, अकादमिक बुक्स।

10. सिंह, के. (2019). अंतरिक्ष विज्ञान और भारतीय महिलाएँ. नई दिल्ली, वैज्ञानिक शोध संस्थान।

जिला स्तरीय वालीबॉल खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर रणनीति निर्माण का प्रभाव

प्रो. ओम सिंह राठौड़,
अधिष्ठाता, शिक्षा संकाय,
भोपाल नोबल्स युनिवर्सिटी, उदयपुर
Mob no. - 9461259801
EMail id-
umsinghrathore1966@gmail.com

नलिनी दशोरा
शोधार्थी, शा.शि.
भोपाल नोबल्स युनिवर्सिटी,
उदयपुर

सारांश

जिला स्तरीय खेल प्रतियोगिताओं में खिलाड़ी साधारण प्रशिक्षण के आधार पर ही खेलते हैं। उन्हें संसाधनों की कमी से भी जूझना पड़ता है। आधारभूत तथा संरचनात्मक सुविधाओं का भी अभाव जिला स्तरीय खिलाड़ियों पर दबाव डालता है। वॉलीबॉल भी एक ऐसा ही खेल है जो की इन समस्याओं से अछूता नहीं है। वॉलीबॉल खेल में इन समस्याओं तथा सीमाओं के रहते हुए यदि टीम को एक रणनीति के आधार पर खिलाया जाए तो उसके प्रदर्शन में किस प्रकार से परिवर्तन आ सकता है, उसकी मैच जीतने की क्षमता तथा उसकी स्कोरिंग में किस प्रकार परिवर्तन आ सकता है यह जानने का प्रयास इस शोध कार्य के अंतर्गत किया गया। इसके तहत 20 टीमों को दो भागों में बांटकर पहले समूह की टीमों को रणनीति के आधार पर प्रशिक्षण दिया गया तथा दूसरे समूह की टीमों को बिना किसी रणनीति बनाएं सामान्य प्रशिक्षण दिया गया। इन दोनों वर्गों की वॉलीबॉल टीमों के द्वारा खेले गए 10 वॉलीबॉल मैचों में प्रदर्शन को आधार मानते हुए उनका तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिससे कि वॉलीबॉल खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर रणनीति निर्माण के प्रभावों का सटीकता से मापन हो सके। शोध ने दर्शाया की वॉलीबॉल खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर रणनीति निर्माण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

मुख्य शब्द – जिला स्तरीय, वॉलीबॉल, रणनीति, प्रदर्शन

1. प्रस्तावना

खेल एक ऐसी विधा है जिसमें की जोश, उत्साह, उमंग और कौशल के साथ–साथ सही व्यूह रचना होना भी बड़ा ही कारगर रहता है। वॉलीबॉल खेल जिला स्तर पर ही क्यों न खेला जाए फिर भी खिलाड़ी सभी पहलुओं यथा वॉली, पास, शॉट, सर्व, ब्लॉक, डिग, स्मैश इत्यादि से भली भांति परिचित व प्रशिक्षित होते हैं किंतु फिर भी उनके आपसी खेल का सामन्जस्य किसी प्रकार से बैठाया जाए, उनके द्वारा किस प्रकार से प्रतिद्वंद्वी के शॉट का उत्तर दिया जाए, किस प्रकार से नीति निर्माण करते हुए तालमेल बैठकार खेला जाए यह एक अच्छी रणनीति से ही संभव हो सकता है। इसके लिए विशिष्ट प्रयासों की आवश्यकता होती है किंतु क्या यह रणनीति इतनी महत्वपूर्ण होती है कि इसके आधार पर जीत या हार का फैसला हो सकता है या खिलाड़ियों की स्कोरिंग क्षमता भी काफी प्रभावित हो सकती है यही जानने का यत्न प्रायोगिक रूप से इस शोध के अंतर्गत किया गया।

सग्रो एफ. और अन्य (2022) विद्यालय स्तर के 81 बच्चों पर एक प्रयोगात्मक शोध कार्य किया गया। इन विद्यार्थियों की औसत आयु 14.70 वर्ष थी। इनमें से 45 विद्यार्थियों को शारीरिक प्रशिक्षण के साथ–साथ खेल आधारित तकनीकी प्रशिक्षण दिया गया जबकि अन्य 36 विद्यार्थियों को पारंपरिक तकनीकी प्रशिक्षण ही दिया गया। दोनों ही वर्गों के विद्यार्थियों के कौशल में सार्थक अंतर तीन माह के प्रशिक्षण के उपरांत देखा गया।1

हेनिंगर एम. एल. और अन्य (2006) संयुक्त राज्य अमेरिका में की गई शोध के अनुसार ऐसे खिलाड़ी जो कि नया–नया वॉलीबॉल खेल रहे हो उन्हें तकनीकी प्रशिक्षण की बेहद आवश्यकता होती है। यदि इसके साथ ही उन्हें खेल रणनीति का भी साथ–साथ प्रशिक्षण दिया जावे तो उनकी खेल भावना तथा खेल की समझ में सार्थक सुधार होता है। युवा खिलाड़ियों को आरंभ से ही सही प्रशिक्षण

के माध्यम से निर्मित किया जा सकता है। कुछ समय बीत जाने के पश्चात उनमें अधिक परिवर्तन करना बेहद कठिन हो जाता है।2

केलिया ए. ए., और अन्य (2024) वॉलीबॉल एक वैश्विक खेल है जोकि महिलाओं व पुरुषों दोनों द्वारा समान रूप से खेला जाता है। इसमें शारीरिक गतिविधि जैसे कि कूदने, सही जगह पर पहुंचने, तेजी से अपनी स्थिति बदलने की विधा बहुत बड़ी भूमिका अदा करती है। खिलाड़ी में त्वरित गति से प्रतिक्रिया देने की क्षमता सही प्रशिक्षण के माध्यम से ही विकसित होती है। प्रत्येक प्रशिक्षण की अपनी कुछ सीमाएं होती है जिन्हें ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम का नियोजन करना होता है। इसके अतिरिक्त खिलाड़ियों के स्तर, क्षमता, योग्यता को भी अवश्य ध्यान रखना चाहिए।3

मेहता ए. और बैग ए. (2018) व्यवसाय के अंतर्गत सुनियोजित रूप से समंकों का संग्रहण व विश्लेषण बहुत जरूरी होता है। इसी प्रकार खेलों में भी खिलाड़ियों के प्रत्येक पहलू से संबंधित जानकारी का व्यवस्थित रूप से आंकलन तथा उसका विश्लेषण करना जरूरी है तभी रणनीति सही प्रकार से बनाई जा सकती है और प्रतिस्पर्धियों पर विजय अर्जित की जा सकती है। सिर्फ यह कह देने से की अच्छा प्रयास किया जाएगा, सभी कार्य उचित रूप से किया जाएगाय यह काफी नहीं है। इसके लिए प्रत्येक बिंदु का स्पष्ट से निर्धारण व उसके अनुसार रणनीति का निर्माण जरूरी है।4

लोला ए. सी., त्जेटजिस जी. सी. और जेटू एच. (2012) 10 से 12 आयु वर्ग की 60 बालिकाओं पर एक शोध कार्य किया गया जिसके अंतर्गत नया –नया वॉलीबॉल खेलने वाली बालिकाओं का चयन किया गया। इन पर एक प्रयोगात्मक शोध किया गया। इसके लिए इन्हें सर्वप्रथम चार वर्गों में विभक्त किया गया। पहले वर्ग को स्पष्ट रूप से खेल की बारीकियों से संबंधित सिद्धांतों की जानकारी दी गई। दूसरे समूह को प्रक्रियात्मक जानकारी दी गई। तीसरे समूह को सैद्धांतिक तथा प्रक्रियात्मक दोनों ही जानकारी दी गई तथा चौथे समूह को किसी भी प्रकार का प्रशिक्षण न देते हुए उन्हें स्वतंत्र रूप से विकसित होने का अवसर दिया गया। तीसरा समूह जिसे की सैद्धांतिक व प्रक्रियात्मक दोनों ही प्रकार की जानकारी दी गई उनके प्रदर्शन में अन्य सभी समूह की अपेक्षा सार्थक रूप से अधिक सुधार देखा गया। उन वॉलीबॉल खिलाड़ियों में खेल की प्रत्येक विधा में निखार आया।5

2. उद्देश्य

i. जिला स्तरीय वॉलीबॉल प्रतियोगिताओं में टीम प्रदर्शन पर रणनीति निर्माण के प्रभाव का मूल्यांकन करना।

ii. रणनीति अपनाने वाली और न अपनाने वाली जिला स्तरीय वॉलीबॉल टीमों के प्रदर्शन की तुलना करना।

3. परिकल्पना

i. रणनीति निर्माण का जिला स्तरीय वालीबॉल खिलाड़ियों के मैच जीतने पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

ii. रणनीति निर्माण का जिला स्तरीय वालीबॉल खिलाड़ियों की स्कोरिंग पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

4. अनुसंधान पद्धति

इस शोध कार्य को निष्पादित करने के लिए एक प्रयोगिक अध्ययन किया गया जिसके तहत रणनीति अपनाने वाली 10 टीमों का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया जो की जिला स्तरीय वालीबॉल स्पर्धा में भाग लेती हैं साथ ही 10 अन्य ऐसी टीमों का भी चयन किया गया जिन्हें कोई विशेष रणनीति नहीं सिखाई गई। इनके द्वारा खेले गए विगत 10 मैचों का विश्लेषण किया गया।

स्वतंत्र चर – रणनीति निर्माण की उपस्थिति या अनुपस्थिति

निर्भर चर – टीम का प्रदर्शन (जीते गए मैचों की संख्या, अंकों का औसत)

नियंत्रित चर – खिलाड़ियों की आयु, प्रशिक्षण की अवधि, खेल अनुभव

इन दोनों ही समूह की वॉलीबॉल टीमों के प्रदर्शन को तालिका 1 के माध्यम से दर्शाया गया है।

5. संकलित समंक विश्लेषण

तालिका 1: वालीबॉल खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर रणनीति निर्माण का प्रभाव

टीम	रणनीति अपनाई	खेले गए मैच	जीते गए मैच	औसत अंक (प्रति मैच)
A1	हाँ	10	7	22.4
A2	हाँ	10	8	23.5
A3	हाँ	10	6	20.6
A4	हाँ	10	9	24.2
A5	हाँ	10	7	22.2
A6	हाँ	10	7	20.8
A7	हाँ	10	6	19.5
A8	हाँ	10	4	16.3
A9	हाँ	10	5	18.4
A10	हाँ	10	8	22.8
B1	नहीं	10	3	13.5
B2	नहीं	10	2	14.7
B3	नहीं	10	3	12.2
B4	नहीं	10	4	17.4
B5	नहीं	10	4	18.5
B6	नहीं	10	5	20.2
B7	नहीं	10	2	14.3
B8	नहीं	10	5	20.7
B9	नहीं	10	1	11.4
B10	नहीं	10	4	16.3

चार्ट 1

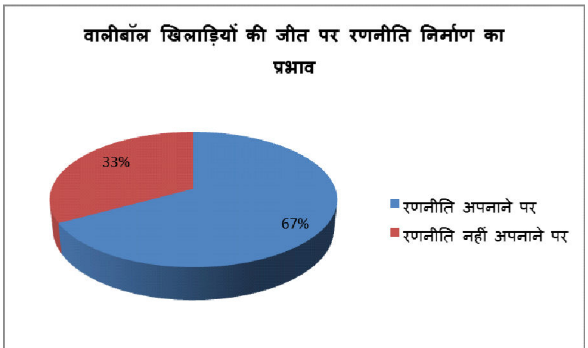

जिला स्तरीय वालीबॉल खिलाड़ियों द्वारा रणनीति बनाकर खेलने पर जीत का औसत 67 प्रतिशत रहा वहीं दूसरी ओर बिना रणनीति अपनाए खेलने पर जीत का औसत मात्र 33 प्रतिशत रहा। यदि टी परीक्षण के आधार पर सार्थकता को देखा जावे तो टी का माप 5.36 रहा जो की तालिका मन 2.26 से अधिक है यह दर्शाता है कि रणनीति निर्माण का वॉलीबॉल खिलाड़ियों के मैच जीतने पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। पी का आंकलित माप भी 0.00 है जो की 0.05 से कम है जो पुनः इस बात की पुष्टि करता है कि रणनीति निर्माण का मैच जीतने की क्षमता पर सार्थक प्रभाव जिला स्तरीय वालीबॉल खिलाड़ियों पर पड़ता है। अतः पहली परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है।

तालिका 2: रणनीति निर्माण का जिला स्तरीय वालीबॉल खिलाड़ियों के मैच जीतने पर प्रभाव की सार्थकता

स्थिति	संख्या	माध्य जीत	मानक विचलन	स्वातंत्र्य चर	टी माप	पी माप
रणनीति अपनाने पर	10	6.7	1.49	18	5.36	0.00
रणनीति नहीं अपनाने पर	10	3.3	1.34			

जिला स्तरीय वालीबॉल खिलाड़ियों द्वारा रणनीति बनाकर खेलने पर प्रति मैच औसत स्कोर 21.07 प्रतिशत रहा वहीं दूसरी ओर बिना रणनीति अपनाए खेलने पर प्रति मैच औसत स्कोर मात्र 15.92 प्रतिशत रहा।

चार्ट 2

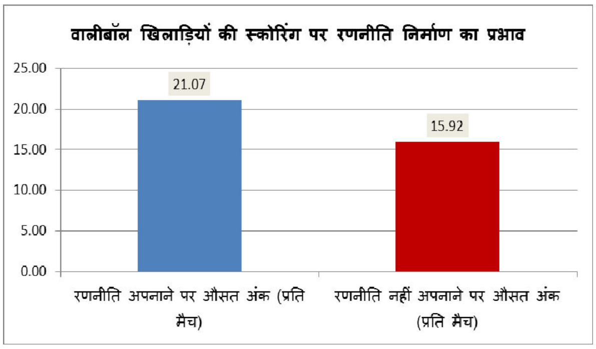

यदि टी परीक्षण के आधार पर प्रति मैच औसत स्कोर सार्थकता को देखा जावे तो टी का माप 4.01 रहा जो की तालिका मान 2.26 से अधिक है यह दर्शाता है कि रणनीति निर्माण का वॉलीबॉल खिलाड़ियों के स्कोर करने पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। पी का आंकलित माप भी 0.00 है जो की 0.05 से कम है जो पुनः इस बात की पुष्टि करता है कि रणनीति निर्माण का मैच स्कोर करने की क्षमता पर सार्थक प्रभाव जिला स्तरीय वालीबॉल खिलाड़ियों पर पड़ता है। अतः दूसरी परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता जाता है।

तालिका 3: रणनीति निर्माण का जिला स्तरीय वालीबॉल खिलाड़ियों की स्कोरिंग पर प्रभाव की सार्थकता

स्थिति	संख्या	माध्य अंक प्रति मैच	मानक विचलन	स्वातंत्र्य चर	टी माप	पी माप
रणनीति अपनाने पर	10	21.07	2.46	18	4.01	0.00
रणनीति नहीं अपनाने पर	10	15.92	3.24			

6. निष्कर्ष

खिलाड़ियों की योग्यता अनुसार बनाई गई उचित रणनीति का सीधा लाभ खिलाड़ियों की मैच जीतने की क्षमता पर पड़ता है। इससे उनकी जीत की संभावनाओं में सार्थक वृद्धि होती है साथ ही उनकी स्कोरिंग क्षमता भी सार्थक रूप से बढ़ जाती है। खिलाड़ियों के द्वारा जो प्रदर्शन होता है उसमें एक निश्चित रूप से सुधार जिला स्तर पर प्रतियोगिताओं मे देखा जा सकता है। प्रतिस्पर्धा में अपने प्रदर्शन व कौशल के अनुरूप प्रदर्शन करने की योग्यता खिलाड़ियों में तभी रह सकती है जबकि उनमें दबाव सोखने की क्षमता हो तथा वह अपना संतुलन बनाए रखने के लिए एक सोची समझी रणनीति के तहत खेले। तभी वह प्रतिस्पर्धी पर सकारात्मक रूप से प्रहार करते हुए नैसर्गिक खेल खेलते हुए तथा बिना दबाव के अच्छा प्रदर्शन करते है। यह नितांत आवश्यक है कि खिलाड़ियों को अच्छा रणनीतिक प्रशिक्षण दिया जावें फिर चाहे वह जिला स्तर ही क्यों ना हो। यह सोच निरर्थक है की रणनीति का निर्माण राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों के लिए ही उपयुक्त है इसकी आवश्यकता जिला स्तर से ही आरंभ हो जाती है।

7. सन्दर्भ

1. सग्रो एफ., बार्का एम., स्केम्ब्री आर., कोप्पोला आर. और लिपोमा एम. (2022) वॉलीबॉल कक्षाओं के दौरान विभिन्न शिक्षण रणनीतियों के छात्रों के मनोचालक अधिगम परिणामों पर प्रभाव। स्पोर्ट साइंसेज फॉर हेल्थ, 18(2), 579–587।

2. हेनिंगर एम. एल., पग्नानो के., पैटन के., ग्रिफिन एल. एल. और डॉड्स पी. (2006) खेल खेलने के संदर्भ में नए वॉलीबॉल खिलाड़ियों का खेलों, रणनीतियों, युक्तियों और निर्णय–निर्माण का ज्ञान। न्यूजीलैंड फिजिकल एजुकेटर, 39(1), 34।

3. केलिया ए. ए., रामटेके एस. यू., बूब, एम. ए., सोमैया के. जे. और कोलिया ए. (2024) वॉलीबॉल खिलाड़ियों के प्रदर्शन में वृद्धिरू चुस्ती, विस्फोटक शक्ति और ताकत पर प्रशिक्षण हस्तक्षेपों और उनके प्रभाव की एक व्यापक समीक्षा। क्यूरियस, 16(1)।

4. मेहता ए., और बैग ए. (2018) संगठित और असंगठित रियल एस्टेट में सीआरएम की प्रभावशीलता।

5. लोला ए. सी., त्जेटजिस जी. सी. और जेटू एच. (2012) वॉलीबॉल सर्विंग में निर्णय–निर्माण के विकास पर निहित और स्पष्ट अभ्यास का प्रभाव। पर्सेप्चुअल एंड मोटर स्किल्स, 114(2), 665–678।

Personal Values and Their Influence on Professional Ethics of Senior Secondary School Teachers

Dr. Rajender Kumar Godara,
Research Supervisior
Dean Education & Controller of Examination,
Tantia University Sri Ganganagar.

Anjula Swami,
Research Scholar,
Department of Education
Tantia University, Sriganganagar

Abstract

This study explores the relationship between personal values and professional ethics among government and private senior secondary school teachers in Bikaner district, Rajasthan. Using the Personal Value Questionnaire (PVQ) and a self-constructed Professional Ethics Perception Scale for School Teachers (PEPST), the research highlights significant positive correlations between democratic, religious, social, knowledge, and family prestige values with professional ethics. Conversely, economic, hedonistic, and power values were found to have negative correlations. The findings underscore the critical role of teachers' value orientations in shaping their ethical behavior, with implications for teacher training and educational policy.

Keywords:

personal values, professional ethics, senior secondary teachers, Bikaner, PVQ, PEPST

1. Introduction

Personal values and professional ethics are central to the identity and practice of teachers. Teachers' values not only guide their classroom interactions but also influence their adherence to ethical codes. In the Indian context, where education plays a transformative role, understanding this linkage is vital for enhancing teaching quality and professional accountability.

2. Methodology

- Sample: Teachers from eight government and eight private senior secondary schools in Bikaner district, Rajasthan.

- Tools:

  - Personal Value Questionnaire (PVQ) - to measure values across democratic, religious, social, knowledge, family prestige, economic, hedonistic, power, and other dimensions.

  - Professional Ethics Perception Scale for School Teachers (PEPST) - self-constructed, covering obligations toward students, parents/community, and profession/colleagues.

- Analysis: Mean, standard deviation, correlation, t-tests, ANOVA, and regression techniques.

3. Results

- Government teachers showed the highest preference for knowledge values (mean = 15.09), while private teachers favored democratic and knowledge values (mean = 14.44, 14.48).
- Both groups least valued power as a guiding principle.
- Professional ethics perception was very good among some government schools and consistently good across private schools.
- Correlation analysis revealed positive association between democratic, religious, social, knowledge, and family prestige values with professional ethics, while economic, hedonistic, and power values correlated negatively.

4. Discussion

The findings align with earlier studies (Sharma, 2016; Melo, 2003) emphasizing the role of intrinsic values such as democracy and knowledge in promoting ethical behavior. Teachers who prioritize self-interest values (economic, power) are less likely to maintain ethical standards. The negligible difference between government and private school teachers' ethical perception suggests that professional ethics is equally emphasized across institutional types.

5. Conclusion

The study concludes that teachers' personal values significantly shape their professional ethics. Educational policymakers and institutions should integrate value-based training in teacher education programs to reinforce democratic and knowledge-oriented values. Regular professional development sessions focused on ethics could further strengthen teachers' moral decision-making in complex educational settings.

References

- Melo, M. (2003). Ethics in the teaching profession: A comparative analysis. Journal of Educational Ethics, 12(3), 201-213.
- Saat, M. (2004). Teachers' professional ethics: Cross-cultural perspectives. Education and Society, 22(2), 145-160.
- Sharma, R. (2016). Values and ethics in teaching profession in India. Indian Journal of Teacher Education, 8(1), 25-34.

जीवन में सामाजिक बुद्धिमत्ता का महत्व

डॉ. वंदना जैन
शोध निर्देशिका
महात्मा ज्योति राव फूले विश्वविद्यालय
जयपुर

शैली शर्मा
शोधार्थी
महात्मा ज्योति राव फूले विश्वविद्यालय
जयपुर

प्रस्तावना :

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में कुछ व्यवहारिक परिवर्तन लाना है ताकि वह समाज में एक प्रभावी जीवन जी सके। यह व्यक्ति में नई परिस्थितियों के अनुकूल ढ़लने, समस्या समाधान की क्षमता विकसित करने, ज्ञान, जागरुकता, कौशल, मूल्य, दृष्टिकोण आदि विकसित करने में मदद करती है। वास्तव में, दूसरों की मदद करने की इच्छा एक आवश्यक दृष्टिकोण है जिसके द्वारा व्यक्ति एक संतोषजनक सामाजिक जीवन जी सकता है। सामाजिक ज्ञान, सामाजिक जागरुकता, सामाजिक परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमता और मनोवैज्ञानिक गुण जैसे स्वभाव, भावना, बुद्धि आदि, ऐसे सकारात्मक व्यवहार के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

समाज में सफल जीवन जीने के लिए किसी व्यक्ति के लिए सामाजिक बुद्धिमत्ता अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो समाज के अन्य सदस्यों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाने और बनाए रखने में मदद कर सकती है। एक सुसमायोजित व्यक्ति वह होता है जो समाज की आवश्यकताओं के अनुसार ढ़ल जाता है और समाज के अन्य सदस्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर लेता है।

सामाजिक बुद्धिमत्ता का अर्थ– सामाजिक बुद्धिसत्ता, जटिल सामाजिक संबंधी और परिवेशों को प्रभावी ढंग से समझाने और उनमें सामंजस्य बिठाने के लिए अपने विशाल मस्तिष्क का उपयोग करने की विशिष्ट मानवीय क्षमता का वर्णन करती है।

अल्ब्रेक्ट (2005) सामाजिक बुद्धि को दूसरों के साथ मिलकर उनका सहयोग प्राप्त करने की क्षमता के रूप में परिभाषित करते हैं।

जोन्स और डे (1997) के अनुसार, सामाजिक बुद्धिमत्ता ''समस्याओं को हल करने के लिए सामाजिक ज्ञान को लागू करने की क्षमता और लचीलापन'' है।

मार्ली (1986) सामाजिक बुद्धिमत्ता को ''पारस्परिक समस्याओं को समझाने और हल करने में स्वयं और दूसरों की भावनाओं, विचारों और व्यवहारों का उपयोग करने की क्षमता'' के रूप में परिभाषित करते हैं।

सामाजिक बुद्धिमत्ता दूसरों की जरूरतों और हितों के प्रति संवेदनशीलता, जिसे कभी–कभी 'सामाजिक रडार' भी कहा जाता है, उदारता और विचारशीलता का एक दृष्टिकोण, और किसी भी परिवेश में लोगों के साथ सफलतापूर्वक बातचीत करने के लिए व्यावहारिक कौशल का एक समूह है।

सामाजिक बुद्धिमत्ता की विशेषताएँ –

सामाजिक बुद्धि की कुछ विशेषताएँ हैं जिन पर विभिन्न लेखकों ने ध्यान दिया है। सामाजिक बुद्धि की विशेषताएँ इसके अर्थ को बेहतर ढंग से स्पष्ट करेंगी। निम्नलिखित सामाजिक बुद्धि की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. दूसरों को समझाने की क्षमता

2. मानवीय रिश्तों में समझदारी से काम लेने की क्षमता

3. दूसरों के साथ मिलजुल कर रहने की क्षमता

4. मौखिक और अशाब्दिक व्यवहार को पढ़ने और व्याख्या करने की क्षमता

5. दूसरों के साथ महानुभूति रखने की क्षमता

6. लोगों में रुचि

7. स्वीकृत व्यवहार का अभ्यास

8. दूसरों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखना

1. दूसरों को समझाने की क्षमता – थार्नडाइक ने सामाजिक बुद्धि को दूसरों को समझने की क्षमता के रूप में रेखांकित किया था। दूसरों को समझने का अर्थ उनकी मानसिक स्थिति, जैसे निर्णय, इरादे, इच्छाएँ और मूल्य, को समझना भी हो सकता है। जो लोग दूसरों को समझते हैं, उनकी सामाजिक बुद्धि भी उच्च हो सकती है क्योंकि दूसरों को समझने से लोगों की एक–दूसरे के साथ तालमेल बिठाने और बातचीत करने की क्षमता बढ़ जाती है।

2. मानवीय रिश्तों में समझदारी से काम लेने की क्षमता – सामाजिक बुद्धिमत्ता लोगों को किसी भी मानवीय रिश्तों में समझादारी और उद्देश्यपूर्ण तरीके से काम करने में मदद करती है। लोग उस व्यक्ति की सराहना करते हैं जो दूसरों के साथ समझदारी से बात करना और व्यवहार करना जानता है।

3. दूसरों के साथ मिलजुल कर रहने की क्षमता – मॉस और हंट (1927) ने सामाजिक बुद्धि को दूसरों के साथ मिलजुल कर रहने की क्षमता के रूप में समझाया। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि मनुष्य अकेले नहीं, बल्कि एक समुदाय या समाज में रहते है। जिस व्यक्ति की सामाजिक बुद्धि उच्च होगी, वह समाज में सार्थक रूप से रह सकेगा। उसे अन्य लोगों के साथ व्यवहार करने में कोई समस्या नहीं होगी। वे एक–दूसरे के साथ तालमेल बिठाना सीखेंगे।

4. मौखिक और अशाब्दिक व्यवहार को पढ़ने और व्याख्या करने की क्षमता – लोग एक–दूसरे के साथ मौखिक रूप से मौखिक शब्दों या मौखिक संकेतों के माध्यम से और अशाब्दिक रूप से शारीरिक प्रतिक्रियाओं और चेहरे के भावों के माध्यम से संवाद करते हैं। आर्चर (1980) ने सामाजिक बुद्धि को अशाब्दिक क्रियाओं की व्याख्या करने की क्षमता के रूप में देखा। एक व्यक्ति जो मौखिक और अशाब्दिक दोनों प्रतिक्रियाओं और भावों को पढ़ और व्याख्या कर सकता है, वह दूसरों के साथ आसानी से मेलजोल भी कर सकेगा।

5. दूसरों के साथ महानुभूति रखने की क्षमता – दूसरों के साथ सहानुभूति रखने की क्षमता सामाजिक बुद्धिमत्ता की एक और विशेषता है। यह दूसरों की मनःस्थिति की उनके जीवन के विशेष रूप से दुखद और अप्रिय क्षणों को महसूस करने की क्षमता है। जो लोग दूसरों की सोच, राय, जरूरतों और विश्वासों, दुर्भाग्य आदि के साथ सहानुभूति रखना जानते हैं, उनकी दूसरों द्वारा बहुत सराहना की जाएगी, इसलिए, सामाजिक बुद्धिमत्ता इस बात से मापी जाती है कि एक व्यक्ति दूसरों के साथ कितनी सहानुभूति रखती है।

6. लोगों में रुचि – लोगों में रुचि का अर्थ है उनके गुणों, चरित्रों, क्षमताओं, परिवारों आदि में रुचि। रुचि मौखिक और गैर–मौखिक दोनों तरह के व्यवहार में देखी जा सकती है। एक व्यक्ति दूसरों से बात करके और उनकी बात सुनकर या चेहरे के भाव, आँखों की गति, शरीर के हाव–भाव आदि जैसे गैर–मौखिक व्यवहारों से उनमें रुचि दिखा सकता है। लोगों ने रुचि दूसरों के प्रति महत्व की भावना पैदा करती है और इससे उन्हें बेहतर सामाजिक सद्भाव बनाने में मदद मिलती है।

7. स्वीकृत व्यवहार का अभ्यास – समाज एक ऐसी जगह है जहाँ लोग अपने व्यवहार को ढालते हैं। समय के साथ, समाज के पास अपने सदस्यों के व्यवहार को स्वीकार या अस्वीकार करने के लिए अपना स्वयं का उत्प्रेरक होता है। लोग चाहेगे कि उनका व्यवहार समाज द्वारा अनुमोदित हो या दूसरे शब्दों में, वे ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहेंगे जिसे समाज स्वीकार न करें। इसलिए स्वीकृत सामाजिक व्यवहार का अभ्यास करना सामाजिक बुद्धिमत्ता का संकेत है क्योंकि यह सामाजिक रूप से बुद्धिमान होने का संकेत है।

8. दूसरों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखना – अच्छे

सामाजिक संबंध सामाजिक बुद्धिमत्ता का एक बड़ा संकेतक हैं और सामाजिक संबंध बनाए रखना इसकी विशेषताओं में से एक है। अच्छे सबंध का अर्थ है एक–दूसरे के साथ सम्मानपूर्वक और परिपक्वता से व्यवहार करने की क्षमता। इसलिए, दूसरों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखना, मौजूदा अच्छे संबंधों को नष्ट करने वाले किसी भी शब्द या कार्य को बनाए रखने और न करने का संकेत देता है।

सामाजिक बुद्धि के आयाम–

सामाजिक बुद्धि एक परिवर्तनशील कारक है जिसके कई आयाम हैं। चड्ढा और गणेशन (2015) के अनुसार, सामाजिक बुद्धि के आठ आयाम हैं। ये है :–

1. **धैर्य**
2. **सहकारिता**
3. **आत्मविश्वास**
4. **संवेदनशीलता**
5. **सामाजिक परिवेश की पहचान**
6. **व्यवहारकुशलता**
7. **हास्य–बोध**
8. **स्मृति**

1. धैर्य – धैर्य तनावपूर्ण परिस्थितियों में शांत सहनशीलता है। शांति किसी भी विकट परिस्थिति में तनाव को कम करती है। शांत रहने वाले व्यक्ति को सामाजिक समस्याएँ कम होती है। घर और समाज में धैर्य आवश्यक है और यह कई सामाजिक बुराइयों को दूर करता है।

2. सहकारिता – सहकारिता अन्य लोगों के साथ सुखद तरीके से बातचीत करने और चीजों को सभी दृष्टिकोणों से देखने की क्षमता है। एक सुखद तरीके का अर्थ केवल सुखद शब्द ही नहीं, बल्कि संचार में प्रयुक्त सुखद कार्य भी हैं। सहकारिता एक–दूसरे के साथ मानवीय अंत कियाओ का अभिन्न अंग है।

3. आत्मविश्वास – आत्मविश्वास स्वयं पर और अपनी संभावनाओं पर दृढ विश्वास है। समाज को प्रभावित करने वाले निर्णय लेते समय यह बहुत महत्वपूर्ण है। निर्णय लेते समय व्यक्ति को किसी भी दबाव में नहीं आना चाहिए। समाज में समायोजन के लिए, व्यक्ति में आत्मविश्वास होना आवश्यक है जो सामाजिक बुद्धिमत्ता के आयामों में से एक है।

4. संवेदनशीलता – संवेदनशीलता का अर्थ है दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होना। यह अन्य मनुष्यों के प्रति एक प्रकार की जागरुकता और प्रतिक्रियाशील भावना है। सामाजिक संबंधों में यह भावना महत्वपूर्ण है। जो लोग दूसरों की आवनाओं और आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होते हैं, उन्हे अन्य सामाजिक सदस्य प्यार और सम्मान देते है।

5. सामाजिक परिवेश की पहचान – सामाजिक परिवेश की पहचान मौजूदा परिस्थितियों की प्रकृति और वातावरण को समझने की क्षमता है। किसी विशेष सामाजिक परिस्थिति पर प्रतिक्रिया करने के लिए, व्यक्ति को सामाजिक परिवेश की प्रकृति का अध्ययन और पहचान करने की आवश्यकता होती है। लोगों को मौजूदा सामाजिक परिवेश को पढ़ने और उसका आंकलन करने में तेजी लाने की जरूरत है ताकि वे उस पर सार्थक प्रतिक्रिया दे सकें।

6. व्यवहारकुशलता – व्यवहारकुशलता का अर्थ है सही बात कहने या करने की सूक्ष्म समझ। यह परिस्थिति को गेस्टाल्ट दृष्टिकोण से देखते की क्षमता है। यह विवेक का एक महान उपहार है जहाँ किसी भी परिस्थिति में सही बात प्रकट होती है और चुनी जाती है।

7. हास्य–बोध – हास्य–बोध दूसरों के साथ मनोरंजन करने और उन्हें महसूस करने की क्षमता और जीवन के हल्के–फुल्के पहलुओं का अनुभव करने की क्षमता है। जीवन सुख–दुख, अच्छे–बुरे, गंभीरता और हल्के–फुल्के पलों का मिश्रण है हास्य–बोध सामाजिक संबंधी को हल्का–फुल्का बना सकता है।

8. स्मृति – स्मृति सभी प्रासंनिक मुद्दों, नामों और प्रसिद्ध लोगों के चेहरों को याद रखने की क्षमता है। समाज के प्रमुख व्यक्तियों के नामों और चेहरों को याद रखने और पहचानने की क्षमता उच्च सामाजिक बुद्धिमत्ता का प्रतीक है।

सामाजिक बुद्धि के निर्धारक

कुछ कारक हैं जो किसी व्यक्ति की सामाजिक बुद्धि को निर्धारित करते हैं और इनमें से कुछ हबीब, सलीम और महमूद (2013) द्वारा दिए गए हैं, जैसे संस्कृति, मूल्य और मानदंड, सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक भूमिकाएँ और जिम्मेदारी और बच्चों के पालन–पोषण के तरीके। इसके अलावा, स्कूल का वातावरण और लिंग भी सामाजिक बुद्धि के निर्धारक माने जा सकते हैं।

1. संस्कृतियों, मूल्य और मानदंड – जिन सामाजिक व्यवहारों और विशेषताओं को एक संस्कृति सामाजिक रूप से बुद्धिमान मानती है, उन्हें दूसरी संस्कृति ऐसा नहीं मान सकती। चैन के अध्ययन (जैसा कि हबीब, सलीम और महमूद, 2013 द्वारा उद्धृत) में यह देखा गया कि सामान्यतः पाकिस्तान, भारत और चीन जैसी सामूहिक संस्कृतियों सामाजिक मानदंडों और मूल्यों के प्रति विश्वास और निष्ठा की माँग करती हैं और व्यक्तिवादी संस्कृतियों की तुलना में दूसरों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों और कर्तव्यों को पूरा करने की अधिक इच्छा दिखाती हैं। यही बात सामाजिक मूल्यों और मानदंडों के बारे में भी कही जा सकती है।

2. सामाजिक व्यवस्था – सामाजिक व्यवस्था समाज में एक प्रतिरूपित सामाजिक संरचना या व्यवस्था है जो व्यस्तियों या समूहों के कार्यों से विकसित हो सकती है। किसी स्थान की सामाजिक व्यवस्था समाज में लोगों के सामाजिक कार्यों को निर्धारित करेगी।

3. सामाजिक भूमिकाएं और जिम्मेदारियों – एक सामाजिक भूमिका उन व्यवहारों का एक समूह है जो समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले व्यक्ति से अपेक्षित होते हैं। उदाहरण के लिए, एक सामाजिक कार्यकर्ता की सामाजिक बुद्धि स्वाभाविक रूप से सामान्य लोगों की तुलना में अधिक होती है। सामाजिक जिम्मेदारी एक नैतिक या आधारिक ढाँचा है जो सभी को समाज के हित में कार्य करने के लिए बाध्य करता है। ऐसी जिम्मेदारी वाले व्यक्ति कभी–कभी अपनी सामाजिक जिम्मेदारी के कारण समाज की भलाई के लिए कार्य करने के लिए बाध्य होते हैं।

4. बाल पालन प्रथाएँ – बाल पालन एक बच्चे के शैशवावस्था से वयस्कता की अवस्था तक उसके शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने और सहायता प्रदान करने की प्रक्रिया है। यदि पालन–पोषण सकारात्मक है, तो बच्चे में सामाजिक बुद्धि के बेहतर विचार होंगे और वह एक अच्छा नागरिक बनेगा। यदि बाल पालन–पोषण नकारात्मक है, तो आगे चलकर बच्चे के असामाजिक बनने का खतरा रहता है।

5. विद्यालय का वातावरण – विद्यालय का वातावरण विद्यालय परिसर के अंदर और आसपास का वातावरण है जिसमें पाठ्यचयों और सह–पाठ्यचयाँ गतिविधियों शामिल होती हैं। बेहतर विद्यालय वातावरण छात्रों में सामाजिक बुद्धि के विकास को अत्यधिक प्रभावित करता है।

6. लिंग – लिंग विश्लेषण के निष्कर्षो से पता चला कि छात्राओं की सामाजिक बुद्धिमत्ता छात्रों की तुलना में अधिक होती है (नागरा, 2014)। इसलिए लिंग को भी सामाजिक बुद्धिमत्ता के निर्धारकों में से एक माना जा सकता है।

सामाजिक बुद्धिमत्ता का महत्व

1. व्यक्ति की सफलता संज्ञानात्मक बुद्धि पर नहीं, बल्कि सामाजिक बुद्धि पर निर्भर करती है क्योंकि यह समायोजन, समझ, उचित प्रतिक्रियाओं और एक–दूसरे के साथ अंतःक्रिया पर आधारित होती है।

2. जिन व्यक्तियों की सामाजिक बुद्धि औसतन उच्च होती है, वे अपनी शैक्षणिक उपलब्धि में बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

3. शैक्षणिक संस्थानों में सामाजिक बुद्धिमत्ता भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह प्रधानाचार्यो या अधिकारियों को समस्याओं के समाधान में मदद करती है और वे इसका उपयोग बैठकों, सेमिनारों, सम्मेलनों, मूल्यांकनों और संचार में कर सकते हैं।

4. सामाजिक बुद्धिमत्ता छात्रों को एक–दूसरे के साथ समायोजन करने में सक्षम बनाकर उनके भविष्य को आकार

देने में मदद करती है।

5. सामाजिक बुद्धिमत्ता लोगों को संकट के समय बेहतर निर्णय लेने में भी मदद करती है; यह मानसिक गतिविधियों में सहायता करती है और एक–दूसरे के साथ संचार को सुचारु बनाती है।

6. सामाजिक बुद्धिमत्ता सामाजिक समस्याओं के प्रभावी समाधान की व्याख्या और कार्यान्वयन की प्रक्रिया में मदद करती है।

7. सामाजिक बुद्धिमत्ता मनुष्य के दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण है। सामाजिक बुद्धिमत्ता उन व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण है जिन्हें दूसरों के साथ संवाद और बातचीत करनी होती है।

8. सामाजिक बुद्धिमत्ता व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से लोगों के विचारों, कार्यों और व्यवहार को प्रभावित करती है।

9. सामाजिक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति एक समृद्ध, सार्थक जीवन का अनुभव करते हैं।

10. सामाजिक बुद्धिमत्ता कठिनाइयों पर काबू पाने में मदद करती है और व्यक्तिगत एवं संगठनात्मक सफलता को अधिकतम करती है।

सन्दर्भ ग्रंथ –

1. अग्रवाल, आर (2003), सामाजिक बुद्धि और शिक्षक प्रभावशीलता (डॉक्टोरल डेजरटेशन, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी), शोधगंगा।

2. आर्चर, डी. (1980), हाऊ टू एक्सपाण्ड योर सोशल इन्टेलीजेन्स क्वोशेन्ट, न्यूयार्क, एम इवान्स एण्ड कं.

3. बेहेशटीफर, एम. एण्ड रोअसाइ, एफ. (2012) रोल ऑफ सोशल इन्टेलीजेन्स इन ऑरगनाइजेशनल लीडरशिप यूरोपियन जर्नल ऑफ सोशल साइन्स, 28(2).

4. चढ़ा, एन.के एवं गणेशन, यू (2015), मेनुअल फौर सोशल इन्टेलीजेन्स स्कूल (SIS-CG), नेशनल साइकोलोजिकल कॉर्पोरेशन, आगरा।

5. ढ़ीगरा, के. एवं टिअकला, (2016), उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक बुद्धिमत्ता रिसर्चपीडिया, 3(1).

6. गोयल, एम. एवं अग्रवाल, पी. (2012) ए कम्पेरोटिव स्टडी ऑफ सोशल इन्टेलीजेन्स आफ सिंगल चाइल्ड इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस, 2(6).

7. गोलमेन, डी. (2006), सोशल इन्टेलीजेन्सः द न्यू साइंस ऑफ ह्यूमन रिलेशनशिप, न्यू मार्क, बनताम बुक्स.

8. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसीप्लनरी रिसर्च एण्ड डवलपमेंट, वाल्यूम–3, इश्यू , सितम्बर 2016.

9. पेरीपेक्स इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च, वाल्यूम–8, इश्यू–4, अप्रेल–2019.

10. द इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इण्डिन सायकलॉजी, वाल्यूम 11, इश्यू–2, अप्रैल–जून 2023.

माध्यमिक शिक्षा के विद्यालयों के अध्यापकों की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी. सी. ई.) पद्धति के प्रति जागरूकता का अध्ययन

डॉ. गोपाल प्रसाद पाठक
सहायक आचार्य, (शिक्षा)
श्री जैन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
अलवर, (राजस्थान)
मोबा. : 07217466043
ई–मेल : gopalpathak473@gmail.com

प्रस्तावना : राष्ट्रीय स्तर पर निः शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 समाज की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति में उठाया गया दूरगामी कदम है। इसमें बच्चों के सीखने का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किये जाने की बात निहित है। भारतीय संसद के द्वारा पारित कानून की अनुपालना में राजस्थान सरकार द्वारा 1 अप्रैल, 2010 से शिक्षा का अधिकार अधिनियम – 2009 को स्वीकार किए जाने के उपरान्त इसमें निहित घटकों को उचित ढंग से लागू करने हेतु मौजूदा शैक्षिक प्रणाली को पुनर्गठित करने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इसमें मूल्यांकन को सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के रूप में देखा गया है तथा शिक्षक, अभिभावक तथा सरकार सभी के दायित्व निर्धारित किए गए हैं। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का अर्थ विद्यार्थी के व्यक्तित्व के समग्र विकास पर आध ाारित मूल्यांकन की व्यवस्था से है जो विद्यार्थी के सभी पक्षों पर ध्यान देती है। मुख्य तौर पर कहा जा सकता है दि शिक्षा बच्चे के सर्वांगीण विकास से जुड़ी प्रक्रिया है –अर्थात् बालक के मानसिक, सामाजिक, शारीरिक एवं संज्ञानात्मक विकास शिक्षा का मूल ध्येय है। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का दृष्टिकोण मूल्यांकन को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को गुणवत्ता पूर्ण बनाये रखने पर केन्द्रित है। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का प्रत्यय वस्तुतरू परीक्षा सुधार के दो सिद्धान्तों पर आधारित होता है। पहला जो व्यक्ति अध्यापन कार्य करे वही व्यक्ति मूल्यांकन का कार्य भी करे तथा दूसरा मूल्यांकन कार्य सत्र के अन्त में न होकर सम्पूर्ण सत्र के दौरान लगातार होता रहे।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली के अन्तर्गत छात्रों की शैक्षिक प्रगति का मूल्यांकन शिक्षण कार्य कर रहे अध्यापकों के द्वारा सत्र के बीच में लगातार थोड़े–थोड़े अन्तराल पर किया जाता रहा है तथा छात्रों को उनकी कमियों व सफलताओं की जानकारी दी जाती है। इससे छात्रों को पृष्ठपोषण मिलता है तथा वे अपनी क्षमताओं के अनुरूप सर्वोत्तम शैक्षिक प्रगति करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। सवत् एवं व्यापक मूल्यांकन में अध्यापकों के द्वारा छात्रों की शैक्षिक प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए लिखित परीक्षाओं के अलावा मापन एवं मूल्यांकन की विभिन्न विधियों तथा उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन छात्रों के साथ–साथ अध्यापकों को भी अपनी शिक्षण योजना में सुधार करने का अवसर प्रदान करता है।

छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान तथा कौशल की जानकारी के आधार पर अध्यापकगण भी अपनी शिक्षण व्यूहरचना को आवश्यकतानुसार परिवर्तित कर सकता है। सीखना एक सतत् प्रक्रिया है, अतः मूल्यांकन भी सतत् होना चाहिए। इस प्रक्रिया में व्यापकता को भी ध्यान में रखा जाना आवश्यक है। जिससे कि शिक्षा के उद्देश्यों एवं सरोकारों की पूर्ति की जा सके। सवत् एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया वास्तव में गुणवत्ता सुधार की प्रक्रिया ही है। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) का अर्थ विद्यार्थी के स्कूल आधारित मूल्यांकन की व्यवस्था से है, जो विद्यार्थी के सीखने के सभी पक्षों पर ध्यान देती है। इस

प्रस्तुत शोध अध्ययन को प्रस्तुत करने का मूल उद्देश्य यही है कि हम सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा एवं महत्व को समझ सकें तथा इसी अनुरूप कार्य की दिशा सुनिश्चित कर सकें।

अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई) की माध्यमिक शिक्षा से जुड़े अध्यापकों की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) पद्धति के प्रति जागरुकता को जानने का प्रयास किया गया है।

समस्या के अध्ययन की आवश्यकता : किसी भी शोध अध्ययन का मूल्यांकन उसकी नवीनतम उपयोगिता प्रांसगिकता एवं उसके निष्कर्षो की विस्तृत क्षेत्र में व्यावहारिकता पर निर्भर करता है। आज विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं अभिभावकों आदि को सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) पद्धति के प्रतिजागरुक करने की आवश्यकता है। इसी आवश्यकता से हम देश के भविष्य को श्रेष्ठ, उन्नतिकारक, शुभ एवं सुन्दर बना सकते हैं। अतरू सवत् एवं व्यापक मूल्यांकन का ज्ञान ही आवश्यक नहीं है, अपितु इसकी समस्त जानकारी होना भी आवश्यक है। विद्यार्थी जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में प्रभावपूर्ण मूल्यांकन मुख्यतः एक सफल अध्यापक पर निर्भर करता है। एक अध्यापक अपना प्रभावपूर्ण मूल्यांकन तभी कर सकता है जब उसको प्रत्येक विद्यार्थी की गतिविधियों का पता हो।

अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के चहुँमुखी विकास के लिए अध्यापक के साथ–साथ विद्यार्थी को भी एक आदर्श सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) पद्धति के प्रति जागरूक होना आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य भी है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की समस्या भी न केवल शिक्षा विभाग अपितु समस्त प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के लिये एक नयी मूल्यांकन व्यवस्था है। अतरू वर्तमान समय में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी. बी. एस. ई.) की माध्यमिक शिक्षा के विद्यालयी अध्यापक सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) पद्धति के प्रति जागृत, सचेत एवं जागरूक हैं या नहीं। इसका ज्ञान ही प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रमुख आवश्यकता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का औचित्यः किसी भी शोध अध्ययन का मूल्यांकन उसकी नवीनतम उपयोगिता, प्रासंगिकता एवं उसके निष्कर्षो की विस्तृत क्षेत्र में व्यावहारिकता पर निर्भर करता है। अतः किसी भी समस्या के औचित्य एवं परीक्षण का विचार करना बहुत ही आवश्यक है क्यों कि औचित्य ही किसी भी समस्या की उपादेयता को सिद्ध करता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का निम्नांकित दृष्टिकोणों से औचित्य और अधिक बढ़ जाता है–

(1) शिक्षा विभाग के दृष्टिकोण से ।

(2) सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान (SIERT) के दृष्टिकोण से ।

(3) अध्यापकों के दृष्टिकोण से ।

(4) सर्व शिक्षा अभियान (S.S.A.) के दृष्टिकोण से ।

(5) विद्यालयों के दृष्टिकोण से।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दः अनुसंधान के अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या करना अत्यंत ही आवश्यक है। किसी भी शोध कार्य हेतु यह आवश्यक हो जाता है कि उसकी समस्या का स्पष्टीकरण किस प्रकार किया जाए। किसी भी शब्द या सम्प्रत्यय को उसके मूल में समझने के लिए उसका परिभाषीकरण करना अत्यन्त आवश्यक होता है इसी तथ्य को समझते हुए शोधकर्तता ने अपने शोध में निम्न शब्दों को प्रस्तुत किया है जिनका परिभाषीकरण निम्न प्रकार से है–

(1) माध्यमिक शिक्षा– "माध्यमिक शिक्षा" के अन्तर्गत कक्षा 6 से 10वीं तक के विद्यार्थियों को अध्यापन कार्य कराया जाता है तथा दूसरे शब्दों में माध्यमिक शिक्षा के अन्तर्गत मुख्यतः कक्षा 9वीं और 10वीं के विद्यार्थियों को शिक्षण कार्य कराया जाता है

(2) विद्यालय– प्रस्तुत शोध अध्ययन में "विद्यालय" से अभिप्राय कक्षा 6वीं से 10वीं तक औपचारिक शिक्षा से सम्बद्ध राजकीय एवं अराजकीय, ग्रामीण व शहरी विद्यालयों

से लिया गया है।

(3) अध्यापक— प्रस्तुत शोध अध्ययन में "अध्यापक" से आशय मुख्यतः कक्षा 9वीं से 10वीं तक सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में शिक्षण कार्य कराने वाले अध्यापकों से है।

(4) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.)— यह सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। इस प्रक्रिया में शिक्षक, बच्चे व अभिभावकों को एक सकारात्मक फीडबैक प्राप्त होता है, जिसके द्वारा शिक्षण प्रक्रियाओं को और बेहतर बनाने में सहयोग मिलता है इस प्रक्रिया के द्वारा बच्चों में हो रहे व्यवहारगत परिवर्तनों को पहचाना जा सकता है। परीक्षा के व्याप्त भय को दूर करने के लिए "संतत् एवं व्यापक मूल्यांकन" की महती आवश्यकता है। अतरू प्रस्तुत शोध अध्ययन में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का आशय विद्यार्थियों के सतत, नियमित व्यापक एवं लगातार चलने वाली मूल्यांकन प्रक्रिया से है।

(5) पद्धति— "पद्धति" से अभिप्राय व्यापकता या समग्रता से होता है जिसके सभी तत्व, अंग या घटक परस्पर सम्बन्धित तथा स्वनियंत्रित होते हैं।

(6) जागरुकता— प्रस्तुत शोध अध्ययन में "जागरूकता" से आशय सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति अध यापकों द्वारा जानकारी रखने से है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य : प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं—

1. कुल न्यादर्श पर अध्यापकों की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति नागरुकता का अध्ययन करना ।

2. राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों के अध्यापकों की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता का अध्ययन करना ।

3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों के अध्यापकों की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना ।

4. माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सवत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरूकता का अध्ययन ।

5. पुरुष एवं महिला अध्यापकों की सतत् एवं व्याप 4 मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ : प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है —

1. कुल न्यादर्श पर अध्यापकों की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता प्रमापनी पर औसत से कम स्तर की होती है ।

2. राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों के अध्यापकों की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरूकता में कोई अन्तर सार्थक नहीं होता है ।

3. शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के अध्यापकों की सवत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता में कोई अन्तर सार्थक नहीं होता है ।

4. माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सवत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति नागरुकता में कोई अन्तर सार्थक नहीं होता है ।

5. पुरुष एवं महिला अध्यापकों की सतत् एवं व्यापकं मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता में कोई अन्तर सार्थक नहीं होता है ।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का परिसीमांकन : प्रस्तुत शोध अध्ययन कुछ सीमाओं में सीमित रहेगा जो निम्न प्रकार से है—

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन को अध्यापकों के कुल न्यादर्श 200 अध्यापकों तक परिसीमित रखा गया है।

2. प्रस्तुत शोध अध्ययन राजस्थान राज्य के राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों के अध्यापकों तक ही सीमित है। 3. प्रस्तुत शोध अध्ययन राजस्थान राज्य के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के अध्यापकों तक ही सीमित है।

4. प्रस्तुत शोध अध्ययन राजस्थान राज्य के माध्यमिव विद्यालयों के अध्यापकों तक ही सीमित है।

5. प्रस्तुत शोध अध्ययन राजस्थान राज्य के पुरुष एवं महिला अध्यापकों तक ही सीमित है।

1.9 प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न न्यादर्श को प्रयुक्त किया गया है–

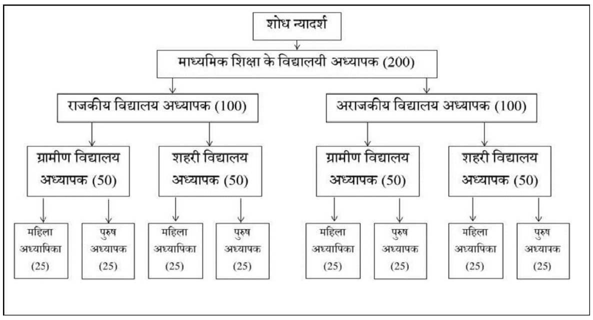

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरणः प्रस्तुत शोध अध्ययन में दत्त संकलन हेतु निम्न स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है – 'सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति जागरुकता प्रमापनी'

(स्वनिर्मित– डॉ० कपिलेश तिवारी व गोपाल प्रसाद पाठक द्वारा निर्मित उपकरण)

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त शोध विधिः प्रस्तुत शोध अध्ययन में अनुसंधान की आदर्श मूलक 'सर्वेक्षण विधि' का चयन किया गया है। अर्थात् इस विधि से शोध का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई) पद्धति के प्रति जागरुकता का अध्ययन करना है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीः अनुसंधान योजना से सम्बन्धित सभी तथ्यों और आधारों को निश्चित व परिभाषित करने के बाद शोधकर्त्ता ने निष्कर्षों के संकलन व विश्लेषण करने हेतु निम्नांकित सांख्यिकी का उपयोग किया –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–परीक्षण
4. प्रतिशत

प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षः

(अ) (कुल न्यादर्श) पर 'अध्यापकों' की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता प्रमापनी एवं उसके आयामों पर प्राप्त निष्कर्ष :

1. (कुल न्यादर्श पर) "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता औसत स्तर से तो अधिक है लेकिन प्रमापनी पूर्णांक के सापेक्ष यह 38.36 प्रतिशत तक कम है।

2. (कुल न्यादर्श पर) "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता प्रमापनी, के पांचों आयामों क्रमशः प्रथम आयाम –"सी.सी.ई. का अर्थ एवं सामान्य परिचय" एवं तृतीय आयाम – "सी.सी.ई. तथा परम्परागत मूल्यांकन में अन्तर एवं विभेद" पर औसत से कम पाई गई तथा द्वितीय आयाम – "रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन की समझ एवं अवबोध", चतुर्थ आयाम– "सी.सी.ई. से सम्बन्धित महत्वपूर्ण शब्दावली एवं मूल्यांकन प्रक्रिया" एवं पंचम आयाम – "सी.सी.ई. की अध्यापक की भूमिका के प्रति जागरुकता" पर औसत से अधिक पाई गई।

3. जागरुकता प्रमापनी के प्रथम आयाम – "सी.सी.ई. का अर्थ एवं सामान्य परिचय" पर पूर्णांक प्रतिशत के सापेक्ष 41.5 प्रतिशत, द्वितीय आयाम – "रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन की समझ एवं अवबोध" पर पूर्णांक प्रतिशत के सापेक्ष 33.62प्रतिशत, तृतीय आयाम – "सी.सी.ई. तथा परम्परागत मूल्यांकन में अन्तर एवं विभेद" पर पूर्णांक प्रतिशत के सापेक्ष 45प्रतिशत, चतुर्थ आयाम– "सी.सी.ई. से सम्बन्धित महत्वपूर्ण शब्दावली एवं मूल्यांकन प्रक्रिया" पर पूर्णांक प्रतिशत के सापेक्ष 35.45 प्रतिशत, और पंचम आयाम – "सी.सी.ई. की अध्यापक की भूमिका के प्रति जागरुकता" पर पूर्णांक प्रतिशत के सापेक्ष 36.19 प्रतिशत जागरुकता में कमी पाई गई।

(ब) राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों के अध्यापकों की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता प्रमापनी एवं उसके आयामों पर प्राप्त निष्कर्ष :

(1) राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता में अन्तर सार्थक नहीं पाया गया।

(2) राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता प्रमापनी के आयाम क्रमशः प्रथम आयाम – "सी.सी.ई.का अर्थ एवं सामान्य परिचय", द्वितीय आयाम – "रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन की समझ एवं अवबोध", तृतीय आयाम– "सी.सी.ई. तथा परम्परागत मूल्यांकन में अन्तर एवं विभेद", चतुर्थ आयाम – "सी.सी.ई. से सम्बन्धित महत्वपूर्ण शब्दावली एवं मूल्यांकन प्रक्रिया" और पंचम आयाम – "सी.सी.ई. की अध्यापक की भूमिका के प्रति जागरुकता" पर अन्तर सार्थक नहीं पाया गया।

(3) राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों के 'अध्यापकों' की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता प्रमापनी के आयाम क्रमशः तृतीय आयाम – "सी.सी.ई. तथा परम्परागत मूल्यांकन में अन्तर एवं विभेद", चतुर्थ आयाम – "सी.सी.ई. से सम्बन्धित महत्वपूर्ण शब्दादावली एवं मूल्यांकन प्रक्रिया" और पंचम आयाम – "सी.सी.ई. की अध्यापक की भूमिका के प्रति जागरुकता" पर राजकीय विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता अपेक्षाकृत अधिक पाई गई तथा अराजकीय विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता कम पाई गई।

(4) राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों के 'अध्यापकों' की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता प्रमापनी के आयाम क्रमशः प्रथम आयाम – "सी.सी.ई. का अर्थ एवं सामान्य परिचय" और द्वितीय आयाम – "रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन की समझ एवं अवबोध" पर अराजकीय विद्यालयों के 'अध्यापकों' की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता अपेक्षाकृत अधिक पाई गई तथा राजकीय विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता कम पाई गई ।

(स) ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के अध्यापकों' की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता प्रमापनी एवं उसके आयामों पर प्राप्त निष्कर्ष :

(1) ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के 'अध्यापकों' की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता में अन्तर सार्थक पाया गया। ग्रामीण विद्यालयों के अध्यापकों की सवत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता अपेक्षाकृत अधिक पाई गई तथा शहरी विद्यालयों के 'अध्यापकों' की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता कम पाई गई।

(2) ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता प्रमापनी के आयाम क्रमशः प्रथम आयाम – "सी.सी.ई. का अर्थ एवं सामान्य परिचय", द्वितीय आयाम –"रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन की समझ एवं अवबोध", तृतीय आयाम – सी.सी.ई. तथा परम्परागत मूल्यांकन में अन्तर एवं विभेद" और पंचम आयाम – "सी.सी.ई. की अध्यापक की भूमिका के प्रति जागरुकता" पर अन्तर सार्थक पाया गया। अतः जागरुकता प्रमापनी के "सी.सी.ई. का अर्थ एवं सामान्य परिचय", द्वितीय आयाम – "रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन की समझ एवं अवबोध", तथा पंचम आयाम – "सी.सी.ई. की अध्यापक की भूमिका के प्रति जागरुकता" पर ग्रामीण विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता सार्थक रूप से अधिक पाई गई तथा शहरी विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता कम पाई गई।

(3) ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता प्रमापनी के चतुर्थ आयाम – "सी.सी.ई. से सम्बन्धित महत्वपूर्ण शब्दावली एवं मूल्यांकन प्रक्रिया" पर अन्तर सार्थक नहीं पाया गया ।

(4) जागरूकता प्रमापनी के तृतीय आयाम – "सी.सी.ई. तथा परम्परागत मूल्यांकन में अन्तर एवं विभेद" पर शहरी विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरूकता सार्थक रूप से अधिक पाई गई

तथा ग्रामीण विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता कम पाई गई।

(द)माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता प्रमापनी एवं उसके आयामों पर प्राप्त निष्कर्ष :

(1) माध्यमिक विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता में अन्तर सार्थक नहीं पाया गया ।

(2) माध्यमिक विद्यालयों के 'अध्यापकों' की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता प्रमापनी के आयामों क्रमशः प्रथम आयाम – "सी.सी.ई. का अर्थ एवं सामान्य परिचय", द्वितीय आयाम – "रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांक की समझ एवं अवबोध", तृतीय आयाम – "सी.सी.ई. तथा परम्परागत मूल्यांकन में अन्तर एवं विभेद", चतुर्थ आयाम – "सी.सी.ई. से सम्बन्धित महत्वपूर्ण शब्दावली एवं मूल्यांकन प्रक्रिया" और पंचम आयाम – "सी.सी.ई. की अध्यापक की भूमिका के प्रति जागरुकता" पर अन्तर सार्थक नहीं पाया गया। अतरू माध्यमिक विद्यालयों के "अध्यापकों" की जागरुकता सार्थक रूप से कम पाई गई।

(य) पुरुष एवं महिला वर्ग के विद्यालयों के 'अध्यापकों' की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता प्रमापनी एवं उसके आयामों पर प्राप्त निष्कर्ष :

(1) पुरुष एवं महिला वर्ग के विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता में अन्तर सार्थक नहीं पाया गया। पुरुष वर्ग के विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता अपेक्षाकृत अधिक पाई गई तथा महिला वर्ग के विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता कम पाई गई।

(2) पुरुष एवं महिला वर्ग के विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता प्रमापनी के आयामों क्रमशः प्रथम आयाम – "सी.सी.ई. का अर्थ एवं सामान्य परिचय", द्वितीय आयाम दृ "रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन की समझ एवं अवबोध", तृतीय आयाम – "सी.सी.ई. तथा परम्परागत मूल्यांकन में अन्तर एवं विभेद", चतुर्थ आयाम – "सी.सी.ई. से सम्बन्धित महत्वपूर्ण शब्दावली एवं मूल्यांकन प्रक्रिया" और तृतीय आयाम – "सी.सी.ई. तथा परम्परागत मूल्यांकन में अन्तर एवं विभेद"पर अन्तर सार्थक नहीं पाया गया।

(3) पुरुष एवं महिला वर्ग के विद्यालयों के 'अध्यापकों' की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता प्रमापनी के आयामों क्रमशः प्रथम आयाम – "सी.सी.ई. का अर्थ एवं सामान्य परिचय" और चतुर्थ आयाम – "सी.सी.ई. से सम्बन्धित महत्वपूर्ण शब्दावली एवं मूल्यांकन प्रक्रिया" पर महिला वर्ग के विद्यालयों के "अध्यापकों" की जागरुकता अपेक्षाकृत अधिक पाई गई तथा पुरुष वर्ग के विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता कम पाई गई।

(4) पुरुष एवं महिला वर्ग के विद्यालयों के 'अध्यापकों' की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता प्रमापनी के आयामों द्वितीय आयाम – "रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन की समझ एवं अवबोध", तृतीय आयाम – "सी.सी.ई. तथा परम्परागत मूल्यांकन में अन्तर एवं विभेद" और तृतीय आयाम – "सी.सी.ई. तथा परम्परागत मूल्यांकन में अन्तर एवं विभेद" पर पुरुष वर्ग के विद्यालयों के "अध्यापकों" की जागरुकता अपेक्षाकृत अधिक पाई गई तथा महिला वर्ग के विद्यालयों के "अध्यापकों" की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता कम पाई गई।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ : शैक्षिक शोध वास्तविक रूप से तभी सार्थक होता है, जबकि वह शिक्षा और समाज के लिए उपयोगी हो। यदि शोध अनुसंधान की किसी क्षेत्र में कोई उपयोगिता सिद्ध नहीं होती है तो वह अनुसंधान व्यर्थ होता है। शैक्षिक शोध अध्ययन से प्राप्त निवकर्षो के आधार पर शैक्षिक निहितार्थ स्वतः ही स्पष्ट हो जाते हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान राज्य के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) के राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों, माध्यमिक विद्यालयों, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के पुरुष एवं महिला अध्यापकों की सतत् एवं व्यापक मूल्यांक पद्धति के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है । जिसके दत्त संकलन, दत्त विश्लेषण और शोध निष्कर्ष के फलस्वरूप प्राप्त शैक्षिक निहितार्थ एवं उपादेयता को निम्न बिन्दुओं में व्यक्त किया गया है।

शिक्षा विभाग के लिए उपादेयता शैक्षिक निहितार्थ : प्रस्तुत शोध अध्ययन में सम्मिलित विभिन्न चरों यथा – राजकीय, अराजकीय एवं माध्यमिक विद्यालया के पुरुष एवं महिला अध्यापकों के मध्य सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति अन्तर सार्थक नहीं पाया गया। उक्त समस्त चरों का परस्पर गुणन विश्लेषण भी अन्तर सार्थक नहीं दर्शाता है उक्त समस्त चरों में औसत स्तर से अधिक जागरुकता दिखाई देती है लेकिन उक्त समस्त पूर्णांक के सापेक्ष अपेक्षाकृत कम जागरुकता रखते है ।

विद्यालयों के लिए उपादेयता / शैक्षिक निहितार्थ : संस्था प्रधान को विद्यालयों में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति से सम्बन्धित विभागीय आदेश, लेख, जानकारी, प्रपत्र, सूचनाएँ एवं नवीन गतिविधियों से सम्बन्धित सामग्री की पहुँच प्रत्येक अध्यापक तक सुलभ बनानी चाहिए। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति से सम्बन्धित साहित्य को विद्यालय में उपलब्ध करवाना चाहिए तथा "अध्यापकों" की समस्याओं व जिज्ञासाओं को सम्बन्धित प्रकोष्ठ तक यथा समय पहुँचाना चाहिए।

अध्यापकों के लिए शैक्षिक उपादेयता / शैक्षिक निहितार्थ : प्रस्तुत शोध अध्ययन से ज्ञात होता है कि कुल – न्यादर्श पर अध्यापकों की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता औसत स्तर से कुछ ही अधिक है जबकि पूर्णांक के सापेक्ष जागरुकता में 38.36 प्रतिशत की कमी पाई गई साथ ही ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के मध यापके की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के अध्यापके की जागरुकता अपेक्षाकृत कम है एवं अन्तर सार्थक है। अतः विशेषतः शहरी क्षेत्र के अध्यापकों को सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरुकता विकसित करने के प्रयासों की अपने स्तर पर पहल प्रारम्भ करनी चाहिए। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.), नई दिल्ली, एन. सी. ई. आर. टी., नई दिल्ली, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर एवं सर्व शिक्षा अभियान की वेबसाइट्स पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की जानकारी का अध्यापकों को परस्पर आदान प्रदान व विचार–विमर्श करना चाहिए।

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सुझाव :

अध्यापकों हेतु सुझाव :

(1) अध्यापक विद्यार्थियों से सुलेख, श्रुत लेख एवं अनुलेखन का अभ्यास करावें।

(2) अध्यापक को विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने हेतु बारी– बारी से उनसे प्रश्न पूछने चाहिए।

(3) अध्यापक को समय–समय पर सी० सी०ई मूल्यांक अभिलेख तैयार करते रहना चाहिए।

(4) अध्यापकों को समय–समय पर विद्यार्थियों को प्रोजेक्ट कार्य, कक्षा कार्य एवं गृहकार्य करवाना चाहिए।

(5) अध्यापक विद्यार्थियों के संरक्षकों एवं अभिभावकों से सम्पर्क करके अपनत्व की भावना जागृत करनी चाहिए।

(6) अध्यापकों को अपनी शिक्षण प्रविधियों को विद्यार्थियों के अनुरूप ढालने का प्रयास करना चाहिए।

(7) अध्यापकों को विद्यालय में निर्धारित समय पर पहुँचना चाहिए।

भावी शोध अध्ययन हेतु सुझावः किसी भी शोध कार्य का मूल्यांकन शोध विषय की प्रकृति उसकी उपयोगिता एवं उसके परिणामों के भावी प्रभावों की दृष्टि के आधार पर किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में इसकी उपादेयता की दृष्टि से शोधकर्ता के द्वारा भावी शोध की आवश्यकता को अनुभव किया है। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता के द्वारा निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किय गये हैं–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में 200 अध्यापकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। भावी शोधार्थी इस अध्ययन –को और अधिक अध्यापकों पर का न्यादर्श लेकर कर सकते

हैं।

2. प्रस्तुत शोध अध्ययन माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों तक ही सीमित रहा है। जबकि भावी शोधार्थी इस शोध कार्य के चर लेकर उच्च माध्यमिक, स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर के अध्यापकों पर भी कार्य कर सकते हैं।

3. प्रस्तुत शोध अध्ययन राजस्थान राज्य तक ही सीमित रखा गया है। भावी शोधार्थी अन्य दूसरे राज्यों के अध्यापकों का न्यादर्श लेकर भी शोध कार्य कर सकते हैं।

4. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्ष बोर्ड (सी.बी.एस.ई) विद्यालयों के अध्यापकों को ही सम्मिलित किया गया है। भावी शोध हेतु राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (आर.बी.एस.ई) विद्यालयों के अध्यापकों पर भी शोध कार्य किया जा सकता है

5. भावी शोध हेतु सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के प्रति जागरूकता के अन्य आयामों को लकर भी अध्ययन किया जा सकता है

'सन्दर्भ ग्रन्थ सूची'

1. सुखिया, एस.पी. मेहरोत्रा, पी. वी. एवं आए. एल. (1977) – "शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व", विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा पृ.सं. 1–3, 5, 210, 214, 226, 229 ।

2. रावत, प्यारेलाल (1972) – "भारतीय शिक्षा का इतिहास", रामप्रसाद एंड संस, आगरा, (उ. प्र.) पृ. सं. दृ 103

3. सरला राजपूत और ममता अग्रवाल – "सतत और व्यापक मूल्यांकन योजना", परिप्रेक्ष्य वर्ष – 3, अंक–2 अगस्त, 1996, पृ० सं०– 91 ।

4. ढौंडियाल, एस. एन. (2006)– "शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर (राजस्थान), संस्करण–चतुर्थ पृ. सं.–29, 39–42 ।

5. शर्मा, एव. के. (2009) – "शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन" के. एस. के. पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ. स. 1–2 ।

6. शास्त्री, के. एन. (2008) – "अध्यापक शिक्षा", लोकेश पानी, प्रेरणा प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण पृ. सं. – 01 ।

7. शर्मा. आर. ए. (2013) – "शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया", आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, (उ. प्र.) पृ. सं. –134–136, 171–174, 153, 154।

8. उषा बापना – व्यापक एवं सतत् मूल्यांकन कार्यक्रम के बढ़ते कदम", शिविरा पत्रिका अक्टूबर–2013 पृ.सं–19–21।

9. अनिल कुमार शर्मा – सी.सी.ई. के सुदृढीकरण में ई.सी. सी.ई. की भूमिका, शिविरा पत्रिका, अक्टूबर 2013, पृ. सं. 23–24 ।

10. डॉ. अमृता दाधीच – "कक्षा कक्ष प्रक्रिया एवं योजना मैं बदलाव", सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन, शिविरा पत्रिका, अक्टूबर – 2013 पृ. सं. – 22 ।

11. भट्टाचार्य, जी. सी. (2013) – "अध्यापक शिक्षा", श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, (उ. प्र.) दशम् संस्करण, पृ. सं. 274 ।

12. प्रधान, बीना (2013) – "शिविरा पत्रिका", माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर, अंक 4, अक्टूबर – 2013, पृ. सं. 25–34 ।

13. प्रधान, बीना (2012) – "शिविरा पत्रिका", माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर अंक 2 अगस्त – 2012, पृ. सं. 19–23 ।

14. भँवर सिंह सान्दू – "सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के सन्दर्भ में डाइट की भूमिका, शिविरा पत्रिका, अक्टूबर – 2013, पृ. सं. 37 ।

15. कल्याण सहाय वर्मा – "सतत एवं व्यापक मूल्यांकन आशा से अधिक", शिविरा पत्रिका, अक्टूबर – 2013, पृ. सं. 43 ।

16. चेतन कुमार पालीवाल – "कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय में सी. सी. ई.", शिविरा पत्रिका, अक्टूबर – 2013, पृ. सं. 46 ।

17. प्रधान, डॉ. बीना – "शिविरा पत्रिका", अक्टूबर 2013, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर, अंक 4, पृ.सं. 24–33।

मोबाइल आनलाइन गेम की आदत का महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव

Safeena Azeez
Academic Director
Vivekananda group of Institutions
Katchur, Thiruvallur Dt, Chennai-602026,
Tamil Nadu
9597861242
safeena.azeez@gmail.com

सारांश

आनॅलाइन गेम की खेलने की आदत महिलाओं पर नकारात्मक प्रभाव डाला है। परिणामस्वरूप उनमें भावनात्मक अलगाव, आत्मसम्मान में कमी सामाजिक मिलगाव, सर्व मानसिक स्वास्थय प्रभावित हुआ है। जिससे उनमें चिंता, कुंठा, निराशा की भावना बढ़ी है। इसके अतिरिक्त यौन उत्तेजक मामलों को बढ़ावा मिला है।

प्रमुख शब्द –

ऑनलाइन गेम – मोबाइल पर अनेक प्रकार के मनोरंजक गेम होते हैं।

महिला सशक्तीकरण – महिलाओं को समाज व देश में सम्मानपूर्ण स्थान

प्रस्तावना –

वर्तमान युग प्रजातंत्र का युग है। प्रजातंत्र में महिला एवं पुरुषों का समान अधिकार होने चाहिए– परन्तु पुरुष प्रधान समाज आज भी नारियों का शोषण करता–अनु 9.9के तहत महिला सशक्तीकरण हेतु नौकरियों एवं पंचायतों में भो 33 प्रतिशत, आरक्षण दिया गया है। परन्तु आज भी इसका बहुत अधिक प्रभाव नहीं दिखता। दूसरी तरफ कुछ आधुनिक प्रवृति की महिलाएं अपनी खाली समय में मोबाइल एवं कंप्यूटर पर मनोरंजन हेतु खेल खेलती है। इस प्रवृति धीमें धीमे बढती जाती है जो उनके पारिवारिक जीवन के लिए उपयुक्त नहीं है। मोवाइल पर आनलाइन गेम के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलू निम्नांकित है।

नकारात्मक पक्ष

1. महिलाएं आनलाइन गेमिंग से खाली समय में मनोरंजन करती है जिससे उन्हें तनाव कुष्ठा अवसाद से मुक्ति मिलती है।

2. आत्म अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ती है। महिलाओं में विभिन जानकारी नवीन रूप में मिलती है जिससे वह स्वयं की अभिव्यक्त में सुधार कर सकती है।

3. संज्ञानात्मक कौशल में वृद्धि होती है। आन लाइन गेमिंग महिलाओं को जीतने के लिए बुद्धि प्रयोग का अवसर देता है जिससे उनके खाली समय का सदुपयोग होता है।

4. सामाजिक एवं शारीरिक क्षमताओं का विकास

महिलाएँ कुछ नवीन करना एवं सीखना चाहती है। घर पर रहकर महिलाएँ कुछ नवीन कार्य मोवाइल गेमिंग से सीखती है जिससे उनकी सामाजिक एवं शारीरिक समताओं का विकास होता है।

5. नवीन कार्य करने एवं खोजने की प्रवृति का विकास। मोबाइल में नवीन खेल खेलने की और कुछ नवीन कार्य करने की प्रवृति का विकास होता है।

नकारात्मक पक्ष

1. ऑनलाइन गेमिंग महिलाओं में नवीन मनोविकृति– महिलाओं की ऑनलाइन खेलने की बढ़ती विकृत मनोविकृती को जन्म देती है।

2. सामाजिक अलगाव मोबाइल पर अधिक खेलने से महिलाओं में सामाजिक कार्यों के प्रति नकारात्मकता बढ़ रही है।

3. मानसिक बीमारियों वृद्धि – में कुष्ठा तनाव अवसाद आदि मानसिक बीमारियों से वृद्धि हुई है।

4. शारीरिक गतिविधियों में कमी– महिलाएं बैठे – बैठे लंबे समय तक मोबाइल पर खेलती है जो स्वास्थ की हावी की उपघ्युक्त नहीं है।

5. आर्थिक हानि – अधिक समय तक गेम खेलने से मोबाइल डेटा की अधिक रूप से उपयोग होती है जिससे आर्थिक हानि होती है ।

6. उत्पादकता में कमी – महिलाएं आफिस में एवं जहाँ भी अवसर मिले खेलना आरंभ कर देती है जिससे उनकी उत्पादकता क्षमता कम होती है।

7. कामुक महिलाओं का चित्रण – कई मोबाइल खेलों में महिलाओं का कामुक चित्रण होता है जो उपयुक्त नहीं है।

8. रूढ़िवादी विचारों में वृद्धि – महिलाओं को कामुक दिखाना रूढ़िवादी विचार का बढ़ावा होता है।

निष्कर्ष

ऑनलाइन गेमिंग वर्तमान समय में बढ़ती जा रही है। सभी महिलाओं के पास अपना एक स्मार्ट फोन होता है। आनलाइन गेम बड़ी आसानी से मोबाइल में उपलब्ध हो जाते है जिससे महिला सशक्तीकरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है । इससे महिला स्वयं का आर्थिक नुकसान होता है । कई गेमों में महिला को अवास्तविक रूप एवं कामुक चित्रण होता है जिसमें महिला को यौन उत्पीडन एवं हिंसा के लिए ही दिखाया जाता है।

संदर्भ सूची

1. ''शर्मा, रेखा (2021)'' – 'डिजिटल गेमिंग और महिला सशक्तिकरण'। नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।

2. ''गुप्ता, सुनीता एवं सिंह, नेहा (2020)'' – 'किशोरियों में ऑनलाइन गेम की लत और सामाजिक प्रभाव'। भारतीय समाजशास्त्र जर्नल, खंड 45(2), पृ. 56–70।

3. ''जोशी, कविता (2019)'' – 'डिजिटल मीडिया और महिलाएं : सशक्तिकरण या निर्भरता'। मुंबई : वाणी प्रकाशन।

4. ''खान, फरहा (2022)'' – 'ऑनलाइन गेम्स का महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव'। महिला अध्ययन त्रैमासिक, खंड 18(1), पृ. 22–36।

5. ''भारतीय महिला आयोग (2023)'' – 'युवतियों में डिजिटल गेमिंगः अवसर और चुनौतियाँ'। नई दिल्ली : महिला आयोग रिपोर्ट।

6. ''चतुर्वेदी, मीना (2021)'' – 'महिला सशक्तिकरण और डिजिटल युग की चुनौतियाँ'। दिल्ली : साहित्य प्रकाशन।

7. ''सिंह, प्रीति (2022)'' – 'सोशल मीडिया, गेमिंग और महिला पहचान का संकट'। भारतीय महिला अध्ययन पत्रिका, खंड 12(3), पृ. 40–55।

8. ''मिश्रा, संगीता (2020)'' – 'युवा पीढ़ी में गेम की लत और उसका सामाजिक प्रभाव'। लखनऊ : नवभारत पब्लिकेशन।

9. ''कुमार, अनिता (2021)'' – 'डिजिटल खेलों की लत और महिला विद्यार्थियों का शैक्षणिक प्रदर्शन'। शिक्षा विमर्श, खंड 30(4), पृ. 90–104।

10. 'वर्मा, ज्योति (2023)'' – 'महिला सशक्तिकरण की राह में डिजिटल व्यसनों की भूमिका'। जयपुर : महिला चेतना प्रकाशन।

भारत में वर्ण–व्यवस्था : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और समकालीन प्रभाव

डॉ. महेन्द्र कुमार
सहायक आचार्य (अतिथि संकाय)
समाजशास्त्र
राजकीय महाविद्यालय,
सिणधरी ,जिला– बालोतरा

शोध सारांश

वर्ण व्यवस्था भारत की प्राचीन सामाजिक संरचना रही है, जिसकी नींव वैदिक काल में रखी गई थी। यह मूलतः कार्य–विभाजन पर आधारित थी, लेकिन समय के साथ यह जन्म–आधारित जाति व्यवस्था में परिवर्तित हो गई। वर्ण व्यवस्था का समकालीन प्रभाव मिश्रित है। एक ओर जहाँ जातिगत भेदभाव और असमानता अब भी समाज में मौजूद हैं, वहीं दूसरी ओर कानूनी उपायों, सामाजिक आंदोलनों और शिक्षा ने इन पर काफी हद तक अंकुश भी लगाया है। फिर भी, एक न्यायपूर्ण और समावेशी समाज की स्थापना के लिए जातिगत सोच को जड़ से उखाड़ने की आवश्यकता है और इसके लिए सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन सबसे ज़रूरी है।

इस शोध में वर्ण व्यवस्था की ऐतिहासिक उत्पत्ति, उसका सामाजिक विकास तथा वर्तमान समाज पर उसके प्रभावों का विश्लेषण किया गया है।

संकेताक्षर – भारत ,वर्ण– व्यवस्था ,ऐतिहासिक, समकालीन प्रभाव

प्रस्तावना

भारतीय समाज की सामाजिक संरचना की नीव जिस तंत्र पर आधारित रही है उसमें वर्ण व्यवस्था का विशेष स्थान रहा है यह एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था थी जो प्राचीन भारत में व्यक्ति की योग्यता ,कार्य और गुणों के आधार पर वर्गीकरण करती थी। वैदिक काल से लेकर उत्तर वैदिक और गुप्त काल तक, वर्ण व्यवस्था में अनेक परिवर्तन हुए जिसमें भारतीय समाज की दिशा और दिशा दोनों को गहराई से प्रभावित किया।

वर्ण का अर्थ – वर्ण का अर्थ रंग और वर्ण दोनों के लिए ही होता है। अधिकतर विद्वान जो भारतीय जाति –प्रथा की उत्पत्ति में प्रजातीय सिद्धांत को मानते हैं,वे वर्ण शब्द को रंग के अर्थ में ही प्रयोग करते हैं।

साहित्यिक दृष्टिकोण से वर्ण शब्द `ojh धातु से बना है जिसका अर्थ है–वरण करना या चुनना। यह चुनाव पेशे के चुनाव की ओर इशारा करता है और इस अर्थ में वर्ण का अर्थ उस समूह से था जो कि विशेष प्रकार के पेशे को अपनाता था और समाज द्वारा निर्धारित कुछ निश्चित कार्यों को करता था।

गुण और कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था

ब्राह्मण वर्ण – यह चारों वर्णों में सर्वश्रेष्ठ वर्ण माना गया है इसकी उत्पत्ति विराट पुरुष महा नारायण के मुख से हुई मानी गई है। भृगु संहिता में ब्राह्मण का वर्णन सफेद बताया गया। स्मृतियों में ब्राह्मण वर्ण की उत्पत्ति परमात्मा के मुख से बताई गई है।

ब्राह्मण के लक्षण – क्रोध एवं मोह का त्याग करने वाला, सदा सत्य बोलने वाला ,अपने गुरुजनों, बड़ों को संतुष्ट रखने वाला ,हिंसा न करने वाला ,अपनी इंद्रियों को वश में रखने वाला, धर्म का पालन करने वाला ,सदा स्वाध्याय में रत रहने वाला ,पवित्र आचरण करने वाला एवं यथाशक्ति दान देने वाला होता हैं।

ब्राह्मण के कर्तव्य – मनुस्मृति ग्रंथ में ब्राह्मण के निम्नलिखित कर्तव्य माने गये हैं–

पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ करवाना, दान

देना ,दान लेना। इन छः कर्तव्यों में से निम्न तीन कर्म कर्तव्य ब्राह्मण की आजीविका का साधन माने गए हैं – यज्ञ करवाना, पढ़ाना,दान लेना।

क्षत्रिय वर्ण – यह चारों वर्णों में दूसरा श्रेष्ठ वर्ण माना जाता है इस वर्ण की उत्पत्ति विराट पुरुष महानारायण की भुजाओं से हुई मानी गयी हैं।

क्षत्रिय के कर्तव्य– मनुस्मृति ग्रंथ में क्षत्रिय के निम्नलिखित छः लक्षण बताये गये हैं–

प्रजा का पालन करने वाला

धर्म में उत्तम आस्था रखने वाला

गायों व ब्राह्मणों की रक्षा के लिए युद्ध करते हुए मोक्ष की गति को प्राप्त हो जाने वाला

घायलों की रक्षा करने वाला

स्वयं घायल होते हुए भी अन्य बेसहारा लोगों की रक्षा करने वाला

स्त्रियों व साधुओं के प्रति समभाव रखने वाला

वैश्य वर्ण– श्रेष्ठ कर्म के अनुसार यह तीसरा वर्ण माना जाता है। इस वर्ण की उत्पत्ति विराट पुरुष महानारायण के दोनों जंघाओं से हुई मानी जाती है।

वैश्य की कर्तव्य

वैश्य के निम्नलिखित सात प्रमुख कर्तव्य माने गये हैं–

– पशुओं की रक्षा करना या पशुपालन करना

– दान देना

– यज्ञ करवाना

– अध्ययन करना

– व्यापार करना

– ब्याज का लेनदेन करना

– खेती करना

इस प्रकार वैश्यों का प्रमुख उद्देश्य व्यवसाय, वाणिज्य व व्यापार करना था। इस संसार में चारों वर्णों की उदरपूर्ति वैश्य के द्वारा ही की जाती थी।

शूद्र वर्ण– यह चारों वर्णों में सबसे निम्न वर्ण माना गया है इस वर्ण की उत्पत्ति विराट पुरुष महानारायण के दोनों पैरों से मानी गयी है।

शूद्र के कर्तव्य – इन तीनों द्विजों ब्राह्मण ,क्षत्रिय ,वैश्य की सेवा करना ही शूद्र का प्रमुख कर्म माना गया हैं। धर्म ग्रंथो के अनुसार शूद्र को भिक्षाटन करने, हवन करने व्रत या उपवास रखने एवं गुरु के समीप रहकर विद्या अध्ययन करने का अधिकार नहीं था।

वर्ण व्यवस्था का अर्थ

वर्ण व्यवस्था का शाब्दिक अर्थ है. 'वर्णों की व्यवस्था', जहाँ 'वर्ण' का तात्पर्य सामाजिक वर्ग या समूह से है। यह व्यवस्था समाज को चार प्रमुख वर्गों में विभाजित करती है, जिससे सामाजिक उत्तरदायित्वों और कर्तव्यों का विभाजन संभव हो सके।

वर्ण व्यवस्था की परिभाषाएं–

1. मनुस्मृति के अनुसार –

"चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।"

(भगवद्गीता, अध्याय 4, श्लोक 13)

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि मैंने चार वर्णों की रचना की. गुण (स्वभाव) और कर्म (कार्य) के आधार पर।

2. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार–

वर्ण व्यवस्था समाज में श्रम विभाजन की एक पद्धति थी, जिसका उद्देश्य सामाजिक संतुलन और समरसता बनाए रखना था।

3. डॉ. भीमराव अंबेडकर के अनुसार–

वर्ण व्यवस्था एक सामाजिक भेदभाव की प्रणाली है, जिसमें जन्म के आधार पर व्यक्ति की सामाजिक स्थिति तय की जाती है।

4. महात्मा गांधी के अनुसार–

वर्ण व्यवस्था एक आदर्श सामाजिक ढांचा था, परंतु जब उसमें जन्म आधारित भेदभाव जुड़ गया, तब वह अन्याय का रूप बन गया।

वर्ण की उत्पत्ति संबंधी विचार / सिद्धांत

1. दैव सिद्धांत (ईश्वर प्रदत्त सिद्धांत)

यह सिद्धांत वेदों और धार्मिक ग्रंथों में पाया जाता है। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त के अनुसार, चारों वर्ण भगवान के शरीर से उत्पन्न हुए–

ब्राह्मण – मुख से
क्षत्रिय – भुजाओं से
वैश्य – जंघाओं से
शूद्र – पैरों से
उद्देश्य : समाज की सुव्यवस्था और कार्यविभाजन।
मुख्य विचार – वर्ण व्यवस्था ईश्वर द्वारा बनाई गई थी और प्रत्येक वर्ण का एक विशिष्ट कार्य है।

2. गुण–कर्म सिद्धांत (कर्म आधारित सिद्धांत
यह सिद्धांत भगवद्गीता और उपनिषदों में वर्णित है।
श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा–
'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः'
(गीता 4.13)

चार वर्ण मैंने गुण (स्वभाव) और कर्म (कार्य) के आधार पर बनाए हैं।

मुख्य विचार – व्यक्ति का वर्ण उसके स्वभाव और कार्य से तय होता है, जन्म से नहीं।

3. ऐतिहासिक / राजनीतिक सिद्धांत

आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार, वर्ण व्यवस्था सामाजिक और राजनीतिक कारणों से विकसित हुई।

आर्यों के आगमन के बाद उन्होंने अपने वर्चस्व को बनाए रखने के लिए समाज को वर्गों में बाँटा।

ब्राह्मणों ने धार्मिक श्रेष्ठता, क्षत्रियों ने राजनीतिक सत्ता, और वैश्य आर्थिक शक्ति को अपनाया।

मुख्य विचार – वर्ण व्यवस्था एक सामाजिक–राजनीतिक रणनीति थी, जो धीरे–धीरे कठोर हो गई।

4. आर्थिक सिद्धांत

प्रसिद्ध समाजशास्त्री डॉ. भीमराव अंबेडकर ने कहा कि वर्ण व्यवस्था की जड़ें आर्थिक असमानता में हैं। उच्च वर्णों ने अपने हितों की रक्षा के लिए निम्न वर्गों को सेवा और श्रम तक सीमित कर दिया।

मुख्य विचार – वर्ण व्यवस्था ने आर्थिक शोषण को स्थायी रूप देने का काम किया।

5. जन्म आधारित सिद्धांत (जाति व्यवस्था की नींव)
समय के साथ वर्ण व्यवस्था में कठोरता आई और यह जन्म पर आधारित हो गई।

इसका उल्लेख मनुस्मृति जैसे धर्मशास्त्रों में मिलता है।

मुख्य विचार – वर्ण अब कर्म से नहीं बल्कि जन्म से तय होने लगा।

वर्ण– व्यवस्था की उत्पत्ति –

1. वैदिक काल (1500 ई.पू. – 600 ई.पू.) –
घ्प्रारंभिक वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था व्यवसाय आधारित थी, न कि जन्म आधारित।
चार प्रमुख वर्णों का उल्लेख ऋग्वेद के 'पुरुष सूक्त' में मिलता है –
– ब्राह्मण – ज्ञान और यज्ञ कर्म के लिए
– क्षत्रिय – शासन, सुरक्षा और युद्ध के लिए
– वैश्य – कृषि, पशुपालन, व्यापार के लिए
– शूद्र – सेवा कार्यों के लिए
– यह व्यवस्था लचीली थी और वर्ण परिवर्तन संभव था।
2. उत्तर वैदिक काल में –
– वर्ण व्यवस्था अधिक जन्म आधारित होने लगी।
– सामाजिक असमानता का आरंभ हुआ।
– शूद्रों की स्थिति सबसे निम्न मानी जाने लगी और उन्हें शिक्षा व यज्ञ से वंचित किया गया।

वर्ण –व्यवस्था का विकास –

1. बौद्ध–जैन काल (600 ई.पू. – 200 ई.) –
बुद्ध और महावीर ने वर्ण व्यवस्था की आलोचना की।
उन्होंने कर्म और नैतिकता को श्रेष्ठता का आधार बताया, न कि जन्म।

2. स्मृति काल (मनुस्मृति आदि) –
इस काल में वर्ण व्यवस्था कठोर हो गई।
मनुस्मृति जैसे ग्रंथों में शूद्रों और महिलाओं की स्थिति और भी निम्न कर दी गई।
वर्णों के बीच सामाजिक दूरी और विवाह संबंधी कठोर नियम बनाए गए।

3. **मध्यकाल** –

– भक्ति आंदोलन ने वर्ण व्यवस्था को चुनौती दी।

– संत कबीर, रैदास, गुरु नानक आदि ने जात–पात की आलोचना की और समानता की बात की।

4. ब्रिटिश काल –

–अंग्रेजों ने जातियों की जनगणना की और वर्ण व्यवस्था को और जटिल बना दिया।

–जातियों को प्रशासनिक ढाँचे में दर्ज कर औपचारिक रूप दे दिया गया।

5. आधुनिक काल –

–स्वतंत्रता संग्राम के दौरान नेताओं (जैसे महात्मा गांधी, डॉ. अंबेडकर) ने वर्ण व्यवस्था की आलोचना की।

घ्संविधान निर्माण के समय जातिगत भेदभाव को समाप्त करने का प्रयास हुआ।

वर्ण –व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ

1. चार वर्णों में विभाजन–

समाज को चार मुख्य वर्गों में बाँटा गया –

ब्राह्मण (ज्ञान और शिक्षा देने वाले)

क्षत्रिय (शासन और रक्षा करने वाले)

वैश्य (व्यापार और कृषि करने वाले)

शूद्र (सेवा करने वाले)

2. कर्म आधारित प्रारंभिक व्यवस्था–

आरंभ में वर्ण व्यक्ति के गुण और कर्म (कार्य) पर आधारित थी, न कि उसके जन्म पर।

3. जन्म आधारित व्यवस्था–

समय के साथ यह व्यवस्था जन्म आधारित हो गई – व्यक्ति का वर्ण उसके जन्म से निर्धारित होने लगा।

4. वर्णों के कार्य निर्धारित–

हर वर्ण के कार्य और कर्तव्य तय थे। एक वर्ण का व्यक्ति सामान्यतः दूसरे वर्ण का कार्य नहीं कर सकता था।

5. सामाजिक भेदभाव–

उच्च वर्णों को विशेषाधिकार प्राप्त थे जबकि शूद्रों को निम्न माना गया और उनके साथ भेदभाव किया गया।

6. शुद्धता और अस्पृश्यता की भावना–

कुछ वर्णों को शुद्ध और कुछ को अशुद्ध माना गया। इससे अस्पृश्यता जैसी कुरीतियाँ जन्म लेने लगीं।

7. विवाह और खानपान पर नियंत्रण–

अंतरवर्णीय विवाह और एक साथ भोजन करने पर प्रतिबंध था। विवाह केवल अपने वर्ण में ही किया जा सकता था।

8. सामाजिक गतिशीलता का अभाव–

व्यक्ति अपने जन्म से निर्धारित वर्ण को नहीं बदल सकता था, जिससे सामाजिक गतिहीनता आई।

9. धार्मिक मान्यता–

धार्मिक ग्रंथों जैसे मनुस्मृति आदि में वर्ण व्यवस्था को ईश्वरीय आदेश बताया गया, जिससे इसे धार्मिक समर्थन मिला।

वर्ण– व्यवस्था का सामाजिक महत्व

1 . सामाजिक संरचना का निर्माण

वर्ण व्यवस्था ने समाज को एक व्यवस्थित ढांचे में बाँटा। इससे प्रत्येक वर्ग को अपनी भूमिका और कर्तव्यों का ज्ञान हुआ।

2. कार्य विभाजन

हर वर्ण को विशेष कार्य सौंपे गए थे–

ब्राह्मण – शिक्षा और धर्म

क्षत्रिय – शासन और सुरक्षा

वैश्य – व्यापार और कृषि

शूद्र – सेवा कार्य

इससे समाज में कार्यों का सुव्यवस्थित विभाजन हुआ।

3. सामाजिक स्थिरता

चूँकि हर वर्ग अपने–अपने कर्तव्यों का पालन करता था, इससे समाज में अनुशासन और स्थिरता बनी रहती थी।

4. संगठित जीवन प्रणाली

वर्ण व्यवस्था के कारण व्यक्ति को यह ज्ञात होता था कि उसे समाज में क्या भूमिका निभानी है, जिससे जीवन की दिशा स्पष्ट होती थी।

5. धार्मिक और नैतिक मार्गदर्शन

ब्राह्मणों द्वारा धार्मिक शिक्षा देने और समाज को

नैतिक दिशा देने का कार्य किया जाता था, जिससे धर्म आधारित सामाजिक जीवन बना रहा।

6. सहयोग और परस्पर निर्भरता

– वर्णों के बीच परस्पर सहयोग की भावना थी। एक वर्ण दूसरे की आवश्यकता पूरी करता था। इससे एक प्रकार की सामाजिक एकता बनी रहती थी।

– चारों वर्ण एक–दूसरे के कार्यों पर निर्भर थे, जिससे समाज में परस्पर सहयोग की भावना बनी रही।

– यह एक प्रकार का सामाजिक संतुलन था।

वर्ण – व्यवस्था के प्रमुख दोष –

1. जन्म आधारित विभाजन

व्यक्ति की योग्यता या कर्म के बजाय उसका वर्ण जन्म से तय होने लगा।

इससे योग्य लोगों को उच्च स्थान नहीं मिला और अयोग्य लोग विशेषाधिकारों के अधिकारी बन गए।

2. सामाजिक भेदभाव

उच्च वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय) को विशेष अधिकार और सम्मान मिला, जबकि शूद्रों को हीन समझा गया।

उन्हें मंदिरों, विद्यालयों, और सार्वजनिक स्थलों में प्रवेश की अनुमति नहीं थी।

3. अस्पृश्यता और सामाजिक बहिष्कार

वर्ण व्यवस्था ने अस्पृश्यता को जन्म दिया, जिससे कुछ जातियों को समाज से पूरी तरह अलग कर दिया गया।

यह अत्यंत अमानवीय और अपमानजनक व्यवहार था।

4. सामाजिक गतिशीलता का अभाव

व्यक्ति अपने वर्ण को बदल नहीं सकता था, चाहे उसमें कितनी भी योग्यता क्यों न हो।

इससे समाज में प्रगति और सुधार की संभावनाएँ कम हो गई।

5. शोषण और अत्याचार

निम्न वर्णों को कठिन श्रम, सेवा और अपमानजनक कार्यों तक सीमित कर दिया गया।

उन्हें शिक्षा, संपत्ति और समान अधिकारों से वंचित रखा गया।

6. महिलाओं की स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव

वर्ण व्यवस्था के साथ–साथ पितृसत्तात्मक सोच बढ़ी, जिससे स्त्रियों की स्वतंत्रता और शिक्षा सीमित हो गई।

7. राष्ट्र की एकता को नुकसान

वर्ण व्यवस्था ने समाज को विभाजित कर दिया, जिससे सामाजिक एकता, समरसता और भाईचारा कमजोर हुआ।

इससे विदेशी आक्रमणों का सामना करने में भी भारत कमजोर पड़ गया।

8. प्रगति और विकास में बाधा

योग्यता और मेहनत की कद्र न होने के कारण प्रतिभाओं का दमन हुआ।

इससे समाज में नवाचार, शिक्षा और वैज्ञानिक सोच का विकास रुक गया।

वर्ण –व्यवस्था का समकालीन प्रभाव

1. सामाजिक प्रभाव

जातिगत भेदभाव आज भी मौजूद है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। दलितों को मंदिरों में प्रवेश, पानी के स्रोतों का उपयोग, और ऊँची जातियों के साथ बैठकर खाने तक में परेशानी होती है।

अंतरजातीय विवाहों का विरोध : जाति के बाहर विवाह करने वालों को सामाजिक बहिष्कार, हिंसा या ऑनर किलिंग जैसी घटनाओं का सामना करना पड़ता है।

सामाजिक असमानता : जाति के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा और अवसरों में असमानता बनी हुई है।

2. राजनीतिक प्रभाव

जातिगत राजनीतिक राजनीतिक दलों द्वारा जाति के आधार पर वोट बैंक तैयार किए जाते हैं। चुनावों में उम्मीदवारों का चयन जातीय समीकरणों के आधार पर होता है।

जाति जनगणना की माँग पिछड़ी जातियों को उनका 'हक' दिलाने के नाम पर जाति जनगणना की माँगें

समय–समय पर उठती हैं।

घ्आरक्षण की राजनीतिक आरक्षण का लाभ किसे मिलना चाहिए, किसे नहीं – इस पर राजनीतिक बहस जारी रहती है। इससे सामाजिक तनाव और ध्रवीकरण भी होता है।

3. शैक्षिक प्रभाव

शैक्षणिक संस्थानों में भेदभाव : अनुसूचित जातियों और जनजातियों के छात्रों को कभी–कभी संस्थानों में अलग नज़र से देखा जाता है, जिससे उनका आत्मविश्वास प्रभावित होता है।

आरक्षण से लाभ : सरकारी शिक्षा संस्थानों में आरक्षण से वंचित वर्गों को शिक्षा तक पहुँच मिली है, लेकिन इसे लेकर समाज में मतभेद भी हैं।

शैक्षिक असमानता : गरीब और निचली जातियों के बच्चों के पास अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा का अभाव अब भी है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में।

4. आर्थिक प्रभाव

आर्थिक अवसरों में असमानता : निचली जातियों के लोगों को अब भी मुख्यधारा की नौकरियों, व्यवसायों और संसाधनों तक पूर्ण पहुँच नहीं है।

आरक्षण के माध्यम से सरकारी नौकरियाँ : आरक्षण के चलते कुछ आर्थिक उत्थान अवश्य हुआ है, परंतु ये लाभ सीमित तबकों तक ही सिमट गया है – जिसे क्रीमी लेयर कहा जाता है।

जाति आधारित पेशारू कुछ क्षेत्रों में आज भी जातियों के पारंपरिक पेशे (जैसे मेहतर, धोबी, कुम्हार) से जुड़ी सामाजिक छवियाँ बनी हुई हैं।

5. मनोवैज्ञानिक प्रभाव

हीन भावना और आत्मग्लानि : निचली जातियों से संबंधित कई युवाओं में हीन भावना पाई जाती है, विशेषकर जब उन्हें भेदभाव का सामना करना पड़ता है।

आत्मगौरव की भावना : वहीं, जाति पर गर्व करने की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है, जो कभी–कभी टकराव को जन्म देती है।

6. सकारात्मक परिवर्तन

शहरीकरण और शिक्षा ने कुछ हद तक जातिगत पहचान को कमजोर किया है।

सामाजिक आंदोलनों और संगठनों (जैसे अंबेडकरवादी आंदोलन, बहुजन समाज आंदोलन) ने दलितों और पिछड़े वर्गों में सामाजिक चेतना और आत्मबल का विकास किया है।

नए मीडिया और सोशल मीडिया ने जाति के मुद्दों को उजागर करने का एक नया मंच दिया है।

निष्कर्ष

वर्ण व्यवस्था, जो आरंभ में समाज के कार्य विभाजन की एक युक्तिपूर्ण व्यवस्था थी, समय के साथ भेदभाव और असमानता का स्रोत बन गई। आधुनिक समाज में इसके नकारात्मक प्रभावों को दूर करने के लिए व्यापक सामाजिक सुधार और संवैधानिक प्रयास हुए हैं। इस व्यवस्था की समालोचना और पुनर्विचार आज भी सामाजिक न्याय की दिशा में एक अहम मुद्दा बना हुआ है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1.शिवदत्त ज्ञानी, वेदकालीन समाज, चौखम्बा प्रकाशन , वाराणसी,1967

2.भरत लाल चतुर्वेदी, महाभारत कालीन समाज व्यवस्था, विद्या प्रकाशन ,नई दिल्ली, 1981

3.रोमिला थापर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास,ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली ,2001

4.डी.एन.झा, प्राचीन भारत रू एक रूपरेखा, मनोहर पब्लिकेशन ,नई दिल्ली, 2005

5.कैलाश खन्ना ,प्राचीन भारत का इतिहास, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2010

6.सोहन राज तातेड़, प्राचीन भारत का आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक इतिहास, खण्डेलवाल पब्लिशर्स जयपुर,2015

हिंदी साहित्य में नारी का योगदान

ईशा मीना
सहायक आचार्य, सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर रोड़,
अजमेर (राज.)–305001 मो. 9828530221
ई–मेल :ishamena9828@gmail.com

देश की आधी आबादी यानी महिलाओं का साहित्यिक योगदान प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक महत्वपूर्ण और अद्वितीय रहा है। प्राचीन काल से ही मैत्रेयी, गार्गी आदि विदुषी महिलाओं के उल्लेख मिलते हैं। हिंदी साहित्य के विस्तृत संसार में महिलाओं ने न केवल प्रेरणा स्रोत बनकर बल्कि सक्रिय रचनाकार के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पुरुष प्रधान सामाजिक संरचनाओं के बावजूद उन्होंने अपनी कलम के माध्यम से अपनी आवाज को बुलंद किया। समाज की रूढ़ियों को चुनौती दी और साहित्यिक परिदृश्य को समृद्ध किया। उनका योगदान केवल कविता या कहानियों तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि इसमें उपन्यास नाटक निबंध और आलोचना भी शामिल है। हिंदी साहित्य में आदिकाल से भक्तिकाल तक नई कवियों का उदय एक अभूतपूर्व घटना थी। इस काल की सबसे प्रसिद्ध कवित्री मीराबाई है। मीराबाई की रचनाएं उनकी भक्ति, सामाजिक बंधनों के प्रति विद्रोह और आध्यात्मिक स्वतंत्रता को दर्शाती है। आधुनिक काल में महिलाओं ने न केवल अपनी उपस्थिति दर्ज कराई बल्कि साहित्य की विभिन्न विधाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया। महादेवी वर्मा जिन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। सुभद्रा कुमारी चौहान जो अपनी राष्ट्रवादी कविताओं के लिए प्रसिद्ध रही है। मन्नू भंडारी और कृष्णा सोबती ने नई कहानी आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी कहानियों और उपन्यासों में समाज की सच्चाइयों, पारिवारिक संबंधों और नारी के आंतरिक द्वंद्व को गहराई से चित्रित किया गया है। इन लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं में पारंपरिक विषयों के अलावा ऐसे विषयों को भी उठाया जिन्हें अक्सर नजरअंदाज किया जाता था। उन्होंने नारी मनोविज्ञान, उनके संघर्षों, आकांक्षाओं और सामाजिक अन्याय को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाया। उनके लेखन ने समाज में नारी की स्थिति पर बहस छेड़ी और नई दृष्टिकोण प्रदान किए। उदाहरण के लिए, उषा प्रियंवदा ने अपनी कहानी और उपन्यासों में शहरी जीवन की जटिलताओं और अकेलेपन को दर्शाया। मृदुला गर्ग और चित्रा मुद्गल ने स्त्री–पुरुष संबंधों, यौनिकता और सामाजिक रूढ़ियों को बेबाकी से उजागर किया। इन रचनाकारों ने न केवल साहित्यिक गुणवत्ता को बढ़ाया बल्कि सामाजिक चेतना को भी जागृत किया। हिंदी साहित्य में नारी का योगदान अतुलनीय है। आदिकाल से आधुनिक काल तक हर युग में महिलाओं ने अपनी लेखनी से एक गहरी छाप छोड़ी है। उन्होंने समाज को आइना दिखाया, नारी को एक व्यक्ति के रूप में स्थापित किया और साहित्य को नहीं आयाम दिए। उनका योगदान आज भी जारी है और यह हिंदी साहित्य के भविष्य को और भी उज्जवल बनाता है।

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में नारी का योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली रहा है। नारी लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में महिलाओं की स्थिति, उनके अधिकारों और उनकी भावनाओं को व्यक्त किया है।

कुछ प्रमुख नारी लेखिकाएं जिन्होंने हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है :

1. महादेवी वर्मा : महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मीरां कहा जाता है। उनकी कविताओं में प्रेम, विरह और अध्यात्म की गहराई है।

2. सुभद्रा कुमार चौहान : सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएं आजादी की लड़ाई के दौरान बहुत लोकप्रिय हुई। उनकी कविता "झांसी की रानी" एक प्रसिद्ध उदाहरण है।

3. उषा प्रियंवदा : उषा प्रियंवदा की कहानियों में मध्यमवर्ग की महिलाओं की समस्याओं और उनके जीवन के अनुभवों को दर्शाया गया है।

4. मन्नू भंडारी : मन्नू भंडारी की कहानियों में महिलाओं की भावनाओं और उनके जीवन के संघर्षों को बहुत ही संवेदनशील से दर्शाया गया है।

इन नारी लेखिकाओं ने हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और उनकी रचनाएं आज भी पाठकों द्वारा पसंद की जाती है।

महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, उषा प्रियंवदा और मन्नू भंडारी हिन्दी साहित्य की चार प्रमुख लेखिकाएं है, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में महिलाओं की स्थिति, उनके अधिकारों और उनकी भावनाओं को व्यक्त किया है। इन चारों लेखिकाओं की रचनाओं में कुछ समानताएं और अंतर है जो उनके तुलनात्मक अध्ययन को रोचक बनाते हैं।

समानताएं :

1. नारी सशक्तिकरण : चारों लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं में नारी सशक्तिकरण की बात कही है और महिलाओं के अधिकारों की वकालत की है।

2. महिला अनुभव : इन लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं में महिलाओं के अनुभवों और भावनाओं को व्यक्त किया है, जिससे पाठकों को महिलाओं के जीवन की वास्तविकता का पता चलता है।

अंतर

1. लेखन शैली : महादेवी वर्मा की कविताएं अधिक आध्यात्मिक और भावपूर्ण हैं, जबकि सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएं अधिक देशभक्ति और क्रांतिकारी हैं। उषा प्रियंवदा और मन्नूभंडारी की कहानियां अधिक वास्तविक और सामाजिक समस्याएं पर केन्द्रित हैं।

2. विषय : महादेवी वर्मा की कविताएं अधिक प्रेम, विरह और अध्यात्म पर केन्द्रित हैं, जबकि सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएं आजादी की लड़ाई और देशभक्ति पर केन्द्रित हैं। उषा प्रियंवदा और मन्नू भंडारी की कहानियां मध्यम वर्ग की महिलाओं की समस्याओं और उनके जीवन के अनुभवों पर केन्द्रित है।

3. भाषा : महादेवी वर्मा और सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में अधिक काव्यात्मक भाषा का उपयोग किया गया है, जबकि उषा प्रियंवदा और मन्नू भंडारी की कहानियों में अधिक सरल और वास्तविक भाषा का उपयोग किया गया है।

इन चारों लेखिकाओं की रचनाएं हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और उनकी तुलना करने से हमें उनके अद्वितीय योगदान को समझने में मदद मिलती है।

सेना व सुरक्षा के क्षेत्र में नारी शक्ति का पूर्ण योगदान

नीशू दुबे (शोधार्थी)
महात्मा ज्योति राव फूले विश्वविद्यालय
जयपुर (राजस्थान)
मो. 7610836042

सारांशः–

परिचय

राष्ट्र की रक्षा और सुरक्षा प्रत्येक देश की सर्वोच्च प्राथमिकता होती है। यह क्षेत्र लंबे समय तक पुरुष प्रधान माना गया, किंतु 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से महिलाओं ने इस धारणा को बदलना प्रारंभ किया। आज नारी शक्ति सेना और सुरक्षा बलों के प्रत्येक स्तर पर अपनी प्रतिभा, साहस और समर्पण का परिचय दे रही है। भारतीय सशस्त्र बलों में 1992 से महिलाओं की औपचारिक भर्ती प्रारंभ हुई, और वर्तमान समय में वे लड़ाकू विमानों, मिसाइल संचालन, युद्धक अभियानों, सीमा सुरक्षा और आतंकवाद–रोधी गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। यह परिवर्तन केवल सैन्य शक्ति की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक समानता और नारी सशक्तिकरण की दिशा में भी मील का पत्थर है।

उद्देश्य

सेना व सुरक्षा के क्षेत्र में नारी शक्ति का पूर्ण योगदान. सारांश के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. सेना एवं सुरक्षा बलों में महिलाओं की भूमिका और योगदान का विश्लेषण करना।
2. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से लेकर वर्तमान तक महिलाओं की सहभागिता में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
3. सुरक्षा बलों में महिलाओं की भागीदारी से प्राप्त उपलब्धियों और संभावनाओं को उजागर करना।
4. इस क्षेत्र में महिलाओं के समक्ष आने वाली चुनौतियों और उनके समाधान पर विचार करना।
5. नारी शक्ति की बढ़ती भागीदारी के सामाजिक एवं राष्ट्रीय महत्व को स्पष्ट करना।

चर्चा

भारतीय वायुसेना में लाइट लेटिनेंट अवनी चतुर्वेदी, भावना कांत और मोहना सिंह को पहली महिला फाइटर पायलट्स के रूप में मान्यता मिली। सेना में कैप्टन तानिया शेरगिल द्वारा गणतंत्र दिवस परेड की अगुवाई करना महिलाओं की बढ़ती प्रतिष्ठा का उदाहरण है। सुरक्षा बलों में CRPF, BSF और ITBP में महिला बटालियनें आतंकवाद–रोधी अभियानों और सीमा गश्त में भागीदारी निभा रही हैं। नारी शक्ति केवल युद्धक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि वे मानवीय दृष्टिकोण, संवेदनशीलता और मानसिक दृढ़ता के माध्यम से सुरक्षा तंत्र को अधिक सशक्त और संतुलित बना रही हैं। हालाँकि, सामाजिक पूर्वाग्रह, शारीरिक चुनौतियाँ, कार्य–जीवन संतुलन और नीतिगत बाधाएँ अभी भी मौजूद हैं। फिर भी, स्थायी कमीशन, मातृत्व सुविधाएँ और युद्धक भूमिकाओं में बढ़ती सहभागिता जैसी नीतिगत सुधार इन चुनौतियों को कम कर रहे हैं।

सेना एवं सुरक्षा के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान :

भारतीय सेना और सुरक्षा बलों में महिलाओं की भूमिका समय के साथ बदली है और अब वे विभिन्न पदों पर कार्यरत हैं। महिलाओं का योगदान न केवल सेना में बल्कि सुरक्षा के अन्य सुरक्षा के अन्य क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण है।

भारतीय सेना में महिलाएं :

1. शॉर्ट सर्विस कमीशन : भारतीय सेना में महिलाओं

को शॉर्ट सर्विस कमीशन के माध्यम से अधिकारी के रूप में नियुक्त किया जाता है।

2. विभिन्न शाखाओं में नियुक्ति : महिलाएं अब सेना की विभिन्न शाखाओं जैसे कि आर्मी मेडिकल कोर, आर्मी डेंटल कोर, आर्मी नर्सिंग कोर आदि में कार्यरत है।

3. स्थायी कमीशन : हाल ही में, भारतीय सेना ने महिलाओं को स्थायी कमीशन देने का निर्णय लिया है, जिससे वे सेना में स्थायी रूप से कार्य कर सकती है।

महिलाओं के योगदान के क्षेत्र :

1. चिकित्सा और नर्सिंग : महिलाएं सेना में चिकित्सा और नर्सिंग के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

2. प्रशासनिक और लॉजिस्टिक्स : महिलाएं प्रशासनिक और लॉजिस्टिक्स के क्षेत्र में भी कार्यरत है।

3. संचार और खुफिया : महिलाएं संचार और खुफिया के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

महिलाओं के योगदान का महत्व

1. समानता और सशक्तिकरण : सेना में महिलाओं की भागीदारी समानता और सशक्तिकरण का प्रतीक है।

2. नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा : महिलाएं सेना में कार्य करके नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बन रही हैं।

3. राष्ट्र की सेवा : महिलाएं सेना में कार्य करके राष्ट्र की सेवा में अपना योगदान दे रही हैं।

निष्कर्ष

सेना व सुरक्षा के क्षेत्र में नारी शक्ति का योगदान न केवल राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ कर रहा है, बल्कि समाज में समानता और सशक्तिकरण का नया अध्याय भी रच रहा है। महिलाएँ आज वीरता, शौर्य और कौशल का परिचय देकर आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बन रही हैं। भविष्य में उनकी व्यापक भागीदारी भारत को एक सुरक्षित, सशक्त और प्रगतिशील राष्ट्र बनाने में निर्णायक भूमिका निभाएगी।

भारतीय सेना और सुरक्षा बलों में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण है और उनकी भूमिका समय के साथ बदली है। महिलाएं अब विभिन्न पदों पर कार्यरत हैं और राष्ट्र की सेवा में अपना योगदान दे रही हैं। सेना में महिलाओं की भागीदारी समानता और सशक्तिकरण का प्रतीक है और नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

संदर्भः—

- Ministry of Defence. (2023)- Women in the Armed Forces: Annual Report 2022&23- Government of India.
- Singh, R. (2021). Women empowerment through participation in armed forces- International Journal of Social Sciences and Management, 8(2)] 45-53-
- Sharma,P., & Verma, K. (2020)- Role of women in security and policing in India- Indian Journal of Gender Studies] 27(3)] 389-405-
- The Hindu- [2020, January 27- Captain Tania Shergill leads Republic Day parade- Retrieved from https://www-thehindu-com
- Times of India- (2019, June 16)- India*s first women fighter pilots ready for combat missions- Retrieved from https://timesofindia-indiatimes-com

The Effect of Hath Yoga Training on Endurance and Flexibility of Cricket Players

Prof. B.S. Chouhan
Dean Faculty of Phy. Education
B.N. University

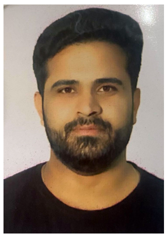

Ojash Sharma
Research Scholar
B.N. University

Abstract

This study investigates the impact of Hath Yoga training on the endurance and flexibility of cricket players. A sample of 30 cricket players was divided into two groups: an experimental group that underwent Hath Yoga training for 12 weeks and a control group that did not receive any yoga training. The results showed a significant improvement in endurance and flexibility among the experimental group compared to the control group. The findings suggest that Hath Yoga training can be a valuable adjunct to traditional cricket training programs.

Introduction

Cricket is a physically demanding sport that requires a high level of endurance, flexibility, and strength. Hath Yoga, a traditional form of yoga, has been shown to improve physical and mental well-being in various populations. This study aims to investigate the effect of Hath Yoga training on the endurance and flexibility of cricket players.

Methodology

Sample: 30 cricket players were randomly selected and divided into two groups: an experimental group (n = 15) and a control group (n = 15).“- Training Program: The experimental group underwent Hath Yoga training for 12 weeks, 3 times a week, for 60 minutes per session.“- Measurements: Endurance was measured using a 20-meter shuttle run test, and flexibility was measured using a sit-and-reach test.

Training Schedule

Hath Yoga Training Program
Duration: 12 weeks
Frequency: 3 times per week
Session duration: 60 minutes-
Yoga style: Hath Yoga
Physical Measurements
Endurance: 20-meter shuttle run test
Flexibility: Sit-and-reach test

Limitations:

1. Sample size: The study had a relatively small

sample size.

2. Duration: The study was limited to a 12-week intervention period.

Results:

The results showed a significant improvement in endurance and flexibility among the experimental group compared to the control group.

Discussion

The findings of this study suggest that Hath Yoga training can improve endurance and flexibility in cricket players. The physical postures, breathing techniques, and meditation practices in Hath Yoga may contribute to these benefits. The improved endurance and flexibility can enhance cricket players' performance and reduce the risk of injury.

Conclusion

This study provides evidence that Hath Yoga training can be a valuable adjunct to traditional cricket training programs. Cricket players and coaches can consider incorporating Hath Yoga into their training regimens to improve endurance and flexibility.

Recommendations

1. Cricket players can benefit from incorporating Hath Yoga into their training programs to improve endurance and flexibility.

2. Coaches and trainers can consider offering Hath Yoga sessions as part of their players' physical conditioning.

3. Further research can investigate the long-term effects of Hath Yoga training on cricket players' performance and injury prevention.

Future Directions

1. Larger studies: Future studies should aim to recruit larger sample sizes.

2. Long-term effects: Research should investigate the long-term effects of Hath Yoga training on cricket players' performance and injury prevention.

References

- Iyer, S. (2018). Effects of yoga on flexibility and balance in athletes. Journal of Sports Science and Medicine, 17(3), 249-255.

- Streeter, C. C., et al. (2010). Effects of yoga asana practice on the brain and body. Human Brain Mapping, 31(11), 1475-1486.

बी.एड. पाठ्यक्रम में इन्टर्नशिप कार्यक्रम की वस्तु–स्थिति, एवं प्रथम व द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षकों का तुलनात्मक अध्ययन।

सन्तोष यादव
शोधार्थी
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर (राज.)
मो. 9351321830

डॉ विभा देवपुरा
सहायक आचार्य
विद्या भवन, गोविन्द सेकसरिया शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय देवाली, उदयपुर।
मो. 9414255100

सारांश :–

बी.एड पाठ्यक्रम के आवश्यक घटकों में से स्कूल इन्टर्नशिप कार्यक्रम हैं। इन्टर्नशिप बी.एड प्रशिक्षणार्थियों को कक्षा में अपने कौशल का अभ्यास करने का मौका मिलता हैं। विद्यालय के छात्रों की विभिन्न आवश्यकताओं को पुरा करने के लिए छात्र–छात्राओं की विभिन्न आवश्यकताओं को पुरा करने के लिए छात्र–शिक्षक को आवश्यक ज्ञान और योग्यतायें प्रदान करता हैं।

स्कुल इंटर्नशिप बी.एड. पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्रशिक्षकों के व्यवसाय को दृढता प्रदान करता हैं।

स्कुल इन्टर्नशिप कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किये है जैसे विद्यार्थी को शिक्षक के रूप में तैयार करना, शिक्षाशास्त्र विषय में पाठ योजना बनाना व क्रियान्वयन करना, पाठ्य सहगामी क्रियाये करना विद्यालय प्रबन्ध व संचालन को समझना, विद्यार्थियों के साथ अन्तः क्रिया स्थापित करना शिक्षण कौशलो का उपयोग करना, विद्यालय अनुभवों व शिक्षण प्रक्रिया पर मनन करना।

स्कूल इन्टर्नशिप के उद्देश्यों को पूर्ण करने में कुछ चुनौतियों व बाधायें भी सामने आई हैं जैसे स्कूल चयन की समस्या, शिक्षण स्थानों के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पाना, अवलोकन के लिए शिक्षको की अनुमति नहीं मिलना प्रशिक्षकों की रूचि नही होना, जिसके लिये कुछ सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं। इन्टर्नशिप की अवधारणा को समझना सुपरवाइजर व प्रशिक्षक के मध्य वार्तालाप व प्रोत्साहन देना, मान्यता प्राप्त विद्यालयों में ही स्कूल इन्टर्नशिप करना शिक्षण–प्रशिक्षण में इन्टर्नशिप कार्यक्रम में आय प्राप्ति का साधन विकसित करना। अतः बी.एड. पाठ्यक्रम में स्कूल इन्टर्नशिप शिक्षण कार्य में तीव्र का कार्य करती है जिससे प्रशिक्षक के प्रशिक्षण कार्य को मजबूती प्रदान करती हैं।

मुख्य शब्दावली

प्रस्तुत अध्ययन के शीर्षक के अन्तर्गत मुख्यत निम्नलिखित शब्द प्रयुक्त हुए हैं :–

पाठ्यक्रम, इन्टर्नशिप, वस्तुस्थिति कार्यक्रम

प्रस्तावना :–

इन्टर्नशिप कार्यक्रम का अर्थ किसी सार्मथ्यवान पर्यवेक्षक के निर्देशन में व्यवहारिक ज्ञान व अनुभव प्राप्त करने की समाहित करता हैं। जिसमें प्रशिक्षणार्थी अपने सैद्धान्तिक ज्ञान का जिसे उसने कक्षाओं में सीखा हैं, उसका परीक्षण एव अनुप्रयोग करता हैं। यहाँ इन्टर्नशिप प्रशिक्षण एवं अनुप्रयोग करता हैं। यहाँ इन्टर्नशिप प्रशिक्षण में वे सभी महत्वपूर्ण अनुभव सम्मिलित हैं जो वास्तविक कार्यक्षेत्र में विद्यार्थी द्वारा प्राप्त किये जाते है, यह कार्यक्रम सार्थक कौशलों का विकास करने के साथ–साथ विद्यार्थियों में संबधित व्यवसाय के प्रति संवेदन–शीलता एवं विशिष्ट अभिवृत्ति का विकास करता हैं।

मैक मोहन यू एंड क्लीन यू (1995) – ने कहा है कि इन्टर्नशिप प्रशिक्षण कार्यक्रम निरीक्षण योग्य कार्यानुभव हैं। जिसमें विद्यार्थी अपने संस्थान को छोड़ता हैं और कार्य आधारित कार्यक्रमों में व्यस्त हो जाता हैं। एवं उस समय अवधि के दौरान वे उस पेशे में उपस्थिति आश्रय द्वारा बारीकी से निरीक्षण किये जाते हैं।

यूरको (1996) – के अनुसार इन्टर्नशिप को विद्यार्थियों को सेवा गतिविधियों में व्यस्त रखने या लगाये रखने के कारण कार्यक्रम के रूप में परिभाषित किया जाता हैं। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य उन्हे कार्य आधारित अनुभव प्रदान करना एवं उनके अन्दर क्षेत्र विशेष से संबधित प्रासंगिक मुद्दो की समस्या ज्ञान में वृद्धि करना है, अतः किसी भी व्यवसायिक शिक्षा में स्थानबंद प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिये एक उपयोगी लाभकारी घटक हैं।

शोध का औचित्य – किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगिता पर निर्भर करती हैं इन्टर्नशिप एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम में है जो प्रशिक्षणार्थियों में उनके व्यवसाय के लिए कौशल विकसित करने का कार्य करती हैं। उन्हें शिक्षण की बारिकियाँ को समझने व सीखने में मदद करती हैं। प्रशिक्षण को मजबुती प्रदान करती हैं।

शोध के उद्देश्य :–

1. बी.एड पाठ्यक्रम में प्रथम वर्ष व द्वितीय वर्ष की इन्टर्नषिप कार्यक्रम की वस्तु–स्थिति का पता लगाना।
2. बी.एड प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम में इन्टर्नशिप कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को वस्तु–स्थिति का पता लगाना।
3. बी.एड द्वितीय वर्ष के पाठयक्रम में इन्टर्नशिप कार्यक्रम में प्रशिक्षार्थियों की वस्तु–स्थिति का पता लगाना।
4. बी.एड प्रथम वर्ष व द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम में इन्टर्नशिप कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रशिक्षणार्थियों की तुलना करना।

शोध की परिकल्पनाएँ :–

अनुमान के आधार पर शोध अध्ययन की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैं।

1. बी.एड पाठ्यक्रम में प्रथम वर्ष व द्वितीय वर्ष की इन्टर्नशिप कार्यक्रम पाठ्यक्रमानुसार संचालित किया जाता हैं।
2. बी.एड महाविद्यालय के प्रथम वर्ष के प्रशिक्षणार्थी इन्टर्नशिप कार्यक्रम से अधिक सीखते हैं। शिक्षण कौशल का विकास करते हैं।
3. बी.एड महाविद्यालय के द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षार्थी इन्टर्नशिप कार्यक्रम में रूचि लेते हैं।
4. बी.एड महाविद्यालय के प्रथम वर्ष की अपेक्षा द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षार्थी इन्टर्नशिप कार्यक्रम में अधिक रूचि लेते हैं।

न्यादर्श:–

वर्तमान शोध में न्यादर्श के यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया हैं।

महाविद्यालय संख्या	प्रत्यय वर्ष के प्रशिक्षक	द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षक
20	10	10

प्रथम वर्ष के प्रशिक्षक $20 \times 10 = 200$

द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षक $20 \times 10 = 200$

कुल प्रशिक्षक = 400

शोध की विधि :–

प्रस्ताविक शोध हेतु 'सर्वेक्षण विधि' का चयन किया गया हैं। प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी प्रविधि–प्रतिशत, टी–मान, अध्ययन प्रविधि का उपयोग किया गया हैं।

उपकरण :– शोध कार्य के प्रश्नावली का उपयोग किया गया हैं।

1. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षकों के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली
2. द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षकों के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली

शोध निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा निर्धारित परिकल्पना सार्थक सिद्ध होते है, प्रथम वर्ष के प्रशिक्षक अपने प्रशिक्षण अपने शिक्षण कौशल सीखने में प्रयासरत होते हैं। द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षक शिक्षण कौशल के साथ–साथ विद्यालय की सह–शैक्षिक गतिविधियाँ सीखने में रूचि लेते हैं एवं विद्यालय के शैक्षिक व अशैक्षिक कार्य को करने में रूचि लेते हैं। बी.एड.महाविद्यालय के प्रथम व

द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षक विद्यालय की गतिविधियाँ जानने के लिए प्रथम वर्ष के प्रशिक्षक की अपेक्षा द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षकों को पर्याप्त समय मिलता हैं।

अत : निष्कर्ष स्वरूप बी.एड. कार्यक्रम की वस्तु–स्थिति का अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया कि इन्टर्नशिप प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण में कितनी सहायक होती हैं, परिणाम स्वरूप पाया की इन्टर्नशिप कार्यक्रम प्रशिक्षकों को दृढ़ता या नींव का कार्य करती हैं। जो प्रशिक्षकों के आत्म विश्वास व शिक्षण कार्य को मजबुत करती है।

सुझाव :–

1. मान्यता प्राप्त संस्थान, शिक्षक– प्रशिक्षण संस्थान एवं इन्टर्नशिप विद्यालयों में होनी चाहिए।
2. एन.सी.टी.ई. की तरफ से राज्य सरकारों एस.सी. ई.आर.टी. को इन्टर्नशिप के संदर्भ में मार्गदर्शन का उत्तर दायित्व देना चाहियें।
3. इन्टर्नशिप कार्यक्रम में शिक्षक–प्रशिक्षक कार्यक्रम में आय प्राप्ति का साधन भी विकसित करना चाहिये।
4. इन्टर्नशिप की अवधारणा और इसके मूल विचार को संबधित स्कूलों में साझा किये जाने की आवश्यकता हैं।
5. फॉलोअप हेतु स्कूल सुपरवाइजर और शिक्षक–प्रशिक्षक के बीच संवाद प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया जाना चाहियें।

सन्दर्भ सूची –

1. एन.सी.टी.ई. स्कूल इंटर्नशिप, फ्रेमवर्क एवं गाइड लाइन जनवरी 2016

2. शर्मा डॉ.एन के अध्यापक शिक्षा.एस के पब्लिसर्स नई दिल्ली

3. उपाध्याय डॉ. शिव कुमार/डॉ प्रदीप कुमार अध्यापक शिक्षण नवराज प्रकाशक दिल्ली।

www.iscrt.org(c827)

Hindustan.https ://www.livehindustan .com.art

Cg Scert.https// scert. cg. gov.in

rajteachers.com https ://www.rajteachers. com (PPT)

''माध्यमिक स्तर पर शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त करने में विद्यालय एवं पारिवारिक वातावरण की भूमिका का अध्ययन (राजकीय महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में)''

मनीष कुमार शर्मा
शोधार्थी (शिक्षा)
आई.ए.एस.ई. मानित विश्वविद्यालय
सरदारशहर

डॉ. महेश कुमार शर्मा
रिसर्च सुपरवाइजर
प्राचार्य (डी.एल.एड.), आईएएसई
(डिम्ड यूनिवर्सिटी), जी.वी.एम.,
सरदारशहर

सारांश :—

विद्यार्थियों की बेहतर शिक्षा प्रदान कर उनकी शैक्षिक उपलब्धि का उन्नयन करने हेतु निजी अंग्रेजी माध्यमिक विद्यालयों की तर्ज पर राज्य सरकार ने सभी जिलों में प्रचुर संख्या में राजकीय महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यमिक विद्यालय की स्थापना की है। इसमें सभी वर्ग यथा एस.सी.,एस.टी.. ओबीसी तथा सामान्य वर्ग का बगैर भेजभाव के लॉटरी पद्धति से पूर्व निर्धारित संख्या में प्रवेश प्रदान किया जाता है। इन विद्यालयों में स्मार्ट कक्षा कक्ष, इंटरव्यू के आधार पर शिक्षकों की नियुक्ति, हिन्दी माध्यम से अधिक बजट का प्रावधान है। प्रस्तुत शौध द्वारा यह पता लगाना आवश्यक है कि अध्ययनरत् शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उन्नत करने में क्या गृह व विद्यालय वातावरण की कोई सार्थक भूमिका है? इसमें 45 एसटी वर्ग के छात्र छात्राओं का चयन कर उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक वातावरण का अध्ययन किया गया।

शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई तथा निष्कर्ष में पाया गया कि एसटी वर्ग के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव सार्थक है।

प्रस्तावना :—

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बौद्धिक क्षमता पर उनका सम्पूर्ण भविष्य निर्भर होता है। प्रत्येक अभिभावक एवं विद्यालय विधार्थियों की उपलब्धि एवं बौद्धिक क्षमता को उन्नत करने के लिये अनेक कार्य करते है। राजकीय महात्मा गांधी विद्यालयों में ये कार्य तब तक परे नहीं हो सकते जब तक इसके लिये विद्यालय और परिवार सहयोग प्रदान नहीं करेंगे। शैक्षिक विकास की दृष्टि से आधुनिक समय की आवश्यकताओं के अनुसार बालकों की शिक्षा में बालकों के विद्यालय और गृह वातावरण की क्या भूमिका है। भिन्न वर्ग के शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके विद्यालय एवं गृह वातावरण का प्रभाव कैया है? विद्यालय एवं गृह वातावरण के विभिन्न आयामों की शैक्षिक उपलब्धि पर कितना और कैसा प्रभाव होता है। इन सभी प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिये उपयुक्त शोध की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द :— विद्यालय एवं गृह वातावरण, राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय।

शोध उद्देश्य :— राजकीय महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यमिक विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत एसटी वर्ग के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक वातावरण स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएं :— राजकीय महात्मा गांधी अंग्रेजी स्तर पर अध्ययनरत एसटी वर्ग के छात्र—छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक वातावरण का कोई प्रभाव नहीं है।

सम्बन्धित शोध अध्ययन :— राजकीय महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर गृह एवं पारिवारिक वातावरण के प्रभाव को जानने हेतु देश—विदेश में अनेक शोधकर्ता ने अनुशंधान किया जिनका विवरण निम्न है :—

फेड (1985) ने विद्यालय उपलब्धि स्तर के

निर्धारण शिक्षक कितने महत्वपूर्ण है ? पर शोध अध्ययन किया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि विद्यालय और शिक्षक, शैक्षिक उपलब्धि के महत्वपूर्ण निर्धारकों के रूप में अत्याधिक महत्वपूर्ण है।

मोंक (1994) ने "माध्यमिक स्तर के गणित और विज्ञान के शिक्षकों की विषय शोध तैयारी और छात्रों की उपलब्धि।" पर शोध अध्ययन किया। उन्होंने अध्ययन में शिक्षकों की विषयवस्तु की तैयारी और छात्रों की उपलब्धि के बीच एक मजबूत सबंधं पाया।

श्रीवास्तव ए.के. (1967) ने शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित कारकों की जांच पर अध्ययन किया। उन्होंने अध्ययन के दौरान यह पाया कि कमजोर अध्ययन आदत, विधालयी परीक्षाओं में असफलता और खेलकूद में अधिक भागीदारी कम शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित हैं।

न्यादर्श :– प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने बीकानेर संभाग के एसटी वर्ग के 45 छात्र–छात्राओं का चुनाव यादृच्छिक विधि से किया।

शोध समस्या का सीमांकन :– शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा माध्यमिक स्तर पर कक्षा 10 के विद्यार्थियों का चयन किया तथा विद्यालय वातावरण को उच्च औसत तथा निम्न तीन स्तरों तक सीमित रखा गया।

उपकरण :– प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने मानकीकृत पारिवारिक वातावरण मापकी तथा विद्यालय वातावरण मापकी का उपयोग किया।

सांख्यिकी :– समान्तरय माध्य, प्रमाप विचलन, Z–परीक्षण।

शोध में प्रयुक्त विधि :– इसमें सर्वेक्षण शोध विधि का उपयोग किया।

सारणी :– उच्च तथा निम्न पारिवारिक वातावरण स्तर समूह में एसटी के छात्रों द्वारा अर्जित शैक्षिक उपलब्धि स्कोर हेतु सांख्यिकी मापदण्ड तथा टी परीक्षण

परिवारिक वातारण समूह	N	संमातर माध्य	प्रभाव विचयन	माध्य अन्तर	माध्य अन्तर की मानक त्रृटि अन्तर	टी मान	पी
उच्च	23	52.70	19.88	4.17	5.914	0.705	0.475 > 0.5
निम्न	22	56.86	18.90				

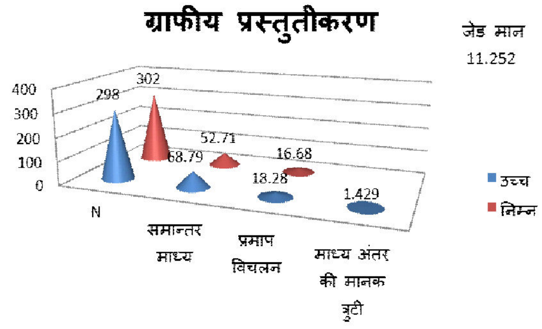

दोनों समूह में कुल 45 एसटी वर्ग के छात्र शामिल है 23 उच्च पारिवारिक वातावरण तथा 22 निम्न पारिवारिक वातावरण। इन छात्रों के कक्षा 10 के अंकों का विद्यालय रिकार्ड से प्राप्त कर : अंकों में बदलकर सांख्यिकी मापदण्ड एवं टी मान ज्ञान किया।

उपर्युक्त सारणी में उच्च तथा निम्न पारिवारिक वातावरण समूह में एसटी वर्ग के छात्रों के समान्तर माध्य : क्रमशः 52.70 तथा 56.80 प्राप्त हुए। उपलब्धि स्कोर का माध्य 19.88 तथा 18.90 प्राप्त हुए। उपलब्धि स्कोर का माध्य अन्तर 4.17 अंक पाया गया है। जिसमें औसत स्कोर से प्रतिशत अंकों का औसत कैलार उच्च पारिवारिक वातावरण स्तर समूह के छात्रों का टी अधिक पाया गया। समान्तर माध्य अन्त के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि निम्न पारिवारिक वातावरण स्तर के छात्रों की उपलब्धि उच्च पारिवारिक वातावरण स्तर के छात्रों की अपेक्षा अधिक अच्छा क्योंकि P Value 0.475 प्राप्त हुए 0.05 से अधिक है। यह बात शून्य परिकल्पना की स्वीकृति का प्रमाण सिद्ध करती है।

निष्कर्ष :– एसटी वर्ग के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव सार्थक नहीं पड़ता है।

भावी शोध हेतु सुझाव :– शोध में केवल संभाग के महात्मा गांधी, स्कलों का ही अध्ययन किया गया है अतः अन्य संभाग में भी अध्ययन किया जा सकता है। शोधकर्ता ने कम जनसंख्या पर न्यादर्श का चुनाव किया है जिसमें प्राप्त परिणामों को सम्पूर्ण जनसंख्या के लिये उपयुक्त नही माना जा सकता अतः और अधिक जनसंख्या पर

न्यादर्श का चुनाव करने की आवश्यकता है। प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर पर किया गया है। इसके अतिरिक्त प्राथमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर भी किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

Bibliography and Refferencess

Asthana, Bipin (2007): Measurement and Evaluation in Psychology and Education. Vinod Pustak Mandir, Agra.

Basu, B.D. (1989): History of Education in India. Cosmo Publishers, New Delhi.

Best, J.W. (1983): Research in Education. 7th edition. Prentice Hall of India Pvt. Ltd., New Delhi.

Bhatia, B. and Bhatia, K. (1994): The Psychological and Sociological foundations of Education, Doaba House, Book sellers and publishers, New Delhi.

Das, B.N. (1995): Foundation of Educational Thought and Practice. Kalyan Publication, New Delhi.

Good, C.V. (1945): Dictionary of Education. Mc Graw Hill Book Co. Inc. New York and London.

Kuppuswami, B. (1972): Social change in India. Vikash Publishing House. New Delhi.

Kochhar, S.K. (1989): Pivotal issues in Indian Education. Sterling Publishers Ltd. New Delhi. Pvt.

Koul, Lokesh (1994): Methodology of Educational Research. 2nd revised edition. Vikash Publishing House Pvt. Ltd. New Delhi:

Taneja, Vidya Ratna (1984): Educational Thought and Practice. Sterling Publishers Pvt. Ltd. New Delhi.

छात्राध्यापको में शिक्षण के प्रति अभिवृति तथा मूल्यो को प्राप्त करने में शिक्षण प्रशिक्षण की भूमिका का अध्ययन करना

नम्रता शर्मा
शोधार्थी (शिक्षा)
आई.ए.एस.ई. मानित विश्वविद्यालय
सरदार शहर

डॉ. महेश कुमार शर्मा
रिसर्च सुपरवाइजर
प्राचार्य (डी.एल.एड.), आईएएसई
(डिम्ड यूनिवर्सिटी), जी.वी.एम.,
सरदारशहर

सारांशः—

ब्रिटिश शासन के दौरान, शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश प्रशासन के लिए क्लर्क तैयार करना था। इस समय शिक्षक—प्रशिक्षण का अभाव था और शिक्षकों को सिर्फ बैसिक शौक्षिणिक ज्ञान के साथ नियुक्त किया जाता था। सवतन्त्रता प्राप्ति के बाद विभिन्न शिक्षण—प्रशिक्षण संस्थाओं की स्थापना की गई जिसमें शिक्षा की गुणवता में सुधार और शिक्षकों का समग्र विकास हो सकें। लेकिन फिर भी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति व मूल्यों में सुधार अपेशणीय नही है? इन्हीं प्रश्नों के उत्तरों को जानने हेतु प्रस्तुत शोध में छात्राध्यापकों में शिक्षण के प्रति अभिवृति तथा मूल्यों को प्रान्नत करने में शिक्षण—प्रशिक्षण की भूकिा का अध्ययन किया गया है। इसमें 400 पुरूपों को चयन कर उनका पूर्व परीक्षण तथा पश्च परीक्षण किया गया। शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई तथा निष्कर्ष में पाया कि छात्राध्यापकों में शिक्षण के प्रति अभिवृति तथा मूल्यों को उत्पन्न करने में शिक्षक प्रशिक्षण की भूमिका सार्थक है।

मुख्य शब्द — शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षण अभिवृति, शिक्षण मूल्य, सर्वेक्षण विधि

प्रस्तावनाः—

स्वतन्त्रता के पश्चात भारत में शिक्षण—प्रशिक्षण की आवश्यकताएं एवं उद्देश्यों में महत्वपूर्ण बदलाव आया है जहाँ स्वतंत्रता से पहले शिक्षण प्रशिक्षण का अभाव और सीमित दृष्टिकोण था। वहीं स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा की गुणवता में सुधार और शिक्षकों के समग्र विकास पर जोर दिया गया। शिक्षण प्रशिक्षण को एक व्यवस्थित और सतत प्रक्रिया के रूप में देखा गया है जो न केवल शिक्षकों बल्कि सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली के विकास के लिए आवश्यक है।

इस प्रकार शिक्षण प्रशिक्षण एक व्यापक प्रक्रिया है जो शिक्षकों न केवल एक शिक्षण कार्य में सक्षम बनाती है बल्कि एक प्रभावी, नैतिक और समझदार शिक्षक के रूप में विकसित हैं।

शोध उद्देश्य :— पुरूष छात्राध्यापकों में शिक्षण के प्रति आभिवृति प्राप्त करने में शिक्षण प्रशिक्षण की भूमिका का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :— पुरूष छात्राध्यापकों में शिक्षण के प्रति आभिवृति उत्पन्न करने में प्रशिक्षण की भूमिका सायक नही है।

सम्बन्धित शोध अध्ययन :—

शिक्षण अभिवृति विकसित करने में शिक्षक प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन करने हेतु देश— विदेश के अनेक शोधकर्ताओ ने अनुसंधान किया जिसका विवरण निम्न है :—

तेमिजकॉन एम (2008) ने तुर्की शिक्षण अभ्यर्थियो की शिक्षण पेरो के प्रति दृष्टिकोणो पर अध्ययन समस्या पर शोध किया और पाया कि शिक्षक का दृष्टिकोण अपने पेश के प्रति उनके प्रदर्शन के साथ —साथ उनकी भूमिकाओ के प्रति प्रतिवद्वता पर भी प्रभाव डालता है।

न्यूटन (2016) ने भावी अध्यापको की व्यावसायिक अभिवृति पर शिक्षण प्रशिक्षण के प्रभाव के सम्बन्ध में निष्कर्ष निकाला कि भावी शिक्षको के पेशेवर दृष्टिकोण पर

लिंग सम्बन्धी अन्तर नही होता है।

न्यादर्श :– प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने बीकानेर जिले के शिक्षा स्नातक स्तर के 400 पुरूष छात्रो का चुनाव यादृच्छिक विधि से किया।

शोध समस्या का सीमांकन :–

न्यादर्श केवल

उपकरण :– प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने प्रयोंग हेतु स्वनिर्मित शिक्षण अभिवृति मापनी तथा मूल्य सूची मापनी का उपयोग किया ।

सांख्यिकी :– समान्तर माध्य प्रमाप विचलन प्रतिशतोक टी सार्थकता परीक्षण

शोध में प्रयुक्त विधि :– प्रस्तुत शोधकर्ता ने वर्णनात्मक अनुसंधान विधि का उपयोग किया।

प्रदत्त विश्लेषण :– पुरूष छात्राध्यापकों के पश्च तथपूर्ण परीक्षण समूह में शिक्षण अभिवृति स्कोर के सांख्यिकी मापदेड तथा सांख्यिकी परीक्षण

समूह	N	समातर माध्य	माध्य अन्तर	अन्तर का प्रमाप विचलन	अन्तर की मानक त्रुटि	टी संख्यिकी	वी
पश्च परीक्षण	400	97.35	18.22	10.42	0.521	34.97	$1.30\times10^{-123}<.01$
पूर्व परीक्षण		79.13					

आरेख संख्या

पश्च एवं पूर्व परीक्षण समूह में पुरूष छात्राध्यापकों के अभिवृत्ति अंकों के समान्तर माध्य एवं माध्य अंतर की मानक त्रुटि का कॉलम आरेख

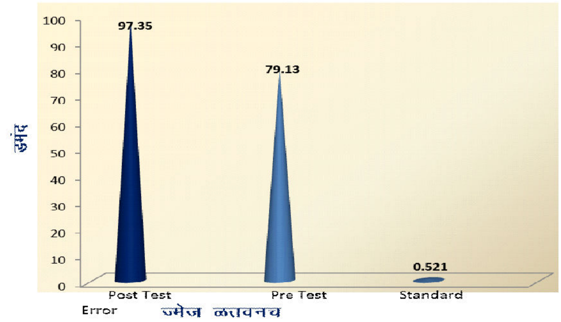

शोध अध्ययन मे यह परीक्षण किया गया कि क्या प्रशिक्षण कार्यक्रम के पश्चात प्रशिक्षु पुरूष शिक्षको की शिक्षण अभिवृति में कोई महत्वपूर्ण सुधार हुआ है इसके लिए पूर्व परीक्षण तथापश्च प्रशिक्षण के स्कोर का युग्मित टी परीक्षण की सहायता से तुलना की गई है।

प्रयोग में कुल 400 पुरूष शिक्षक सम्मिलिन थे जिनके प्रशिक्षण से पहले तथा बाद में समान परीक्षण प्रशासित किए गए । उपर्युक्त तालिका के अनुसार पूर्व परीक्षण का औसत स्कोर 79.13 अंक पाया गया जबकि पश्च परीक्षण का औसत बढकर 97.35 अंक हो गया इस प्रकार औसत में 18.22 अंको का अन्तर पाया गया ।

चुंकि दोनो परीक्षणो के बीच के स्कोर के अन्नत का मानक विचलन 10.42 अंक पाया गया। चुकि यह युग्मित टी परीक्षण है इसलिए अन्तरो के औसत अन्तर की मानक यटि तथा टी सांख्यिकी की गणना की गई है। उक्त तांलिका मे दर्शाया गया टी मूल्य अत्याधिक उच्च है जो कि स्वतंत्र अंश 399 (400–01) पर . 01 सार्थकता स्तर पर सारिणी मान 2.58 से अधिक है इस परीक्षण का पी मूल्य 1.30 X 10.123 प्राप्त हुआ है इसका अर्थ यह है कि पूर्व एवं पश्चात स्कोर में पाया गया अन्तर सांख्यिकी रूप से अत्यधिक सार्थक है और यह स्पष्ट संकेत देना है कि शुन्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जान है

निष्कर्ष :– शिक्षण –प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रशिक्षु पुरूष शिक्षको की शिक्षण अभिवृति प्रोन्तट करने में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

भावी शोध हेतु सुझाव :– शोध में केंवल बीकानेर जिले में स्थित शिक्षण –प्रशिक्षण महाविद्यालय का ही अध्ययन किया गया अतः अन्य जिलो एवं शोधो में भी अध्ययन किया जान है।

शोधकर्ता ने कम जनसंख्या में से न्यायदशें का चुनाव किया है जिससे प्राप्त परिणामों का सम्पूर्ण जनसंख्या के लिए उपयुक्त नही माना जा सकता अतः और अधिक जनसंख्या पर न्यायदर्श का चुनाव करने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्ध सूची :–

1. Agrwal, Y.P (1988) Statistical methods, second Edition, sterling publishen pvt. Ltd. New Delhi
2. Ary, Donald, et. Al. (1972) introduction to research in education, New York. Holt Rienhart and Winston Inc.
3. Allport G.W. (1935) The Hand book of Social Psychology, Worcestor, Mars, Clark: Uinversity Private Limited.
4. Best J.W. Kahn, J.V. (2010) Research in Education (10th ed.) Delhi: PHI Learning Private Limited.
5. Dand J. Fox (1969), the research Process in Education, Holt Rinehart and Winston Inc, New York.
6. Engdo paedia of Education Research, Newyork: McMillan & Co 1979
7. Garrett H.E. Statistics in Psychology and Education.

भौतिक विज्ञान शिक्षण में सम्प्रत्यय मानचित्रण विधि की प्रभावशीलता का विश्लेषण

सीमा तिवारी
शोधकर्त्री, शिक्षा संकाय
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय),
उदयपुर(राज.)

डॉ. रचना राठौड़
शोध मार्गदर्शिका, शिक्षा संकाय
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय),
उदयपुर(राज.)

प्रस्तावना

किसी भी शोध की सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी उसका अंतिम अध्याय होता है, जिसमें शोध की सम्पूर्ण यात्रा का सार प्रस्तुत किया जाता है। यही अध्याय उस प्रश्न का उत्तर देता है कि अध्ययन क्यों किया गया, उससे क्या निष्कर्ष निकले और आगे की शैक्षिक दिशा क्या हो सकती है। प्रस्तुत शोध "उच्च माध्यमिक स्तर पर सम्प्रत्यय मानचित्रण की प्रभावशीलता का अध्ययन" भी इसी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह शिक्षण–अधिगम की आधुनिक प्रवृत्तियों और विद्यार्थियों के अधिगम अनुभवों को गहराई से समझने का प्रयास करता है।

वर्तमान समय में शिक्षा की भूमिका केवल जानकारी उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि उसका लक्ष्य ऐसे नागरिक तैयार करना है जो विवेकशील, सृजनात्मक और उत्तरदायी हों। विशेषकर उच्च माध्यमिक स्तर पर यह अपेक्षा की जाती है कि विद्यार्थी न केवल शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्त करें, बल्कि अपने ज्ञान को जीवन की परिस्थितियों में प्रयोग करना भी सीखें। भौतिक विज्ञान जैसे विषय में यह अपेक्षा और भी अधिक बढ़ जाती है क्योंकि यह विज्ञान की आधारभूत अवधारणाओं, तार्किकता और प्रयोगशीलता पर आधारित है। किंतु पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों में विद्यार्थी प्रायः तथ्यों और सूत्रों को रटने तक सीमित रह जाते हैं। इससे उनका बौद्धिक और सृजनात्मक विकास बाधित होता है।

इसी समस्या का समाधान सम्प्रत्यय मानचित्रण (Concept Mapping) जैसी आधुनिक तकनीक में दिखाई देता है। यह केवल एक शिक्षण उपकरण नहीं है, बल्कि एक ऐसी अधिगम प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों को अवधारणाओं को जोड़ने, संबंधों को समझने और ज्ञान को अपनी भाषा में पुनर्निर्मित करने का अवसर देती है। जब विद्यार्थी किसी अध्याय की अवधारणाओं का मानचित्र बनाते हैं, तो वे विषयवस्तु की संरचना, क्रमबद्धता और पारस्परिक संबंधों को गहराई से समझ पाते हैं। इससे उनके भीतर आत्मविश्वास और जिज्ञासा का विकास होता है।

प्रस्तुत शोध में यह जाँच की गई कि उच्च माध्यमिक स्तर पर भौतिक विज्ञान के शिक्षण में सम्प्रत्यय मानचित्रण पद्धति का क्या प्रभाव पड़ता है। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि इस पद्धति ने विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, अवधारणात्मक स्पष्टता, समस्यादृसमाधान की क्षमता तथा सक्रिय सहभागिता को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया। यह केवल सैद्धांतिक उपलब्धि तक सीमित नहीं रहा, बल्कि विद्यार्थियों में सहयोगात्मक अधिगम और सृजनशीलता को भी प्रोत्साहित किया।

शोध प्रश्न

शिक्षा व्यवस्था में नवाचार की आवश्यकता को देखते हुए यह प्रश्न सामने आया कि –

1. यदि भौतिक विज्ञान को एक अलग तरीके से पढ़ाया जाए तो क्या यह सीखने में सहायक होगा?
2. क्या सम्प्रत्यय मानचित्रण का प्रयोग कर भौतिक विज्ञान विषय को रोचक एवं बोधगम्य बनाया जा सकता है?
3. क्या उच्च माध्यमिक स्तर पर सम्प्रत्यय मानचित्रण विधि से भौतिक विज्ञान शिक्षण को अधिक प्रभावी

बनाया जा सकता है?

4. क्या उच्च माध्यमिक स्तर पर सम्प्रत्यय मानचित्रण का प्रयोग विद्यार्थियों की दीर्घकालिक स्मृति को प्रभावित करता है?

5. क्या उच्च माध्यमिक स्तर पर भौतिक विज्ञान शिक्षण में सम्प्रत्यय मानचित्रण का प्रयोग विद्यार्थियों की अवधारणा समझ में सुधार करता है?

इन प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए इस विषय पर शोध करने का विचार सशक्त रूप से उभरा।

समस्या का औचित्य

आज के इस आधुनिक युग में हमारे शिक्षकों एवं शिक्षण प्रक्रिया के निर्माता को यह समझ लेना चाहिए कि वर्तमान में शिक्षा का उद्देश्य बालकों को केवल पुस्तकीय ज्ञान रटाकर उन्हें अंक प्राप्त कराना ही नहीं है अपितु ज्ञान की स्पष्ट समझ व वैज्ञानिक दृष्टिकोण की क्षमता को विकसित करना भी है। ऐसे वातावरण में भौतिक विज्ञान के शिक्षण कार्य से रटन्त प्रणाली को दूर करने व प्रकरण से संबंधित स्पष्ट ज्ञान का निर्माण करने के लिए संप्रत्यय मानचित्र का प्रयोग प्रभावी हो सकता है। सम्प्रत्यय मानचित्रण के प्रयोग से बालकों के मस्तिष्क में किसी प्रकरण की प्रारंभिक रूपरेखा तैयार की जा सकती है।

1. शिक्षकों के दृष्टिकोण से :– भौतिक विज्ञान के शिक्षण में सम्प्रत्यय मानचित्रण के उपयोग से किसी प्रकरण की रूपरेखा विकसित करने में प्रभावी शिक्षण व्यवस्था एवं अनुदेशन संबंधित जानकारी देने में सहायक सिद्ध होगा।

2. शोधार्थी के दृष्टिकोण से :– भौतिक विज्ञान शिक्षण में सम्प्रत्यय मानचित्रण का निर्माण शोध कार्य को समझने एवं प्रभावी शोधकार्य करने, शिक्षण हेतु पाठ योजनाओं की रूपरेखा बनाने का ज्ञान प्रकट करने में सहायक सिद्ध होगा।

3. प्रशासनिक दृष्टिकोण से :– सफल प्रशासन कार्य को सही एवं समय पर पूर्ण करता है तथा कार्य के उचित सम्पादन में हर संभव सहायता प्रदान करता है। प्रस्तुत शोधकार्य से भौतिक विज्ञान विषय के अध्ययन अध्यापन में प्रशासनिक स्तर पर सम्प्रत्यय मानचित्रण के उपयोग के माध्यम से शिक्षण एवं अधिगम हेतु प्रधानाध्यापकों, प्रधानाचार्यों को मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है।

4. विद्यार्थियों की दृष्टि से :– इस शोध समस्या का सर्वाधिक महत्व विद्यार्थियों के लिए है। विद्यार्थियों में स्थाई ज्ञान अर्जित किया जा सकेगा तथा विद्यार्थियों के मस्तिष्क में किसी प्रकरण की स्पष्ट रूपरेखा तैयार हो सकेगी। विद्यार्थियों की भौतिक विज्ञान विषय अध्ययन में रुचि विकसित हो सकेगी। अध्ययन सरल व बोधगम्य होगा।

समस्या का परिसीमन :–

यह अध्ययन शोधकर्ती द्वारा समय व संसाधनों की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए निम्न परिसीमन के अंतर्गत संचालित किया गया है–

1. अध्ययन की परिधि केवल उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा 11वीं एवं 12वीं) के विद्यार्थियों तक सीमित रही।

2. शोध कार्य भौतिक विज्ञान विषय की कुछ चयनित इकाइयों पर केंद्रित रहा।

3. अध्ययन का भौगोलिक क्षेत्र उदयपुर जिले तक ही सीमित रहा।

4. शोध केवल निर्धारित नमूना समूह के विद्यार्थियों तक ही सीमित रहा।

5. शिक्षण पद्धतियों की तुलना में केवल सम्प्रत्यय मानचित्रण आधारित पद्धति और पारंपरिक पद्धति को सम्मिलित किया गया।

6. यह अध्ययन एक निश्चित समयावधि में सम्पन्न हुआ, अतः दीर्घकालिक प्रभावों का परीक्षण इसमें सम्मिलित नहीं है।

न्यादर्श का चयन :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में हैप्पी होम उच्च माध्यमिक विद्यालय की कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों का चयन किया गया। इसमें दो समूहों प्रायोगिक समूह और नियंत्रित समूह का गठन किया गया, जिनमें से प्रत्येक में 15–15 विद्यार्थियों को यादृच्छिक चयन विधि के माध्यम से शामिल किया गया।

अनुसंधान विधि :—प्रस्तुत शोध कार्य के लिये शोधकर्ता ने प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया ।

उपकरण :—

इस प्रायोगिक शोध में आंकड़ों के संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा एक स्वनिर्मित उपलब्धि परीक्षण तैयार किया गया। इसके अतिरिक्त सम्प्रत्यय मानचित्रण आधारित कुल 20 पाठ योजनाएँ भी निर्मित की गईं।

सांख्यिकीय प्रविधि :—

1. मध्यमान (M)
2. मानक विचलन (s or SD)
3. टी—परीक्षण(T test)

अनुसंधान में प्रयुक्त शब्द एवं परिभाषाएं

1 स्वतंत्र चर : इस शोध कार्य में प्रायोगिक समूह के लिए सम्प्रत्यय मानचित्रण आधारित शिक्षण प्रक्रिया तथा नियंत्रण समूह के लिए पारंपरिक शिक्षण प्रक्रिया को स्वतंत्र चर के रूप में ग्रहण किया गया।

2 आश्रित चर : प्रस्तुत शोध कार्य में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को आश्रित चर के रूप में निर्धारित किया गया, जिसका आकलन उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से किया गया।

3 मध्यस्थ चर : शोध की निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए दोनों समूहों का चयन एक ही कक्षा से किया गया। दोनों समूहों को समान विषय—वस्तु एक ही शोधकर्ता द्वारा पढ़ाई गई, ताकि मध्यस्थ चर समान बने रहें।

4 नियन्त्रित समूह : यह विद्यार्थियों का वह समूह था, जिसे शिक्षण—अधिगम प्रक्रिया पारंपरिक पद्धति के माध्यम से प्रदान की गई।

5 प्रायोगिक समूह : यह विद्यार्थियों का वह समूह था, जिसे सामान्य शिक्षण के स्थान पर सम्प्रत्यय मानचित्रण आधारित विशिष्ट शैक्षिक नवाचार के माध्यम से अधिगम प्रक्रिया प्रदान की गई।

6 सम्प्रत्यय मानचित्रण : अवधारणाओं के बीच संबंधों को रेखाओं, तीरों और की—वर्ड्स के माध्यम से चित्रात्मक रूप में प्रस्तुत करना।

भौतिक विज्ञान शिक्षण में सम्प्रत्यय मानचित्रण विधि की प्रभावशीलता का विश्लेषण

भौतिक विज्ञान विषय में सम्प्रत्यय मानचित्रण की प्रभावशीलता का विश्लेषण करने हेतु, नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के पूर्व परीक्षण एवं पश्च परीक्षण से प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। दोनों समूहों के माध्य (Mean), प्रमाप विचलन (Standard Deviation) तथा 'टी' मान (t-value) की गणना कर उनके मध्य अंतर की जाँच की गई। इन आँकड़ों को निम्न सारणी में प्रस्तुत किया गया है।

भौतिक विज्ञान में सम्प्रत्यय मानचित्रण विधि की प्रभावशीलता का विश्लेषण

समूह	मध्यमान		प्रमाप विचलन		टी – मान	0.05 / 0.01 स्तर पर सार्थकता
	पूर्व परीक्षण	पश्च परीक्षण	पूर्व परीक्षण	पश्च परीक्षण		
नियंत्रित समूह (N=15)	20.80	21.53	3.28	3.07	0.63	सार्थक अंतर नहीं है।
प्रायोगिक समूह (N=15)	21.93	28.60	3.37	3.76	5.11	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।

स्वतंत्रता के अंश (df=28)

05 स्तर पर सारणीमान – 2.048

0.01 स्तर पर सारणीमान – 2.763

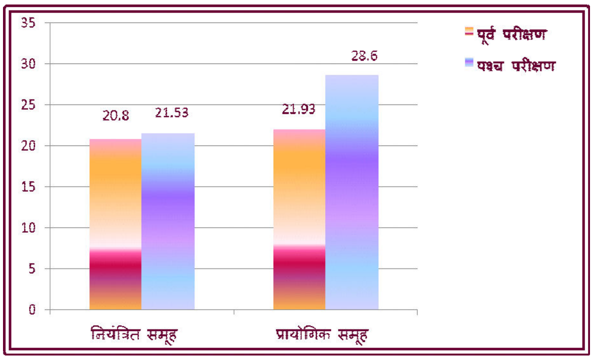

सूत्रों और परिभाषाओं को लंबे समय तक स्मरण रखने में सक्षम पाए गए तथा नए संदर्भों में उनका सही प्रयोग कर सके।

समस्या समाधान की प्रक्रिया में विद्यार्थियों ने अनुभव किया कि संप्रत्यय मानचित्रों ने उन्हें उपयुक्त नियम और सूत्र चुनने में सहायता प्रदान की और उनका **तार्किक आरेख संख्या 1**

भौतिक विज्ञान में सम्प्रत्यय मानचित्रण विधि की प्रभावशीलता का विश्लेषण व्याख्या –

उपरोक्त सारणी में प्रस्तुत आंकड़ों के विश्लेषण से निम्नलिखित निष्कर्ष स्पष्ट रूप से प्राप्त होते हैं–

1. नियंत्रित समूह

नियंत्रित समूह के पूर्व और पश्च–परीक्षण के माध्य अंकों की तुलना से यह ज्ञात हुआ कि दोनों परीक्षणों के बीच संगणित 'टी' मान (t-value) 0.63 रहा, जो स्वतंत्रता के अंश (df = 28) पर 0.05 स्तर के सारणीबद्ध मान 2.048 से कम है। यह तथ्य यह प्रमाणित करता है कि नियंत्रण समूह में पारंपरिक शिक्षण पद्धति के अंतर्गत प्राप्त अंकों में कोई सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। अतः यह स्पष्ट होता है कि पारंपरिक शिक्षण पद्धति के माध्यम से शिक्षण प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि में परीक्षण के पश्चात कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ, और इस पद्धति का इस समूह पर सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा।

2. प्रायोगिक समूह

प्रायोगिक समूह के पूर्व और पश्च–परीक्षण के अंकों का विश्लेषण दर्शाता है कि दोनों परीक्षणों के मध्य संगणित 'टी' मान (t-value) 5.11 रहा, जो स्वतंत्रता के अंश (df = 38) पर 0.01 स्तर के सारणीबद्ध मान 2.763 से अधिक है। यह स्पष्ट रूप से संकेत करता है कि प्रायोगिक समूह में दोनों परीक्षणों के अंकों के बीच सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है। इस अंतर के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भौतिक विज्ञान शिक्षण में सम्प्रत्यय मानचित्रण (Concept Mapping) विधि का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर सकारात्मक और प्रभावी प्रभाव पड़ा। विशेष रूप से, प्रायोगिक समूह के पश्च–परीक्षण के परिणाम पूर्व–परीक्षण की तुलना में उल्लेखनीय रूप से बेहतर पाए गए, जो सम्प्रत्यय मानचित्रण विधि की उच्च प्रभावशीलता की पुष्टि करते हैं।

3. अध्ययन से प्राप्त गुणात्मक निष्कर्षों की व्याख्या

– संप्रत्यय मानचित्रण के प्रयोग से भौतिक विज्ञान की जटिल एवं अमूर्त अवधारणाएँ जैसे ऊष्मागतिकी के नियम, ऊर्जा, कार्य और गति आदि विद्यार्थियों को सरल, स्पष्ट और तार्किक रूप से समझ में आने लगीं, जबकि परंपरागत पद्धति केवल रटने तक सीमित रही।

– ऊष्मागतिक प्रक्रियाओं के अध्ययन में पारंपरिक पद्धति परिभाषाओं और ग्राफ तक सीमित रही, जिससे भ्रम की स्थिति बनी, परंतु संप्रत्यय मानचित्रण ने इन प्रक्रियाओं के गुणधर्म व नियमों को जोड़कर अधिक गहन समझ विकसित की।

– विशिष्ट ऊष्मा के संदर्भ में पारंपरिक पद्धति केवल सूत्र व इकाई तक सीमित रही, जबकि संप्रत्यय मानचित्रण ने ऊष्मा, तापमान और अवस्था परिवर्तन के बीच संबंधों को

जोड़कर वास्तविक जीवन से इसे जोड़ने में मदद की।

– कार्य (Work) विषय में पारंपरिक पद्धति रटने तक सीमित रही, जबकि संप्रत्यय मानचित्रण के प्रयोग से विद्यार्थी कार्य, ऊर्जा और शक्ति के बीच संबंध समझ पाए और गैस विस्तार जैसी परिस्थितियों को भी व्याख्यायित कर सके।

– ऊर्जा के अध्ययन में संप्रत्यय मानचित्रण ने विभिन्न रूपों – स्थितिज, गतिज, ऊष्मीय, विद्युत को जोड़कर संरक्षण सिद्धांत को गहराई से आत्मसात कराया, जबकि पारंपरिक पद्धति केवल सूची याद कराने तक सीमित रही।

– तरंगों के अध्ययन में पारंपरिक पद्धति सूत्रों और परिभाषाओं पर आधारित रही, जिससे अनुप्रयोग कठिन लगे, परंतु संप्रत्यय मानचित्रण ने तरंगों के गुणों (परावर्तन, अपवर्तन, विवर्तन) को जोड़कर वास्तविक जीवन से संबंध स्थापित कराया।

– संप्रत्यय मानचित्रण के प्रयोग से गुरुत्वाकर्षण के नियम, गुरुत्वीय बल, पृथ्वी और उपग्रहों के बीच परस्पर संबंध विद्यार्थियों को स्पष्ट और तार्किक रूप से समझ में आने लगे। पारंपरिक पद्धति केवल सूत्र और परिभाषा तक सीमित रही।

– पारंपरिक विधि में केप्लर के नियमों को याद कराने तक सीमित थी, जबकि संप्रत्यय मानचित्रण ने ग्रहों की कक्षाएँ, गति और केंद्र की दूरी के बीच संबंध जोड़कर छात्रों की गहन समझ विकसित की।

– पारंपरिक पद्धति केवल नियम और सूत्र तक सीमित रही, जबकि संप्रत्यय मानचित्रण ने विद्युत आवेश, क्षेत्र रेखाएँ और प्रभाव को जोड़कर वास्तविक जीवन के उदाहरणों से संबंधित किया।

– गैसों के नियमों का पारंपरिक अध्ययन विद्यार्थियों को अलग–अलग नियम याद कराने तक सीमित रहा, जबकि संप्रत्यय मानचित्रण ने बोयल, चार्ल्स और एवोगैड्रो नियमों को जोड़कर आदर्श गैस समीकरण $PV = nRT$ तक सहज पहुँच बनाई।

– ऊष्मीय प्रसार को पारंपरिक पद्धति केवल परिभाषाओं तक सीमित कर देती है, जबकि संप्रत्यय मानचित्रण ने रैखिक, सतही और आयतन प्रसार को आपसी संबंधों और दैनिक जीवन के उदाहरणों से जोड़कर गहरी समझ विकसित की।

– गति (Motion) विषय में पारंपरिक पद्धति सूत्र और ग्राफ तक सीमित रही, जबकि संप्रत्यय मानचित्रण ने गति, बल, कार्य और ऊर्जा को एकीकृत रूप से जोड़कर विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से संबंध स्थापित करने में सक्षम बनाया।

– इस पद्धति ने विद्यार्थियों को निष्क्रिय श्रोता बनाए रखने के बजाय सक्रिय भागीदारी करने वाला बना दिया, जिससे उनके आत्मविश्वास और जिज्ञासा में वृद्धि हुई।

– संप्रत्यय मानचित्रण का प्रयोग करने वाले विद्यार्थी चिंतन सुदृढ़ हुआ।

– इस पद्धति के प्रयोग से विद्यार्थियों में रचनात्मकता और आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास हुआ तथा वे केवल रटने तक सीमित न रहकर संकल्पनाओं के बीच आपसी संबंधों को समझने लगे।

– संप्रत्यय मानचित्र तैयार करने की प्रक्रिया ने विद्यार्थियों की समझ को अधिक गहन और स्पष्ट बनाया तथा ज्ञान के संगठन में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया।

– शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञानदृ प्रसारक तक सीमित न रहकर मार्गदर्शक एवं सहयोगी में परिवर्तित हुई, जिससे विद्यार्थियों को खोजपरक अधिगम और आत्मनिर्भरता के लिए प्रेरणा मिली।

– संप्रत्यय मानचित्रण के प्रयोग से कक्षा का वातावरण अधिक सहभागी और सहयोगात्मक बन गया, जिससे सामूहिक अधिगम, संवाद और विचारों के आदान–प्रदान को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

शोध से प्राप्त निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध से शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैंः

1. पूर्व–परीक्षण के आंकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि नियंत्रित और प्रायोगिक समूह के औसत अंकों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। अतः कक्षा 11वीं के दोनों समूहों की प्रारंभिक शैक्षिक स्थिति

लगभग समान मानी जा सकती है।

2. पश्च–परीक्षण के परिणामों ने यह दर्शाया कि नियंत्रित और प्रायोगिक समूह के औसत अंकों में सार्थक अंतर विद्यमान था। इस आधार पर स्पष्ट हुआ कि प्रायोगिक समूह पर सम्प्रत्यय मानचित्रण आधारित शिक्षण का प्रभाव नियंत्रण समूह की तुलना में अधिक प्रभावशाली रहा।

3. नियंत्रित समूह के पूर्व और पश्च–परीक्षण के औसत अंकों की तुलना से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि पारंपरिक शिक्षण पद्धति के कारण विद्यार्थियों की उपलब्धियों में कोई विशेष सकारात्मक बदलाव नहीं आया।

4. प्रायोगिक समूह के पूर्व और पश्च–परीक्षण के औसत अंकों के विश्लेषण ने स्पष्ट किया कि सम्प्रत्यय मानचित्रण विधि ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर सकारात्मक और प्रभावशाली परिणाम प्रदान किए।

5. संप्रत्यय मानचित्रण के उपयोग से भौतिक विज्ञान की जटिल अवधारणाएँ जैसे ऊष्मागतिकी, ऊर्जा, कार्य और गति विद्यार्थियों के लिए सरल, तार्किक और व्यवस्थित रूप से समझने योग्य बन गईं, जबकि पारंपरिक विधि केवल रटने तक सीमित रही।

6. ऊष्मागतिकी की प्रक्रियाओं के अध्याय में पारंपरिक विधि केवल परिभाषाओं और ग्राफ तक सीमित रही, जिससे छात्रों में भ्रम उत्पन्न हुआ, जबकि संप्रत्यय मानचित्रण ने प्रक्रियाओं के नियम और गुणधर्मों को जोड़कर गहरी और समग्र समझ प्रदान की।

7. विशिष्ट ऊष्मा के अध्याय में पारंपरिक शिक्षण केवल सूत्र और इकाई तक सीमित रहा, जबकि संप्रत्यय मानचित्रण ने ऊष्मा, तापमान और अवस्था परिवर्तन के आपसी संबंधों को वास्तविक जीवन के संदर्भ से जोड़कर स्पष्ट किया।

8. कार्य के अध्याय में पारंपरिक पद्धति रटने तक सीमित थी, जबकि संप्रत्यय मानचित्रण ने छात्रों को कार्य, ऊर्जा और शक्ति के आपसी संबंध समझने और गैस विस्तार जैसी परिस्थितियों को व्याख्यायित करने में सक्षम बनाया।

9. ऊर्जा के विभिन्न रूपोंकृस्थितिज, गतिज, ऊष्मीय और विद्युत के बीच संबंध को संप्रत्यय मानचित्रण ने जोड़कर विद्यार्थियों को संरक्षण सिद्धांत गहराई से समझने में सहायता की, जबकि पारंपरिक पद्धति केवल सूची याद कराने तक सीमित रही।

10. तरंगों के अध्याय में पारंपरिक पद्धति केवल सूत्र और परिभाषाओं तक सीमित थी, जिससे इनके अनुप्रयोग कठिन लगे, लेकिन संप्रत्यय मानचित्रण ने परावर्तन, अपवर्तन और विवर्तन जैसी तरंगों की विशेषताओं को जोड़कर वास्तविक जीवन से संबंधित किया।

11. गुरुत्वाकर्षण के अध्याय में संप्रत्यय मानचित्रण ने गुरुत्वाकर्षण के नियम, गुरुत्वीय बल और पृथ्वी तथा उपग्रहों के बीच संबंध को तार्किक रूप से स्पष्ट किया, जबकि पारंपरिक पद्धति केवल सूत्र और परिभाषाओं तक सीमित रही।

12. केप्लर के नियमों के अध्याय में पारंपरिक विधि केवल नियमों को याद कराने तक सीमित थी, जबकि संप्रत्यय मानचित्रण ने ग्रहों की कक्षाएँ, उनकी गति और केंद्र से दूरी के संबंध को जोड़कर विद्यार्थियों की अवधारणा को गहन बनाया।

13. विद्युत आवेश और क्षेत्र के अध्याय में पारंपरिक विधि केवल नियम और सूत्र तक सीमित रही, जबकि संप्रत्यय मानचित्रण ने विद्युत आवेश, क्षेत्र रेखाएँ और उनके प्रभाव को वास्तविक जीवन के उदाहरणों से जोड़कर समझाया।

14. गैसों के नियमों के अध्याय में पारंपरिक अध्ययन केवल अलग–अलग नियम याद कराने तक सीमित था, जबकि संप्रत्यय मानचित्रण ने बोयल, चार्ल्स और एवोगैड्रो नियमों को जोड़कर आदर्श गैस समीकरण तक सहज पहुँच प्रदान की।

15. ऊष्मीय प्रसार के अध्याय में पारंपरिक पद्धति केवल परिभाषाओं तक सीमित रही, जबकि संप्रत्यय मानचित्रण ने रैखिक, सतही और आयतन प्रसार को आपस में जोड़कर दैनिक जीवन के उदाहरणों के साथ समझाने में मदद की।

16. गति और बल के अध्याय में पारंपरिक पद्धति केवल सूत्र और ग्राफ तक सीमित रही, लेकिन संप्रत्यय मानचित्रण ने गति, बल, कार्य और ऊर्जा के संबंध को एकीकृत करके वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जोड़ने में मदद की।

17. इस पद्धति ने विद्यार्थियों को केवल सुनने वाले नहीं

बल्कि सक्रिय सहभागी बनने के लिए प्रेरित किया, जिससे उनकी जिज्ञासा और आत्मविश्वास बढ़ा।

18. संप्रत्यय मानचित्रण से विद्यार्थियों ने सूत्र और परिभाषाओं को लंबे समय तक याद रखा और उन्हें नए संदर्भों में सही तरीके से लागू किया।

19. संप्रत्यय मानचित्रों ने छात्रों को उपयुक्त नियम और सूत्र चुनने में सहायता की, जिससे उनका तार्किक चिंतन सुदृढ़ हुआ।

20. इस पद्धति ने विद्यार्थियों को केवल रटने तक सीमित न रखकर अवधारणाओं के बीच आपसी संबंध समझने में सक्षम बनाया और उनकी रचनात्मक सोच विकसित की।

21. संप्रत्यय मानचित्र तैयार करने की प्रक्रिया ने छात्रों की समझ को अधिक गहन और स्पष्ट किया तथा उनके ज्ञान के संगठन में आत्मनिर्भरता को बढ़ाया।

22. शिक्षक केवल ज्ञान–प्रसारक नहीं रहकर मार्गदर्शक और सहयोगी बन गए, जिससे विद्यार्थियों को खोजपरक अधिगम और आत्मनिर्भरता के लिए प्रेरणा मिली।

23. संप्रत्यय मानचित्रण से कक्षा का वातावरण अधिक सहभागी और सहयोगात्मक बन गया, जिससे समूह अधिगम, संवाद और विचारों का आदान–प्रदान बढ़ा।

शैक्षिक निहितार्थ :–

वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में विज्ञान, विशेषकर भौतिक विज्ञान शिक्षण में सम्प्रत्यय मानचित्रण की प्रभावशीलता का अध्ययन अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं नवीन शोध–विषय है। प्रस्तुत शोधकार्य के निहितार्थ विभिन्न दृष्टिकोणों से इस प्रकार प्रतिपादित किए जा सकते हैं –

1. विज्ञान अध्यापकों की दृष्टि से – इस शोध के निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि भौतिक विज्ञान अध्यापक यदि पारंपरिक शिक्षण की अपेक्षा सम्प्रत्यय मानचित्रण पद्धति का उपयोग करें तो वे अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली, रोचक और परिणामकारी बना सकते हैं। इससे विद्यार्थियों की अवधारणाएँ स्पष्ट होंगी तथा जटिल विषयवस्तु को सरल ढंग से समझाया जा सकेगा।

2. विद्यार्थियों की दृष्टि से – शोध से यह स्पष्ट हुआ है कि सम्प्रत्यय मानचित्रण तकनीक कमजोर तथा औसत स्तर के विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। इसके माध्यम से वे भौतिक विज्ञान की अवधारणाओं को आपस में जोड़कर गहन समझ विकसित कर सकते हैं और अपनी शैक्षिक उपलब्धियों में उल्लेखनीय सुधार कर सकते हैं।

3. अभिभावकों की दृष्टि से –प्रत्येक अभिभावक अपने बच्चों की उच्चतम शैक्षिक प्रगति की अपेक्षा रखते हैं। इस शोध से उन्हें यह बोध होगा कि कम उपलब्धि के पीछे केवल विद्यार्थियों की क्षमता नहीं बल्कि शिक्षण पद्धति भी महत्त्वपूर्ण कारक है। अतः अभिभावक अध्यापकों एवं विद्यालय से सहयोग लेकर विद्यार्थियों को नवीनतम पद्धतियों जैसे सम्प्रत्यय मानचित्रण के माध्यम से अध्ययन हेतु प्रेरित कर सकते हैं।

4. अनुसंधानकर्ताओं की दृष्टि से – यह शोध भावी अनुसंधानकर्ताओं के लिए कई नए आयाम खोलता है। सम्प्रत्यय मानचित्रण पद्धति के प्रभाव का अध्ययन विभिन्न विषयों, कक्षाओं एवं शिक्षण परिदृश्यों में किया जा सकता है। इस प्रकार यह शोध नए–नए अनुसंधानों के लिए आधार प्रदान करता है।

संस्कृत विषय में कक्षा नवीं के अध्येताओं की शैक्षिक उपलब्धि पर बहूमाध्य अनुदेशनात्मक विधियो की प्रभावशीलता का अध्ययन

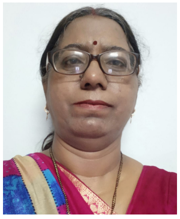

इला पारीक
शोधार्थी (शिक्षा शास्त्र)
आई ए एस ई
मानित विश्वविद्यालय,सरदारशहर।

डॉ. महेश कुमार शर्मा
रिसर्च सुपरवाइजर
प्राचार्य (डी.एल.एड.), आईएएसई
(डिम्ड यूनिवर्सिटी), जी.वी.एम.,
सरदारशहर

सारांश –

कोविड काल में लॉकडाउन की स्थिति में विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने हेतु राज्य सरकारों द्वारा घर बैठे ऑनलाइन शिक्षण की व्यवस्था की गई थी। राजस्थान राज्य में स्माइल कार्यक्रम के द्वारा बहूमाध्यम अनुदेशनात्मक विधियों के माध्यम से दृश्य श्रव्य सामग्री प्रदान की गई थी ।लेकिन, क्या यह सभी स्तर के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त रही?

क्या यह शिक्षण विधि परंपरागत शिक्षण विधि से अधिक प्रभावशाली है?

इन्हीं प्रश्नों के उत्तरों को जानने हेतु प्रस्तुत शोध में कक्षा नवीं के विद्यार्थियों की संस्कृत में शैक्षिक उपलब्धि पर बहूमाध्यम अनुदेशन की प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में 480 छात्र–छात्राओं का चयन कर उन्हें प्रयोगात्मक एवं नियोजित समूह में विभाजित किया गया। प्रयोगात्मक समूह में विद्यार्थियों को वीडियो आधारित शिक्षण तथा नियोजित समूह को परंपरागत अध्ययन करवाया गया। शोध अध्ययन में प्रयोगात्मक विधि प्रयुक्त की गई। नियोजित एवं प्रयोगात्मक समूह में परीक्षण के पश्चात् यह निष्कर्ष सामने आया कि बहूमाध्यम अनुदेशनात्मक विधियों का शैक्षिक उपलब्धि पर अधिक प्रभाव रहा।

बीज शब्द –

संस्कृत विषय,ऑनलाइन शिक्षण, स्माइल कार्यक्रम, अधिगम, परंपरागत शिक्षण, परंपरागत शिक्षण विधि बहुमाध्यम अनुदेशन, प्रयोगात्मक एवं नियोजित समूह।

प्रस्तावना – भारत ऋषि मुनियों का राष्ट्र है। ये ऋषि मुनि विद्वान, प्रबुद्ध, वैज्ञानिक विचारधारा वाले एवं दूरदर्शी थे। ये ज्ञान, विज्ञान, अध्यात्म विद्या में पारंगत थे। प्राचीन काल में भारत में आश्रम और गुरुकुल शिक्षा प्राप्ति के स्थान थे। शिक्षा राजाश्रित एवं समाज पोषित थी। शिक्षा देने के बदले में शिष्यों से किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता था। समाज में गुरुओं का स्थान सम्मानजनक था। कालांतर में शिक्षा के केंद्र आश्रम और गुरुकुलका स्थान सम्मानजनक था। कालांतर में शिक्षा के केंद्र आश्रम और गुरुकुल विद्यालयों में परिवर्तित होते चले गए। शिक्षण व्यवस्था तीन R (Reading, (W)riting,(A)rthmetik की स्कूल स्तर की शिक्षा में बहुत बड़ी भूमिका थी ।ज्ञान के विस्फोट तथा द्रुत गति से परिवर्तित सामाजिक परिवेश के फलस्वरूप कई अन्य विषय जुड़ते चले गए। मानवीय क्रियाकलापों का कोई भी क्षेत्र इसके प्रभाव से अछूता नहीं रहा। वस्तुतः शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में पुरातन या परंपरागत शिक्षण विधियां प्रयोग में लाई जाती रही है अतः शिक्षा शास्त्रियों ने शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में नये शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में नवाचारों का उपयोग कर विद्यार्थियों के अधिगम की गुणवत्ता को प्रोन्नत करने की आवश्यकता पर विशेषदिया ।शिक्षण अधिगम की नवीन विधियों की स्थापना की दिशा में प्रयास करने वाले बी.एफ. स्किनर ने 1945 में एक नवीन उपागम पर बल दिया,जिसे अभिक्रमित अनुदेशन नाम दिया गया ।लेकिन अभिक्रमित अनुदेशन परंपरागत दृश्य श्रव्य उपकरण तथा फिल्म पट्टिकाओं का उपयोग काफी व्यय साध्य है। अतः अनुदेशन की ऐसी प्रणालियों

की आवश्यकता अनुभव की गई, जिसमें लागत कम तथा अधिकतम विद्यार्थी अपने स्थान पर ही पाठ्य सामग्री का स्वाध्ययन कर लाभान्वित हो सके। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने अध्यताओं की शैक्षिक उपलब्धि को प्रोन्नत करने में बहुमाध्यम अनुदेशनात्मक पैकेज के अंतर्गत कंप्यूटर एवं वीडियो आधारित अनुदेशनात्मक विधियों की प्रभावशीलता का अध्ययन करने का विचार किया।

शोध उद्देश्य –

संस्कृत विषय में कक्षा नवीं के अध्येताओं की संस्कृत व्याकरण में उपलब्धि पर बहु माध्यम अनुदेशनात्मक विधियों के प्रभाव का पता लगाना।

शोध परिकल्पना –

संस्कृत विषय में कक्षा नवीं के अध्येताओं में संस्कृत व्याकरण में शैक्षिक उपलब्धि पर बहुमाध्यम अनुदेशनात्मक विधियों का सार्थक प्रभाव नहीं है।

संबंधित शोध अध्ययन – संस्कृत विषय में कक्षा नवीं के अध्यताओं में संस्कृत व्याकरण में शैक्षिक उपलब्धि पर बहु मध्य अनुदेशनात्मक विधियों की प्रभावशीलता का अध्ययन करने हेतु देश–विदेश में अनेक शोधार्थियों ने अनुसंधान किया, जिनका विवरण निम्नानुसार है –

पटेल और सिंह ने (2020) में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संस्कृत विषय में शैक्षिक निष्पत्ति पर निर्माण वादी उपागम की प्रभावशीलता का अध्ययन किया,शोध का मुख्य उद्देश्य संस्कृत विषय की पूर्व उपलब्धि को सहचर मानते हुए निर्माण वादी उपागम तथा परंपरागत विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन करना था वाराणसी में कक्षा 9 के एक–एक वर्ग को प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह हेतु चुना गया पूर्व तथा पश्चिम परीक्षण कर डाटा संकलित किए गए और संस्कृत शिक्षण हेतु परंपरागत विधि को अधिक प्रभावशाली माना।

जोशी तथा मिश्रा 2018 में बीएड परीक्षा पर शिक्षक आर्थियों की गणित शिक्षण विधि विषय में उपलब्धि पर कंप्यूटरीकृत से अधिगम सामग्री का प्रभाव पर शोध अध्ययन किया भोपाल के गणित शिक्षण विधि वाले 88 प्रशिक्षण आर्थियों का उद्देश्य पूर्ण प्रतिदर्श विधि द्वारा न्यायाधीश का चुनाव किया गया उन्होंने अपने अध्ययन में सवार अधिगम सामग्री से गणित शिक्षण विषय में उपलब्धि को परंपरागत विधि से अधिक प्रभावशाली पाया।

न्यादर्श – प्रस्तुत शोध का उद्देश्य कक्षा नवी के छात्र व छात्राओं की संस्कृत विषय में व्याकरण अधिगम उपलब्धि पर बहूमाध्यम अनुदेशनात्मक विधियों की प्रभावशीलता का पता लगाना है। इसलिए प्रस्तावित शोध की जनसंख्या का चयन कक्षा नवीं में अध्यनरत संस्कृत विषय में पढ़ने वाले अध्येता है। न्यादर्श के लिए 480 अध्यताओं को लिया गया है। न्यादर्श का चयन बीकानेर क्षेत्र के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के स्थित शासकीय छात्र एवं छात्रा विद्यालयों से किया जाएगा। न्यादर्श चयन के लिए लॉटरी विधि का प्रयोग किया गया।

शोध समस्या का सीमांकन –

शोध 480 विद्यार्थियों तक सीमित रखा जाएगा तथा अध्ययन का क्षेत्र बीकानेर रहा। जिसमें कक्षा नवीं के पाठ्यक्रम में प्रस्तावित व्याकरण इकाई तक सीमित रखा गया।

शोध उपकरण –

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी के द्वारा प्रयोग हेतु स्वयं निर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण एवं मानकीकृत सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण का प्रयोग किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकी – समानांतर माध्य एवं केंद्रीय प्रवृत्ति के माप।

शोध में प्रयुक्त विधि –

प्रस्तुत शोध में शोधर्थी ने उद्देश्य की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए प्रयोगात्मक शोध विधि का प्रयोग किया। प्रस्तावित अध्ययन में क्षेत्र प्रयोग विद्यालय में उपस्थित रहकर किया जाएगा।

प्रदत्त विश्लेषण – उपर्युक्त सारणी का अवलोकन करने से विदित होता है कि बहूमाध्यम अनुदेशनात्मक विधियां और परंपरागत शिक्षण विधि समूह में सम्मिलित अध्यताओं के शैक्षिक उपलब्धि प्राप्ताकों के समानांतर माध्य क्रमशः

19.0, 19.93 तथा 14.53 पाए गए।

जिन अध्येताओं ने वीडियो आधारित अनुदेशन से स्वाध्ययन किया,उनका अधिगमोपरांत शैक्षिक उपलब्धि का समानांतर माध्य सबसे अधिक 19.93 अंक पाया गया है। दूसरा स्थान उन अध्यताओं का है, जिन्होंने कंप्यूटर सहायक अनुदेशन से कंप्यूटर की मदद से अधिगम प्राप्त किया। उनकी शैक्षिक उपलब्धि का समानांतर माध्य 19 अंक प्राप्त हुआ है,सबसे कम शैक्षिक उपलब्धि का समानांतर माध्य परंपरागत शिक्षण विधि से कक्षागत शिक्षण में भाग लेने वाले अध्येताओं को प्राप्त हुआ है, यह समानांतर माध्य 14.53 अंक है,जो कि प्रयोगात्मक विधियो से स्वाध्ययन करने वाले अध्येताओं की तुलना में अत्यधिक कम प्राप्त हुआ है।

इस प्रकार पूर्व निर्मित की गई शून्य परिकल्पना यह कि अध्येताओं की शैक्षिक उपलब्धि पर बहुमाध्यम अनुदेशनात्मक विधियों का प्रभाव सार्थक नहीं है, को 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत किया जाता है।

सारिणी संख्या

शिक्षण विधि समूहवार अध्येताओं के शैक्षिक उपलब्धि स्कोर के मध्यमान

कम्प्यूटर सहाय अनुदेशन	वीडियो आधारित अनुदेशन	परमपरागत विधि अनुदेशन
19	19.93	14.53

संदर्भ ग्रंथ सूचि –

1. गुप्ता, एस.एवं शर्मा डी (2022) भारत में ऑनलाइन शिक्षारू संभावनाएं, चुनौतियां एवं नीतिगत सुझाव भारतीय शिक्षा नीति जर्नल, 18(1)33 –49
2. सिंह, ए. (2022) ग्रामीण भारत में डिजिटल विभाजन और ऑनलाइन शिक्षा की स्थिति, ग्रामीण विकास अध्ययन, 12 (2) 101– 115
3. कुमार, आर, मिश्रा,पी. (2021) कॉविड – 19 महामारी में भारत में ऑनलाइन शिक्षा रूएक समीक्षा, भारतीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 45(3)56 –72
4. पटेल, के. (2021) कोविद– 19 के दौरान शहरी एवं ग्रामीण भारत में ऑनलाइन शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन समाजशास्त्रीय अध्ययन 27(4)85 –102
5. शर्मा, आर. ए. (2015) शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया,आर. लाल बुक डिपो

शिक्षक शिक्षा में ऑनलाइन गैजेट्स के उपयोग की वस्तुस्थिति, अभिधारको का अभिमत एवं भावी संभावनाओ का अध्ययन

शान्ता मेघवाल
शोध निदेशक
प्राचार्य
मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज.)

डॉ. आदेश भटनागर
शोधार्थी
इंडो अमेरिकन टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज,
उदयपुर (राज.)

सारांश – वर्त्तमान युग तकनीकी युग है और शिक्षक शिक्षा भी इससे अछुता नहीं है। बदलते परिवेश में तकनीकी में भी काफी परिवर्तन हुये है और इनकी उपयोगिता भी बढ़ी है। आज ऑनलाइन शिक्षा में उपयोग होने वाले शिक्षण सम्बंधित सामग्री, टेक्नोलॉजी के माध्यम से एक स्थान से दुसरे स्थान पर भेजी जा सकती है। ऑनलाइन शिक्षा में समय बचता है, साथ ही अपने घर में आराम से उपयोग में लिया जा सकता है। कुछ समय पहले ऑनलाइन गैजेट्स का उपयोग शिक्षक शिक्षा मे बहुत कम किया जाता था। लेकिन कोरोना कल में यह बात उलट सी गई है। कोरोनाकाल में हमने देखा की सेवा पूर्व शिक्षा के सबसे लोकप्रिय द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में बहुतायत से ऑनलाइन गैजेट्स के माध्यम से कक्षाओ का संचालन किया गया।

शिक्षक शिक्षा मे ऑनलाइन गैजेट्स का उपयोग सिर्फ कोरोना काल तक सीमित नहीं था, आज ये कोरोना काल के बाद भी अपनी प्रासंगिकता बनाये रखे हुए है स वर्तमान में शिक्षक शिक्षा में ऑनलाइन गैजेट्स का उपयोग एक आवश्यकता बन चुकी है। न केवल शिक्षण प्रशिक्षण एवं अधिगम में बल्कि प्रशासनिक स्तर पर भी ऑनलाइन गैजेट्स का उपयोग शिक्षक शिक्षा में किया जा रहा है।

मुख्य शब्दावली – प्रस्तुत अध्ययन के शीर्षक के अंतर्गत मुख्यतः निम्नलिखित शब्द प्रयुक्त हुये है : शिक्षक शिक्षा, वस्तुस्थिति, ऑनलाइन गैजेट्स, अभिधारक, अभिमत एवं भावी सम्भावनाये।

प्रस्तावना – शिक्षक शिक्षा एक ऐसी शैक्षिक व्यवस्था है जिसमें अध्यापकों को इस प्रकार से शिक्षित करने का प्रयास किया जाता है की ज्ञान तथा मूल्यों का एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक इस तरह हस्तांतरण किया जाये की उसमे शैक्षणिक व विकासात्मक उत्तरदायित्वों का आरोपण किया जा सके और वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक दक्षता, प्रयोगधर्मी सोच तथा मानवीय प्रवृति विकसित कर सके। चूँकि शिक्षा को एक व्यवसाय मान लिया गया है, अतः यह आवश्यक है की शिक्षक शिक्षा की व्यवस्था भी इस प्रकार हो की उसकी व्यावसायिक दक्षता व संवेगात्मक पहलु की ओर ध्यान दिया का सके।

प्रो.एस.एन. मुखर्जी के अनुसार, "विभिन्न शिक्षा केन्द्रों में सुधार की आवश्यकता है और इस उद्देश्य हेतु 'शिक्षक शिक्षा' एक बेहतर शब्द है क्योकि यह शिक्षक निर्माण सम्बन्ध क्षेत्र को विस्तृत बनाती है।"

मुनरो के अनुसार, "शिक्षक शिक्षा का अर्थ है सम्पूर्ण शिक्षा पूर्ण अनुभव जो विद्यालयों में शिक्षण पद के लिए व्यक्ति को तैयार करती है परन्तु यह शीर्षक शैक्षणिक संस्थानों द्वारा आयोजित विभिन्न कोर्स और अन्य अनुभवों सम्बन्धी कार्यक्रमों पर लागू होता है जो शिक्षक और अन्य शैक्षणिक सेवाओ हेतु व्यक्ति को तैयार करने के उद्देश्य से बनाये जाते है। ये कार्यक्रम शिक्षक महाविद्यालयों, सामान्य विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में लागू होते है।"

अध्ययन का औचित्य – प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षक शिक्षा में ऑनलाइन गैजेट्स के उपयोग की वस्तुस्थिति, इसके प्रति अभिधारको के अभिमत एवं भावी संभावनाओ का अध्ययन किया गया। इस प्रकार अनेक दृष्टिकोणों से

उपयोगिता रखने वाला प्रस्तावित शोध अध्ययन अपना औचित्य प्रमाणित करता है।

शोध उद्देश्य – कोई भी शोध कार्य निष्प्रयोजन नहीं होता है। प्रत्येक शोध अध्ययन किन्ही निश्चित उद्देश्यो पर अवलम्बित होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य है :

1. शिक्षक शिक्षा में ऑनलाइन गैजेट्स के उपयोग की वस्तुस्थिति का पता लगाना।
2. शिक्षक शिक्षा में ऑनलाइन गैजेट्स के उपयोग के सन्दर्भ में प्राचार्य, शिक्षक–प्रशिक्षक एवं प्रशिक्षणार्थी के अभिमत का अध्ययन करना।
3. शिक्षक शिक्षा में ऑनलाइन गैजेट्स के उपयोग के सन्दर्भ में अभिधारको के अभिमत का ग्रामीण एवं शहरी आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. शिक्षक शिक्षा में ऑनलाइन गैजेट्स के उपयोग की भावी संभावनाओ का पता लगाना।

परिकल्पनाए –अनुमान के आधार पर शोध अध्ययन की निम्नलिखित परिकल्पनाए है :

1. शिक्षक शिक्षा में ऑनलाइन गैजेट्स के उपयोग के सन्दर्भ में अभिधारको के अभिमत में क्षेत्र भिन्नता के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. शिक्षक शिक्षा में ऑनलाइन गैजेट्स के उपयोग के सन्दर्भ में अभिधारको के अभिमत में लैंगिक भिन्नता के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन की परिसीमाएं – प्रस्तुत शोध का अध्ययन उदयपुर जिले के 20 बी.एड. महाविद्यालयों तक ही सीमित रखा गया है।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। सर्वेक्षण विधि के द्वारा ही वर्तमान से सम्बंधित समस्या का अध्ययन गहनता से किया जा सकता है।

न्यादर्श – प्रस्तुत शोध में उद्देश्यपरक प्रतिचयन विधि से चयनित उदयपुर जिले के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र से 10–10 बी.एड. महाविद्यालयों का चयन स्तरीकृत यादृछिक विधि के द्वारा किया गया।

शोध उपकरण – प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित उपकरण का निर्माण किया गया।

सांख्यकीय प्रविधिया – प्रस्तुत शोध में प्राथमिक दत्तो के गणनात्मक विश्लेषण में निम्न सांख्यकीय प्रविधियो का प्रयोग किया गया –

1. प्रतिशत
2. मध्यमान
3. मानक विचलन
4. टी–परीक्षण

निष्कर्ष – कोई भी शोध कार्य तभी सफल माना जा सकता है जबकि उसकी शिक्षा के क्षेत्र में उपादेयता हो स प्रस्तुत शोध अध्ययन शिक्षक शिक्षा में ऑनलाइन गैजेट्स के उपयोग की वस्तु स्थिति, अभिधारकों का अभिमत एवं उसकी भावी सम्भावनाओं का पता लगाने के लिए किया गया था। प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर आगामी शोध अध्ययन में बहुत सहायता एवं मार्गदर्शन मिलेगा स

संदर्भ सूची –

A.E. (1980)- Research Design in Clinical Psychology, New York: Harper & Row.

Best, J,W, (1983) Research in Education- New Delhi: Prentice Hall of India.

Best, John. W. Kahn, James. V. (2010) Research in Education. New Delhi: 10th Edition Prentice Hall of India

कोठारी, सी.आर. (1985). रिसर्च मैथोडोलोजी, नई दिल्ली : दिल्ली इस्टर्न लिमिटेड, पृष्ठ संख्या – 84

गुड, बार एवं स्केट्स (1995). मेथड इन सोशल रिसर्च, न्यूयॉर्क : मैक्ग्राहिल बुक कारपोरेशन, पृष्ठ संख्या – 65

गेरेट, एच.ई. (2007). शिक्षा एवं नोविज्ञान में सांख्यकीय, नई दिल्ली : कल्याणी पब्लिशर्स, पृष्ठ संख्या – 162

उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन

लकी व्यास
शोधकर्त्री (शिक्षा संकाय)
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय),
उदयपुर (राज.)

डॉ. हरीश चन्द्र चौबसा
शोध मार्गदर्शका, शिक्षा संकाय
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय),
उदयपुर(राज.)

प्रस्तावना :

केन्द्र सरकार ने देश के भविष्य यानी स्कूली बच्चों की बुनियाद को पहले से ज्यादा मजबूत बनाने की दिशा में एक बेहतर कदम उठाया है। सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में एक बड़ा बदलाव किया है। जिसके तहत देशभर में लगभग 14 हजार 500 स्कूलों को पीएम श्री योजना यानी (प्रधानमंत्री स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया) के तहत अपग्रेड किया जाएगा।

इस योजना के तहत 14500 स्कूलों को अपग्रेड करने में आने वाले खर्च को केंद्र सरकार वहन करेगी और राज्य सरकार को इस योजना पर अमल करने एवं निगरानी करने की जिम्मेदारी दी जाएगी। इस योजना के तहत अपग्रेड किए गए स्कूल के माध्यम से सामान्य लोगों के बच्चों को अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिलेगा। जिससे उनका भविष्य निखरेगा और वह भी शिक्षित होकर भारत के विकास में अपनी भागीदारी निभा सकेंगे।

29 जुलाई, 2023 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दिल्ली के प्रगति मैदान में अखल भारतीय षिक्षा समागम का उद्घाटन करते समय पी.एम.श्री योजना की पहली किष्त को जारी किया है। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 12 भारतीय भाशाओं में 100 पुस्तकों का विमोचन भी किया। प्रधानमंत्री ने राज्याों / केन्द्र षासित प्रदेषों / केन्द्रीय विद्यालय संगठन और नवोदय विद्यालय समिति के 6207 स्कूलों को 630 करोड़ रूपये ट्रांसफर किए।

पृष्ठभूमि

पीएमश्री स्कूलों को समावेशी बनाने के लिए डिजाइन किया गया है। यह विविध पृष्ठभूमि के छात्रों की सेवा करेगा और सभी के लिए समान अवसर प्रदान करेगा। स्कूलों को स्मार्ट कक्षाओं, प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों, खेल के मैदानों और बहुत कुछ सहित अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे और सुविधाओं से लैस करने की योजना है। लेकिन, वास्तव में वह पाठ्यक्रम क्या होगा जिसका ये स्कूल पालन करेंगे? आइए पीएम श्री योजना को समझने से पहले इसे गहराई से समझें।

पीएम श्री स्कूलों का पाठ्यक्रम :

पीएमश्री स्कूलों का पाठ्यक्रम 21वीं सदी के शिक्षार्थी की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है, जिसमें एसटीईएम (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) विषयों पर जोर दिया गया है। स्कूल आलोचनात्मक सोच, संचार, सहयोग और रचनात्मकता जैसे कौशल विकसित करने पर भी ध्यान केंद्रित करते हैं, जो आधुनिक दुनिया में सफलता के लिए आवश्यक हैं।

पीएमश्री स्कूलों को समावेशी, विविध पृष्ठभूमि के छात्रों की जरूरतों को पूरा करने और सभी के लिए समान अवसर प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है। स्कूल अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे और सुविधाओं से सुसज्जित हैं, जिनमें स्मार्ट क्लासरूम, प्रयोगशालाएं, पुस्तकालय, खेल के मैदान और बहुत कुछ शामिल हैं।

हमारा दृढ़ विश्वास है कि इन स्कूलों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, और इन स्कूलों को

उन सभी बाधाओं को दूर करने में मदद करने के लिए जिनका उन्हें सामना करना पड़ता है, डिजिटल लर्निंग समाधानों का एक व्यापक सेट आवश्यक है। तभी इस पहल के पीछे की संपूर्ण दृष्टि का साकार रूप में सामने आना संभव है। इतना कि, हमारा मानना है कि डिजिटल संसाधनों के अच्छे सेट के बिना, .ष्टिकोण को हासिल करना न केवल कठिन होगा, बल्कि कुछ समृद्ध परिणाम देने की क्षमता में भी कमी हो सकती है।

यहां तक कि पीएम ई–विद्या नामक एक सरकारी पहल का दावा है कि डिजिटल शिक्षा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच के प्रसार को बढ़ावा दे सकती है। इसलिए, हमारा मानना है कि डिजिटल शिक्षा की शक्ति पीएमश्री स्कूलों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए प्रेरक शक्ति हो सकती है।

शोध परिकल्पना :

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्नलिखित शोध परिकल्पनाएं निर्धारित की गयी हैं–

1. पी.एम.श्री स्कूल योजना के प्रति उदयपुर एवं बांसवाड़ा सम्भाग के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिमतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमन :

इस अध्ययन का उद्देश्य पी.एम. श्री की व्यापक समझ प्रदान करना है। पी.एम.श्री योजना, इसका कार्यान्वयन, हितधारकों की राय और संबंधित चुनौतियाँ, कुछ सीमाओं को स्वीकार करने की आवश्यकता है। ये सीमाएँ निष्कर्षों की सामान्यता और गहराई को प्रभावित कर सकती हैं, और परिणामों की व्याख्या करते समय इन्हें ध्यान में रखा जाना चाहिए। प्रस्तुत शोध कार्य का परिसीमन निम्नानुसार है–

1. भौगोलिक दृष्टि से : प्रस्तुत शोध अध्ययन को राजस्थान राज्य के उदयपुर व बांसवाड़ा सम्भाग तक ही सीमित रखा जाएगा।

2. अध्ययन की दृष्टि से : प्रस्तुत शोध अध्ययन जो विद्यालय पी.एम.श्री स्कूल योजना के विद्यालय बन चुके हैं उन विद्यालयों के प्रमुख मुद्दों तक ही सीमित रखा जाएगा।

अध्ययन का औचित्य :

''पी.एम.श्री स्कूल योजना की वस्तुस्थिति, क्रियान्वयन एवं अनुभूत समस्याओं का अध्ययन'' पर केंद्रित शोध सामाजिक कल्याण और शिक्षा के क्षेत्र में गहरा महत्व रखता है। शैक्षिक पहलुओं के माध्यम से वंचित व्यक्तियों को सशक्त बनाने और उत्थान करने के लिए बनाई गई यह योजना, इसके कार्यान्वयन प्रभावशीलता के व्यापक मूल्यांकन की गारंटी देती है। योजना की वर्तमान स्थिति की जांच करना, जमीन पर इसकी तैनाती को समझना, हितधारकों के दृष्टिकोण को समझना और आने वाली चुनौतियों की पहचान करना इसके प्रभाव को बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। लाभार्थियों, प्रशासकों और अन्य हितधारकों के अनुभवों और राय को ध्यान में रखते हुए, यह शोध अपने इच्छित उद्देश्यों को प्राप्त करने में योजना की सफलता का आकलन करने में सहायता करता है।

यह न केवल उन क्षेत्रों पर प्रकाश डालता है जहां योजना ने सकारात्मक प्रगति की है बल्कि संभावित कमियों या बाधाओं पर भी प्रकाश डाला है जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। अंततः, यह शोध नीति परिशोधन के लिए एक मार्गदर्शक कम्पास के रूप में कार्य करता है, यह सुनिश्चित करता है कि पी.एम. श्री योजना सकारात्मक शैक्षिक एवं सामाजिक परिवर्तन को उत्प्रेरित करने और सभी के लिए समान शैक्षिक अवसरों को बढ़ावा देने की अपनी क्षमता को अधिकतम करती है।

शोध विधि एवं उपकरण :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा। क्योंकि इस अध्ययन के लिए यह विधि सर्वोत्तम एवं उपयुक्त है। शोध विषय की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए ही इस विधि का प्रयोग किया जाएगा।

शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा जो इस प्रकार है।

1. अभिधारकों (प्रधानाध्यापक, शिक्षक, विद्यार्थी) के लिए प्रमापनी (अभिमतावली)

तकनीकी शब्दों की व्याख्या :

1. पी.एम.श्री योजना : हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने पुराने स्कूलों को एक नया स्वरूप देने एवं बच्चों को स्मार्ट शिक्षा से जोड़ने के लिए एक नई योजना को शुरू करने की घोषणा की है। इस योजना का नाम पी. एम.श्री स्कूल योजना है। जिसे शुरू करने की घोषणा प्रधानमंत्री जी ने 5 सितंबर 2022 सोमवार के दिन टीचर्स डे के अवसर पर की। Prime Minister School for Rising India PM SHRI योजना के तहत पूरे भारत में 14500 स्कूलों का विकास और उन्नयन किया जाएगा। यह सभी मॉडल स्कूल बनेंगे और इनमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) की पूरी भावना समाहित होगी।

2. वस्तुस्थिति : किसी विषय की स्थापना के उद्देश्यों या उसकी आदर्श स्थिति की जगह जो वास्तविक स्थिति होती है, वह उसकी वस्तुस्थिति कहलाती है।

3. क्रियान्वयन : पी. एम श्री स्कूल योजना का उद्देश्य शिक्षा के लिए सामाजिक कल्याण लाभ प्रदान करना है, इस योजना को विभिन्न क्षेत्रों, स्कूलों और शैक्षिक स्तरों पर किस हद तक प्रभावी ढंग से लागू किया गया है, इसका गहन मूल्यांकन करने में एक शोध अंतर है। इसमें योजना की पहुंच का आकलन करना, कार्यान्वयन में कमियों की पहचान करना और इसके सफल या असफल कार्यान्वयन में योगदान देने वाले कारकों को समझना शामिल है।

4. अभिमत : अभिमत किसी वस्तु, व्यक्ति या विषय के सम्बन्ध में सोचने, अनुभव करने तथा व्यवहार करने का तरीका है। ऑक्सफोर्ड शब्दकोष के अनुसार–''किसी विषय–वस्तु या मुद्दों के बारे में कोई क्या सोचता है, वहीं अभिमत कहलाता है।'' इसका अर्थ है किसी विषय वस्तु के प्रति हम क्या सोचते हैं? कैसा अनुभव करते हैं? यही हमारा उसके प्रति अभिमत है। यह सकारात्मक अथवा नकारात्मक दोनों ही प्रकार का हो सकता है।

5. अभिधारक : प्रस्तुत शोध कार्य में अभिधारकों से तात्पर्य विद्यार्थी शिक्षक, संस्था प्रधानों एवं अभिभावक से है जो विद्यालय से निरन्तर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहते हैं तथा सदैव विद्यालय विकास हेतु कार्य करते रहते हैं।

6. अनुभूत समस्या : प्रस्तुत शोध कार्य में अनुभूत समस्या से तात्पर्य यह है कि पी.एम.श्री स्कूल योजना को व्यवस्थित रूप से क्रियान्वित होने के बाद शिक्षकों, संस्था प्रधानों एवं विद्यार्थियों को कौन–कौनसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु उदयपुर एवं बांसवाड़ा सम्भाग के कुल न्यादर्श 650 लिए गये है जिसमें उदयपुर सम्भाग के 20 विद्यालयों एवं बांसवाड़ा सम्भाग के 20 विद्यालयों का चयन किया जाएगा जो इस प्रकार है–

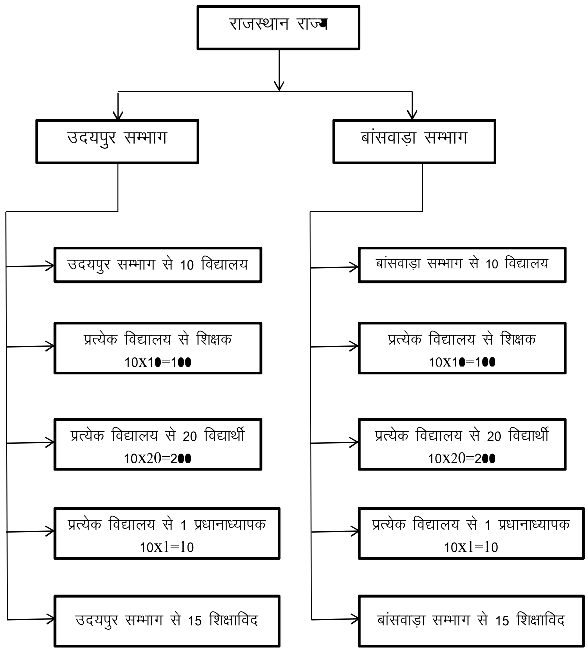

शोध में प्रयुक्त कुल न्यादर्श

क्र.सं.	समूह प्रकार	उदयपुर सम्भाग	बांसवाड़ा सम्भाग	कुल न्यादर्श
1	शिक्षक	10x10=100	10x10=100	200
2	विद्यार्थी	10x20=200	10x20=200	400
3	प्रधानाध्यापक	10x1=10	10x1=10	20
4	शिक्षाविद	प्रत्येक सम्भाग 15	प्रत्येक सम्भाग 15	30
	कुल	325	325	650

1.विद्यालयों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि से किया गया।

2. शिक्षाकर्मियों / प्रधानाध्यापकों / विद्यार्थियों एवं शिक्षाविदों का चयन सौद्देश्य न्यादर्श चयन विधि से किया गया।

सांख्यिकीय तकनीकी :

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित सांख्यिकीय का प्रयोग किया गया –

1. मध्यमान 2. प्रमाप विचलन

3. टी–परीक्षण

उदयपुर सम्भाग में संचालित 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन करना।

सारणी संख्या–.1

उदयपुर सम्भाग में संचालित 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति विद्यार्थियों के अभिमतों का मध्यमान एवं मानक विचलन

क्र.सं.	क्षेत्र	मध्यमान	मानक विचलन
1.	योजना के उद्देश्य	50.10	8.20
2.	भौतिक संसाधन	52.36	9.05
3	विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुदृढ़ीकरण	48.90	7.55
4	प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्धन	55.70	9.58

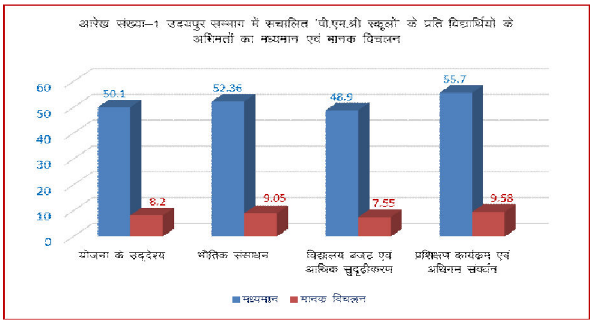

व्याख्या :

उपर्युक्त सारणी एवं आरेख संख्या 1 के अवलोकन करने पर क्षेत्रवार विश्लेषण इस प्रकार है –

1. क्षेत्र–1 योजना के उद्देश्य : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के विद्यार्थियों के अभिमतों के क्षेत्र 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र का मध्यमान 50.10 एवं मानक विचलन 8.20 प्राप्त हुआ। इससे ज्ञात होता है कि 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि गुणवत्ता शिक्षा हेतु महत्वपूर्ण कदम है, छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने आधुनिक शिक्षा प्रदान करने व राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुई है।

2. क्षेत्र–2 भौतिक एवं मानवीय संसाधन : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के विद्यार्थियों के अभिमतों के क्षेत्र 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' के क्षेत्र का मध्यमान 52.36 एवं मानक विचलन 9.05 प्राप्त हुआ। इससे ज्ञात होता है कि 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि विद्यार्थियों के अनुपात में सुरक्षित विद्यालय भवन व सुविधायुक्त फर्नीचर की व्यवस्था सम्भव हो सकी है।

3. क्षेत्र–3 विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुदृढ़ीकरण : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों के अभिमतों के क्षेत्र 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' क्षेत्र का मध्यमान 48.90 एवं मानक विचलन 7.55 प्राप्त हुआ। इससे ज्ञात होता है कि 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि सत्र के दौरान समय पर आर्थिक बजट की उपलब्धता से विद्यालय के बुनियादी ढांचे जैसे भवन, प्रयोगशालाएं, कम्प्यूटर, फर्नीचर, पानी, बिजली, लेब, खेल मैदान व पुस्तकालयों की सुविधाएं सुनिश्चित हुई।

4. क्षेत्र–4 प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों के अभिमतों के क्षेत्र' प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' क्षेत्र का मध्यमान 55.70 एवं मानक विचलन 9.58 प्राप्त हुआ। इससे ज्ञात होता है कि 'प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि प्रभावी शिक्षण हेतु समय–समय पर प्रशिक्षण नियमित रूप में कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। नवीनतम शिक्षण विधियों जैसे इंटरैक्टिव कार्यशालाओं और चर्चाओं के माध्यम से छात्रो का प्रभावी ढग से संलग्न करने के लिए प्रशिक्षण किया जाता है।

बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन करना।

सारणी संख्या–2

बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति विद्यार्थियों के अभिमतों का मध्यमान एवं मानक विचलन

क्र. सं.	क्षेत्र	मध्यमान	मानक विचलन
1.	योजना के उद्देश्य	42.50	7.06
2.	भौतिक संसाधन	44.55	7.90
3	विद्यालय बजट एवं आथिक सुदृढ़ीकरण	41.05	6.58
4	प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्धन	43.98	7.20

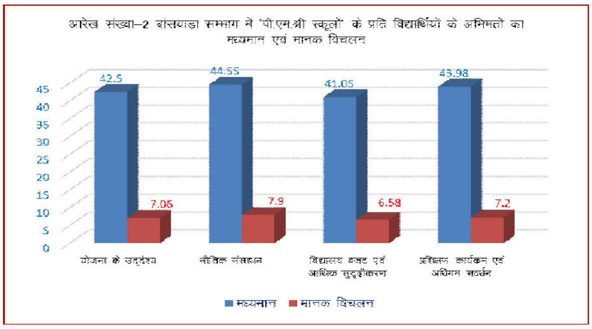

व्याख्या :

उपर्युक्त सारणी एवं आरेख संख्या 2 के अवलोकन करने पर क्षेत्रवार विष्लेशण इस प्रकार है –

1. क्षेत्र–1 योजना के उद्देश्य : बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों के अभिमत के क्षेत्र 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र का मध्यमान 42.50 एवं मानक विचलन 7.06 प्राप्त हुआ। इससे ज्ञात होता है कि 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि गुणवत्ता शिक्षा हेतु महत्वपूर्ण कदम है, छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने आधुनिक शिक्षा प्रदान करने व राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुई है।

2. क्षेत्र–2 भौतिक एवं मानवीय संसाधन : बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों के अभिमत के क्षेत्र 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र का मध्यमान 44.55 एवं मानक विचलन 7.90 प्राप्त हुआ। इससे ज्ञात होता है कि 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि विद्यार्थियों के अनुपात में सुरक्षित विद्यालय भवन व सुविधायुक्त फर्नीचर की व्यवस्था सम्भव हो सकी है।

3. क्षेत्र–3 विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण : बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों के अभिमत' के क्षेत्र 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुदृढीकरण' क्षेत्र का मध्यमान 41.05 एवं मानक विचलन 6.58 प्राप्त हुआ। इससे ज्ञात होता है कि 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुदृढीकरण' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि सत्र के दौरान समय पर आर्थिक बजट की उपलब्धता से विद्यालय के बुनियादी ढांचे जैसे भवन, प्रयोगशालाएं, कम्प्यूटर, फर्नीचर, पानी, बिजली, लेब, खेल मैदान व पुस्तकालयों की सुविधाएं सुनिष्चित हुई।

4. क्षेत्र–4 प्रषिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन : बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों के अभिमत' के क्षेत्र 'प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' क्षेत्र का मध्यमान 43.98 एवं मानक विचलन 7.20 प्राप्त हुआ। इससे ज्ञात होता है कि 'प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि प्रभावी शिक्षण हेतु समय–समय पर प्रशिक्षण नियमित रूप में कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। नवीनतम शिक्षण विधियों जैसे इंटरैक्टिव कार्यशालाओं और चर्चाओं के माध्यम से छात्रो का प्रभावी ढग से संलग्न करने के लिए प्रशिक्षण किया जाता है।

उदयपुर एवं बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति विद्यार्थियों के अभिमतो का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी संख्या–3

उदयपुर एवं बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति विद्यार्थियों के अभिमतो का तुलनात्मक अध्ययन

क्र. सं.	क्षेत्र	उदयपुर		बांसवाड़ा		'टी' मूल्य	.05 / .01 स्तर पर सार्थकता
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
1.	योजना के उद्देश्य	50.10	8.20	42.50	7.06	3.90	.01 स्तर पर
2.	भौतिक संसाधन	52.36	9.05	44.55	7.90	3.20	.01 स्तर पर
3	विद्यालय बजट एवं आथिक सुदृढ़ीकरण	48.90	7.55	41.05	6.58	3.72	.01 स्तर पर
4	प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्धन	55.70	9.58	43.98	7.20	3.02	.01 स्तर पर

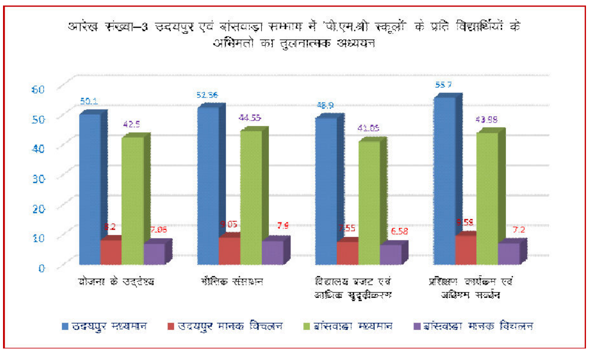

df = 62

.05 स्तर पर सार्थकता मूल्य त्र 1.96

.01 स्तर पर सार्थकता मूल्य त्र 2.56

व्याख्या :

उपर्युक्त सारणी एवं आरेख संख्या 3 के अवलोकन करने पर क्षेत्रवार विष्लेशण इस प्रकार है –

1. क्षेत्र–1 योजना के उद्देश्य : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों के अभिमत के क्षेत्र 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र का मध्यमान क्रमशः 50.10, 42.50 एवं मानक विचलन क्रमशः 8.20, 7.06 प्राप्त हुआ। मध्यमान के अन्तर की सार्थकता की जॉच के लिए टी–परीक्षण प्रयुक्त किया गया। टी–मान 3.90 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता के अंश df=62 के .01 स्तर के सारणी मान 2.56 से अधिक पाया गया। अतः दोनों समूह के विद्यार्थियों के अभिमत के प्रथम क्षेत्र के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। इससे ज्ञात होता है कि 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि गुणवत्ता शिक्षा हेतु महत्वपूर्ण कदम है, छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने आधुनिक शिक्षा प्रदान करने व राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुई है।

2. क्षेत्र–2 भौतिक एवं मानवीय संसाधन : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों के अभिमत के क्षेत्र 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र का मध्यमान क्रमशः 52.36, 44.55 एवं मानक विचलन क्रमशः 9.05, 7.90 प्राप्त हुआ। मध्यमान के अन्तर की सार्थकता की जॉच के लिए टी–परीक्षण प्रयुक्त किया गया। टी–मान 3.20 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता के अंश df=62 के .01 स्तर के सारणी मान 2.56 से अधिक पाया गया। अतः दोनों समूह के विद्यार्थियों के अभिमत के द्वितीय क्षेत्र के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। इससे ज्ञात होता है कि 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि विद्यार्थियों के अनुपात में सुरक्षित विद्यालय भवन व सुविधायुक्त फर्नीचर की व्यवस्था सम्भव हो सकी है।

3. क्षेत्र–3 विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुदृढीकरण : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों के अभिमत के क्षेत्र 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुदृढीकरण' क्षेत्र का मध्यमान क्रमशः 48.90, 41.05 एवं मानक विचलन क्रमशः 7.55, 6.58 प्राप्त हुआ। मध्यमान के अन्तर की सार्थकता की जॉच के लिए टी–परीक्षण प्रयुक्त किया गया। टी–मान 3.72 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता के अंष df=62 के .01 स्तर के सारणी मान 2.56 से अधिक पाया गया। अतः दोनों समूह के विद्यार्थियों के अभिमत के तृतीय क्षेत्र के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। इससे ज्ञात होता है कि 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि सत्र के दौरान समय पर आर्थिक बजट की उपलब्धता से विद्यालय के बुनियादी ढांचे जैसे भवन, प्रयोगशालाएं, कम्प्यूटर, फर्नीचर, पानी, बिजली, लेब, खेल मैदान व पुस्तकालयों की सुविधाएं सुनिश्चित हुई।

4. क्षेत्र–4 प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों के अभिमत के क्षेत्र 'प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' क्षेत्र का मध्यमान क्रमशः 55.70, 43.98 एवं मानक विचलन क्रमशः 9.58, 7.20 प्राप्त हुआ। मध्यमान के अन्तर की सार्थकता की जॉच के लिए टी–परीक्षण प्रयुक्त किया गया। टी–मान 3.02 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता के अंश df=62 के .01 स्तर के सारणी मान 2.56 से अधिक पाया गया। अतः दोनों समूह के विद्यार्थियों के अभिमत के चतुर्थ क्षेत्र के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। इससे ज्ञात होता है कि 'प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि प्रभावी शिक्षण हेतु समय–समय पर प्रशिक्षण नियमित रूप में कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। नवीनतम शिक्षण विधियों जैसे इंटरैक्टिव कार्यशालाओं और चर्चाओं के माध्यम से छात्रो का प्रभावी ढग से संलग्न करने के लिए प्रशिक्षण किया जाता है।

शोध निष्कर्ष :

1. उदयपुर सम्भाग में संचालित 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन करना।

1. क्षेत्र–1 योजना के उद्देश्य : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों का 'योजना के

उद्देश्य' के क्षेत्र 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि गुणवत्ता शिक्षा हेतु महत्वपूर्ण कदम है, छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने आधुनिक शिक्षा प्रदान करने व राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुई है।

2. क्षेत्र–2 भौतिक एवं मानवीय संसाधन : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' के क्षेत्र 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि विद्यार्थियों के अनुपात में सुरक्षित विद्यालय भवन व सुविधायुक्त फर्नीचर की व्यवस्था सम्भव हो सकी है।

3. क्षेत्र–3 विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण: उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों का 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' के क्षेत्र 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि सत्र के दौरान समय पर आर्थिक बजट की उपलब्धता से विद्यालय के बुनियादी ढांचे जैसे भवन, प्रयोगशालाएं, कम्प्यूटर, फर्नीचर, पानी, बिजली, लेब, खेल मैदान व पुस्तकालयों की सुविधाएं सुनिश्चित हुई।

4. क्षेत्र–4 प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों का 'प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' के क्षेत्र ' प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि प्रभावी शिक्षण हेतु समय–समय पर प्रशिक्षण नियमित रूप में कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। नवीनतम शिक्षण विधियों जैसे इंटरैक्टिव कार्यशालाओं और चर्चाओं के माध्यम से छात्रो का प्रभावी ढ़ग से संलग्न करने के लिए प्रशिक्षण किया जाता है।

2. बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन करना।

1. क्षेत्र–1 योजना के उद्देश्य : बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों का 'योजना के उद्देश्य' के क्षेत्र 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि गुणवत्ता शिक्षा हेतु महत्वपूर्ण कदम है, छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने आधुनिक शिक्षा प्रदान करने व राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुई है।

2. क्षेत्र–2 भौतिक एवं मानवीय संसाधन : बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' के क्षेत्र 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि विद्यार्थियों के अनुपात में सुरक्षित विद्यालय भवन व सुविधायुक्त फर्नीचर की व्यवस्था सम्भव हो सकी है।

3. क्षेत्र–3 विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण: बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों का 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' के क्षेत्र 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुददृढीकरण' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि सत्र के दौरान समय पर आर्थिक बजट की उपलब्धता से विद्यालय के बुनियादी ढांचे जैसे भवन, प्रयोगशालाएं, कम्प्यूटर, फर्नीचर, पानी, बिजली, लेब, खेल मैदान व पुस्तकालयों की सुविधाएं सुनिश्चित हुई।

4. क्षेत्र–4 प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन : बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों का 'प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' के क्षेत्र ' प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि प्रभावी शिक्षण हेतु समय–समय पर प्रशिक्षण नियमित रूप में कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। नवीनतम शिक्षण विधियों जैसे इंटरैक्टिव कार्यशालाओं और चर्चाओं के माध्यम से छात्रो का प्रभावी ढग से संलग्न करने के लिए प्रशिक्षण किया जाता है।

3. उदयपुर एवं बांसवाड़ा सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों' के प्रति विद्यार्थियों के अभिमतो का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1. क्षेत्र–1 योजना के उद्देश्य : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों का 'योजना के उद्देश्य' के क्षेत्र 'योजना के उद्देश्य' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि गुणवत्ता शिक्षा हेतु महत्वपूर्ण कदम है, छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने आधुनिक शिक्षा

प्रदान करने व राष्ट्रीय शिक्षा नीति (**NEP-**2020) के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुई है।

2. क्षेत्र–2 भौतिक एवं मानवीय संसाधन : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' के क्षेत्र 'भौतिक एवं मानवीय संसाधन' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि विद्यार्थियों के अनुपात में सुरक्षित विद्यालय भवन व सुविधायुक्त फर्नीचर की व्यवस्था सम्भव हो सकी है।

3. क्षेत्र–3 विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुदृढीकरण : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों का 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुदृढीकरण' के क्षेत्र 'विद्यालय बजट एवं आर्थिक सुदृढीकरण' क्षेत्र के प्रति विद्यार्थियों का अभिमत है कि सत्र के दौरान समय पर आर्थिक बजट की उपलब्धता से विद्यालय के बुनियादी ढांचे जैसे भवन, प्रयोगशालाएं, कम्प्यूटर, फर्नीचर, पानी, बिजली, लेब, खेल मैदान व पुस्तकालयों की सुविधाएं सुनिश्चित हुई।

4. क्षेत्र–4 प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन : उदयपुर सम्भाग में 'पी.एम.श्री स्कूलों के प्रति विद्यार्थियों का 'प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' के क्षेत्र' प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अधिगम संवर्द्धन' क्षेत्र के प्रति अध्यापकों का अभिमत है कि प्रभावी शिक्षण हेतु समय–समय पर प्रशिक्षण नियमित रूप में कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। नवीनतम शिक्षण विधियों जैसे इंटरैक्टिव कार्यशालाओं और चर्चाओं के माध्यम से छात्रो का प्रभावी ढ़ग से संलग्न करने के लिए प्रशिक्षण किया जाता है।'

शैक्षिक निहितार्थ :–

1. इस शोध के प्राप्त परिणामों के आधार पर पीएमश्री राजकीय विद्यालयों में संचालन सुचारू रूप से हो सकता है।
2. इस शोध के प्राप्त परिणामों के आधार पर पीएमश्री राजकीय विद्यालयों के प्रधानाध्यापक राज्य सरकार से व्यवस्थित संचालन हेतु आवश्यक भौतिक व मानवीय संसाधन के लिए आवश्यक बजट की व्यवस्था कर सकते है।
3. इस शोध के प्राप्त परिणामों के आधार पर शिक्षक अपने शिक्षण की गुणवत्ता में वृद्धि कर सकते है।
4. इस शोध से प्राप्त सुझावों से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास किया जा सकता है।
5. इस शोध के प्राप्त परिणामों के आधार पर आने वाला शोधार्थी समग्र शिक्षा अभियान से संबंधित नवीन अनुसंधान किया जा सकता है।

सन्दर्भ :

1. पी.एम.श्री स्कूल योजना रिपोर्ट–2022
2. बंडुरा, अल्बर्ट (2006): किशोरों की आत्म–प्रभावकारिता विश्वास, 307–337, सूचना आयु प्रकाशन, उत्तरी कैरोलिना।
3. जॉन डब्ल्यू बेस्ट (2005): रिसर्च इन एजुकेशन (10वां संस्करण) पियर्सन पब्लिशिंग कंपनी, आईएसबीएन–13: 978–0205458400, नई दिल्ली।
4. कौल लोकेश (2009): मेथडोलॉजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, चौथा संस्करण, आईएसबीएनः 9788125927969, विकास प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. नवानी, डी। (2013)। लगातार और व्यापक रूप से बच्चों का मूल्यांकन, आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक। टवस.48 (2).33–40, अम्बेगांव, एमएच।
6. एनसीईआरटी (2005): सतत और व्यापक मूल्यांकन, एनसीएफ (2005), नई दिल्ली।
7. एनसीईआरटी (1988): प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या – एक रूपरेखा (संशोधित संस्करण), प्रकाशन विभाग में प्रकाशित, सचिव, एनसीईआरटी, नई दिल्ली।
8. एनसीईआरटी (2000): स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या, प्रकाशन विभाग में प्रकाशित, सचिव, एनसीईआरटी, नई दिल्ली।
9. राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा और विकास संस्थान (2014)य इंडियन जर्नल ऑफ लाइफ स्किल्स एजुकेशन, तमिलनाडु।
10. रक्षिंदरकौर (2013) सतत और व्यापक मूल्यांकन प्रणाली की प्रभावशीलता पर शिक्षकों और विद्यार्थियों की धारणाय सीखने की शिक्षाशास्त्र (2), 50–56, आईएसएसएनः 2320–9526, भारत में मुद्रित कृष्णा एजुकेशनल सेंटर, हिमाचल प्रदेश।

"M.C. Mehta and the Making of India's Green Jurisprudence: A Journey Through Landmark Environmental Rulings"

Adv. Sucheta Jain
M.A., LL.M., Ph.D. Scholar
Asst. Prof. (Law), S.K.D. University, Hanumangarh, Rajasthan
suchetajain1@gmail.com
82907-18780

Dr. Vikram Kumar
HOD, Law,
S.K.D. University, Hanumangarh, Rajasthan
vmehra110@gmail.com
9413933011

Abstract

India's environmental jurisprudence has undergone a transformative journey since the 1980s, and at its heart lies the unrelenting advocacy of M.C. Mehta. As a public interest litigator, Mehta's interventions catalysed judicial activism and brought environmental protection into the mainstream of constitutional interpretation. From the cleansing of the Ganga to safeguarding the Taj Mahal, his petitions not only led to landmark judgments but also helped establish foundational doctrines such as the Polluter Pays Principle, Precautionary Principle, and the Public Trust Doctrine.

This chapter explores the pivotal role M.C. Mehta played in shaping India's environmental legal framework. It critically evaluates whether his influence stemmed solely from his legal expertise, or if any determined citizen could have achieved similar impact within the existing judicial and institutional mechanisms. By juxtaposing Mehta's legacy with the persistent environmental degradation India and the world continue to face-despite the presence of extensive laws and judicial principles-this study interrogates the limitations of litigation-led reform.

Ultimately, it raises a crucial question: does the effectiveness of environmental law hinge more on individual agency, or on systemic enforcement and societal will?

Keywords: Environmental law; public interest litigation; polluter pays principle; public trust doctrine; environmental justice; constitutional interpretation.

Introduction

Environmental law in India has evolved through a unique blend of legislative development, constitutional interpretation, and judicial innovation. Among the many actors who have contributed to this evolution, the name M.C. Mehta stands out as a towering figure whose persistent legal interventions sparked a series of transformative judgments. From the early 1980s onwards, M.C. Mehta, through a series of public interest litigations (PILs), succeeded not only in bringing environmental issues to the forefront of the judicial conscience but also in laying down foundational legal doctrines that have since become cornerstones of India's environmental jurisprudence. His work significantly influenced the operationalization of Articles 21, 48A, and 51A(g) of the Indian Constitution, embedding

environmental protection within the broader framework of fundamental rights and duties.

This paper begins by examining how M.C. Mehta's interventions catalyzed India's environmental legal journey, mapping the trajectory from judicial neglect to constitutional environmentalism. His strategic use of PILs coincided with a judiciary increasingly willing to engage with social justice causes, and this synergy produced some of the most landmark environmental rulings in Indian legal history - including cases like the Ganga Pollution Case, the Oleum Gas Leak Case, the Taj Trapezium Case, and many others. These cases not only addressed specific instances of environmental harm but also led to the institutionalization of environmental principles like the Polluter Pays Principle, the Precautionary Principle, and the Public Trust Doctrine.

However, while celebrating M.C. Mehta's monumental contributions, this research also raises a deeper and more complex question: Was it only because M.C. Mehta was an advocate that he could generate such legal impact, or could an ordinary citizen have played a similar role in shaping environmental law? This inquiry is essential because it challenges the accessibility and inclusivity of the judicial system. If systemic change is largely contingent upon the presence of legally trained individuals with access to the courts, what does that say about the role of the average citizen in environmental governance? Does this centralization of impact in a single individual reflect the strengths of India's judicial activism - or its limitations?

Furthermore, despite the judicial enthusiasm and the proliferation of environmental principles, India and the world continue to witness worsening environmental degradation. Forests are shrinking, rivers are polluted, air quality in urban centres has reached hazardous levels, and climate-related disasters are increasing in frequency and intensity. This dissonance between legal advancement and ecological reality prompts a critical evaluation of the effectiveness of judicial interventions. Are legal pronouncements, however progressive, sufficient without systemic enforcement? Have the principles laid down by the courts translated into sustainable governance, or do they remain symbolic declarations in the absence of robust administrative mechanisms and public participation?

This paper situates M.C. Mehta's work within this broader context: it not only traces the doctrinal development of environmental law through his litigations but also interrogates the limitations of litigation as a tool for systemic environmental change. In doing so, it compares the Indian experience with select international case laws where judicial intervention played a pivotal role, exploring whether Mehta's model is unique or part of a global trend. The goal is to present a critical yet constructive analysis of environmental law - celebrating its milestones, diagnosing its weaknesses, and questioning its future.

In essence, this paper argues that while legal interventions like those of M.C. Mehta have been vital, law alone is not enough. True environmental protection requires not just rules and

rulings, but also a cultural, political, and administrative transformation that empowers every citizen, not just the legally trained few, to act as custodians of nature.

Part I: Key Judicial Interventions by M.C. Mehta

M.C. Mehta's environmental crusade was not a singular moment but a sustained legal journey. His strategic litigation before the Supreme Court led to a transformation of environmental jurisprudence in India. Below are some of the most significant cases he brought to the Court, each of which resulted in landmark environmental doctrines and policy changes.

1. M.C. Mehta v. Union of India (Ganga Pollution Case)

One of the earliest and most impactful cases filed by Mehta was to address the pollution of the Ganga River by tanneries and other industries near Kanpur. The Supreme Court held that the right to a clean environment is part of the fundamental right to life under Article 21 of the Constitution. It ordered the closure of tanneries and imposed stringent pollution control norms.

2. M.C. Mehta v. Union of India (Oleum Gas Leak Case)

Following a gas leak from the Shriram Food and Fertilizers Industry in Delhi, the Court addressed the issue of strict liability. It laid down the principle of absolute liability, going beyond the earlier English rule in Rylands v. Fletcher. The Court emphasized that industries engaged in hazardous activities owe an absolute and non-delegable duty to the community.

3. M.C. Mehta v. Union of India (Vehicular Pollution Case)

Mehta filed a petition regarding vehicular pollution in Delhi, which resulted in a slew of directives. The Supreme Court directed the phasing out of leaded petrol, the use of Compressed Natural Gas (CNG) for public transport, and mandatory emission checks.

4. M.C. Mehta v. Union of India (Taj Trapezium Case)

This case highlighted the damage caused by industrial pollution to the Taj Mahal. The Court ordered industries within the "Taj Trapezium Zone" to switch from coal to natural gas or relocate, citing the preservation of cultural heritage as integral to environmental protection.

5. M.C. Mehta v. Kamal Nath (Public Trust Doctrine)

In this significant case, the Supreme Court invoked the Public Trust Doctrine, asserting that the State is the trustee of all natural resources, which are meant for public use and cannot be converted into private ownership.

These cases collectively represent the foundational base of India's environmental law. They show how PILs can not only resolve immediate grievances but also create lasting structural change through judicial precedent.

Part II: Legal Doctrines Shaped Through M.C. Mehta's Cases

M.C. Mehta's public interest litigations not only resulted in case-specific relief but also paved the way for the emergence and consolidation of crucial environmental legal doctrines in India. These principles have since become indispensable

tools for environmental adjudication, influencing not only the courts but also policy and administrative frameworks. This section examines the most significant doctrines that Indian environmental jurisprudence owes to Mehta's advocacy and judicial activism.

1. The Polluter Pays Principle

The Polluter Pays Principle (PPP) mandates that the party responsible for pollution must bear the cost of remedying the damage caused to the environment. The Supreme Court formally recognized this principle in the M.C. Mehta v. Union of India (Oleum Gas Leak Case), where it held that industries undertaking hazardous or inherently dangerous activities must compensate victims for environmental harm, irrespective of negligence.

"The enterprise which is engaged in a hazardous or inherently dangerous activity which poses a potential threat to the health and safety of persons working in the factory and residing in the surrounding areas must be absolutely liable to compensate for any harm caused," the Court held. Footnote 1: M.C. Mehta v. Union of India, AIR 1987 SC 965.

The Polluter Pays Principle has since been incorporated into various environmental statutes and policies, such as the Water (Prevention and Control of Pollution) Act, 1974, and the Air (Prevention and Control of Pollution) Act, 1981. It aligns with the "user pays" concept adopted in international environmental law and is a vital deterrent against environmental neglect.

2. The Precautionary Principle

The Precautionary Principle asserts that the absence of complete scientific certainty should not be a reason to postpone measures to prevent environmental degradation when there are threats of serious or irreversible damage. Though not originally part of Indian law, this principle gained legal status through the Supreme Court's interpretation in various Mehta cases.

The Court articulated this in Vellore Citizens Welfare Forum v. Union of India, building upon earlier PILs, stating that environmental protection demands anticipatory action. This principle requires the burden of proof to lie on the polluter to demonstrate that the activity is safe. Mehta's interventions and the Court's responsiveness created a jurisprudential climate where precaution became a mandate rather than an option, enabling proactive environmental governance.

3. The Public Trust Doctrine

One of the most significant doctrinal contributions traced to Mehta's litigation is the Public Trust Doctrine. The Supreme Court in M.C. Mehta v. Kamal Nath declared that natural resources such as air, water, and forests are held by the government in trust for the people and cannot be commodified or alienated arbitrarily.

The Court stated:

"The State as the sovereign trustee is under a legal duty to protect the natural resources for the enjoyment of the general public and for the future generations."

This doctrine strengthens the idea that environmental resources are a heritage of the

people, thereby imposing constitutional obligations on the state to conserve and manage them responsibly. It has been influential in litigations involving forest conservation, river management, and urban environment protection.

4. Absolute Liability

The principle of Absolute Liability introduced in M.C. Mehta v. Union of India (Oleum Gas Leak Case) departs from the English doctrine of strict liability. The Supreme Court held that enterprises engaged in hazardous activities must be absolutely liable for any harm caused, with no exceptions for "act of God," third party interference, or negligence of the victim.

This heightened standard ensures greater protection for communities living near hazardous industries and shifts the responsibility squarely onto polluting enterprises, incentivizing better safety measures.

5. Intergenerational Equity

While not always explicitly articulated, the doctrine of Intergenerational Equity-the concept that the present generation holds natural resources in trust for future generations-has been reinforced through Mehta's cases and Supreme Court's jurisprudence. It is implicit in the Court's repeated emphasis on sustainable development and conservation.

Together, these doctrines mark a significant evolution of environmental law in India - moving from fragmented regulations to a coherent, principle-based jurisprudence that balances developmental needs with ecological sustainability. M.C. Mehta's persistent advocacy was instrumental in compelling the judiciary to adopt and expand these principles. However, as will be explored in subsequent sections, the real test lies in their implementation and the extent to which such principles can empower ordinary citizens beyond the courtroom.

Part III: Assessing Impact - Systemic Change or Individual Heroism?

The extraordinary impact of M.C. Mehta in shaping India's environmental jurisprudence raises a crucial inquiry: To what extent is effective environmental legal reform dependent on exceptional individuals, and how accessible is this form of advocacy to ordinary citizens? This section critically examines whether Mehta's success reflects unique personal agency or systemic possibilities available to all, and explores the implications for environmental governance.

1. The Role of M.C. Mehta: Catalyst and Pioneer

M.C. Mehta's legal career is marked by pioneering use of Public Interest Litigation (PIL), a judicial innovation in India that widened access to justice by permitting any public-spirited individual to approach courts on behalf of affected parties. Mehta was among the earliest to harness PIL for environmental causes, translating complex ecological issues into legal arguments compelling enough to activate judicial intervention.

His profound understanding of environmental science, combined with deep legal expertise and unwavering commitment, allowed him to navigate and influence judicial attitudes, administrative inertia, and political opposition. As

Justice Bhagwati noted, PILs led by advocates like Mehta "have greatly democratized the legal process" and empowered courts to address public wrongs.

2. Is Such Impact Replicable by Ordinary Citizens?

Despite the democratization brought by PILs, replicability remains a question. Legal scholars argue that the unique combination of legal knowledge, resources, and perseverance that Mehta embodies is rarely matched by ordinary citizens, especially marginalized communities most affected by environmental degradation.

Many citizens lack the awareness, financial means, and sustained access to legal counsel to initiate or sustain complex litigation. Additionally, navigating institutional bureaucracies and technical regulatory frameworks can be daunting, limiting grassroots legal activism's reach.

A study by Bansal and Singh (2014) notes that although PILs have expanded access, the "lawyer-driven" nature of environmental litigation may exclude those without legal representation, potentially narrowing the scope of public participation.

3. Institutional and Structural Constraints

The Indian judiciary's active environmental role owes much to personalities like Mehta, but courts alone cannot substitute for strong institutions and enforcement agencies. Enforcement gaps, regulatory capture, political interference, and limited public awareness often undermine legal gains.

Moreover, the judicial process is inherently reactive, and litigation is generally a remedy of last resort. Effective environmental governance requires proactive administrative action, transparent decision-making, and community engagement - realms where individual litigation prowess plays a limited role.

4. Global Comparisons

Looking internationally, environmental legal movements often hinge on a mix of activists, NGOs, and legal professionals. For example, in the United States, the Environmental Defence Fund and Sierra Club have successfully used litigation to drive policy change, but these organizations rely on expert legal teams rather than lay citizens.

In contrast, countries like South Africa have constitutionally enshrined environmental rights accessible to all citizens, with a robust framework for public participation, highlighting that systemic access to justice can democratize environmental protection beyond heroic individuals.

5. Bridging the Gap: Empowering Citizens

Recognizing the limits of individual heroism, recent initiatives in India and globally focus on capacity-building, legal literacy, and community-based monitoring to empower ordinary citizens. For example, the National Green Tribunal Act, 2010 provides a specialized forum for environmental cases, lowering procedural barriers and enabling more people to seek justice.

Digital platforms, environmental education, and NGO networks also serve as important enablers, reducing reliance on singular figures.

While M.C. Mehta's singular impact is undeniable and inspirational, it also underscores the need for systemic reforms that make environmental justice accessible, equitable, and participatory. True ecological protection cannot rest on individual champions alone but must involve empowered citizens, responsive institutions, and effective enforcement.

Part IV: The Paradox of Progress - Environmental Degradation Amidst Legal Advances

Despite the remarkable judicial milestones and the rich corpus of environmental laws developed over the past four decades, India - like many other countries - continues to face significant environmental challenges. This paradox of simultaneous legal progress and ongoing ecological decline calls for a critical examination of the factors that limit the effectiveness of laws and judicial pronouncements in halting or reversing environmental degradation.

1. Legal Framework vs. Ground Reality

India has a comprehensive environmental legal framework, including laws like the Environment Protection Act, 1986, the Forest Conservation Act, 1980, and regulatory bodies such as the Central Pollution Control Board. The Supreme Court, through PILs pioneered by M.C. Mehta and others, has established foundational principles to protect the environment.

However, despite these efforts, key indicators reveal worsening conditions: rising air and water pollution, loss of biodiversity, deforestation, and escalating climate vulnerability. The World Air Quality Report (2023) ranked several Indian cities among the most polluted globally, demonstrating the gap between law and lived reality.

2. Challenges in Enforcement

One of the primary reasons for this paradox is the lack of effective enforcement mechanisms. Judicial directives often depend on executive agencies for implementation, but these agencies frequently face resource constraints, corruption, and political interference.

For example, the National Green Tribunal (NGT) has passed strict orders in multiple pollution cases, but ground enforcement remains inconsistent. This discrepancy erodes public confidence and weakens the deterrent effect of environmental laws.

3. Fragmented Governance and Regulatory Overlaps

Environmental governance in India is often characterized by overlapping jurisdictions among central, state, and local authorities, creating confusion and diluted responsibility. Fragmentation hampers coherent policy implementation and makes accountability elusive.

This structural complexity means that even well-crafted judicial pronouncements can become mired in bureaucratic inertia or conflicting mandates.

4. Socio-Economic Pressures and Development Paradigm

India's socio-economic context - marked by poverty, rapid urbanization, and industrialization - places enormous pressure on natural resources.

Economic growth priorities sometimes overshadow environmental concerns, leading to policy compromises.

Courts, despite their progressive judgments, are limited in enforcing systemic socio-economic change. Sustainable development requires integrating environmental goals into broader policy frameworks and incentivizing green alternatives.

5. The Role of Public Awareness and Participation

Legal mandates alone cannot achieve environmental protection without active public participation and environmental consciousness. Although judicial activism has pushed the envelope, widespread awareness and community engagement remain limited.

Empowering citizens through education, participatory decision-making, and decentralized environmental monitoring can amplify the impact of laws beyond courtrooms.

The persistence of environmental degradation despite robust laws and landmark judgments exposes the limits of legalism alone. It underscores the need for a multi-dimensional approach that combines legal, administrative, socio-economic, and cultural strategies to protect the environment effectively.

Conclusion

The trajectory of environmental law in India over the past four decades presents a compelling narrative of judicial innovation, legal evolution, and persistent challenges. This research has examined the pivotal role played by M.C. Mehta, whose visionary advocacy and strategic use of Public Interest Litigation fundamentally shaped the country's environmental jurisprudence. Mehta's interventions catalysed the introduction and consolidation of critical legal doctrines - including the Polluter Pays Principle, Precautionary Principle, Public Trust Doctrine, and Absolute Liability - that have become cornerstones of environmental governance not only in India but as influential references internationally.

However, the story of India's environmental legal journey is not merely a tale of individual heroism. While M.C. Mehta's contributions remain unparalleled, this research critically interrogated whether such impactful change is feasible for ordinary citizens without legal expertise and access. It became evident that the success of public interest litigation in environmental matters has largely been "lawyer-driven," relying on a rare combination of expertise, resources, and perseverance. The institutional and structural constraints within India's environmental governance framework often limit broad-based citizen participation, raising questions about the democratization of environmental justice. Yet, this also highlights the urgency for systemic reforms-improving legal literacy, streamlining access to courts, empowering local communities, and strengthening institutions like the National Green Tribunal.

Despite landmark judicial pronouncements and an expanding body of environmental laws, India continues to grapple with deteriorating environmental conditions. This

paradox - legal progress juxtaposed with environmental degradation - reveals the inherent limitations of law as a solitary instrument of change. Enforcement gaps, fragmented governance, competing developmental imperatives, and socio-economic pressures collectively impede the translation of legal ideals into tangible ecological outcomes. This underscores a fundamental truth: laws and judgments, however progressive, cannot operate in isolation from the socio-political and economic realities they seek to transform.

Therefore, the future of environmental protection in India necessitates a holistic and multi-dimensional approach. Legal frameworks must be integrated with effective administrative mechanisms, transparent and accountable governance, and participatory decision-making processes that actively involve citizens at all levels. Environmental education and public awareness campaigns are crucial to cultivating an informed and empowered populace capable of holding both the state and polluters accountable. Only through such collective efforts can the vision of sustainable development-balancing economic growth with ecological preservation-be realized.

M.C. Mehta's legacy offers not only inspiration but also a roadmap: it demonstrates the transformative power of the judiciary when guided by principles of justice, equity, and foresight. Yet, it also serves as a cautionary tale about the dangers of over-reliance on individual champions. The environmental crises facing India and the world today demand broad-based engagement, institutional robustness, and political will to implement and enforce laws rigorously.

In conclusion, India's environmental legal odyssey, while marked by significant milestones, remains a work in progress. The path ahead requires harnessing the collective energies of the judiciary, executive, civil society, and ordinary citizens to build an environmental governance system that is resilient, inclusive, and just. Only then can the promise of the legal doctrines pioneered in landmark cases be fulfilled - safeguarding the environment not as a privilege of a few but as a right and legacy for all present and future generations.

भारतीय शिक्षा में आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयाम : पंडित मदन मोहन मालवीय के दृष्टिकोण एवं नई शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में

डॉ. कमला दीक्षित
(शोध निर्देशक)
एफ एस विश्वविद्यालय शिकोहाबाद (यूपी)

डॉ महेंद्र कुमार उपाध्याय
(शोध सह–निर्देशक)
प्राचार्य – कौटिल्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय कोटा.

विनोद कुमार पाण्डेय
(शोधार्थी)
एफ एस विश्वविद्यालय शिकोहाबाद (यूपी) Mob- No- : 9919186376

सारांश

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयाम का सदैव ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है, क्योंकि आध्यात्मिक शिक्षा जीवन में अर्थ और उद्देश्य की भावना को विकसित करती है, जबकि नैतिक शिक्षा बच्चों को सही और गलत के बीच अंतर करना सिखाती है। भावनात्मक शिक्षा बच्चों को अपनी भावनाओं, संवेदनाओं को समझने और प्रबंधित करने में मदद करती है, जिससे वे स्वस्थ सामाजिक संबंध और जीवन का निर्माण करते हैं।

भारतीय शिक्षा प्रणाली अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और बहुआयामी रही है। इसका उद्देश्य केवल ज्ञान का संप्रेषण और संचयन तक ही सीमित नहीं, बल्कि व्यक्ति के समग्र विकास जैसे– शारीरिक, मानसिक, नैतिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक स्तर पर जागरूक, दृढ़ और संतुलित बनाना रहा है। आज जब आधुनिक शिक्षा प्रणाली में वैश्वीकरण और तकनीकी विकास, व्यावसायिकता और प्रतियोगिता का प्रभाव बढ़ रहा है, तब भी भारतीय शिक्षा की परंपरा एक संतुलित एवं समग्र दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है। ऐसे में भारतीय शिक्षा की मूल आत्मा एक नए कलेवर के साथ पुनः पहचानने, समझने और अपनाने की आवश्यकता है। आज की शिक्षा प्रणाली में इन मूल्यों की पुनर्स्थापना समय की आवश्यकता जान पड़ती है।

यह शोध पत्र भारतीय शिक्षा में आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयामों के महत्व पर केंद्रित है, विशेषकर पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण और नई शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में। शोध पत्र में नई शिक्षा नीति 2020 का विश्लेषण करते हुए यह दर्शाने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार यह नीति मालवीय जी के विचारों के अनुरूप आधुनिक शिक्षा व्यवस्था को पुनर्गठित करने का प्रयास करती है। इस शोध पत्र का उद्देश्य शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया न मानकर एक सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक साधना के रूप में प्रस्तुत करना भी है।

कीवर्ड्स : भारतीय शिक्षा, पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचार, नई शिक्षा नीति 2020,, आध्यात्मिक आयाम, नैतिक आयाम, भावनात्मक आयाम ।

प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा प्रणाली की जड़ें अत्यंत गहरी, व्यापक तथा समृद्ध हैं, जिसका आधार केवल ज्ञान का प्रसार ही नहीं हैं, बल्कि व्यक्ति के सम्पूर्ण आत्मविकास, चरित्र निर्माण और मानवता की सेवा की एक साधना है। भारत की प्राचीन गुरुकुल परंपरा से लेकर आधुनिक शिक्षा व्यवस्था तक, शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं रहा, बल्कि आत्मिक शुद्धता, नैतिकता की स्थापना और भावनात्मक संतुलन को भी समान महत्व दिया गया है। आज की प्रतिस्पर्धात्मक और तकनीकी–केंद्रित वैश्विक परिवेश में शिक्षा का त्रिमार्गकृ "आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयाम" पहले से कही अधिक आवश्यक और प्रासंगिक हो गये है। इस शोधपत्र के माध्यम से तीनों आयामों के महत्व, उनके पारस्परिक संबंधों और भारतीय शिक्षा व्यवस्था में उनकी भूमिका तथा पंडित मदन मोहन मालवीय एवं नई शिक्षा नीति 2020, के सन्दर्भ में प्रासंगिकता

का विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

समस्या की आवश्यकता एवं औचित्य

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में व्यावसायिकता, तकनीकी विकास, वैश्वीकरण, रोजगारोन्मुख ज्ञान और प्रतिस्पर्धात्मता के कारण आध्यात्मिकता, नैतिकता और भावनात्मक संवेदनशीलता जैसे मानवीय पक्षों की की उपेक्षा बढती जा रही है। जिससे विद्यार्थी जीवन के मूल उद्देश्य और मूल्यों जैसे– आत्मानुशासन, आत्म–साक्षात्कार, सेवा, सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना से दूर होते जा रहे हैं। जिसका परिणाम यह हो रहा है की विद्यार्थियों में अपराध, भ्रष्टाचार, तनाव, और अवसाद जैसी समस्याएं बढती जा रही हैं। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो गया है कि शिक्षा का पुनर्मूल्यांकन करते हुए उसमें उन तत्वों को भी पुनर्स्थापित किया जाए जो व्यक्ति के समग्र विकास को सुनिश्चित करें। पंडित मदन मोहन मालवीय के विचार और नई शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। नई शिक्षा नीति 2020 में इन मूल्यों को पुनः स्थापित करने का प्रयास शिक्षा मंत्रालय द्वारा किया गया है, जो इस शोध को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यंत आवश्यक और प्रासंगिक बनाता है।

शोध के उद्देश्य

इस शोध का उद्देश्य इन उपेक्षित आयामों को पुनः केंद्र में लाना है। वर्तमान समय में भारतीय शिक्षा में निहित आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयाम आज भी कितने प्रासंगिक हैं। इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. भारतीय शिक्षा प्रणाली में आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयामों की ऐतिहासिक भूमिका को स्पस्ट करना।
2. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में नैतिक, आध्यात्मिक और भावनात्मक आयामों की स्थिति और उपयोगिता को सिद्ध करना।
3. पंडित मदन मोहन मालवीय की शैक्षिक दृष्टिकोण से आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयामों का विश्लेषण करना।
4. मालवीय जी के विचारों के संदर्भ में नई शिक्षा नीति 2020 का विश्लेषण करना।
5. आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इन मूल्यों के एकीकरण एवं पुनर्स्थापना के लिए व्यवहारिक रुपरेखा तैयार करना।

साहित्य समीक्षा

किसी भी शोध कार्य को प्रारंभ करने से पहले उसके पूर्ववर्ती अध्ययनों और उपलब्ध साहित्यिक स्रोतों का अध्ययन एवं विश्लेषण एक महत्वपूर्ण पहलू है। इस शोध पत्र के लिए भी विभिन्न विद्वानों, शिक्षाविदों और दार्शनिकों के समय–समय पर प्रस्तुत चिंतन का अध्ययन किया गया है। इस शोध पत्र में ऐसे, महत्वपूर्ण ग्रंथों, शोध–कार्यों, नीतियों और शिक्षाविदों के विचारों जैसे– वेद, उपनिषद, श्रीमद्भगवद्गीता, श्री अरविंदो, स्वामी विवेकानंद, रविंद्र नाथ टैगोर, महात्मा गांधी, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020, समकालीन शोध और अध्ययनों की समीक्षा जैसे– डॉ. अनुपमा शर्मा (2018), पी.के. मिश्रा (2015) , NCERT की रिपोर्ट (2019) आदि का सहयोग लिया गया है। इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में मालवीय जी के व्याख्यान, लेख एवं क्रिया–कलाप संकलित किये गये हैं, द्वितीयक स्रोतों में मालवीय जी के योगदान पर लिखी हुई पूर्व में हुए शोध सामग्री और साहित्य समीक्षा का उपयोग किया गया है।

शोध परिकल्पना

भारतीय शिक्षा प्रणाली में पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक दृष्टिकोण में नैतिक, आध्यात्मिक और भावनात्मक आयामों को समाहित किया जाए तथा नई शिक्षा नीति 2020 के निर्देशों का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए, तो छात्रों में समग्र व्यक्तित्व विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व, राष्ट्रीय चरित्र निर्माण तथा व्यावसायिक चयन में अवश्यम्भावी विकास होगा। यहाँ पर निम्नलिखित 3 परिकल्पनायें उल्लिखित की गई हैं–

1. मालवीय जी के शैक्षिक विचार आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयामों तथा राष्ट्रीयता और आधुनिकता का समन्वय करते हैं।

2. मालवीय जी के शैक्षिक प्रयासों तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना ने व्यापक सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन किए हैं।

3. मालवीय जी के शैक्षिक विचार आज नयी शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में भी प्रासंगिक हैं।

शोध की पद्धति

प्रस्तुत शोध सैद्धांतिक वर्णनात्मक / विश्लेषणात्मक तथा गुणात्मक अनुसंधान विधियों पर आधारित है। इसमें संख्यात्मक आँकड़ों की अपेक्षा विचारों, अवधारणाओं, अनुभवों और परंपराओं को महत्व दिया गया है। इसमें ऐतिहासिक, दार्शनिक और नीतिगत दस्तावेजों का विश्लेषण किया गया है। इसमें भारतीय शिक्षा प्रणाली के विभिन्न आयामोंकृआध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मकता का गहन अध्ययन किया गया है और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक तुलना प्रस्तुत की गई है। इसके अतिरिक्त मालवीय जी के शैक्षिक विचार और नयी शिक्षा नीति 2020 का तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से उसके गहन परतों को टटोलने का प्रयास किया गया है।

शोध का महत्त्व

शोध का महत्व निम्नलिखित बिंदुओं से स्पष्ट किया जा सकता है–

1. भारतीय शिक्षा दर्शन की पुनर्परिभाषा तथा मूल तत्वों का पुनरावलोकन।

2. पंडित मदन मोहन मालवीय के विचारों की आधुनिक समय में प्रासंगिकता।

3. नई शिक्षा नीति 2020 का व्यावहारिक विश्लेषण अथवा मूल्यांकन।

4. राष्ट्र निर्माण में शिक्षा की भूमिका का पुनर्निर्धारण।

5. शिक्षा नीतियों एवं शिक्षण प्रक्रिया के परिष्कार हेतु मार्गदर्शन।

6. भारतीय और वैश्विक संदर्भ में संतुलन तथा आधुनिक और पारंपरिक मूल्यों का समन्वय।

शोध की सीमाएँ

1. पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों पर सीमित प्राथमिक स्रोत उपलब्ध हैं।

2. यह शोध भारतीय संदर्भ मुख्यतः– मालवीय जी के शैक्षिक विचारों और भारत की शिक्षा नीति तक ही सीमित रहेगा, अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में इसे व्यापक रूप से संदर्भित नहीं किया जायेगा।

3. समयाभाव के कारण मात्र नई शिक्षा नीति 2020 का संक्षिप्त अध्ययन संभव होगा।

4. यह शोध मुख्यतः सैद्धांतिक, गुणात्मक और विश्लेषणात्मक रहेगा, प्रयोगात्मक या सर्वेक्षण आधारित अध्ययन सीमित मात्र में किया जायेगा।

5. शोधकर्ता की वैचारिक पृष्ठभूमि के कारण मालवीयजी के विचारों की व्याख्या में व्यक्तिपरकता संभव हो सकती है।

पंडित मदन मोहन मालवीय की दृष्टि में आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयाम

पंडित मदन मोहन मालवीय का शिक्षा दर्शन भारतीय संस्कृति, सनातन मूल्यों और वैदिक परम्पराओं से अभिसिंचित है। मालवीय जी का मत है कि शिक्षा केवल बुद्धि का विकास नहीं करती, बल्कि यह आत्मा को भी जागृत करती है। मालवीय जी द्वारा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य यही था, कि छात्रों को आधुनिक विज्ञान और तकनीकी ज्ञान के साथ–साथ भारतीय संस्कृति, धर्म, नैतिकता, चरित्र निर्माण, सत्य, अहिंसा, परोपकार, आत्मसंयम जैसे नैतिक गुणों और सेवा भावना की भी शिक्षा दी जाये। भारतीय शिक्षा में पंडित मदन मोहन मालवीय की दृष्टि में आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयामों का विश्लेषण निम्नलिखित है–

1. आध्यात्मिक आयाम : जब भी भारतीय शैक्षिक परम्परा में आध्यात्मिकता की बात होती है, तो इसका तात्पर्य किसी विशेष धर्म का पालन नहीं, बल्कि आत्मा और ब्रह्म के संबंध की समझ से है। जिसका उद्देश्य जीवन के परम लक्ष्य अर्थात मोक्ष की प्राप्ति है। "सा विद्या या विमुक्तये" विद्या वही है, जो बंधन से मुक्त करे। आज के संदर्भ में कह सकते हैं कि समाज को गरीबी, विषमता, भेदभाव से मुक्त करना ही विद्या का असली उद्देश्य है। वेद, वेदांग, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, सूत्र, इतिहास ऐसे ग्रंथ हैं, जिसमें आत्म चिंतन और आत्म साक्षात्कार पर बल दिया गया है।

प्राचीन गुरुकुल प्रणाली में ध्यान, योग, प्राणायाम, आदि के माध्यम से बच्चों का आध्यात्मिक विकास करने का प्रयास किया जाता था। जिससे विद्यार्थी में शांति, संतुलन विवेक, संयम, आत्म–निरीक्षण, एकात्मकता, आत्म–अनुशासन, अंतरू–शक्ति और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास होता था। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना में मालवीय जी ने यह सुनिश्चित किया कि विद्यार्थी केवल विज्ञान, वाणिज्य, कला, तकनीकी, की पढ़ाई ही नहीं, बल्कि योग, ध्यान, धर्मशास्त्र जैसी विधाओं का भी अध्ययन करें, क्योंकि आत्मदर्शन का विकास ही शिक्षा है।

2. नैतिक आयाम : नैतिक शिक्षा प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति और शिक्षा का मूल आधार एवं आत्मा रही है। यह व्यक्ति को सही–गलत का बोध कराकर उसे सदाचारी, कर्तव्यनिष्ठ, समाज के प्रति उत्तरदायित्व, अनुशासन और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। रामायण, महाभारत, जातक कथाओं आदि के माध्यम से नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी। नैतिकता मालवीय जी की शिक्षा का भी मूल मंत्र है। उनका मानना है कि, "यदि शिक्षा से मनुष्य में नैतिकता का विकास नहीं हुआ, तो वह शिक्षित होकर भी पूंछ और सींग से रहित पशु के समान है।"

3. भावनात्मक आयाम : भारतीय शिक्षा में भावनात्मक विकास को भी महत्त्वपूर्ण आयाम माना गया है। मानव जीवन में भावनाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि भावनात्मक आयाम द्वारा विद्यार्थियों को आत्म–नियंत्रण, सहनशीलता, सहानुभूति, संवेदनशीलता, परस्पर सहयोग की भावना तथा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। संगीत, कला, नृत्य, साहित्य, समूह गतिविधियों, यज्ञ, और उत्सवों के माध्यम से भावनात्मक एकता और सामाजिक संबंधों में मधुरता और सहयोग की भावना उत्पन्न होती है।

नई शिक्षा नीति 2020 में आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयाम

भारत सरकार द्वारा घोषित नई शिक्षा नीति 2020 में समग्र शिक्षा की अवधारणा का दृष्टिकोण अपनाया गया है। इसमें ज्ञानार्जन के साथ–साथ विद्यार्थियों के आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयाम को भी समान रूप से विकसित करने की प्राथमिकता अपनायी गई है। नई शिक्षा नीति 2020 में पंडित मदन मोहन मालवीय के उन शैक्षिक विचारों से प्रभावित है, जिसमें वे शिक्षा को केवल बुद्धि के विकास का साधन न मानकर आत्मा के उत्कर्ष का माध्यम मानते थे। नई शिक्षा नीति 2020 में 5̣3̣3̣4 संरचना, मातृभाषा में शिक्षा, योग, , ध्यान, खेल, कला, जीवन कौशल और नैतिक शिक्षा तथा स्वस्थ सामाजिक वातावरण जैसे विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। नई शिक्षा नीति 2020 में का उद्देश्य 'एक समावेशी, सहभागी, और मूल्य–आधारित शिक्षा प्रणाली' को बढ़ावा देना है। नई शिक्षा नीति के प्रमुख बिंदु जो शोध विषय से जुड़े हैं वे निम्नवत हैः–

1. नई शिक्षा नीति 2020 स्पष्ट रूप से शिक्षा के माध्यम से योग, ध्यान, भारतीय दर्शन नैतिक मूल्यों, सहानुभूति, करुणा, सहयोग, और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है।

2. नई शिक्षा नीति 2020 विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास को संतुलित रूप से प्रोत्साहित करती है।

3. नई शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को ज्ञान, कौशल, नैतिकता, कला, खेल, और जीवन मूल्यों का संतुलन है, जो शोध में वर्णित भावनात्मक और नैतिक आयामों को स्पष्ट करती है।

4. नई शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थियों को समस्या समाधान, आत्म–जागरूकता, आत्म–प्रबंधन, और भावनात्मक बुद्धिमत्ता सिखाने पर बल दिया गया है।

5. नई शिक्षा नीति 2020 शिक्षकों को नैतिक शिक्षा, भावनात्मक नेतृत्व, और विद्यार्थियों में आध्यात्मिक मूल्यों को विकसित करने हेतु शिक्षक प्रशिक्षण की बात करती है।

इस प्रकार, यह शोध पत्र नई शिक्षा नीति 2020 के मूल उद्देश्यों के साथ सामंजस्य रखता है और यह स्पष्ट करता है कि भारतीय शिक्षा में आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयामों की पुनर्स्थापना समय की आवश्यकता और

नीति–निर्माताओं की प्राथमिकता है।

वर्तमान संदर्भ में आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयामों की प्रासंगिकता

वर्तमान समय तकनीकी, वैज्ञानिक और भौतिक प्रगति का काल है। वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण ने जहाँ एक ओर जीवन को सरल बनाया है, तो वहीं दूसरी ओर व्यक्ति के अन्दर आध्यात्मिक रिक्तता, नैतिक पतन और भावनात्मक असंतुलन जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। जिससे छात्रों में तनाव, अवसाद और नैतिक ह्रास बढ़ता जा रहा है। वर्तमान समय में मालवीय जी के शैक्षिक विचार और भी अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। उनका मत था कि यदि व्यक्ति के अन्दर आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक शक्ति निहित होगी, तो वह देश, समाज और मानवता के लिए संजीवनी सिद्ध होगी। शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविकोपार्जन नहीं बल्कि चरित्र निर्माण और राष्ट्र निर्माण होना चाहिए, जो नई शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में आज भी अत्यंत सार्थक है। वर्तमान संदर्भ में आध यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयामों की प्रासंगिकता को हम निम्नलिखित बिन्दुओं से समझ सकेंगे–

– आध्यात्मिक शिक्षा विद्यार्थियों में जीवन के अर्थ और उद्देश्य विकसित करने की समझ उत्पन्न करती है। जिससे आत्म–चिंतन, आत्मबोध, ध्यान और योग को अपने दिनचर्या में सम्मिलित करके वे तनाव, चिंता, अवसाद और आत्महत्या जैसी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। जिससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

– नैतिक शिक्षा विद्यार्थियों में सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, करुणा, सहिष्णुता, निर्णय क्षमता, सामाजिक जिम्मेदारी और परोपकार की भावना जैसे गुणों का विकास कर उनमें सकारात्मक सोच उत्पन्न करती है, जिससे उनमें भ्रष्टाचार, अनैतिक आचरण, असहिष्णुता और स्वार्थपरता जैसी समस्याएँ समाप्त होती हैं, और वे समाज के एक अच्छे नागरिक बनते हैं।

– भावनात्मक शिक्षा विद्यार्थियों में स्वयं के भावनाओं को नियंत्रित करने और दूसरे के भावनाओं को समझने की योग्यता उत्पन्न करती है, जिससे उनमें निर्णय लेने की क्षमता और आत्मविश्वास जैसे जीवन मूल्यों का विकास होता है। शिक्षा प्रणाली में कला, संगीत, नृत्य, खेल और निर्देशन एवं परामर्श जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास में सहायक हो सकती हैं।

सुझाव

इस शोध पत्र के आधार पर आधुनिक शिक्षा व्यवस्था को वर्तमान संदर्भ में आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयामों के माध्यम से अधिक संतुलित, मूल्यपरक और मानवीय संवेदना से युक्त बनाने हेतु निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं –

– विद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर योग, ध्यान, दर्शन और नैतिक शिक्षा को अनिवार्य रूप से पाठ्यक्रम में समावेशित किया जाए, साथ ही साहित्य, संगीत, नाटक और लोक–कलाओं के माध्यम से विद्यार्थियों के भावनात्मक पक्ष को भी महत्त्व दिया जाए।

– शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से आध्यात्मिक और नैतिक विषयों पर भी ध्यान दिया जाए। जिससे शिक्षक विषयवस्तु के साथ साथ विद्यार्थियों में संवेदनशीलता का भी बीजारोपण कर सकें।

– विद्यार्थियों में भावनात्मक संतुलन, सहिष्णुता, करुणा, संवाद–दक्षता और आत्मनिरीक्षण जैसे गुणों को विकसित करने वाले गतिविधियों को शामिल किए जाएँ। जिससे विद्यार्थियों में जीवन कौशल संबंधी गुणों का विकास किया जा सके।

– शैक्षिक संस्थानों में प्रशिक्षित काउंसलर की व्यवस्था की जाएँ जो समय समय पर विद्यार्थियों को निर्देशन और परामर्श द्वारा सहयोगात्मक वातावरण का निर्माण कर उन्हें अधिक सीखने के लिए प्रेरित कर सकें।

उपसंहार

भारतीय शिक्षा की आत्मा सदैव समग्र मानव विकास में निहित रही है, जिसमें ज्ञान–प्राप्ति के साथ–साथ आध्यात्मिकता, नैतिकता और भावनात्मकता को पर्याप्त महत्त्व दिया गया है, जो सम्पूर्ण विश्व और मानवता हेतु

एक मार्गदर्शक सिद्धांत प्रस्तुत करता है। इस शोध पत्र के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि यदि भारतीय शिक्षा प्रणाली में आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयामों को स्थान दिया जाए, तो न केवल शैक्षणिक गुणवत्ता में वृद्धि होगी, बल्कि देश में चरित्रवान, संवेदनशील और शारीरिक मानसिक रूप से सशक्त नागरिक भी प्राप्त होंगे। पंडित मदन मोहन मालवीय की विचारधारा और नई शिक्षा नीति 2020, दोनों में ही ऐसी शिक्षा प्रणाली की पर बल दिया गया हैं, जो वैश्विक प्रगति का समन्वय कर सकती है। इस शोध पत्र द्वारा हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली में आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक आयाम जैसे मूल तत्वों को न केवल शिक्षा नीतियों में बल्कि व्यवहारिक जीवन में भी लागू करने की आवश्यकता है।

सदर्भ सूची

1. मालवीय, मदन मोहन. शिक्षा और संस्कृति पर भाषण, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन।

2. भारत सरकार. नई शिक्षा नीति 2020।

3. राम मोहन, डी. भारतीय शिक्षा का पुनरुत्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।

4. शर्मा, आर.के. पंडित मदन मोहन मालवीय का जीवन और दर्शन, भारत भारती संस्थान।

5. श्रीवास्तव, रमेश. भारतीय शिक्षा और संस्कृति, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।

6. अग्रवाल, सत्यप्रकाश. भारतीय शिक्षादर्शन, हिंदी ग्रंथ अकादमी, मध्य प्रदेश।

7. उपाध्याय, शरद. भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली।

8. मिश्रा, ब्रजमोहन. भारतीय शिक्षा का सांस्कृतिक आयाम, विद्या निकेतन प्रकाशन।

9. पं. मदनमोहन मालवीय – भारतीय संस्कृति और शिक्षा, BHU प्रकाशन

10. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

11. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय – स्थापना एवं उद्देश्य

12. भारतीय शिक्षा दर्शन – डॉ. राधाकृष्णन आयोग

13. भारतीय संस्कृति में शिक्षा का स्वरूप' – डॉ. भगवती प्रसाद शर्मा

14. योगसूत्र – महर्षि पतंजलि, भाष्यरू स्वामी विवेकानंद

15. NCERT (2021). Moral and Value Education Curriculum Framework-

16. Singh, R.P. (2018). Spirituality and Indian Education: A Conceptual Analysis-ß Journal of Indian Education-

17. Sharma, A.K. (2020)- "Emotional Intelligence in Modern Schooling- Educational Review Journal-

18. Ministry of Education] Government of India- Foundational Literacy and Numeracy Mission Guidelines, 2021,

19. चतुर्वेदी, सीता राम, महामना पं. मदनमोहन मालवीय, तारा प्रकाशन, वाराणसी–1936.

20. ए.एस. अल्तेकर, महामना पं. मदनमोहन मालवीय, तारा प्रकाशन, वाराणसी–1936

21. dhindiarticles-blogspot-com – google

22. प्रो. बी.एल. जैन ऊषा शर्मा

23. शुक्ल, आर. (2014). पंडित मदन मोहन मालवीय का शैक्षिक चिंतन. वाराणसीरू बनारस हिंदू विश्वविद्यालय प्रकाशन।

Assessing and Advancing Cybersecurity Posture and Maturity in Higher Education Institutions

Dr. Krishna Kumar Bohra
Assistant Professor,
Lachoo Memorial College of Science and Technology, Jodhpur
kkbohra@lachoomemorial.org

ABSTRACT:

Indian higher education institutions are at a pivotal moment: digital transformation, online learning, research collaboration, and cloud services are expanding fast, but cybersecurity maturity often delays. Using frameworks such as the NIST Cybersecurity Framework, ISO/IEC-27001, and emerging tools like Software Bill of Materials (SBOM), Indian HEIs can systematically assess their cybersecurity posture and move toward more strong operations. This paper reviews Indian observed research on cybersecurity maturity, discusses challenges unique to Indian HEIs, and proposes a roadmap to improve posture and maturity, drawing on international frameworks and Indian policy context.

INDEX TERMS

Cybersecurity Posture, Cybersecurity Maturity, Higher Education Institutions (HEIs), NIST Cybersecurity Framework (NIST CSF), ISO/IEC 27001, SBOM (Software Bill of Materials), Cybersecurity Risk Management

INTRODUCTION

India has one of the world's largest and most diverse higher education ecosystems. As HEIs adopt online learning tools, manage large volumes of student data, research data, cloud services, and administrative systems, their exposure to cyber threats increases. At the same time, regulatory, financial, and infrastructural constraints can slow down or complicate efforts to build mature cybersecurity capabilities.

Empirical studies in India show that many organizations (not limited to HEIs) are operating at relatively low levels of cybersecurity readiness. For example, (Bahuguna, Bisht, & Pande, 2019) found significant gaps in cybersecurity practices across multiple dimensions among Indian organizations.

This article seeks to put HEIs in India under the spotlight: how can they assess where they are now, how can frameworks help, what constraints they face, and what practical steps they can take to advance maturity.

REVIEW OF INDIAN EVIDENCE ON CYBERSECURITY MATURITY

" The study by (Bahuguna, Bisht, & Pande, 2019) surveyed 103 Indian organizations via self-assessment, workshops and tabletop exercises across six dimensions of cybersecurity maturity. HEIs were not separately analysed in that paper but the findings are relevant: many Indian entities scored low on risk management, incident response, and continuous monitoring.

- Sector studies (e.g., mid-market firms including Education & Training among sectors) in India (Voice and Data, n.d.) indicate that although India leads some benchmarks in the Asia-Pacific, many organizations still struggle with integrating frameworks like NIST.
- Broader digital transformation studies, such as the Zoho Workplace survey (CISO.in, n.d.), show that Indian organizations are ahead in tool adoption and process changes compared to some other countries, but lag in cybersecurity readiness, especially in formalizing security policies and risk management, which are essential for HEIs.
- Reports like Cisco's show that only ~24% of Indian firms achieve a 'mature' level of cybersecurity readiness (ThePrint, n.d.), leaving most firms in "beginner" or "formative" stages. While these data often do not disaggregate HEIs specifically, they are useful benchmarks.

Thus, there is some evidence that Indian HEIs may also reflect these gaps: low maturity in risk, incident response, governance, human awareness, etc. However, there is a lack of published work solely on Indian HEIs' cybersecurity maturity using established frameworks (Brezavscek & Baggia, 2025), which represents both a gap in research and an opportunity.

RELEVANT FRAMEWORKS & STANDARDS FOR INDIAN HEIS

1. NIST Cybersecurity Framework (NIST CSF)

- Developed by National Institute of Standards and Technology
- Core Functions: Identify, Protect, Detect, Respond, Recover
- Includes Implementation Tiers (Partial ? Risk-Informed ? Repeatable ? Adaptive) and Profiles (Current vs. Target)
- CSF 2.0 adds Governance as a central function and emphasizes continuous improvement and supply chain security.

(NIST, n.d.)

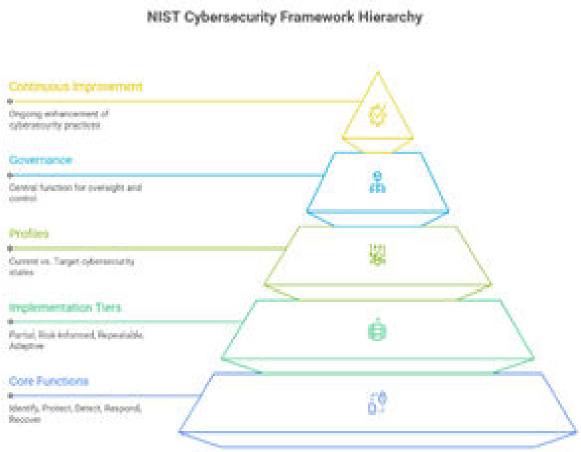

Application to HEIs:

Indian institutions can use it as a reference or benchmark even though it's U.S.-origin, especially for structuring risk assessment, policy, and incident response planning. This aligns with India's growing focus on supply chain and privacy laws.

Universities can map their current cybersecurity capabilities across each NIST function, score their maturity, and set measurable targets for improvement. For example, if "Respond" maturity is low (few incident response plans), targeted investment and training can be prioritized.

2. ISO/IEC 27001 and COBIT

- ISO/IEC 27001 provides a structured Information Security Management System (ISMS) framework with risk assessments, controls, and continuous monitoring.
- COBIT focuses on IT governance, aligning cybersecurity with institutional strategy and compliance.

Application to HEIs:

Several HEIs in India either are certified or moving toward ISMS standards (ISO, n.d.)
because of regulations, accreditation, or reputational reasons. ISO/IEC 27001 helps HEIs formalize their security controls, risk assessment, policy documents, and internal audits.

3. Sector-Specific Maturity Models

- Cybersecurity Maturity Model (CSMM) for universities (published in The Science and Information Organization (Building Cyber-Resilient Universities: A Tailored Maturity Model for Strengthening Cybersecurity in Higher Education, 2025) identifies domains like governance, infrastructure, and human behaviour.
- Cybersecurity Audit Model (Sabillon, Ruiz, Cavaller, & Cano M., n.d.) validated for Canadian HEIs (MDPI) assesses control effectiveness across multiple domains.

Application to HEIs:

These maturity models offer tailored metrics and assessment rubrics to benchmark universities against peers and international standards.

4. SBOM (Software Bill of Materials) for Supply Chain Security

- Promoted by Cybersecurity and Infrastructure Security Agency
- SBOMs list the components of software, helping identify vulnerabilities in third-party software used by HEIs. (America Cyber Defence Agency, n.d.)

Application to HEIs:

For Indian HEIs, many software tools are third-party or open-source; SBOM helps identify vulnerabilities in dependencies. Although I found limited published Indian HEI studies on SBOM in practice, the international research (Huang & Sun, 2019) shows both promise and challenges in adoption. For example, (Kanda, Manabe, Inoue, & Higo) provides data on SBOM tools and consumption use including SBOMs in procurement policies can prevent vulnerabilities in LMS, research software, and IoT devices.

CHALLENGES IN HEI CYBERSECURITY MATURITY

From Indian observations, these are some challenges HEIs face:

1. Funding & Resource Constraints: Many universities (especially state / private / smaller ones) lack dedicated cybersecurity budgets or skilled staff.

2. Decentralized IT Infrastructure: Departments, labs, research centres often procure and manage their own software/hardware without central coordination, which leads to inconsistent security practices. eg Moodle, WordPress.

3. Teaching: & Training: Academic culture often emphasizes research and teaching; cybersecurity best practices might be less embedded. Students and faculty may not prioritize or understand threat models, incident reporting, etc in Institute Wifi.

4. Legacy Systems: Older servers, lab equipment, proprietary / custom software are not always updated or maintained well, and some may not support latest security controls. Like older version of MATLAB

5. Regulatory / Policy Gaps: There is evolving regulation in India.

6. Supply Chain / Software Risks: HEIs often use many open-source tools; understanding vulnerabilities is not yet standard in many institutions.

Direct downloads from GitHub without code review or vulnerability scanning.

7. Continuity & Incident Response: Few HEIs may have practiced incident response plans or disaster recovery tested As No use of incident response platforms like TheHive or MISP to manage threats and share intelligence.

PROPOSED STRATEGY FOR INDIAN HEIS TO ADVANCE CYBERSECURITY POSTURE & MATURITY

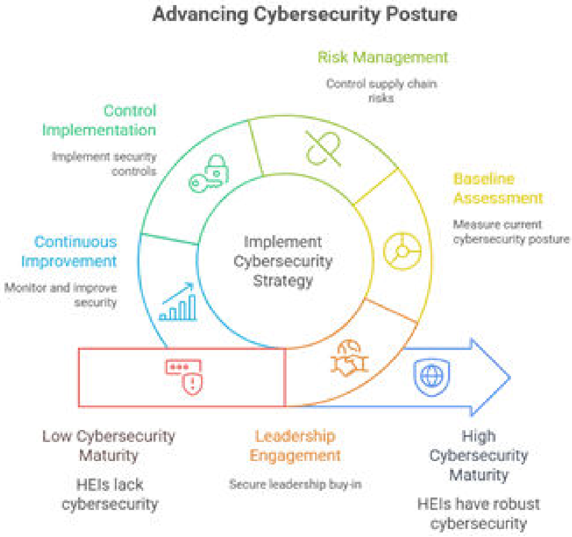

Phase 1:

Leadership & Policy Engagement

- Get top management support.
- Set clear cybersecurity policies, responsibilities, and escalation paths.
- Form a cybersecurity governance team with IT, faculty, and research labs.

Outcomes of Phase 1:

- Policy in place, roles defined, budget allocated.

Phase 2:

Baseline Assessment Measurement

- Conduct baseline assessment using and sector-specific maturity models.
- Perform self/external audit (Identify-Protect-Detect-Respond-Recover).

Outcomes of Phase 2:

- Maturity scores, gap report, priority areas identified.

Phase 3:

Risk Management & Supply Chain / Software Component Control

- Integrate risk management into academic and research planning using MITRE ATT&CK
- Identify critical assets, map threats and vulnerabilities.
- Monitor and patch vulnerabilities; procure secure tools.

Outcomes of Phase 3:

- Asset list, risk register, patch rate, reduced vulnerability window.

Phase 4:

Control Implementation, Awareness & Training

- Deploy technical controls (access control, network segmentation, backups).
- Enhance human-centric security through continuous training (phishing simulations, student workshops).
- Conduct awareness programs and simulation/ tabletop exercises.
- Prepare an incident response plan.

Outcomes of Phase 4:

- Trained people, incidents tracked, faster detection/response, plan ready.

Phase 5:

Monitoring, Continuous Improvement, Benchmarking

- Measure and report progress annually (maturity scoring, gap analysis) and audits and log reviews
- Benchmark with peer institutions; learn from incidents

Outcomes of Phase 5:

- Improved maturity, fewer incidents, regulatory compliance, peer-comparison scores

POLICY / REGULATORY & INSTITUTIONAL SUPPORTS IN INDIA

- CERT-IN (Indian Computer Emergency Response Team) has published rules for reporting cybersecurity incidents.

- Educational / accreditation bodies (e.g., UGC, AICTE) might increasingly require HEIs to show evidence of cybersecurity.

- National policy initiatives (e.g., Digital India, National Education Policy) push for digital infrastructure and e-learning; these must be accompanied by cybersecurity maturity efforts.

- Use of SBOM is not yet widespread in Indian HEIs, but as governments globally require more supply chain transparency, it may soon be regulatory or accreditation expectation.

PROPOSED CASE-STUDY (HYPOTHETICAL) FOR INDIAN HEIS

To illustrate how an Indian university might apply these ideas:

- A mid-sized state university in Rajasthan begins with a baseline assessment using NIST finds weak points in "Respond" and "Recover", moderate in "Detect," decent in "Protect," but weak formally in governance & policy.

- They inventory all software used in teaching / administration, get SBOMs for third-party tools / open-source packages, discover outdated libraries in LMS/Plugins.

- Establish a cybersecurity committee with top leadership, define policy.

- Launch awareness programme: training sessions for faculty & students, phishing simulation, lab security etc.

- Implement technical controls: patch management, endpoint protection, network segmentation, backups.

- Monitor via audits, track metrics (incident detection time, number of vulnerabilities patched, etc.), compare with peer universities in state / national level.

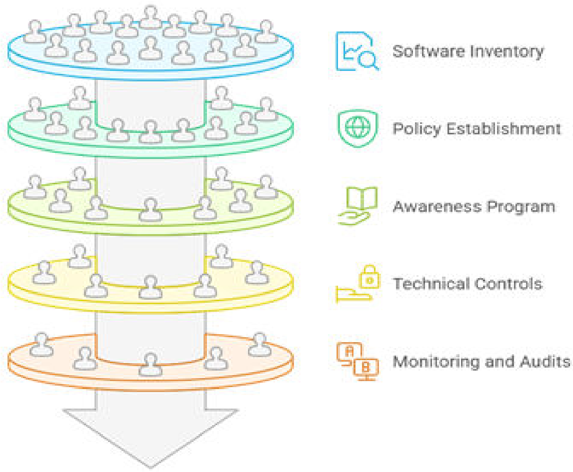

RECOMMENDATIONS

- HEIs should adapt international frameworks rather than starting from scratch, customizing to Indian policy environment and resource availability.

- Prioritize training / human factors because faculty, students, researchers are gateways to risk.

- Use Software Bill of Materials (SBOM) for managing software supply chain & dependencies; encourage procurement policies to demand SBOM or transparency.

- Establish institutional governance and budget commitment; even small budget allocations to cybersecurity yield good return when focused.

- Regulatory compliance must be taken seriously and HEIs should stay up to date.

- Encourage peer benchmarking and sharing of best practices among Indian HEIs.

CONCLUSION

Indian higher education institutions have a tremendous opportunity: if they can assess their cybersecurity maturity properly, adopt structured frameworks, address gaps (governance, incident response, supply chain, human awareness), they can significantly raise their cybersecurity posture. Doing so will protect research integrity, student/employee data, financial transactions, and overall institutional reputation. Given India's policy thrust on digitalization, HEIs that invest now will be far more resilient to emerging cyber threats.

REFERENCES

- America Cyber Defence Agency. (n.d.). Retrieved from https://www.cisa.gov: https://www.cisa.gov/sbom
- Bahuguna, A., Bisht, R. K., & Pande, J. (2019). Assessing cybersecurity maturity of organizations: An empirical investigation in the Indian context. Information Security Journal: A Global Perspective, 164-177.
- Brezavscek, A., & Baggia, A. (2025). Recent Trends in Information and Cyber Security Maturity Assessment: A Systematic Literature Review. Systems.
- Building Cyber-Resilient Universities: A Tailored Maturity Model for Strengthening Cybersecurity in Higher Education. (2025). International Journal of Advanced Computer Science and Applications, 95-100.
- CISO.in. (n.d.). Retrieved from https://ciso.economictimes.indiatimes.com/: https://ciso.economictimes.indiatimes.com/news/cybercrime-fraud/indias-digital-transformation-may-peak-in-a-decade-but-cybersecurity-lags-reveals-zoho-survey/117544389
- Huang, Y., & Sun, Y. (2019). A dataset of daily interactive manipulation. The International Journal of Robotics Research.
- ISO. (n.d.). Retrieved from https://www.iso.org: https://www.iso.org/standard/27001
- Kanda, T., Manabe, Y., Inoue, K., & Higo, Y. (n.d.). A Dataset of Software Bill of Materials for Evaluating SBOM Consumption Tools.
- NIST. (n.d.). Retrieved from https://www.nist.gov: https://www.nist.gov/cyberframework
- Sabillon, R., Ruiz, J. S., Cavaller, V., & Cano M., J. (n.d.). ResearchGate. Retrieved from https://www.researchgate.net: https://www.researchgate.net/publication/324177577_A_Comprehensive_Cybersecurity_Audit_Model_to_Improve_Cybersecurity_Assurance_The_Cyber Security_Audit_Model_CSAM
- ThePrint. (n.d.). Retrieved from https://theprint.in: https://theprint.in/india/only-24-indian-firms-at-mature-level-of-cybersecurity-readiness-says-tech-giant-cisco/1460621/
- Voice and Data. (n.d.). Retrieved from https://www.voicendata.com: https://www.voicendata.com/security/cybersecurity-maturity-in-india-surpasses-regional-average-says-palo-alto-study-9089812

बी.एड. के महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं और उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

धर्मेन्द्र गहलोत
शोधार्थी
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राजस्थान)

प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली
शोध पर्यवेक्षक
प्रोफेसर शिक्षा संकाय
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)

सारांश

इस लेख में प्रस्तावना को स्पष्ट करते हुए समस्या कथन को स्पष्ट करने का प्रयास किया है तथा परिकल्पनाओं व उद्देश्यों को निश्चित करते हुए समस्या के औचित्य को भी स्पष्ट किया गया है। पारिभाषिक शब्दावली में तकनीकी शब्दों का सही अर्थ स्पष्ट किया गया है। अनुसंधान कार्य हेतु समस्या का परिसीमन किया है तथा अन्त में प्रयुक्त सांख्यिकी का वर्णन किया गया है। इस लेख में शोधकर्ता ने संग्रहित दत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या कर सामान्यीकरण के निरूपण द्वारा अर्थपूर्ण परिणाम प्रस्तुत किये हैं। इसके अन्तर्गत दत्त संकलन, तथ्यों का संपादन, तथ्यों का वर्गीकरण, तथ्यों का सारणीयन, तथ्यों का विश्लेषण आदि की विवेचना की गई है। बी.एड. के महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं और उपलब्धि अभिप्रेरणा के तुलनात्मक अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा दत्त सामग्री की प्राप्ति जोधपुर शहर व जोधपुर के आस–पास ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों से न्यादर्श के रूप में चयनित 200 पुरूष व 200 महिला प्रशिक्षणार्थियों को शामिल करते हुए कुल 400 प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा मापनी (EAS) में प्रशासन व विवरण से प्राप्त उत्तरों के माध्यम से परिणाम प्राप्त किये गए। इसी प्रकार उपलब्धि अभिप्रेरणा के लिए (एचिवमेन्ट मोटिवेशन टेस्ट) डॉ. वी.पी. भार्गव द्वारा प्रयुक्त टेस्ट से परिणाम प्राप्त किये गए) दत्त विश्लेषण, परिणाम व परिणामों की व्याख्या पूर्व निर्धारित शोध उद्देश्यों व परिकल्पनाओं के आधार पर प्रस्तुत की गई है। सम्बद्ध दत्तों का सारणीयन कर मध्यमान, मानक विचलन तथा टी परीक्षण सांख्यकीय विधियों की सहायता से दत्त विश्लेषण कर परिणामों की तार्किक व्याख्या की गई हैं। परिणामों को मूर्त रूप देने हेतु उपयुक्त आरेखों का सहारा भी लिया गया है।

वर्तमान में प्राप्त अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि बी.एड. के महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों में शैक्षिक आकांक्षा और उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया किन्तु महिला प्रशिक्षणार्थियों में लक्ष्य निष्ठा, अनुशासनप्रिय तथा उच्च शैक्षिक आकांक्षा की प्रवृत्ति अधिक देखी गई जबकि पुरूष प्रशिक्षणार्थियों में प्रतिस्पर्धात्मकता, आत्मविश्वास तथा कैरियर उन्मुख दृष्टिकोण अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। दोनों ही समूहों ने शिक्षा को अपने भविष्य निर्माण को प्रभावी माना है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक आकांक्षा लिंग भेद से ऊपर उठकर एक समान प्रवृति बन रही है। अध्ययन यह भी संकेत देता है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक आकांक्षा का विकास केवल लिंग पर निर्भर नहीं करता बल्कि पारिवारिक, सामाजिक और व्यक्तिगत परिस्थितियाँ भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती। अतः शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों का दायित्व है कि वे समतामूलक अवसर, सकारात्मक वातावरण और प्रोत्साहन प्रदान करें, ताकि सभी प्रशिक्षणार्थी अपनी पूर्ण शैक्षिक एवं व्यवसायिक क्षमता का विकास कर सकें।

मुख्य शब्दावली

प्रशिक्षणार्थी, शैक्षिक आकांक्षाएँ, उपलब्धि अभिप्रेरणा

प्रस्तावना :–

किसी भी समाज की संरचना अनेक तत्वों से मिलकर बनी होती है। सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था पर भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, दार्शनिक एवं भाषायी आदि कारकों का प्रभाव पड़ता है। विश्व में प्रत्येक प्राणी जो व्यवहार करता है, स्वयं के लिए या लक्ष्य प्राप्ति के लिए करता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए तथा समाज कारकों को समझने व जानने के जो अत्यधिक महत्वपूर्ण कारक है वह है 'शिक्षा'। शिक्षा ही एकमात्र ऐसा कारक है जो किसी भी समाज और राष्ट्र का निर्माण करने के लिए मानव को आवश्यक ज्ञान प्रयोजन की चेतना और विश्वास की भावना से ओत–प्रोत करके मानव जीवन को अर्थपूर्ण साधन प्रदान करता है।

'शिक्षा' शब्द की उत्पत्ति 'शिक्ष' धातु से 'स' प्रत्यय लगने से हुई है। शिक्ष धातु का अर्थ है सीखना था सीखाना। अतः 'शिक्षा' का अर्थ है सीखने और सीखाने की क्रिया।

शिक्षा शब्द अंग्रेजी के Education का हिन्दी रूपान्तरण है। Education की उत्पत्ति निम्नलिखित तीन लैटिन शब्दों से मिलकर हुई है। Education. शिक्षण कार्य या आन्तरिक शक्तियों को बाहर लाना।

Educare –शिक्षित करना,

Educere – प्रेरणा देना।

इस प्रकार म्कनबंजपवद का अर्थ है विद्यार्थी की जन्मजात शक्तियों को अन्दर से बाहर की ओर विकसित करना। शिक्षा एक ऐसी सामाजिक और गतिशील प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के अन्तर्निहित व जन्मजात गुणों का विकास कर व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करती है।

शिक्षा एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जो मनुष्य की समस्त जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक एवं विरोधहीन विकास में योग देती है शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान करने या केवल गढ़ी गढ़ाई वस्तु उत्पन्न कर देना ही नहीं है, बल्कि उसे जिज्ञासा उत्पन्न करने उचित रूचि व प्रवृत्तियों और मूल्य को विकसित करने तथा स्वतंत्र अध्ययन एवं चिन्तन करने के लिए आवश्यक कौशल निर्मित करने एवं स्वयं निर्णय लेने सम्बन्धित माना जाता है।

शैक्षिक उद्देश्य

– बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाने हेतु प्रस्तुत की गई परिस्थितियाँ,
– प्राप्त उपलब्धि की जांच अथवा मूल्यांकन।

किसी भी शैक्षिक व्यवस्था की प्रभावशीलता उसमें सम्मिलित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर निर्भर करती है।

ज्ञानार्जन की प्रक्रिया में प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा सूचना को ग्रहण करने और उसके प्रति अनुक्रिया करने का स्तर समान नहीं होकर भिन्न होता है। इसलिए कक्षा में सभी बालक एक प्रकार की शैली से अधिगम की क्रिया को सफलतापूर्वक सम्पादित नहीं कर सकते हैं। अतः प्रत्येक विद्यार्थी की शैक्षिक आकांक्षा अलग–अलग होती है।

शैक्षिक आकांक्षाएँ तभी उत्तम होगी जब शिक्षक और प्रशासक यह जान लेगें कि शैक्षिक आकांक्षा को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक कौन–कौन से हैं तथा वे किस सीमा तक प्रभाव डालते हैं ?

इन कारकों को पहचान कर ही अध्यापक विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं को बढ़ा सकता है क्योंकि एक डॉक्टर किसी भी बीमारी का इलाज तभी अच्छे ढंग से कर सकता है, जब उसे उसके कारण की जानकारी हो।

आज की परिस्थिति में जबकि छात्र अपनी शिक्षा प्राप्ति का उद्देश्य मात्र उच्च अंक प्राप्त करना समझता है ऐसे में उसकी शैक्षिक आकांक्षाओं अच्छा होना आवश्यक है। बिना उत्तम आकांक्षाओं के अध्ययन प्रक्रिया छात्र के लिए एक दुष्कर कार्य होगा उत्तम उपलब्धि अभिप्रेरणा अध्ययन कार्य को सुगम बनाती है।

उपलब्धि अभिप्रेरणा की रचना का शिक्षामें महत्वपूर्ण स्थान है। इनमें विद्यार्थी के अधिगम, ज्ञान तथा शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

दवे के अनुसार :–

''स्वस्थ शैक्षिक आकांक्षाओं वाले विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम अपेक्षाकृत उत्तम होता है।''

शैक्षिक आकांक्षाएँ वे है जो बालक को सीखने की प्रक्रिया में शक्ति देता है, ज्ञान को स्थायी बनाता है। किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए उसे क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित रूप से किया जाना अनिवार्य है। प्रायः अनेक विद्यार्थी वर्ष भर अधिकांश समय तो टहल्लबाजी करते है तथा परीक्षा सिर पर आजाने पर पढ़ाई में दिन रात एक कर देते है। वही कुछ विद्यार्थी साल भर केवल पढ़ाई करते है, खाने–पीने तथा खेल–कूद सभी के महत्व को नकार देते है, इन दोनों ही परिस्थितियों में अच्छा परिणाम आने की सम्भावनाएँ समाप्त हो जाती है।

शिक्षा आयोग 1964–66 की रिपोर्ट का पहला ही वाक्य है – ''भारत के भाग्य का निर्माण इस समय उसकी कक्षाओं में हो रहा है।'' यह प्रकारान्तर शिक्षा व शिक्षक के महत्त्व को इंगित करता है। कक्षा चाहे कक्ष की दीवारों में सीमित हो, चाहे वह सहशैक्षणिक प्रवृत्तियों के प्रयोजन से लेकर शैक्षिक भ्रमण अथवा सामुदायिक सेवा तक के रूप में संचालित हो रही हो, सभी स्थितियों में उसकी सार्थकता उसके शिक्षक पर निर्भर करती है। उसका ज्ञान, उसका उत्साह, उसकी योग्यता ही यह निर्धारित करती है कि कक्षा अपने सही अर्थ में लगी भी है अथवा नहीं लगी है तथा वांछित अभिगम हुआ है या नहीं। शिक्षक के लिए तो बहुधा कहा भी जाता है कि ''No nationa can rise above the level of its teacher' शिक्षक व वर्ग का चरित्र ही राष्ट्र के चरित्र का निर्माण करता हैं।''

विश्व में प्रत्येक प्राणी जो व्यवहार करता है वह स्वयं–हेतु या लक्ष्य–प्राप्ति के लिए करता है। संसार के विभिन्न चराचरों में सर्वोत्कृष्ट रचना अर्थात् मानव ने विचार शक्ति द्वारा ज्ञानार्जन एवं ज्ञान–संरक्षण कर अपनी सभ्यता को निर्मित एवं विकसित किया है। मानव के विकास की कहानी का एक मुख्य सूत्र है – शिक्षा।

मानवीय शक्तियों के विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रत्येक राष्ट्र अपनी आवश्यकताओं, आदर्शों एवं दर्शन के अनुरूप विशिष्ट शैक्षिक व्यवस्था की संरचना करता है। इस संरचना में विगत अनुभवों से लाभ उठाकर प्रत्येक राष्ट्र वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में परिवर्तन लाने का प्रयास करता है, क्योंकि शिक्षा वह प्रक्रिया है जो राष्ट्र के नागरिकों में राष्ट्रीय चरित्र का विकास कर, राष्ट्रीय संस्कृति और सभ्यता के अनुरूप राष्ट्र को ऊर्जावान नागरिक प्रदान करने में सहायक होती है। शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है। शिक्षा ही वह आधार है जो व्यक्ति के ज्ञानचक्षु को खोलने में अपने औपचारिक एवं अनौपचारिक रूपों में सहायक होती है। व्यक्ति के समाजीकरण, राष्ट्रीयकरण तथा आधुनिकीकरण के लिए शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि शिक्षित व्यक्ति स्वयं में प्रगति का द्योतक है।

प्रत्येक राष्ट्र अथवा सभ्य समाज शिक्षा को अपनी योजनाओं में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है। प्रत्येक राष्ट्र अपनी शिक्षा व्यवस्था के लिए एक राष्ट्रीय प्रणाली की संरचना करता है, जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय संस्कृति के अनुरूप व्यक्ति का निर्माण करना होता है। भारत जैसे विविधता लिए हुए राष्ट्र के लिए एक राष्ट्रीय प्रणाली के औचित्य पर बहुधा विवाद होता रहा है क्योंकि क्षेत्रीय विषमताओं, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विविधताओं के चलते एक राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली, समान पाठ्यक्रम, समान भाषा के औचित्य पर मत–भिन्नता बनी रहती है।

इस प्रकार शिक्षा द्वारा विद्यार्थी की सामाजिक प्रतिष्ठा, सामाजिक गतिशीलता, सुरक्षा, आर्थिक लाभ तथा आधुनिकता की महत्वाकांक्षा पूर्ण होती है। शैक्षिक महत्वाकांक्षा उसके भविष्य का प्रतीक है। आज शिक्षा के द्वार भारत–जैसे प्रजातंत्रात्मक समाज ने सभी के लिए खोल दिए गए हैं, जिसका उद्देश्य है प्रत्येक व्यक्ति अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए अपने समस्त स्त्रोतों का उपयोग कर अपना पूर्ण विकास शिक्षा के माध्यम से कर सके। छात्र की शैक्षिक महत्वाकांक्षा सम्भवतः उस विद्यार्थी के द्वारा प्राप्त किए गए शैक्षिक मूल्यों के द्वारा निर्धारित होती है।

शोध के उद्देश्य –

गुड व स्केट्स के अनुसार –

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन समस्या के समाधान के लिए उचित विधि, प्रक्रिया, तथ्यों के साधन और सांख्यिकी तकनीकी का सुझाव देता है।

यह परिकल्पना के लिए साधन प्रदान करता है। शोधकर्ता प्राप्त अध्ययन के आधार पर शोध परिकल्पनाएँ बना सकता है।

– यह परिणामों के विश्लेषीकरण में उपयोगी निष्कर्षों और तुलनात्मक तथ्यों को निर्धारित करने में सहायक होता है।

– यह सिद्धान्तों, विचार, व्याख्याएँ अथवा परिकल्पनाएँ प्रदान करता है, जो नई समस्या के चयन में उपयोगी हो सकती है।

– सम्बन्धित साहित्य का गम्भीर अध्ययन शोधकर्ता के निपुणता सामान्य साहित्य तथा ज्ञान कोश को विकसित करने में सहायक होता है।

''शोध का उद्देश्य, शोध कार्य का प्रकाश स्तम्भ है, जो उसे राह से विचलित होने से बचाकर सही मार्ग दिखाता है।'' अतः प्रथम अध्याय में समस्या के उद्देश्य निर्धारित किये गए हैं जिससे शोध कार्य को दिशा मिल सके। इस कार्य हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं

1. बी.एड. के महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिकांक्षाओं का अध्ययन करना।
2. बी.एड. के महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।
3. बी.एड. के महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन।
4. बी.एड. के महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध की परिकल्पना

परिकल्पना :

किसी भी सामाजिक प्रघटना के वैज्ञानिक अध्ययन में अनुसंधाकर्त्ता वस्तुतः एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता जब तक कि वह अपना अनुसंधान उपकल्पना से प्रारम्भ न करें। उपकल्पना के अभाव में अनुसंधान की न तो दिशा निर्धारित होती है और न ही विषय क्षेत्र का ज्ञान अनुसंधानकर्त्ता को होता है।

परिकल्पना का अर्थ :

''परिकल्पना'' शब्द अंग्रेजी के 'हाइपोथिसिस' (Hypothesis) का हिन्दी अनुवाद है जो ग्रीक भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है Hypo अर्थात् Below का अर्थ है नीचे तथा Thesis अर्थात् जीमवतल का अर्थ है विचार या सिद्धांत। हाइपोथिसिस का पूर्ण अर्थ हुआ 'बिलोथ्योरी' (Below Theory) अर्थात् सिद्धांत से नीचे या सिद्धांत का पूर्व कथन। इसके हिन्दी रूपान्तर 'प्राकल्पना' का भी यही अर्थ है। प्राक् का अर्थ है पूर्व, तथा कल्पना से यहाँ पर तात्पर्य है विचार अथवा सिद्धांत अथात् प्राकल्पना का पूर्ण अर्थ है कि पूर्व विचार या पूर्व सिद्धांत। इस प्रकार 'प्राकल्पना' का शाब्दिक अर्थ है कि एक ऐसा विचार अथवा सिद्धांत जिसे अनुसंधानकर्त्ता अध्ययन के लक्ष्य के रूप में रखता है तथा उसकी जाँच करता है, तथा अध्ययन के निष्कर्ष में प्राकल्पना को सत्य सिद्ध होने पर एक सिद्धान्त के रूप में स्थापित करता है। असत्य सिद्ध होने पर त्याग देता है। इस प्रकार परिकल्पना एक ऐसा कच्चा सिद्धान्त है जिसे अनुसंधान में परीक्षण के लिए रखा जाता है।

वैज्ञानिकों ने प्राकल्पना को एक अस्थाई अनुमान, परीक्षण के लिये प्रस्तुत की गई प्रास्थापना, कामचलाऊ सामान्यीकरण, कल्पनात्मक विचार, पूर्वानुमान, दो या अधिक परिवर्त्यों के बीच सम्बन्धों को स्पष्ट करने वाला अनुमानात्मक कथन बताया है।

विद्वानों द्वारा दी गयी निम्नलिखित परिभाषाओं से यह स्पष्ट हो जाता है:

1. बोगार्ड्स के अनुसार – ''प्राकल्पना परीक्षण के लिये प्रस्तुत की गई एक प्रस्तावना है।''

शोधकार्य के व्यापक क्षेत्र को समित करने के लिए परिकल्पना का निर्माण आवश्यक है ताकि अध्ययन का स्वरूप स्पष्ट, सूक्ष्म और गहन हो सके। शोध द्वारा

प्रस्तावित प्रश्नों के अन्तरिम उत्तरों को परिकल्पना कहते हैं। परिकल्पना एक सामाजिक तथा निष्कर्ष है, जिसकी सत्यता की परीक्षा करना शेष रहता है। प्रस्तुत शोधाध्ययन के विहित उद्देश्यों की परिपूर्ति हेतु शोधकर्त्ता ने निम्नलिखित परिकल्पनाएँ जाँच हेतु अभिकल्पित की है –

1. बी.एड. के महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

2. बी.एड. के महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

शोध का औचित्य

शोध के औचित्य से तात्पर्य उसकी उपयोगिता से है। हमने जिस शोध कार्य को चुना है उसका शैक्षिक जगत में क्या महत्व है ? प्रत्येक शोध कार्य के लिए उसकी समस्या के महत्व को स्पष्ट करना परमावश्यक है। इसी से इस बात का पता चलता है कि शोधकार्य शैक्षिक जगत की आवश्यकताओं एवं समस्याओं को दूर करने में कितना सहायक होगा।

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए चुनी गई समस्या की प्रासंगिकता यह है कि गत मात्र पाँच वर्षों में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि (50 से 800) हुई है। तदनुरूप प्राध्यापकों की संख्या में तो निरन्तर वृद्धि हुई है, परन्तु शिक्षण की गुणवत्ता दिन–प्रतिदिन ह्रासमान है। इसका कारण प्राध्यापकों का स्वयं का व्यवहार हो सकता है। प्राध्यापकों का सीधा प्रभाव उनकी कक्षा के छात्रों पर पड़ता है। यदि प्राध्यापक उन्हें ठीक ढंग से प्रशिक्षण नहीं देगा तो छात्र भी अध्ययन में रूचि नहीं लेंगे और उचित मार्गदर्शन के अभाव में उनका समुचित विकास नहीं हो पाएगा। आज के प्राध्यापकों में प्रतिबद्धता दिन–प्रतिदिन कम होती जा रही है, जबकि उनकी वेतनवृद्धि व अन्य सुविधाएँ पहले की अपेक्षा आज बेहतर स्थिति में है।

समस्या के औचित्य से तात्पर्य उसकी उपयोगिता से है, हमने जिस शोध कार्य को चुना है उसका शैक्षिक जगत में क्या महत्व है ? प्रत्येक शोध कार्य के लिए उसकी समस्या के महत्व को स्पष्ट करना परम आवश्यक है।

शैक्षिक क्षेत्र में जब भी कोई अनुसंधान किया जाता है तो उस अध्ययन की उपादेयता के महत्व का औचित्य सिद्ध करने के लिए यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि अनुसंधान के परिणाम जगत में व उसके व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करेंगे।

शोधकर्त्ता ने इस बात से प्रेरित होकर यह जानने की कोशिश की है कि बी.एड. के महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं व उपलब्धि अभिप्रेरणा में क्या अन्तर है ? क्योंकि वर्तमान समय में प्रायः यह देखा जाता है कि बी.एड. के महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की कोई न कोई लक्ष्य जरूर होता है लेकिन लक्ष्यों व उद्देश्यों में अन्तर जरूर होता है। इस कारण उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं व उपलब्धि अभिप्रेरणा में भी अन्तर होता है। यह अन्तर कितना है इसका पता शोध के द्वारा आंकलन करके ही ज्ञात किया जा सकता है। इस शोध कार्य द्वारा उपलब्ध परिणाम और निष्कर्ष शिक्षा जगत में बहुत बड़ा सकारात्मक योगदान करेंगे, ऐसा विश्वास है।

शैक्षिक क्षेत्र में जब भी कोई अनुसंधान किया जाता है तो उस अध्ययन की उपादेयता के महत्व का औचित्य सिद्ध करने के लिए यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि अनुसंधान के परिणाम जगत में वह उसके व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करेंगे

शोधकर्ता ने इस बात से प्रेरित होकर यह जानने की कोशिश की है बी.एड. के महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं व उपलब्धि अभिप्रेरणा में क्या अन्तर है ?

क्योंकि वर्तमान समय में प्रायः देखा जाता कि बी.एड. के महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों का कोई न कोई लक्ष्य जरूर होता है लेकिन लक्ष्यों व उद्देश्यों में अन्तर जरूर होता है। इस कारण उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं व उपलब्धि अभिप्रेरणा में भी अन्तर होता है। यह अन्तर कितना है इसका पता शोध के द्वारा आंकलन करके ही ज्ञात किया जा सकता है।

'सा विद्या या विमुक्ते', तमसो मा ज्योतिर्गमय अर्थात् ''शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो जो हमें बुराईयों से मुक्त कर दे जो समाज के हित में न हो जो व्यक्ति को अंधेरे से उजाले की ओर ले जाये।''

शिक्षा मनुष्य में शाश्चत मूल्यों के निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त मानसिक व आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। इससे वह समाज का एक उत्तरदायी घटक का प्रखर एवं चरित्र सम्पन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करता है तथा अपनी संस्कृति व सभ्यता को पुर्नजीवित व पुर्नस्थापित करने के लिए प्रेरित होता है।

आज समाज के हर पहलू में परिवर्तन दृष्टिगोचर है तथा समाज में बंटे समुदाय व समुदाय में बंटे वर्ण एक–दूसरे से प्रभावित हो रहे हैं व एक–दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं। जबकि प्रत्येक वर्ण अपनी सीमाओं अपनी परम्पराओं को संरक्षित बनाए रखना चाहते हैं। आज समाज के प्रत्येक वर्ण के पारिवारिक संबंधों, सामाजिक संबंधों व उनके सांस्कृतिक जीवन का पश्चिमीकरण हो रहा है व हम इस विषय से बिल्कुल विमुख हैं कि हमारा अतीत बना या वे भविष्य बना होने वाला है ?

अतः इस बात की आवश्यकता महसूस की गई कि राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसायिक दबाव एवं कार्यदुश्चिंता का अध्ययन किया जाये। इसलिए शोधकर्ती द्वारा प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया है।

शोध का निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध का प्रथम उद्देश्य बी.एड. के महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन करना। उक्त उद्देश्य की प्राप्ति हेतु शैक्षिक आकांक्षा पर बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पुरूष व महिलाओं द्वारा प्रापत प्रतिक्रियाओं का निर्धारित आधार पर अंकन करने के उपरान्त प्राप्तांकों के समूह के लिए मध्यमानों की गणना की गई।

शोधकर्ता द्वारा शैक्षिक आकांक्षा व उपलब्धि अभिप्रेरणा को लेकर जोधपुर शहर व जोधपुर शहर के आस–पास के ग्रामीण क्षेत्रों पर अध्ययन किया गया। जिसमें जोधपुर शहर की 200 महिला बी.एड. की प्रशिक्षणार्थियों व 200 बी.एड. के पुरूष प्रशिक्षणार्थियों अर्थात् कुल 400 प्रशिक्षणार्थियों को शामिल किया गया। शहरी क्षेत्र में शैक्षिक आकांक्षा के स्तर का पता लगाने के लिए 100 महिला प्रशिक्षणार्थी व 100 पुरूष प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया।

जिसमें यह निष्कर्ष निकाला गया कि बी.एड. के शहरी क्षेत्र के पुरूष प्रशिक्षणार्थियों व महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शैक्षिक आकांक्षा के बाद शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. के पुरूष व महिला प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा को लेकर तुलनात्म्क अध्ययन किया गया। इस कार्य हेतु पहले शहरी क्षेत्र के 100 पुरूष प्रशिक्षणार्थियों व 100 बी.एड. के महिला प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया। जिसमें यह निष्कर्ष निकाला गया कि बी.एड. के पुरूष व महिला प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं है।

संदर्भ ग्रन्थ :–

सुखिया व मल्होत्रा : शैक्षिक अनुसंधान के मूल्य
गैरीसन : शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली
सिंह के.एस. : मैथोडॉलोजी ऑफ रिसर्च इन एज्युकेशन
डॉ. एस रावत : शिक्षा मनोविज्ञान की नई रूपरेखा
डॉ. एस.एस. श्रीवास्तव : भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका
गेरीट एच. ई. : स्टेटिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजुकेशन, न्यूयोर्क
सुखिया व मल्होत्रा : शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, आगरा
माथुर : शिक्षा मनोविज्ञान
बुच एन.वी. दॉलः द सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन

दसवीं कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की योग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

मोहनलाल
शोधार्थी
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राजस्थान)

प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली
शोध पर्यवेक्षक
प्रोफेसर शिक्षा संकाय
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)

सारांश–

शोध का उद्देश्य दसवीं कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की योग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है। आधुनिक जीवन की तनावपूर्ण परिस्थितियों में योग का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। विद्यालय स्तर पर योग–शिक्षा को अपनाने से विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक विकास में सकारात्मक प्रभाव देखा जा सकता है। इस अध्ययन के अंतर्गत यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया कि विद्यार्थी योग को किस दृष्टि से देखते हैं – क्या वे इसे केवल शारीरिक व्यायाम मानते हैं या जीवनशैली का एक अंग समझते हैं।

शोध हेतु विभिन्न विद्यालयों के कक्षा 10वीं के 100 विद्यार्थियों (लड़के एवं लड़कियाँ) का चयन यादृच्छिक नमूना पद्धति से किया गया। डेटा संकलन के लिए "योग के प्रति अभिवृत्ति मापनी" का उपयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों – औसत (Mean), मानक विचलन (SD) एवं 't' परीक्षण के माध्यम से किया गया।

परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि अधिकांश विद्यार्थियों की योग के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पाई गई। लड़कियों की अभिवृत्ति लड़कों की अपेक्षा कुछ अधिक सकारात्मक रही। वहीं शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा ग्रामीण विद्यार्थियों में योग के प्रति अधिक रुचि देखी गई। अतः यह कहा जा सकता है कि विद्यालय स्तर पर योग शिक्षा का समावेश विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। यदि विद्यालयों में योग को नियमित रूप से पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए, तो विद्यार्थियों में अनुशासन, एकाग्रता तथा मानसिक संतुलन जैसी गुणों का विकास संभव है।

मुख्य शब्दावली

1. योग – शरीर, मन और आत्मा के संतुलन का भारतीय अनुशासनय शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास का माध्यम।

2. अभिवृत्ति – किसी व्यक्ति की किसी विषय, वस्तु या क्रिया के प्रति झुकाव या दृष्टिकोण, जो उसके व्यवहार को प्रभावित करता है।

3. विद्यार्थी – अध्ययनरत व्यक्तिय यहाँ दसवीं कक्षा तक के छात्र–छात्राएँ।

4. योग शिक्षा – विद्यालयों में योगासनों, प्राणायाम, ध्यान आदि का शिक्षण एवं प्रशिक्षण प्रक्रिया।

5. सकारात्मक अभिवृत्ति – योग के प्रति अनुकूल, स्वीकारात्मक और उत्साही दृष्टिकोण।

6. नकारात्मक अभिवृत्ति – योग के प्रति उदासीनता या अस्वीकारात्मक दृष्टिकोण।

7. मानसिक स्वास्थ – व्यक्ति की भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक स्थिति, जो योग के अभ्यास से सुदृढ़ होती है।

8. शारीरिक स्वास्थ्य – शरीर की कार्यक्षमता एवं ऊर्जा का स्तर, जो योगाभ्यास से बेहतर होता है।

9. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी – निवास स्थान के आधार पर विद्यार्थियों के समूहय जिनकी योग के प्रति दृष्टि भिन्न हो सकती है।

10. सर्वांगीण विकास – विद्यार्थी के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और नैतिक पक्षों का समग्र विकास।

प्रस्तावना –

भारत योग की जन्मभूमि है। प्राचीन काल से ही योग भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। योग न केवल शारीरिक व्यायाम है, बल्कि यह शरीर, मन और आत्मा को संतुलित करने की एक समग्र जीवन पद्धति है। आधुनिक युग की भागदौड़, तनाव, प्रतिस्पर्धा और असंतुलित जीवनशैली ने मानव को मानसिक व शारीरिक रूप से कमजोर बना दिया है। ऐसे समय में योग ही एक ऐसा माध्यम है जो व्यक्ति को शांति, स्थिरता और संतुलन प्रदान कर सकता है।

विद्यालय स्तर पर योग शिक्षा का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। बालक जीवन का यह समय मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक और शारीरिक विकास का संवेदनशील चरण होता है। यदि इसी अवस्था में विद्यार्थियों को योग का अभ्यास कराया जाए, तो उनमें एकाग्रता, अनुशासन, आत्मविश्वास तथा स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता का विकास किया जा सकता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में यद्यपि योग को सहायक गतिविधि के रूप में स्थान दिया गया है, फिर भी विद्यार्थियों में इसके प्रति रुचि और अभिवृत्ति अलग–अलग पाई जाती है। कुछ विद्यार्थी योग को केवल व्यायाम समझते हैं, जबकि कुछ इसे जीवनशैली और मानसिक शांति का माध्यम मानते हैं।

अतः यह आवश्यक है कि यह अध्ययन किया जाए कि दसवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों की योग के प्रति अभिवृत्ति कैसी है – क्या वे योग को अपनाने के लिए तत्पर हैं, या केवल इसे एक औपचारिक गतिविधि के रूप में देखते हैं। इस अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों की योग के प्रति सोच, दृष्टिकोण और व्यवहार का विश्लेषण किया जा सकेगा, जिससे भविष्य में योग शिक्षा को और अधिक प्रभावी रूप से लागू करने में सहायता मिलेगी।

शोध का उद्देश्य

शोध का उद्देश्य किसी विशेष विषय पर व्यवस्थित जानकारी प्राप्त करना और निष्कर्ष निकालना होता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य दसवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों की योग के प्रति अभिवृत्ति का मूल्यांकन करना है। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि विद्यार्थी योग को किस दृष्टिकोण से देखते हैं कृ क्या वे इसे जीवन का आवश्यक अंग मानते हैं या केवल शारीरिक व्यायाम के रूप में देखते हैं।

शोध के उद्देश्यों में निम्नलिखित हैं –

1. विद्यार्थियों की योग के प्रति दृष्टिकोण का मूल्यांकन – यह जानने के लिए कि योग को अपनाने और अभ्यास करने में विद्यार्थियों की रूचि और लगाव किस स्तर का है।
2. लिंग के अनुसार अंतर का अध्ययन – यह देखने के लिए कि लड़के और लड़कियों के योग के प्रति दृष्टिकोण में कोई भिन्नता है या नहीं।
3. विद्यालय स्थान (ग्रामीणध्शहरी) के आधार पर तुलना – यह पता लगाने के लिए कि निवास स्थान विद्यार्थियों की योग के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करता है या नहीं।
4. योग के महत्व और लाभ के प्रति जागरूकता – यह समझने के लिए कि विद्यार्थी योग के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक लाभों के प्रति कितने जागरूक हैं।
5. विद्यालयों में योग शिक्षा के प्रभाव का मूल्यांकन – यह ज्ञात करने के लिए कि नियमित योग शिक्षा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में कितना योगदान करती है।

इस प्रकार, शोध उद्देश्य विद्यार्थियों की योग के प्रति मानसिकता, व्यवहार और जागरूकता को समझने और उनके विकास में योग शिक्षा की भूमिका को स्पष्ट करने में सहायक होते हैं।

शोध की परिकल्पना –

शोध की परिकल्पना वह अनुमान या प्रत्याशित निष्कर्ष होता है। जिसे शोधकर्ता प्रारंभिक अध्ययन या उपलब्ध सैद्धांतिक ज्ञान के आधार पर मानता है और शोध के माध्यम से सत्यापित करता है। इस शोध में मुख्य रूप से निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं–

1. मुख्य परिकल्पना–
दसवीं कक्षा तक अध्ययनरत विद्यार्थियों की योग के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पाई जाएगी।
2. उप–परिकल्पनाएँ –

लिंग के आधार परः लड़कियों की योग के प्रति अभिवृत्ति लड़कों की तुलना में अधिक सकारात्मक होगी। विद्यालय स्थान के आधार परः ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की योग के प्रति अभिवृत्ति शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सकारात्मक होगी।

योग शिक्षा के अनुभव के आधार परः जिन विद्यार्थियों को नियमित रूप से विद्यालय में योग शिक्षा प्राप्त होती है, उनकी योग के प्रति अभिवृत्ति उन विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सकारात्मक होगी, जिन्हें योग शिक्षा नियमित रूप से नहीं मिलती।

3. शून्य परिकल्पना–

शून्य परिकल्पना में यह मानकर चलते हैं कि हम जिन दो चरों के मत संबंध का दिन करने जा रहे हैं उनमें कोई संबंध नहीं है अथवा किन्हीं दो समूह में किसी विशेष चर्चा के आधार पर कोई अंतर नहीं है इस प्रकार की परिकल्पना में कोई धनात्मक कथन नहीं होता है इस प्रकार सुनने पर कल्पना की निम्न विशेषताएं पाई जाती है–

1. इस प्रकार की परिपूर्ण निर्देश रहित होती है
2. प्रशिक्षण में सरलता होती है
3. शून्य परिकल्पना को स्वीकार या अस्वीकार करने के लिए शोधकर्ता को आहत नहीं होना पड़ता है।
4. इसमें द्विपक्षीय पहचान का प्रयोग करते हैं अर्थात दो संभावनाओं पर समान दृष्टि रहती है।

शोध का औचित्य

आज के आधुनिक जीवन में तनाव, असंतुलित जीवनशैली और मानसिक दबाव के कारण विद्यार्थियों का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है। ऐसे समय में योग न केवल शारीरिक व्यायाम का माध्यम है, बल्कि यह मानसिक स्थिरता, एकाग्रता, अनुशासन और स्वास्थ्य के लिए एक समग्र साधन भी है।
इस शोध का औचित्य निम्नलिखित है–

1. शैक्षणिक एवं मानसिक विकास में योगदान–

यह अध्ययन यह समझने में सहायक होगा कि योग विद्यार्थियों के मानसिक संतुलन, ध्यान और स्मरण शक्ति में किस हद तक योगदान देता है।

2. योग शिक्षा की प्रभावशीलता का मूल्यांकन–

शोध से यह ज्ञात होगा कि विद्यालयों में योग शिक्षा विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और व्यवहार पर कितना सकारात्मक प्रभाव डालती है।

3. नीति निर्माण एवं पाठ्यक्रम सुधार में सहायक–

शोध के परिणाम नीति निर्माता, शिक्षक और विद्यालय प्रशासन को यह निर्णय लेने में मदद करेंगे कि योग को पाठ्यक्रम में और अधिक प्रभावी रूप से शामिल किया जाए।

4. सकारात्मक जीवनशैली के प्रचार में योगदान–

यह अध्ययन विद्यार्थियों को योग के महत्व और लाभ के प्रति जागरूक करेगा, जिससे उनकी जीवनशैली स्वस्थ और अनुशासित बनेगी।

5. भविष्य के शोध के लिए आधार–

यह शोध भविष्य में योग और शिक्षा के क्षेत्र में किए जाने वाले अन्य अनुसंधानों के लिए आधार और मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

इस प्रकार यह शोध न केवल विद्यार्थियों की योग के प्रति अभिवृत्ति को समझने में सहायक है, बल्कि विद्यालय स्तर पर योग शिक्षा की प्रभावशीलता और उसके लाभों को उजागर करने में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

शोध का निष्कर्ष

इस अध्ययन का उद्देश्य दसवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों की योग के प्रति अभिवृत्ति का मूल्यांकन करना था। प्राप्त परिणामों और विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष हैं–

1. सकारात्मक दृष्टिकोण की प्रधानता–

अधिकांश विद्यार्थियों की योग के प्रति सकारात्मक

अभिवृत्ति पाई गई। इसका अर्थ है कि वे योग को न केवल शारीरिक व्यायाम के रूप में, बल्कि मानसिक और सामाजिक विकास के लिए भी उपयोगी मानते हैं।

2. लिंग के आधार पर अंतर–

अध्ययन में यह पाया गया कि लड़कियों की योग के प्रति दृष्टिकोण लड़कों की तुलना में अधिक सकारात्मक था। यह उनके अनुशासन, मानसिक संतुलन और स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता को दर्शाता है।

3. विद्यालय स्थान का प्रभाव–

ग्रामीण विद्यार्थियों की योग के प्रति अभिवृत्ति शहरी विद्यार्थियों की तुलना में थोड़ी अधिक सकारात्मक पाई गई। यह संकेत करता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में योग शिक्षा और परंपराओं के प्रति रुचि अधिक होती है।

4. योग शिक्षा का महत्व–

जिन विद्यार्थियों को नियमित रूप से विद्यालय में योग शिक्षा प्राप्त होती है, उनकी योग के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक पाई गई। यह स्पष्ट करता है कि नियमित योग शिक्षा विद्यार्थियों के मानसिक, शारीरिक और सामाजिक विकास में सहायक होती है।

5. समग्र निष्कर्ष–

इस शोध से यह प्रमाणित होता है कि योग शिक्षा को विद्यालय स्तर पर नियमित रूप से शामिल करना विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत लाभकारी है। इससे उनके जीवन में अनुशासन, एकाग्रता, स्वास्थ्य और मानसिक स्थिरता को बढ़ावा मिलता है।

विद्यालयों में योग को केवल सहायक गतिविधि न मानकर, इसे नियमित पाठ्यक्रम का अभिन्न हिस्सा बनाया जाना चाहिए। यह न केवल विद्यार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य को सुधारता है, बल्कि मानसिक और नैतिक विकास में भी सहायक होता है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. भारतीय योग परिषद. (2024). योग और मानसिक स्वास्थ्यरू एक परिचय. नई दिल्लीरू भारत योग परिषद।

2. कुमार, एस. (2024). विद्यालय स्तर पर योग शिक्षा और विद्यार्थियों का विकास. जयपुररू शिक्षा प्रकाशन।

3. शर्मा, आर. – वर्मा, पी. (2023). "दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों में योग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन". भारतीय शिक्षा जर्नल, 45(3), 56–62।

4. रॉय, एन. (2023). योग और तनाव प्रबंधन. कोलकातारू जीवन विज्ञान प्रकाशन।

5. कौशल, डी. (2022). "विद्यालय में योग शिक्षारू प्रभाव और परिणाम". शोध और शिक्षा पत्रिका, 12(2), 23–31।

6. सिंह, वी. (2022). योगरू शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए मार्गदर्शक. लुधियानारू ज्ञान प्रकाशन।

7. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ योग. (2021). योग शिक्षा के मानक और पाठ्यक्रम दिशानिर्देश. नई दिल्लीरू स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय

8. गुप्ता, ए. – चौधरी, आर. (2020). "विद्यार्थियों में योग के अभ्यास और अभिवृत्ति का सम्बन्ध". जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 9(1), 45–53।

संदीप जोशी कृत शिक्षा में नवाचार
(नई शिक्षा नीति 2020 में समाहित भारतीय संस्कृति, शिक्षा एवं सभ्यता के संदर्भ में)

जहीरखान
शोधार्थी
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राजस्थान)

प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली
शोध पर्यवेक्षक
प्रोफेसर शिक्षा संकाय
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)

सारांश –

वर्तमान समय में व्यक्ति ने अपने जीवन को इतना संकुचित कर दिया है कि किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को परखना कठिन हो गया है। जिस समाज में नैतिकता का ह्रास हो जाता है। वह समाज पतन की ओर अग्रसर हो जाता है। मूल्य परम्पराएँ अथवा परिवारिक रिश्ते सब कुछ बदल चुके हैं। व्यक्ति अपनी ही दुनिया में खोया हुआ है। दूसरे की ओर देखने की फुर्सत ही नहीं। ऐसे समाज में वह व्यक्ति स्वयं के व्यक्तित्व की पहचान करे तो शायद यही बहुत बड़ी उपलब्धि है।

नैतिक मूल्यों का आचरण में उतारने के लिए आवश्यक है कि परिवार के सदस्य तथा शिक्षक अपने व्यक्तित्व के माध्यम से तथा दूसरे प्रभावशाली तरीके आदि से वांछित गुणों को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सन्निहित कराएँ। इस स्थिति में शिक्षा के मात्र पाठ्यक्रम के दायरे में सीमित नहीं रखा जाना वरन् इसे नई भूमिकाओं के संदर्भ में देखा होगा व मूल्य आधारित शिक्षा को अपनाना होगा। इस शिक्षा के लिए प्रथम अनिवार्यता है कि वह चरित्र में सदाचार के साथ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास करे। क्योंकि सम्पत्ति जुटाने की अंधी दौड़ में, मशीनीकरण के जंगल में, अनुभूतियों की चकाचौंध में, मानवता लुप्त होती जा रही है। अतः प्राचीन काल से ही हमारे ऋषि मुनियों ने मनुष्य को सुखी बनाने के लिए आत्मा और शरीर के स्वास्थ्य को समान महत्व दिया है। शरीर, इन्द्रिया, मन तथा आत्मा की प्रफुल्लत पूर्ण स्थिति ही स्वास्थ्य है। आज शिक्षा जगत अनेक कारणों के नव चिंतन तथा अनुपम प्रयोगों से प्रभावित हुआ है। स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी आदि ने विद्यार्थियों को शिक्षा का महत्व बताया है। विद्यार्थी भावी राष्ट्र निर्माता है। अतः विद्यार्थियों के विकास में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

मुख्य शब्दावली–

शैक्षिक नवाचार ,सामाजिक प्रभाव ,सांस्कृतिक प्रभाव, मनोवैज्ञानिक प्रभाव, सृजनात्मक प्रभाव, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दिशा निर्देशों के आलोक में विभिन्न नवाचारों का अध्ययन ।

प्रस्तावना–

भारतवर्ष ज्ञान, संस्कृति और सभ्यता की प्राचीन परंपरा वाला देश है। यहाँ की शिक्षा प्रणाली सदैव मानवता, नैतिकता और सर्वांगीण विकास पर आधारित रही है। समय के साथ शिक्षा के स्वरूप और आवश्यकताओं में परिवर्तन आया है, किंतु शिक्षा का मूल उद्देश्य – "सार्थक जीवन एवं समाज निर्माण" – आज भी उतना ही प्रासंगिक है। इसी संदर्भ में डॉ. संदीप जोशी के शिक्षा में किए गए नवाचार विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, क्योंकि उन्होंने भारतीय संस्कृति, परंपरा और आधुनिक शिक्षा के समन्वय का मार्ग प्रस्तुत किया है।

नई शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने भारतीय शिक्षा जगत में एक नवप्रवर्तन का द्वार खोला है। यह नीति न केवल ज्ञान और कौशल के संतुलित विकास पर बल देती है, बल्कि भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को भी शिक्षा के केंद्र में लाने का प्रयास करती है। इस नीति की

भावना में "भारतीयता" का गहरा निहितार्थ है। जहाँ शिक्षा केवल रोजगार का माध्यम नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और राष्ट्र निर्माण का आधार बनती है।

डॉ. संदीप जोशी के नवाचार इसी दिशा में एक प्रेरक कदम हैं। उन्होंने शिक्षा को भारतीय जीवन मूल्यों से जोड़ते हुए, आधुनिक तकनीकी और सामाजिक परिवर्तनों के अनुरूप पुनर्परिभाषित किया है। उनके कार्यों में नई शिक्षा नीति की मूल भावना – "राष्ट्र निर्माण हेतु सर्वांगीण, मूल्य आधारित, एवं व्यावहारिक शिक्षा" – स्पष्ट रूप से झलकती है।

शोध का उद्देश्य–

इस शोध का मुख्य उद्देश्य डॉ. संदीप जोशी द्वारा शिक्षा क्षेत्र में किए गए नवाचारों का अध्ययन करना है, विशेष रूप से उन नवाचारों का, जो नई शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों तथा भारतीय संस्कृति, शिक्षा और सभ्यता के मूल तत्वों से जुड़ते हैं। वर्तमान युग में जहाँ शिक्षा का स्वरूप तेजी से बदल रहा है, वहीं यह शोध यह समझने का प्रयास करता है कि पारंपरिक भारतीय मूल्यों और आधुनिक शैक्षिक दृष्टिकोण का संतुलन कैसे स्थापित किया जा सकता है।

शोध के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. संदीप जोशी के शैक्षिक नवाचारों का अध्ययन करना – उनके द्वारा विकसित शिक्षण पद्धतियों, कार्यक्रमों तथा शैक्षिक प्रयोगों का विश्लेषण करना।
2. नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में उनके योगदान का मूल्यांकन करना – यह जानना कि उनके नवाचार किस प्रकार नीति की भावना एवं उद्देश्यों से मेल खाते हैं।
3. भारतीय संस्कृति, शिक्षा एवं सभ्यता से उनके विचारों का संबंध स्थापित करना – यह अध्ययन करना कि उन्होंने भारतीय परंपराओं, जीवन मूल्यों और आध्यात्मिक दृष्टिकोण को शिक्षा में कैसे समाहित किया।
4. शिक्षा में नवाचार के व्यावहारिक प्रभावों का परीक्षण करना – यह देखना कि उनके नवाचारों से शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया, शिक्षक–विद्यार्थी संबंध, और समाज पर क्या सकारात्मक प्रभाव पड़े हैं।
5. भविष्य की शिक्षा नीति और पद्धतियों के लिए सुझाव प्रस्तुत करना – उनके नवाचारों के आधार पर शिक्षा के सतत विकास हेतु उपयोगी सिफारिशें देना।

इस प्रकार, यह शोध केवल संदीप जोशी के कार्यों का मूल्यांकन नहीं, बल्कि भारतीय दृष्टिकोण से शिक्षा में नवाचार की दिशा तय करने का एक प्रयास भी है, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए एक संतुलित, मूल्यनिष्ठ और प्रगतिशील शिक्षा प्रणाली का मार्ग प्रशस्त हो सके।

शोध की परिकल्पना–

शोध की परिकल्पना वह तर्कसंगत अनुमान या वैचारिक धारणा होती है, जिसके आधार पर शोध कार्य की दिशा तय की जाती है। यह अध्ययन इस विश्वास पर आधारित है कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति, मूल्यों और चरित्र निर्माण का साधन है। इसी दृष्टिकोण से संदीप जोशी के शैक्षिक नवाचारों का विश्लेषण किया गया है।

शोध की प्रमुख परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

1. यह परिकल्पना की जाती है कि संदीप जोशी के नवाचार नई शिक्षा नीति 2020 की भावना और उद्देश्यों के अनुरूप हैं तथा उन्होंने भारतीय संस्कृति और सभ्यता के मूल तत्वों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में सफलतापूर्वक समाहित किया है।
2. यह माना जाता है कि उनके शैक्षिक नवाचारों से शिक्षा में मूल्यपरकता, सृजनात्मकता और व्यावहारिकता को बढ़ावा मिला है, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव हुआ है।
3. यह परिकल्पना की जाती है कि जोशी द्वारा प्रस्तुत शिक्षण पद्धतियाँ भारतीय परंपरा और आधुनिक तकनीकी शिक्षा के बीच सेतु का कार्य करती हैं
4. यह भी अनुमान किया जाता है कि उनके नवाचारों का प्रभाव न केवल शिक्षण संस्थानों में, बल्कि समाज के सांस्कृतिक और नैतिक परिवेश पर भी सकारात्मक रूप से पड़ा है।

5. अंततः यह परिकल्पना की जाती है कि यदि संदीप जोशी के शैक्षिक नवाचारों को व्यापक रूप से अपनाया जाए, तो नई शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों – भारतीयता, समग्रता और नवाचार – की प्राप्ति अधिक प्रभावी ढंग से की जा सकती है।

शोध का औचित्य–

वर्तमान युग में शिक्षा प्रणाली अनेक परिवर्तनों के दौर से गुजर रही है। ज्ञान के साथ–साथ कौशल, नैतिकता और सांस्कृतिक मूल्यों का संतुलन बनाए रखना शिक्षा के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया है। ऐसे समय में यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षा केवल सूचना का संग्रह न होकर, व्यक्ति और समाज के समग्र विकास का माध्यम बने। इसी संदर्भ में डॉ. संदीप जोशी के शैक्षिक नवाचारों का अध्ययन करना अत्यंत प्रासंगिक और औचित्यपूर्ण है। शोध का औचित्य निम्नलिखित है –

1. नई शिक्षा नीति 2020 की प्रासंगिकता के संदर्भ में – यह नीति भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों और व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित एक समग्र शिक्षा प्रणाली का समर्थन करती है। संदीप जोशी के नवाचार इसी दिशा में एक प्रेरणास्रोत हैं, अतः उनका अध्ययन नीति की व्यवहारिकता को समझने में सहायक है।

2. भारतीय संस्कृति और शिक्षा के पुनर्समायोजन की आवश्यकता – आज की शिक्षा प्रणाली में पाश्चात्य प्रभाव के कारण भारतीय जीवन–मूल्यों का क्षय होता जा रहा है। ऐसे में यह शोध यह स्पष्ट करता है कि भारतीय संस्कृति को आधुनिक शिक्षा में किस प्रकार समाहित किया जा सकता है।

3. नवाचार के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार – डॉ. जोशी के प्रयोगों से यह समझने का अवसर मिलता है कि कैसे सृजनात्मक और व्यावहारिक नवाचारों से शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और छात्र–केंद्रित बनाया जा सकता है।

4. शिक्षक और शिक्षार्थी की भूमिका में परिवर्तन के संदर्भ में – उनके कार्य यह दर्शाते हैं कि शिक्षक केवल ज्ञान प्रदाता नहीं, बल्कि संस्कार और जीवन मूल्यों के संवाहक भी हैं। यह दृष्टिकोण आज की शिक्षा के पुनर्गठन के लिए अत्यंत उपयोगी है।

5. समाज एवं राष्ट्र निर्माण की दिशा में योगदान – यह शोध यह प्रमाणित करने का प्रयास करता है कि मूल्यनिष्ठ एवं संस्कृति–आधारित शिक्षा ही सशक्त, नैतिक और आत्मनिर्भर राष्ट्र के निर्माण का आधार बन सकती है।

इस प्रकार, यह शोध औचित्यपूर्ण है क्योंकि यह भारतीय परंपरा, नई शिक्षा नीति, और आधुनिक शैक्षिक नवाचारों कृ इन तीनों के समन्वय का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है। यह न केवल शैक्षणिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय विकास की दृष्टि से भी अत्यंत सार्थक है।

शोध का निष्कर्ष–

इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि संदीप जोशी के शिक्षा संबंधी नवाचार भारतीय संस्कृति, परंपरा और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के बीच एक सशक्त सेतु का कार्य करते हैं। उन्होंने यह सिद्ध किया है कि शिक्षा तभी सार्थक होती है जब वह ज्ञान, मूल्य और व्यवहार – तीनों स्तरों पर व्यक्ति का समग्र विकास करती है।

नई शिक्षा नीति 2020 की भावना के अनुरूप, डॉ. जोशी के नवाचार शिक्षा को केवल रोजगारोन्मुख नहीं, बल्कि जीवनोन्मुख बनाते हैं। उन्होंने शिक्षण को भारतीय दृष्टिकोण से पुनर्परिभाषित करते हुए उसमें राष्ट्रभक्ति, नैतिकता, मानवता और पर्यावरण चेतना जैसे मूल्यों को समाहित किया है। जो निम्न प्रकार है

1. भारतीय संस्कृति और आधुनिक शिक्षा का समन्वय – जोशी ने भारतीय सांस्कृतिक धरोहर, परंपराओं और आध्यात्मिक मूल्यों को आधुनिक शिक्षण पद्धतियों से जोड़कर शिक्षा को अधिक जीवंत और प्रासंगिक बनाया है।

2. नई शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों की पूर्ति में योगदान – उनके नवाचार नीति की मूल भावना – समग्र शिक्षा, मूल्यपरकता और नवाचार – को व्यवहारिक रूप में साकार

करते हैं।

3. शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में नवाचार का प्रभाव – उनके प्रयासों से शिक्षा अधिक छात्र–केंद्रित, अनुभवात्मक और सृजनात्मक बनी है, जिससे विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी और सीखने की क्षमता में वृद्धि हुई है।

4. शिक्षक की भूमिका में परिवर्तन – जोशी के विचारों से शिक्षक केवल ज्ञानदाता न रहकर मार्गदर्शक और प्रेरक के रूप में उभरे हैं, जो विद्यार्थियों में संस्कार और नेतृत्व क्षमता का विकास करते हैं।

5. सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान में योगदान – उनके नवाचारों ने यह दर्शाया कि मूल्यनिष्ठ शिक्षा से न केवल व्यक्ति, बल्कि समाज और राष्ट्र का विकास भी संभव है। अंततः, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि संदीप जोशी के शैक्षिक नवाचार शिक्षा के भारतीय मॉडल को एक नई दिशा प्रदान करते हैं। यह मॉडल न केवल नई शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को मूर्त रूप देता है, बल्कि भविष्य की शिक्षा प्रणाली के लिए एक प्रेरणादायक आधार भी प्रस्तुत करता है –ऐसी शिक्षा जो भारतीय, आधुनिक और मानवीय तीनों गुणों का समावेश करती है।

संदर्भ ग्रंथ–

शोध में विभिन्न पुस्तकों, शोधपत्रों, सरकारी दस्तावेजों तथा ऑनलाइन स्रोतों का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत संदर्भ ग्रंथ सूची निम्न प्रकार है –

1.नई शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

2.यूनेस्को (2020). हमारे भविष्य की एक साथ पुनर्कल्पनाः शिक्षा के लिए एक नया सामाजिक अनुबंध, पेरिस।

3.पांडेय, गोविंद (2020). भारतीय दर्शन और शिक्षा के मूल्य, वाराणसीरू चौखंबा विद्या भवन।

4.शिक्षा मंत्रालय (2021). NEP 2020 के लिए कार्यान्वयन योजना, भारत सरकार

5.सिंह, अनीता (2021). एनईपी 2020 के संदर्भ में मूल्य–आधारित शिक्षा, जर्नल ऑफ एजुकेशनल इनोवेशन, खंड 5, अंक 3।

6.राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) (2021). मूल्य शिक्षा पर स्थिति पत्र, नई दिल्ली।

7. जोशी, संदीप (2021). भारतीय शिक्षा का पुनरुत्थान रू संस्कृति और नवाचार के आयाम, भोपाल : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन।

8. जोशी, संदीप (2022). भारतीय शिक्षा प्रणाली में नवीन अभ्यास, नई दिल्ली : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद।

9. शर्मा, रमेश (2022). नई शिक्षा नीति और भारतीय संस्कृति, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।

10. जोशी, संदीप (2023). भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा : एक व्यावहारिक दृष्टिकोण, नागपुर : साधना प्रकाशन।

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा एवं व्यवसायिक आकांक्षा के संदर्भ में अध्ययन

भगवान सिंह राठौड़
शोधार्थी
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राजस्थान)

प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली
शोध पर्यवेक्षक
प्रोफेसर शिक्षा संकाय
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)

सारांश

यह शोध "उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा एवं व्यवसायिक आकांक्षा के संदर्भ में अध्ययन" पर आधारित है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा प्राप्त करने की इच्छाएँ (शैक्षिक आकांक्षा) तथा भविष्य में रोजगार या व्यवसाय से संबंधित अभिलाषाएँ (व्यवसायिक आकांक्षा) कैसी हैं, किन कारकों से प्रभावित होती हैं, और इनमें किस प्रकार के भिन्नताएँ पाई जाती हैं।

शोध में यह पाया गया कि दिव्यांग विद्यार्थी भी अन्य विद्यार्थियों की भाँति उच्च शिक्षा प्राप्त करने की तीव्र आकांक्षा रखते हैं, किंतु शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक परिस्थितियाँ उनके मार्ग में बाधा बनती हैं। समाज और परिवार का सहयोग, विद्यालय का वातावरण, शिक्षकों का प्रोत्साहन तथा शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता उनके आत्मविश्वास और आकांक्षाओं को सशक्त बनाती है।

शोध में यह भी स्पष्ट हुआ कि विभिन्न प्रकार की दिव्यांगता (दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित, चालबाधित आदि) के अनुसार विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाओं में कुछ अंतर देखने को मिलता है। लड़कियों और लड़कों की आकांक्षाओं में भी लिंगानुसार भिन्नता पाई गई।

समग्रतः यह निष्कर्ष निकला कि यदि दिव्यांग विद्यार्थियों को समुचित मार्गदर्शन, प्रोत्साहन, और समान अवसर दिए जाएँ, तो वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने एवं उचित व्यवसाय में सफल होने की पूर्ण क्षमता रखते हैं। अतः उनके सर्वांगीण विकास के लिए समावेशी शिक्षा, कैरियर मार्गदर्शन, तथा विशेष सहयोग सेवाओं का विस्तार अत्यावश्यक है।

मुख्य शब्दावली

1. दिव्यांग विद्यार्थी – ऐसे विद्यार्थी जो शारीरिक, मानसिक, दृष्टि, श्रवण या किसी अन्य प्रकार की अक्षमता के बावजूद शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।
2. उच्च माध्यमिक स्तर – कक्षा 11वीं एवं 12वीं का वह शैक्षिक स्तर जहाँ विद्यार्थी उच्च शिक्षा अथवा व्यवसायिक मार्ग की तैयारी करते हैं।
3. शैक्षिक आकांक्षा – विद्यार्थी की आगे की शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा, लक्ष्य या अभिलाषाय जैसे– स्नातक, परास्नातक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने की योजना।
4. व्यवसायिक आकांक्षा – विद्यार्थी की भविष्य में किसी विशेष पेशे, नौकरी या व्यवसाय को अपनाने की आकांक्षा।
5. समावेशी शिक्षा – वह शैक्षिक व्यवस्था जिसमें दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थी एक ही वातावरण में समान अवसरों के साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं।
6. मार्गदर्शन एवं परामर्श – विद्यार्थियों को उनके रुचि, क्षमता और अवसरों के अनुरूप शिक्षा व व्यवसायिक दिशा प्रदान करने की प्रक्रिया।
7. समान अवसर – दिव्यांग विद्यार्थियों को शिक्षा, रोजगार और सामाजिक भागीदारी में अन्य विद्यार्थियों के समान अधिकार और सुविधाएँ प्रदान करना।
8. आकांक्षा पर प्रभावकारी कारक – पारिवारिक पृष्ठभूमि,

सामाजिक दृष्टिकोण, आर्थिक स्थिति, विद्यालयीय वातावरण और व्यक्तिगत आत्मविश्वास जैसे तत्व जो आकांक्षाओं को प्रभावित करते है।

प्रस्तावना

शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है और यह मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार मानी जाती है। शिक्षा न केवल व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में सहायक होती है, बल्कि यह उसके भविष्य के जीवन की दिशा भी निर्धारित करती है। विशेष रूप से दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए शिक्षा आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने का माध्यम बनती है।

भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ 'समावेशी शिक्षा' की अवधारणा को निरंतर बल दिया जा रहा है, वहाँ दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक और व्यवसायिक आकांक्षाओं को समझना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। उच्च माध्यमिक स्तर वह अवस्था होती है जहाँ विद्यार्थी अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयकृजैसे उच्च शिक्षा के चयन और भविष्य के पेशे से जुड़ी योजनाएँ बनाते हैं। इस स्तर पर विद्यार्थियों की आकांक्षाएँ उनके जीवन की दिशा तय करती हैं।

दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाएँ अनेक कारकों से प्रभावित होती हैं—जैसे पारिवारिक वातावरण, आर्थिक स्थिति, विद्यालय की सुविधाएँ, शिक्षकों का प्रोत्साहन, समाज का दृष्टिकोण और व्यक्तिगत आत्मविश्वास। यदि इन्हें सही मार्गदर्शन, प्रोत्साहन और संसाधन प्राप्त हों, तो वे भी अपने लक्ष्यों को उसी दक्षता से प्राप्त कर सकते हैं, जैसे अन्य विद्यार्थी।

वर्तमान शोध इसी संदर्भ में यह जानने का प्रयास करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाएँ किस स्तर की हैं, वे किन कारकों से प्रभावित होती हैं, और समाज व शिक्षा व्यवस्था में उनके प्रति कैसा दृष्टिकोण है। यह अध्ययन समावेशी शिक्षा के उद्देश्य को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

दिव्यांग विद्यार्थी शारीरिक या मानसिक चुनौतियों के बावजूद जब अपने भीतर के कौशल और योग्यताओं के बल पर किसी विशेष क्षेत्र में आगे बढ़ने की इच्छा प्रकट करते हैं, तो यह न केवल उनके आत्म—विश्वास का प्रतीक होती है, बल्कि समाज के समक्ष एक प्रेरणादायक उदाहरण भी प्रस्तुत करती है।

आज शिक्षा, तकनीकी और सरकारी योजनाओं की मदद से दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए अनेक व्यावसायिक अवसर उपलब्ध हो रहे हैं, लेकिन उनकी आकांक्षाओं को सही दिशा देने के लिए आवश्यक है कि हम उनके भीतर छिपी संभावनाओं को पहचानें, उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण, मार्गदर्शन एवं संसाधन उपलब्ध कराएं।

इस अध्ययन की भूमिका के रूप में यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाएं न केवल उनकी व्यक्तिगत उन्नति की कुंजी हैं, बल्कि एक समावेशी, समानतामूलक और सक्षम समाज के निर्माण की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम हैं।

भारत में दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाएं

शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का मूलभूत अधिकार है, जो उसकी संपूर्ण व्यक्तित्व विकास की नींव रखती है। दिव्यांग विद्यार्थियों के समान रूप से शिक्षण प्रक्रिया का आवश्यक है कि सभी वर्गों को गुणवत्तापूर्ण और सुलभ शिक्षा के अवसर प्रदान किए जाएं। भारत जैसे विकासशील देश में जहां सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक चुनौतियां मौजूद हैं, वहां दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं को समझना और उन्हें सही दिशा देना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा केवल एक डिग्री या प्रमाण पत्र प्राप्त करने तक सीमित नहीं होती, बल्कि आत्मनिर्भरता, आत्म—सम्मान, और समाज में समानजनक स्थान प्राप्त करने की भावना से भी प्रेरित होती है। यह आकांक्षाएं उनके जीवन को सार्थक बनाने के साथ—साथ समाज के समग्र विकास में भी योगदान देती हैं।

'भारत सरकार द्वारा' समावेशी शिक्षा, सर्व शिक्षा

अभियान तथा दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के अंतर्गत अनेक प्रयास किए गए हैं। इनका मुख्य उद्देश्य दिव्यांग छात्रों को मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली से जोड़ना और उन्हें शिक्षण के अनुकूल वातावरण प्रदान करना है। इसके बावजूद, सामाजिक भेदभाव, अधोसंरचनात्मक कमी, विशेष शिक्षकों का अभाव, तथा जागरूकता की कमी जैसी समस्याएं अभी भी दिव्यांग छात्रों के मार्ग में बाधा बनती हैं।

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा

दिव्यांगता किसी भी व्यक्ति की योग्यताओं, प्रतिभा और आकांक्षाओं को परिभाषित नहीं करती, अपितु समाज और शिक्षा तंत्र का दायित्व है कि वह दिव्यांग विद्यार्थियों को समान अवसर, संसाधन एवं प्रोत्साहन प्रदान करे ताकि वे अपनी क्षमताओं को विकसित कर सकें। विशेषकर उच्च माध्यमिक स्तर पर, यह विद्यार्थियों के आगामी जीवन के लिए अत्यंत निर्णायक अवस्था होती है। इस स्तर पर विद्यार्थियों के मानसिक, बौद्धिक और शैक्षिक आकांक्षाएं अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह स्तर विद्यार्थियों के मानसिक, बौद्धिक और व्यावसायिक विकास की नींव होता है।

दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए यह समय और भी चुनौतीपूर्ण होता है, क्योंकि उन्हें न केवल पाठ्यक्रम की जटिलताओं का सामना करना पड़ता है, बल्कि सामाजिक, पारिवारिक और भौतिक कठिनाइयों से भी जूझना पड़ता है। ऐसे में उनके शिक्षण के प्रति रुचि, प्रेरित करना और उन्हें सकारात्मक बनाने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करना शिक्षा व्यवस्था की प्राथमिकता होनी चाहिए।

यह अध्ययन विशेष रूप से यह जानने का प्रयास करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाएं क्या हैं, किन–किन कारकों से प्रभावित होती हैं, और क्या शिक्षण संस्थान उन्हें अपनी क्षमताओं के विकास के लिए उचित अवसर प्रदान कर रहे हैं। इस अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षण–प्रशिक्षण, नीति निर्माण और समान अवसर प्रदान करने वाले शैक्षिक ढांचे की ओर संकेत करेंगे, जहां हर दिव्यांग विद्यार्थी अपने सपनों को साकार करने का अधिकार और अवसर प्राप्त करे।

दिव्यांग विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा की प्रस्तावना

भारत जैसे विकासशील देश में दिव्यांग जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण वर्ग है, जिसे समाज की मुख्यधारा में शामिल करना एक बड़ी चुनौती एवं आवश्यकता है। दिव्यांग विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाएं न केवल उनके आत्मनिर्भर जीवन की कुंजी हैं, बल्कि उनके आत्मविश्वास, सामाजिक स्वीकृति और आर्थिक स्वतंत्रता का भी आधार हैं।

व्यावसायिक आकांक्षा का तात्पर्य उस इच्छाशक्ति, सोच और योजना से है, जिसके माध्यम से विद्यार्थी भविष्य में अपने लिए उपयुक्त व्यवसाय या रोजगार का लक्ष्य निर्धारित करता है।

शोध के उद्देश्य

शोध का उद्देश्य शोध कार्य का प्रकाश स्तंभ है जो उसे रास्ते से विचलित होने से बचाकर सही मार्ग दिखाता है। बी.डी. माथुर के अनुसार–उद्देश्य के अभाव में अध्यापक और नाविक के समान है, जो अपनी मंजिल नहीं जानता और पतवार विहीन नौका की तरह, जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी भी तट पर जा लगेगा।

उद्देश्यों के प्रसंग में अरस्तू का यह वाक्य उल्लेख के योग्य है, ष्जो अपनी मंजिल नहीं जानता और स्पष्ट निर्देशित जीवन की रचना नहीं करता है, वह हवाओं के भरोसे नाव की किसी भी तट तक ले जाया जा सकता है।

किसी भी कार्य की सफलता उसके निर्धारित उद्देश्यों में निहित होती है। मनुष्य के प्रत्येक कार्य के पीछे कोई न कोई कारण निहित होता है। सफलता उसके निर्धारित किए गए उद्देश्यों पर बहुत निर्भर करती है। उद्देश्यों की स्पष्टता अनुसंधान को सरल एवं सहज बना देती है। उद्देश्य किसी भी कार्य की अंतिम बिन्दु, जहाँ तक

पहुँचने का सांकेतिक प्रावधान किया जाता है। उद्देश्य विभिन्न प्रकार के रेखा के समान हैं, जो समय के दायरे के साथ धूमिल होते जाते हैं। जीवन की प्रत्येक प्रवृत्ति की नीतियों के निर्धारण का उद्देश्य ही स्थिर है।

अनुसंधान का उद्देश्य ज्ञान में वृद्धि करना है। ज्ञान में वृद्धि के माध्यम से मानव जीवन को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझना निर्धारित उद्देश्य में सम्मिलित होता है। फलतः अनुसंधान कार्य का मूल उद्देश्य यही होता है किरू शोध कार्य में स्पष्ट उद्देश्य का होना आवश्यक है।

मानवीय ज्ञान को दिशा प्रदान करना अनुसंधान का उद्देश्य है। अज्ञात का पता लगाना और नई संभावनाओं की खोज करना अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य होता है। कार्लक के अनुसार यदि किसी मनुष्य किसी कार्य को करने के लिए तत्पर होता है, तो उस व्यक्ति के सम्मुख अपना कोई उद्देश्य होता है। लक्ष्य के बिना कोई भी कार्य सुव्यवस्थित ढंग से सफल नहीं होता। उद्देश्य ही वह बिंदु है, जिसके प्रति व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

शोध या अनुसंधान का उद्देश्य किसी समस्या विशेष या चिंता का वैज्ञानिक विधियों का उपयोग करते हुए सावधानीपूर्वक और विस्तृत अध्ययन करना है। सूचना का गहन विवेचन कर, प्राप्त अनुभवों और समझ का उद्‌गार करने के लिए जगह बनाना। अज्ञात का पता लगाना और नई संभावनाओं की खोज करना है।

पी. वी. यंग के अनुसार–अनुसंधान का उद्देश्य समाज तथा देश की घटनाओं को स्पष्ट रूप देना तथा अनुभवित तथ्यों को निश्चित रूप प्रदान करना एवं सामाजिक जीवन को।

परिकल्पना

1. मुख्य परिकल्पना

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाएँ सामान्य विद्यार्थियों से भिन्न होती हैं।

उप–परिकल्पनाएँ

1. दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा उनके लिंग, प्रकार की दिव्यांगता एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के अनुसार भिन्न होती है।

2. दिव्यांग विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा उनके पारिवारिक परिवेश एवं अभिभावकों की शिक्षा के स्तर पर निर्भर करती है।

3. शैक्षणिक संस्थानों द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं और सहयोग से दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

4. जिन दिव्यांग विद्यार्थियों को परामर्श, प्रशिक्षण एवं प्रेरणा का सहयोग मिलता है, उनमें आत्मविश्वास और व्यवसायिक आकांक्षा का स्तर अधिक होता है।

5. दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाओं में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है ।

शोध का औचित्य

भारत जैसे विकासशील देश में दिव्यांग व्यक्तियों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में समान अवसर और सहभागिता का अधिकार उन्हें भी प्राप्त है, परंतु व्यवहारिक स्तर पर यह अधिकार अभी भी सीमित दिखाई देता है। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा दिव्यांग विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा समाज की मुख्यधारा में सम्मिलित किया जा सकता है। अतः उनकी शैक्षिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाओं को समझना अत्यंत आवश्यक है।

उच्च माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के जीवन का वह निर्णायक चरण है जहाँ वे भविष्य की दिशा तय करते हैं। इस स्तर पर उनकी शिक्षा के प्रति रुचि, आत्मविश्वास, कैरियर चयन की सोच और आत्मनिर्भर बनने की आकांक्षा सबसे अधिक विकसित होती है। ऐसे में यह जानना कि दिव्यांग विद्यार्थी इन आकांक्षाओं को किस प्रकार अनुभव करते हैं, और उन्हें कौन–कौन से सामाजिक, पारिवारिक तथा संस्थागत अवरोधों का सामना करना पड़ता है, शोध

की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

यह अध्ययन शिक्षा नीति–निर्माताओं, शिक्षकों, अभिभावकों एवं समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, क्योंकि इससे यह स्पष्ट होगा कि दिव्यांग विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को किस प्रकार प्रोत्साहित किया जा सकता है तथा उनके लिए कौन से प्रशिक्षण एवं सहयोगात्मक उपाय प्रभावी होंगे।

इसके अतिरिक्त यह अध्ययन समावेशी शिक्षा की भावना को सशक्त बनाएगा और ऐसे शैक्षणिक वातावरण के निर्माण में सहायक होगा जहाँ दिव्यांग विद्यार्थी अपनी क्षमताओं के अनुसार आगे बढ़ सकें। इस शोध के निष्कर्ष भविष्य में दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा, प्रशिक्षण और रोजगार नीति निर्धारण में भी मार्गदर्शन प्रदान करेंगें।

शोध का निष्कर्ष

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दिव्यांग विद्यार्थी शारीरिक या मानसिक चुनौतियों के बावजूद शिक्षा एवं जीवन के प्रति गहरी आकांक्षा रखते हैं। वे भी समाज के अन्य विद्यार्थियों की तरह आत्मनिर्भर बनना, सम्मानपूर्वक जीवन जीना और अपने भविष्य को सुरक्षित करना चाहते हैं। उनकी शैक्षिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाएँ उनके आत्मविश्वास, पारिवारिक सहयोग, विद्यालयीय वातावरण और सामाजिक स्वीकृति पर निर्भर करती हैं।

अध्ययन में यह पाया गया कि जिन दिव्यांग विद्यार्थियों को विद्यालयों में उचित सहयोग, विशेष शिक्षकों का मार्गदर्शन, सहायक साधन और प्रेरणादायक वातावरण मिलता है, उनमें शिक्षा के प्रति रुचि और आगे बढ़ने की इच्छा अधिक होती है। वहीं, जिन विद्यार्थियों को सामाजिक या भौतिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है, उनमें आकांक्षाओं का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया गया।

शोध से यह भी ज्ञात हुआ कि व्यवसायिक आकांक्षाओं के निर्माण में परिवार, शिक्षक और समाज की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि उन्हें उचित व्यावसायिक मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और रोजगार के अवसर प्रदान किए जाएं, तो वे न केवल आत्मनिर्भर बन सकते हैं, बल्कि समाज के विकास में भी सक्रिय योगदान दे सकते हैं।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यवसायिक आकांक्षाओं को प्रोत्साहित करने के लिए समावेशी शिक्षा प्रणाली, संवेदनशील सामाजिक दृष्टिकोण, और उचित नीतिगत सहयोग आवश्यक है। जब दिव्यांग विद्यार्थी अपने सपनों को साकार कर पाएंगे, तभी "समान अवसर वाले समाज" की परिकल्पना वास्तव में साकार होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अरोड़ा, आर. (2020). विशेष शिक्षा और समावेशी शिक्षा. नई दिल्लीरू अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
2. शर्मा, पी. (2020). दिव्यांग शिक्षा के सिद्धांत और व्यवहार. आगरारू विनोद पुस्तक मंदिर।
3. चौहान, एस.एस. (2021). मानव विकास और शिक्षा मनोविज्ञान. नई दिल्लीरू विकास पब्लिशिंग हाउस।
4. कौर, हरप्रीत (2021). समावेशी शिक्षारू सिद्धांत और व्यवहार. लुधियानारू किशोर बुक डिपो।
5. यादव, एस. (2022). दिव्यांग बच्चों की शिक्षा में चुनौतियाँ और समाधान. जयपुररू राजस्थानी ग्रंथालय।
6. यूनेस्को (2022) में। सभी के लिए शिक्षारू समावेशी शिक्षा दिशानिर्देश। पेरिसरू यूनेस्को प्रकाशन।
7. भारत सरकार (2023)। दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016। नई दिल्लीरू सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय।
8. पांडे, आर. (2024). विशेष आवश्यकता वाले छात्रों की शैक्षिक आकांक्षाएँ और करियर मार्गदर्शन. नई दिल्लीरू डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस.

डॉ जाकिर हुसैन के शैक्षिक दर्शन का वर्तमान परिपेक्ष्य में अध्ययन ।

घेवाराम
शोधार्थी
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय
जोधपुर (राज.)

प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली
शोध पर्यवेक्षक
प्रोफेसर शिक्षा संकाय
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए वह नैतिक निर्णय भी स्वाभाविक तथा अंर्तध्यान से नहीं कर पाता है। आज के समाज की यही समस्या दर्शन के जिस रूप से सुलझाई जा सकती है ,वह है शैक्षिक दर्शन। शैक्षिक दर्शन में शिक्षा संबंधित समस्याओं को दार्शनिक दृष्टिकोण और दार्शनिक दृष्टिकोण विधियों से हल करने की प्रक्रिया सम्मिलित है जिससे विशिष्ट दार्शनिक निष्कर्ष और परिणामों पर पहुंच जाता है। शैक्षिक दर्शन शिक्षा की समस्याओं के अध्ययन में दर्शन का प्रयोग दार्शनिक विश्वास का सक्रिय पहलू तथा जीवन के आदर्श को वास्तविक रूप देने का क्रियात्मक साधन और शैक्षिक दर्शन जीवन दर्शन के तत्वों पर आधारित है। अर्थात शैक्षिक दर्शन मनुष्य के जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करता है। शैक्षिक दर्शन ही मनुष्य को इस यथार्थ भवसागर की बाधाओं को पार करके सफलता के नए आयाम को छूता है।

डॉ. जाकिर हुसैन एक ऐसे दार्शनिक हैं जिनके जीवन दर्शन का चित्रण उनका जीवन है जिसमें तन, मन, प्राण सभी का संतोष और विकास सम्मिलित है। ऐसा आध्यात्मिक जीवन में ही संभव है। डॉ. जाकिर हुसैन ने आदर्शवाद और यथार्थवाद का सामंजस्य कर व्यक्तिवाद तथा समाजवाद में संतुलन स्थापित किया है। डॉ. जाकिर हुसैन के अनुसार विद्यार्थी की जीवन धारा को नई दिशा देने उसके व्यक्तित्व को ऊपर उठाना और उसमें नई–नई आशाओं को लाना ही शिक्षा है

अध्ययन के उद्देश्य –

शोध अध्ययन के उद्देश्यों का निर्धारण इस प्रकार किया गया है –

1. डॉ. जाकिर हुसैन के व्यक्तित्व एवं उनके शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करना।
2. डॉ. जाकिर हुसैन के समाज सुधार संबंधित विचारों का अध्ययन करना
3. वर्तमान समाज का डॉ. जाकिर हुसैन के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता का अध्ययन करना
4. डॉ. जाकिर हुसैन की रचनाओं में नियत शैक्षिक मूल्य का अध्ययन करना

शोध विधि –

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति एवं उद्देश्यों को देखते हुए इस अध्ययन में दार्शनिक विधि का प्रयोग किया गया है।

उपयोगिता –

1. डॉ. जाकिर हुसैन ने हमेशा छात्रों में स्वप्न का भाव भरने की प्रेरणा दी है ताकि युवा छात्र वर्ग सपने देख सके वह उन्हें पूरा करें। डॉ. जाकिर हुसैन के इन विचारों को पढ़कर भावी पीढ़ी अपने कुछ लक्ष्य को पूरा कर पाने में समर्थ हो सकती है।
2. डॉ. जाकिर हुसैन के शिक्षा का अर्थ ,शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा प्रणाली, शिक्षण विधियां और पाठ्यक्रम संबंधी विचार वर्तमान शिक्षा पद्धति में महत्वपूर्ण योगदान करने में समर्थ हैं।
3. डॉ. जाकिर हुसैन शिक्षा को व्यक्ति के आचरण विचार

व्यवहार को परिमार्जित करने वाली प्रक्रिया माना है। उनके शिक्षा संबंधी यह विचार भाभी पीढ़ी में नैतिक गुना का समावेश करने में समर्थ है एवं उन्नत समाज के निर्माण में भागीदारी देने में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।

4. डॉ. जाकिर हुसैन ने शिक्षा के योगदान से स्पष्ट किए हैं यदि उन्हें वर्तमान शिक्षा में समावेशित कर उनके अनुरूप शिक्षण कार्य कराया जाए तो शिक्षा का मुख्य लक्ष्य जो कि बालक का समांगीण विकास करना है को शीघ्र ही प्राप्त किया जा सकता है।

5. डॉ. जाकिर हुसैन ने शिक्षा प्रणाली का जो नवीनतम प्रारूप तैयार किया है उसके अनुसार यदि छात्रों में पांच क्षमता क्षमताओं (1)अनुसंधान व जिज्ञासा की क्षमता (2) सृजनशीलता व नवीनता (3) उच्च स्तरीय प्रौद्योगिकी के उपयोग की क्षमता (4) धमशीलता एवं (5) नैतिक नेतृत्व की क्षमता का विकास किया जाए तो भावी पीढ़ी स्वयं अपने स्तर पर स्व प्रेरणा को सिखाने वाली हो जाएगी तथा स्वयं रोजगार की क्षमता उत्पन्न करने में समर्थ हो जाएगी।

6. डॉ जाकिर हुसैन के विद्यालय संबंधी विचार शिक्षण विधियां और पुस्तकालय संबंधी विचार वर्तमान शिक्षा पद्धति में नव परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेंगे।

7. समाज व शिक्षा में वर्तमान समय में फैली विकृतियों को दूर करने में डॉक्टर जाकिर हुसैन की शिक्षा सहायक सिद्ध हो सकती है।

8. वर्तमान शिक्षा भौतिकवादी शिक्षा है अतः शिक्षा में बालक को चरित्र व्यवहार पर शिक्षा प्रदान कर शिक्षा में इबादत को दूर किया जा सकता है।

9. वर्तमान में शिक्षकों का लक्ष्य बालकों के बौद्धिक विकास ही नहीं वरन व्यक्तित्व का निर्माण, उद्देश्य तथा स्वतंत्र मस्तिष्क, रचनात्मक प्रवृत्तियां एवं आत्मा विकास को महत्व प्रदान करना है। जिसके डॉ. जाकिर हुसैन के अनुसार शिक्षा के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

10. वर्तमान समय में विद्यालय बालक को बौद्धिक व्यवसाय ज्ञान प्रदान कर सके डॉ. जाकिर हुसैन के अनुसार विद्यालय को ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना चाहिए जो स्वयं सोच सके वह देश का विकास कर सके।

11. वर्तमान समय का पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो व्यक्ति को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बन सके डॉ. जाकिर हुसैन के विचार उपयोग निश्चित हो सकेंगे

निष्कर्ष

अंतः शिक्षा एवं संस्कृति के प्रसार के दृष्टि से डॉ. जाकिर हुसैन का कल भारतीय जीवन का उत्कर्ष काल रहा है उसे समय उसे कोटी की शिक्षण व्यवस्था प्रस्तुत थी शिक्षण उद्देश्य न केवल व्यक्ति का भौतिक विकास करना था वह इसके साथ नैतिक और सांस्कृतिक उन्नयन भी रहा है इस तरह प्राचीन शिक्षा व्यवस्था को वरदान परदेशी में उपयोगी माना जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 अमवाल जे.सी.(2006)ः महान दार्शनिकों और विचारों की शिक्षा दिल्ली शिप्रा प्रकाशन

2 आचार्य श्री राम (2008)ः डॉ जाकिर हुसैन मथुरा युग निर्माण योजना गायत्री तपोभूमि

3 दुबे सत्यनारायण (2000)ः शिक्षा की नवीन दर्शनीय प्रश्नों में आगरा आगरा पुस्तकमंदिर

4 www.shodhganga.org

डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास – जीवन और कृतित्व का समालोचन

हरप्रीत कौर
शोधार्थी
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग
ज.रा.ना. राजस्थान विद्यापीठ,
विश्वविद्यालय, उदयपुर

डॉ. नारायण सिंह राव
शोध पर्यवेक्षक
संस्कृत विभाग
ज.रा.ना. राजस्थान विद्यापीठ,
विश्वविद्यालय, उदयपुर

भूमिका –

किसी छात्र के जीवन को आगे बढ़ाने में परिवार, धन, साधन और परिवेश का सामान्यतया योगदान देखा जाता है। इन योगदानों के फलस्वरूप कुछ छात्र जीवन में सफल होते है और कुछ असफल। परन्तु इस परिवेश से हटकर कुछ छात्र ऐसे भी होते है जो परिवार के सहयोग, धन–साधन आदि के बिना भी अपनी विद्या–निष्ठा, दृढ संकल्प और अथक परिश्रम के फलस्वरूप प्रारम्भिक पड़ाव से आगे बढ़कर उल्लेखनीय पड़ाव तक पहुँचने में सफल होते है। समाज में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं और मिलते रहेंगे। इन्हीं मे से एक उदाहरण डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास का है।

जन्म परिचय –

डॉ. व्यास का जन्म मद्यप्रदेश के एक साधारण गाँव नेवरी जिला देवास में 15 अगस्त 1946 को हुआ। इनके पिता पं. गौरीशंकर व्यास और माता का नाम श्रीमती गंगादेवी था। यह ब्राह्मण परिवार निर्धन होते हुए भी शिक्षा के प्रति गहरी निष्ठा रखता था।

छात्र जीवन और उसके संघर्ष –

सूर्यप्रकाश व्यास की 9 वर्ष की अल्पायु में परिवार के मुखिया की असमय मृत्यु के कारण इन्हें गाँव में भिक्षाटन करते हुए अपने परिवार के भरण–पोषण में योगदान देना पड़ा, इतना होने के पश्चात् भी आपने माध्यमिक शिक्षा पूर्ण की। आगे अध्ययन करने की उत्कंठ अभिलाषा तो थी किन्तु गाँव में विद्यालय नहीं होने से निराशा व्याप्त हो रही थी, किन्तु कहते हैं कि जहा चाह है वहा राह है। मानो यह कहावत डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास के लिए ही बनी थी। किसी भद्र महिला ने व्यास की प्रतिभा एवं शिक्षा के प्रति समर्पण को देखते हुए आगे का मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान किया। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए आप अगस्त 1960 में उदयपुर आये। यहाँ पर इन्होने राजकीय संस्कृत महाविद्यालय में प्रवेश लिया। शिक्षा, छात्रावास, भोजन आदि की व्यवस्था निःशुल्क थी। यहाँ से इन्होने प्रवेशिका परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। छात्रावास की व्यवस्था इनके सपनों की उड़ान के अनुकूल नहीं होने से महाविद्यालय की निःशुल्क सुविधाओं को त्याग कर स्वतंत्र और आत्मनिर्भर रहने की चुनौतियों को स्वीकार किया। ट्यूशन पढ़ाते हुए आपने हाई स्कूल से एम.ए. (संस्कृत) तक की शिक्षा प्राप्त की। आपके सपनों को ओर ऊंचाईयों देने के लिए मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय से जब शोधवृति प्राप्त हुई तो आपने ट्यूशन पढ़ाना छोड़कर सम्पूर्ण समय शक्ति का उपयोग करते हुए पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

शिक्षण कार्य –

वैसे तो डॉ. व्यास दसवी कक्षा के छात्र–जीवन से एम.ए. कक्षा तक ट्यूटर के रूप में कार्य कर ही रहे थे, परन्तु इनकी संस्कृत व्याख्याता के रूप में प्रथम नियुक्ति माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी रात्रिकालीन महाविद्यालय, उदयपुर में हुई । जहाँ नवीन संस्कृत विभाग की स्थापना हुई थी। यहाँ 6 वर्षों तक सेवा देने के बाद इन्हें साथ संस्कृत विभाग, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय में सेवा का अवसर मिला। यहाँ भी 5 वर्ष सेवा देने के पश्चात

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में आपको बौद्ध दर्शन के व्याख्याता के रूप में अध्यापन करवाने का अवसर मिला। आप की प्रतिभा को देखते हुए आपको प्रोफेसर तक पदोन्नत किया गया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में 30 वर्षो की सेवा के दौरान विभागाध्यक्ष, छात्रावास के प्रशासनिक संरक्षक, शिक्षक–संघ के सचिव आदि महत्वपूर्ण दायित्वों के निर्वाह का अवसर मिला। विद्यानिष्ठ होने के साथ ही स्वाभिमानी तथा कठिन संघर्ष से उपजे जीवन–मूल्यों के कारण उदयपुर और वाराणसी दोनों स्थानों पर अपने दायरे में प्रमुख रहते हुए भी विवादास्पद व्यवहार व कार्य के लिए निंदा– प्रशंसा दोनों के पात्र बने।

उपलब्धियाँ –

डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास के कार्य करने की ऊर्जा का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अपनी चालीस वर्षीय सेवा काल के दौरान 30 से भी अधिक शोध–छात्रों का निर्देशन व सहयोग किया। आपकी लोकप्रियता इतनी अधिक है कि विभिन्न विश्वविद्यालय एवं अन्य राज्यों से भी संस्कृत में अनुसन्धान करने वाले शोध–विद्यार्थी डॉ. व्यास के पास आकर मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। आपकी लोकप्रियता एवं सक्रियता का अनुमान इसी बात से भी लगाया जा सकता है कि आपने भारत के 100 से भी अधिक प्रतिष्ठित संस्थानों में विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत किये। 24 आकाशवाणी वार्ताएँ और 2 संस्कृत नाटकों में अभिनय कर चुके हैं।

डॉ. व्यास की विद्वता को देखते हुए भारतीय बुद्धिस्ट सोसायटी के 6 वर्ष तक उपाध्यक्ष रहे। नागार्जुन बौद्ध संस्थान, गोरखपुर के संस्थापक सदस्य रहे। लगभग 3 वर्ष चलने वाली तन्त्र गोष्ठियों वाराणसी तथा वर्षव्यापी धर्म गोष्ठियों उज्जैन में संयोजक रहे।

कतिपय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया गया। इतना ही नहीं आपने अनेक संस्थानों की स्थापना, उनकी गतिविधियों में सहभागिता आदि कार्यों को कुशलता के साथ सम्पादित किये।

स्वलिखित तथा सम्पादित पुस्तकें –

डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास का भाषा के प्रति अनुराग इस बात से भी स्पष्ट होता है कि आपने शिक्षण कार्य के साथ ही लेखन कार्य भी निरंतर जारी रखा और आज भी समयानुसार लेखन कार्य करते रहते है। आपकी कुछ प्रमुख रचनाये अग्रलिखित है–

शैवदर्शन / तन्त्र –

1. सिद्धित्रयी (अनुवाद)
2. तन्त्रालोक में कर्मकाण्ड (सम्पादन)
3. तन्त्र–विमर्श (प्रथम खंड) (सम्पादन)
4. आचार्य अभिनवगुप्त–प्रणीत तन्त्रालोक (आह्निक 4–5) का सानुवाद विवेचन (सम्पादन)
5. तन्त्र–विमर्श (द्वितीय खंड) (सम्पादन)

बौद्धदर्शन –

1. बौद्ध, वेदान्त एवं काश्मीर शैव दर्शन (लेखन)
2. जातकमाला (अनुवाद)
3. बौद्धचार्य वसुबन्धु (सम्पादन)
4. बौद्ध सुभाषित (सम्पादन)
5. बौद्ध शैक्षिक मूल्य (सम्पादन)
6. वेदान्त में बौद्ध सन्दर्भ (सम्पादन)
7. मध्यान्तविभाग (सम्पादन)
8. बौद्ध बिन्दु (लेखन)
9. नेपाल में बौद्धमत (सम्पादन)
10. यूं ही कोई बौद्ध नहीं बनता (लेखन)

संस्कृत –

1. कालिदास के काव्य में सादृश्येतर अलंकार (सम्पादन)
2. आचार्यरतिनाथझा रचनावली (सम्पादन)
3. आचार्य रामचंद्र द्विवेदी की रचनाएँ (सम्पादन)
4. विदुषाम् पत्राणी (सम्पादन)
5. विदुषाम् पत्रपिटकानि (सम्पादन)

दर्शन– सामान्य –

1. दर्शन–कणिका (लेखन)
2. दर्शन–मञ्जूषा (सम्पादन)
3. दर्शन– मकरन्द (लेखन)

जीवनियाँ / अभिनन्दन –

1. उन्मीलनम् (सम्पादन)
2. मेदपाट– मंडन पं. गिरिधरलाल शास्त्री (सम्पादन)
3. अभ्युदय (सम्पादन)
4. पीयूष–पथ (सम्पादन)
5. श्रीमती ओमवती शर्मा जनसेवा ट्रस्ट (लेखन)
6. मेरा विद्यापथ (लेखन)

इनके अतिरिक्त भी डॉ. व्यास ने अनेकों पुस्तकों का लेखन एवं सम्पादन का कार्य किया है। आज भी डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास की लेखनी निर्बाध रूप से लेखन कार्य में संलग्न है।

सम्मान –

डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास को बुद्धिस्ट सोसायटी ऑफ इंडिया ने 'आचार्य मंज्जु श्री सम्मान' देकर बौद्ध क्षेत्र में इनके योगदान की सराहना की। कालिदास अकादमी, उज्जैन ने 'विदुषाम् पत्रपिटकानि' पर पचास हजार की राशि के साथ सम्मानित किया।

कृतज्ञता –

डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास इतने बड़े विद्वान् होने के बाद भी अपने संस्कारों एवं विनम्रता के कारण विद्यार्थियों एवं लोगों के बीच प्रसिद्ध है; डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास ने एक साक्षात्कार में बताया कि वो जो कुछ भी आज है, उसके पीछे प्रोफेसर रामचन्द्र द्विवेदी, प्रो. मूलचन्द्र पाठक, प्रो. कमलचन्द्र सोमाणी, डॉ. आलम शाह खान आदि गुरुजनों का आशीर्वाद है। उन्हीं के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से इस मुकाम को प्राप्त कर पाया हूँ।

उपसंहार –

डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास का जीवन किसी फिल्म की पटकथा से कम नहीं है। बाल्यकाल से लेकर शिक्षण कार्यो तक में उनके संघर्ष को यदि लिपिबद्ध करने का प्रयास किया जाये तो यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि उनके जीवन संघर्ष एवं उपलब्धियों बारे में कोई कलमकार कागज पर शब्दों को उकेर सके। शब्दकोष में शब्दों की कमी हो जाएगी किन्तु डॉ. व्यास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को पूर्ण नहीं किया जा सकेगा। तभी तो डॉ. व्यास के लिए ही किसी ने क्या खूब लिखा है–

'समर में घाव खाता है, वही बलवान होता है,
मधुर उस वेदना में, अमर वरदान होता है।।
जो घाव खाता है, छैनी और हथौडी का वही,
पाषण किसी मन्दिर में भगवान होता है।।

सन्दर्भ :

व्यास, डॉ. सूर्यप्रकाश– लेखक की आत्मकथा,'अंधेरे भी उजाले भी', पृष्ठ संख्या 192–193

किशोर विद्यार्थियों में व्याप्त शक्ति एवं आत्मविश्वास के भाव से खतरे, चुनौतियां, कमजोरियां एवं जोखिम उठाने की क्षमता का अध्ययन।

गोरधन राम
शोधार्थी
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)

प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली
शोध पर्यवेक्षक
प्रोफेसर शिक्षा संकाय
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)

सारांश

किशोर विद्यार्थियों में व्याप्त शक्ति एवं आत्मविश्वास से किस प्रकार किशोरों में उत्पन्न खतरे, व्याप्त कमजोरियां, चुनोतियां एवं खतरों से निपटा जा सकता है? किशोर बालक एवं बालिकाओं में पाया जाने वाला आत्मविश्वास में क्या–क्या समानताएं है? अथवा क्या–क्या असमानताएं है? किशोर बालक एवं बालिकाओं में पायी जाने वाली शक्ति का उपयोग किस प्रकार करते है? दोनों में ही पाये जाने वाले खतरों, कमजोरियों एवं चुनौतियों का समाधान वे किस प्रकार करते है? इन सभी बातों को बहुत ही गहराई के साथ शोधकर्ता ने अपने निष्कर्ष में बताया है। शोधकर्ता ने इस बात पर विशेष ध्यान दिया है कि शोध उसकी व्यक्तिगत धारणाएं, कल्पनाएं, छोटे अनुमान एवं किसी भी प्रकार की अभिनतिका किचिंत मात्र भी प्रभाव नहीं पड़े। प्रस्तुत शोध कार्य में इस बात का ध्यान रखा गया है कि जो भी निष्कर्ष सामने आए है वे प्रधानाध्यापक, शिक्षक एवं शिक्षार्थी द्वारा दिए गए उत्तरों के विश्लेषण एवं व्याख्या से प्राप्त हुए है।

मुख्य शब्दावली

किशोर, आत्मविश्वास, शक्ति, चुनौतियां, कमजोरियां एवं जोखिम

प्रस्तावना

किशोर अर्थात् एडोलेसेन्स जो कि लेटिन भाषा के एजोल्सर से बना है जिसका अर्थ है – परिपक्वता की ओर बढ़ना। किशोरावस्था को बाल्यावस्था और युवावस्था के मध्य की अवस्था कहा जाता है जिसमें उसकी आयु 13 से 19 वर्ष तक की होती है जिसमें न तो वह बालक और न ही उसे युवा माना जाता है वरन् वयः सन्धिकाल माना जाता है जिसमें उसका शारीरिक, मानसिक, भावात्मक, संवेगात्मक, सामाजिक विकास बहुत तेजी से होता है इसीलिए इसे बड़े बल, तनाव विरोध और तुफान की अवस्था कहा जाता है। इसे बाल्यावस्था और युवावस्था के मध्य संक्रमणावस्था के रूप में देखा जाता है। बालकों में शुक्राणुओं की उत्पति तथा बालिकाओं में रजः स्त्राव के साथ किशोरावस्था प्रारम्भ हो जाती है। बालक पर जैविक एवं सांस्कृतिक घटकों की अन्तः क्रिया से उत्पन्न यह किशोर जो अभी घौसले में है, जिनके पंख अभी छोटे–छोटे है फिर भी वह उड़ने के लिए व्याकुल है, किशोरावस्था की परिधि में आता है।

किशोरावस्था को परिवर्तन की अवस्था, सांवेगिक अस्थिरता की अवस्था, कामुकता के जागरण की अवस्था, एक संक्रान्ति काल, समस्या बाहुल्य की अवस्था, उमंगपूर्ण कल्पना की अवस्था, समस्या बहुल्य की अवस्था, निश्चित प्रतिमान की अवस्था, विकसित सामाजिकता की अवस्था, परेशानी की अवस्था, वीर पूजा की अवस्था, शैशवावस्था की पुनरावृति, आत्मनिर्भरता और अप्रसन्नता की अवस्था कहते है जिसमें तनाव होना निश्चित होता है, क्योंकि यह अवस्था उम्र का नाजुक मोड़ होती है, जिसे किशोरावस्था कहते है। इस दौर में तेजी से मानसिक एवं शारीरिक परिवर्तन होते है। परिवर्तन के इस दौर में माता–पिता, शिक्षक, समाज, संगी–साथी के व्यवहार से भी अनेक बार तनाव का जन्म होता है। किशोर में उत्पन्न तनाव, खतरे,

चुनौतियां, कमजोरियां को उनकी शक्ति एवं आत्मविश्वास से दूर किया जा सकता है। अतः शोधकर्ता ने अपने शोध का विषय किशोर विद्यार्थियों के संबंध में चुना।

शोध के उद्देश्य

1. किशोर विद्यार्थियों में उत्पन्न खतरे को पहचानने का अध्ययन करना।

2. किशोर विद्यार्थियों में व्याप्त कमजोरियों को समझने का अध्ययन करना।

3. किशोर विद्यार्थियों में व्याप्त चुनौतियों का पता लगाने का अध्ययन करना।

4. किशोर विद्यार्थियों की जोखिम उठाने की क्षमता का अध्ययन करना।

5. किशोर विद्यार्थियों को उनकी शक्ति से अवगत कराना।

6. किशोर विद्यार्थियों के आत्मविश्वास की अभिवृद्धि करना।

7. विद्यालय में संचालित शाट (SWOT) कार्यक्रम की उपादेयता का अध्ययन करना।

8. भावी शोध हेतु सुझाव देना।

परिकल्पना

एक विचार या अनुमान जो किसी विशिष्ट समस्या या प्रश्न के समाधान के लिए प्रस्तावित किया जाता है। यह अनुसंधान को दिशा देता है जिसमें किसी कार्य को करने अथवा नहीं करने के संबंध में पहले से धारणा बनायी जाती है। यह धारणा अथवा कल्पना सकारात्मक, नकारात्मक अथवा शून्य हो सकती है। परिकल्पना अनुसंधान को खोजने में मदद करती है तथा नए ज्ञान की प्राप्ति में सहायक होती है।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने शून्य परिकल्पना का प्रयोग किया है।

1. किशोर बालक एवं बालिका में व्याप्त खतरों में कोई अंतर नहीं पाया जाता है।

2. किशोर बालक एवं बालिका में व्याप्त कमजोरियाँ में कोई अंतर नहीं पाया जाता है।

3. किशोर बालक एवं बालिका में व्याप्त चुनौतियां में कोई अंतर नहीं पाया जाता है।

4. किशोर बालक एवं बालिका में जोखिम उठाने की क्षमता में कोई अंतर नहीं पाया जाता है।

5. किशोर बालक एवं बालिका की शक्ति में कोई अंतर नहीं पाया जाता है।

6. किशोर बालक एवं बालिका के आत्मविश्वास में कोई अंतर नहीं पाया जाता है।

7. राजकीय एवं निजी विद्यालय में संचालित शाट (SWOT) कार्यक्रम में कोई अंतर नहीं पाया जाता है।

8. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालय में संचालित शाट (SWOT) कार्यक्रम में कोई अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध का औचित्य

किशोर शक्ति की एक सशक्त धारा है, किशोर बदलाव और निर्माण की वाहक है, किशोर अधिक उन्मुक्त, निश्चल और संवेदनशील होता है, किशोर गलत बात पर झुकना पसंद नहीं करता है, किशोर के सामने नए युग के द्वार खुले होते है, किशोर के सामने नई सोच के द्वार खुले होते हैं, किशोर के सामने नये विचार के द्वार खुले होते हैं, किशोर के सामने नयी मानसिकता के द्वार खुले होते है, किशोर बनी–बनायी सीमा को लाँघकर स्वतंत्र रहना चाहता है, किशोर का विरोध रचनात्मक एवं सृजनात्मक भी होता है, किशोर में उत्साह, लग्न और दृढ़ निश्चय का भाव होता है, किशोर में निश्चय, निष्ठा एवं जोश का संचार होता है, किशोर में संवेदना, चेतना और प्रेरणा का भाव होता है, किशोर में जागरूकता, निर्भरता, जुझारुपन की ताकत होती है, किशोर में पक्का इरादा सक्रियता और उमंग की चाह होती है, किशोर में परिवर्तन और अच्छे सपने देख कर उसे क्रियान्वित करने का वादा होता है, आज का किशोर व्यवहारिक तथा उसमें सूचना और ज्ञान का भण्डार होता है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि किशोर विषय में तरुण, जवान आदि शब्द होठों पर आते ही किशोर के प्रति हमारी स्वच्छ एवं अस्वच्छ दोनों प्रकार की छवि सामने आती है। जहाँ एक ओर किशोर के प्रति विशेष स्वच्छ छवि दृष्टिगोचर होती है वही दूसरी ओर किशोर के

प्रति कुछ चिन्ता की लकीर भी हमारे अन्दर घर कर जाती है क्योंकि किशोर बदलाव, परिवर्तन और क्रान्ति का वाहक एवं प्रतीक है। अगर यह बदलाव सकारात्मक होता है तो किशोर के प्रति हमारी स्वच्छ धारणा विकसित हो जाती है परन्तु उनके द्वारा किया जाने वाला विद्रोह यदि नकारात्मकता की ओर मुड़ जाता है तो किशोर के प्रति हमारी धारणा अस्वच्छ छवि की ओर चली जाती है। आज का किशोर पुरानी परम्पराएँ, रीति–रिवाज और रुढ़िवादिता आदि का जमकर विरोध करता है। किशोर द्वारा परिवर्तन, बदलाव निर्माण, रचना, संघर्ष, साधना आदि का मार्ग प्रशस्त किया जाता है। सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक आदि कोई परिवर्तन एवं निर्माण हो उसके पीछे किशोर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है इसीलिए किशोरावस्था को बड़ेबल, तनाव, तूफान एवं संघर्ष तथा विरोध की अवस्था कहते है।

किशोरों में व्याप्त स्वच्छ एवं अस्वच्छ छवि का पता लगाने के लिए शोधकर्ता के मन में इस विषय पर शोध करने की इच्छा जागृत हुई कि किस प्रकार किशोर विद्यार्थियों में व्याप्त शक्ति एवं आत्मविश्वास के भाव से खतरें, चुनौतियां, कमजोरियां एवं जोखिम उठाने की क्षमता प्राप्त की जा सकती है।

निष्कर्ष

(अभिभावक, प्रधानाध्यापक, शिक्षक, किशोर एवं समाज सभी वर्गो के लिए)

युवा पीढ़ी खासकर किशोर और उनके पैरेंट्स के बीच विचारों की इतनी बड़ी खाई बन गई है कि बच्चे चाहकर भी अपनी बातें साझाा नहीं कर पा रहे हैं। किशोरावस्था के कुछ ऐसे अनुभव होते हैं जो उन्हें इसके लिए रोकते हैं। यह बात हर युवा को समझने की जरूरत है कि जाने–अनजाने में कई बार गलतियां हो जाती है तो उन्हें स्वीकार करें। बुरे अनुभवों से सबक लें। अवसाद में न जाएं या उन्हें छिपाने के लिए कोई दूसरी गलती न करें। यह जरूरी है कि अपनी बातों को पैरेंट्स और दोस्तों से अवश्य साझा करें। जब कोई व्यक्ति यह स्वीकार करता है कि मुझसे यह गलती हुई है तो इससे सुधार की गुंजाइश होती है। छोटी–छोटी गलतियों में सुधार करने से आप कोई बड़ी गलती करने से बच जाते हैं।

टीनएज यानी किशोरावस्था से युवावस्था में कदम रख रहे लड़के–लड़कियों के मानसिक, सामाजिक, व्यावहारिक विकास में कई तरह के बदलाव देखने को मिलते हैं। किशोरों/किशोरियों में जहां एक और करियर को लेकर चिंता बढ़ रही है वहीं दूसरी ओर कौन–सा करियर चुने? वे इसका सामाजिक दबाव के दुष्परिणाम भी आए दिन अखबारों में देखने को मिलते हैं। ऐसी खबरों से सबका मन बेचैन हो उठता है। सवाल उठता है कि आखिर हमारे युवा से कहां चूक हो रही हैं? समय रहते इन सवालों से जूझना स्वस्थ समाज बनने की दिशा में पहला कदम होगा। जब भी दिल्ली की श्रद्धा हत्याकांड जैसी घटनाओं से समाज का सामना होता है तो लंबी बहस छिड़ जाती है। आखिर क्यों बच्चे मां–बाप से वह नहीं कह पाते जो उनके जीवन का शायद सबसे जरूरी हिस्सा होता है? जीवन में उतार–चढ़ाव एक प्रक्रिया है। इससे जूझने के लिए अच्छी पैरेटिंग के साथ जरुरत है कि किशोर और युवा भी अपने नजरिए में कुछ चीजों को शामिल करें।

1. खुद पर किशोर का आत्मविश्वास बनाए रखें।
2. पैरेंट्स को ऐसे समझाएं।
3. दोस्त कैसे चाहिए, पहले यह स्पष्टता रखें।
4. मन में चोट है तो काउंसरल की मदद लेने से न झिझकें।
5. गलतियां बताने का तरीका बदलें।
6. रियल वर्ल्ड से डोर न टूटे।
7. अभिभावक बच्चों को समझें, समय दें।
8. अभिभावक बच्चों के संकेतों को समझे।
9. अभिभावक खुद से बच्चे को कनेक्ट रखें।
10. अभिभावक बच्चों की जिज्ञासा दूर करें।
11. कोई बड़ा आपको राय दे तो सुने।
12. कोई भी आपकी फोटो खींचने को कहे तो उसे मना करे।
13. कोई आपको जल्दी से फैसला करने को कहे तो उसे

रोके।

14. कोई आपसे बहुत छू–छूकर बात करे तो उसे रोके।

15. कोई किसी काम के लिए लालच दे तो उसे रोके।

16. जान–पहचान होने का वास्ता दे रहा हो तो गौर करे।

17. अगर आपको खुद को अजीब लग रहा हो तो बताए।

18. बड़े बच्चों से मदद करने को कहें।

19. हर दिन खुद से प्रतिस्पर्धा करें, तभी बनेंगे स्वयं के बेहतर वर्जन बनेंगे।

20.महिला हेल्प डेस्क का उपयोग करे।

21. कोचिंग में पढ़ाई के तनाव को कम करे।

22. चुनौतियों को उपहार मानिए, जो हमें खुद को खोजना सिखाती हैं।

23. आधुनिकता के नाम पर प्यार में पड़कर नहीं फंसे।

24. बच्चों के साथ मां–बाप समय बिताएं।

25 परीक्षा संबंधी तनाव को कम करे।

26 समय पूर्व किशोरावस्था को रोकने के उपाय करे।

27 समय पूर्व यौन संबंध से बचने के उपाय करे।

28 किशोर अपराध रोकना हम सभी की जिम्मेदारी है।

29 स्वयं को कम नहीं आँके।

30 मन से जीए।

31 सही संगी–साथी का चुनाव करे।

32 इन्टरनेट का सकारात्मक उपयोग करे।

33 अल्जाइमर का उपाय करे।

35 विद्यालय में पर्याप्त सुरक्षा हो।

36 बालक को पहले इंसान बनाएं।

37 पुनः संयुक्त परिवार प्रणाली अपनाएं।

38 प्राकृतिक और आन्तरिक सुन्दरता का सम्मान करे।

39 किशोरों के प्रति स्वच्छ धारणा रखे।

40 संकट में धैर्य और विवेक बनाए रखे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बेस्ट, जान, डब्ल्यू. (1963). रिसर्च इन एज्यूकेशन, नई दिल्ली : प्रेन्टिसहल ऑफ इण्डिया प्रा. लि., नई दिल्ली, पृ. 192

2. बेस्ट, जान, डब्ल्यू. (1977) : रिसर्च इन एज्यूकेशन, नई दिल्ली : प्रेन्टिसहल ऑफ इण्डिया प्रा. लि., नई दिल्ली, पृ. 93

3. गैरेट, एच. इ. (1970). स्टेटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजुकेशन, न्यूयार्क लाग्मैन ग्रीन एण्ड कम्पनी, पृ. 02

4. गुड, बार, स्केट्स (1954). मेथडोलाजी ऑफ एजुकेशन रिसर्च, न्यूयार्क : सेन्चूरी कंपनी, पृ. 42

5. हिटने, एफ. एल. (1963). द एलिमेन्ट ऑफ रिसर्च, नई दिल्ली : एशिया पब्लिकेशन, पृ. 192

6. करलिंगर, एफ.एन. (1969). फाउण्डेशन ऑूफ विहेवियरल रिसर्च, न्यूयार्क : रेनहर्ट एण्ड विस्टन, पृ. 699

7. पाण्डे, जी. सी. (1989). रिसर्च मैथोडोलोजी इन सोसीयल सांइस, नई दिल्ली, अहन्द पब्लिकेशन, पृ. 27

8. विकास (1969). फन्डामेन्टल रिसर्च स्टैटिक्स फॉर बिहेवियर सांइस, न्यूयार्क हाल्ट एण्ड विल्सटन इन.

9. योग शिक्षा, प्रारम्भिक शिक्षा में डिप्लोमा, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली 2018

10. डॉ. बृन्दा सिंह, मानव विकास एवं पारिवारिक संबंध, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2008

11. योग शिक्षा, बी.एड. कार्यक्रम, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली, 2017

12. प्रो. रीता अरोड़ा, शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर 2006

13. योग शिक्षा एम. एड. कार्यक्रम, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली, 2017

14. प्रो. एस. के दुबे, बाल्यावस्था एवं विकास, राजा प्रकाशन मन्दिर प्रा. लि. आगरा 2015

15. नई शिक्षा माध्यमिक शिक्षा आयुक्तालय, राजस्थान सरकार, बीकानेर

16. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, अखण्ड ज्योति, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, उत्तर प्रदेश

17. शिविरा, माध्यमिक शिक्षा आयुक्तालय, राजस्थान सरकार बीकानेर

18. राजस्थान पत्रिका, राज्य मुख्यालय, जयपुर

19. गुगल

20. सोशल मीडिया आदि।

शिक्षा का दार्शनिक दृष्टिकोण एवं भारतीय दर्शन में ईश्वर की अवधारणा

अम्बालाल जेदिया
शोधार्थी (शिक्षा संकाय)
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय
जोधपुर

प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली
शोध पर्यवेक्षक
प्रोफेसर शिक्षा संकाय
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)

मानव जीवन स्वयं एक दर्शन है। संसार का प्रत्येक मानव दार्शनिक है, क्योंकि वह जन्म से मृत्यु तक घटित होने वाली सभी घटनाओं को उत्सुकता एवं कौतुहल से देखता है। प्रत्येक नई बात तक पहुँचना उसका स्वभाव है। नई परिस्थितिया मे निष्कर्ष निकाले बिना मनुष्य को शांति नही मिल सकती, तभी तो वह जन्मजात दार्शनिक है। युक्ति पुर्वक तत्व ज्ञान प्राप्त करने के प्रयत्न को ही दर्शन कहते है।

'दर्शन' सुव्यवस्थित ढ़ंग से अनवरत चिन्तन करने की एक कला है। इसमे मानव जीवन से सम्बंधित समग्र वस्तुओं पर तार्किक .ष्टि से विचार किया जाता है। साथ ही पार लौकिक जगत और इहलौकिक जगत का सम्बंध एवं उनके रहस्यों की व्याख्या आदि पर विचार किया जाता है।

भारतीय दर्शन के सम्प्रदायों का विभाजन दो भागों में किया गया है, आस्तिक दर्शन और नास्तिक दर्शन। जो वेद को मानता या स्वीकारता है वह आस्तिक दर्शन तथा जो वेद को अस्वीकार करता है वह नास्तिक दर्शन कहलाता है। एक दूसरे अर्थ में नास्तिक और आस्तिक का विभाजन ईश्वर के आधार पर किया गया है। जो ईश्वर को स्वीकारता है या उसमे आस्था रखता है वह आस्तिक तथा जो ईश्वर को अस्वीकार या उसमें आस्था नहीं रखता है वह नास्तिक कहलाता है। जिसे ईश्वरवादी और अनीश्वरवादी भी कहा जाता है। व्यावहारिक जीवन में भी आस्तिक और नास्तिक का प्रयोग इसी आधार पर किया जाता है लेकिन दार्शनिक अर्थ में आस्तिक और नास्तिक का प्रयोग वेदों के आधार पर ही किया गया है।

ईश्वर की अवधारणा में ''ईश्वर है या नहीं?''

इस प्रकार भारतीय दर्शन के नौ दर्शनों में से 6 दर्शन आस्तिक तथा 3 दर्शन नास्तिक की श्रेणी में आते है जो इस प्रकार है–

भारतीय दर्शन

आस्तिक दर्शन — सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमासा, वेदान्त

नास्तिक दर्शन — चार्वाक, जैन, बौद्ध

भारतीय दर्शन में ईश्वर का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है। इसका यह भी कारण है कि धर्म की अमिट छाप भारतीय दर्शन पर है। साधारणतया धर्म उसे कहा जाता है जो ईश्वर में विश्वास रखता हो । भारतीय दर्शन का ध र्म से प्रभावित होने के कारण ही ईश्वर के बारे में अत्यधि ाक चर्चा की गई है। भारतीय दर्शन में जो दर्शन ईश्वर को मानते हैं या स्वीकारते हैं उन्हें ईश्वरवादी और जो दर्शन ईश्वर को अस्वीकार करते है वह अनीश्वरवादी कहलाते है।

1. ईश्वर की अवधारणा में ''ईश्वर है या नहीं? ईश्वर का स्वरूप क्या है? ईश्वर के अस्तित्व का क्या प्रमाण है?'' आदि को जानने का प्रयास किया जाता है। जो दर्शन आस्तिक है उन्हें श्षड्दर्शनश भी कहा जाता है क्योंकि ये सभी ''दर्शन किसी–न–किसी रूप में वेदों पर आधारित है।''

2. वेद ही भारतीय दर्शन का प्रारम्भ बिन्दू है। वेद में कई देवताओं के विचार वर्णित हैं। अनेकेश्वरवाद अनेक ईश्वरों में विश्वास करता है। एकैकाधिदेववाद (हीनोथीज्म) उसे कहा जाता है जब बहुत सारे देवताओं में से कोई एक

उपास्य बन जाता था। एकेश्वरवाद में एक ही शत् तथा विश्व का मूल तत्व है और वह है प्रजापति या स्त्रष्टा। इस तरह वेदों में हमें अनेकेश्वरवाद, एकाधिदेववाद तथा एकेश्वरवाद की अवधारणा मिलती है।

उपनिषद् में ब्रह्म को ही चरम् तत्व माना गया है। ''देवताओं को यहाँ ब्रह्म का प्रकाशित रूप माना गया है। देवतागण अपनी सत्ता के लिए ब्रह्म पर निर्भर रहते हैं। ईश्वर का स्वतन्त्र अस्तित्व समाप्त हो जाता है।'' ब्रह्म के दो रूपों का वर्णन उपनिषदों में मिलता है। (1.) परब्रह्म (ब्रह्म), (2.) अपरब्रह्म (ईश्वर)। पर ब्रह्म को निर्गुण, असीम माना गया है तथा अपरब्रह्म को सीमित और सगुण माना गया है। ''ईश्वर को उपनिषदों में सबको प्रकाश देने वाला तथा कर्मों का अधिष्ठाता माना गया है। वह स्वयंभू तथा जगत् का कारण है। माया उसकी शक्ति है। उपनिषदों में ईश्वर को विश्वव्यापी तथा विश्वातीत दोनों माना गया है।'' भगवद्गीता में ईश्वर को परम् ज्ञानी, जगत् का परम् निधान, अक्षर तथा सनातन पुरूष कहा गया है तथा पूर्ण रूप से व्याप्त है। ईश्वर ही विश्व की नैतिक व्यवस्था तथा जीव को उनके कर्मों के अनुसार सुख–दुःख प्रदान करता है। ईश्वर उपासना का विषय तथा परम् सत्य है। ''गीता में ईश्वर को 'पुरुषोत्तम' कहा गया है।''

भगवद्गीता के पश्चात् भारतीय दर्शन की रूपरेखा मे कुछ परिवर्तन होता है । भारतीय दर्शन का विभाजन आस्तिक और नास्तिक सम्प्रदायों में होता है। चार्वाक, जैन और बौद्ध नास्तिक तथा साँख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मींमासा, वेदान्त आस्तिक की श्रेणी में आते है। चार्वाक दर्शन ने अपने दर्शन में ईश्वर को कोई स्थान नहीं दिया है। चार्वाक प्रत्यक्ष को एकमात्र प्रमाण मानने के कारण ईश्वर को अस्वीकार करता है। चार्वाक ने ईश्वर के लिए बहुत ही निर्मम शब्दों का प्रयोग किया है। ईश्वर से प्रेम को चार्वाक ने काल्पनिक वस्तु बताया है।

जैन और बौद्ध ने भी ईश्वर के अस्तित्व का निषेध किया है। जैन दर्शन, ईश्वरवादियों द्वारा ईश्वर के अस्तित्व में दी गई युक्तियों का खंडन करता है। तथा युक्तियों के आधार पर खंडन करके वह ईश्वर को अप्रमाणित और असिद्ध बतलाता है। बौद्ध दर्शन में बुद्ध ने कहा है कि ''ईश्वर से प्रेम करना एक ऐसी रमणी से प्रेम करने के तुल्य है जिसका अस्तित्व ही नहीं है।'' विश्व का कारण ईश्वर को मानना भ्रम है। विश्व या संसार तो प्रतीत्य समुत्पाद के द्वारा संचालित है।

जैन और बौद्ध दर्शन में ईश्वर का निषेध किया गया है। फिर भी हमें ईश्वर विचार के दर्शन होते है। बौद्ध धर्म की महायान शाखा में बुद्ध को ही ईश्वर का रूप माना गया है तथा बुद्ध को भी मृत्यु के बाद ईश्वर के रूप में पाते है। जैन दर्शन में भी तीर्थकरों को ईश्वर के स्थान पर माना गया है। लेकिन फिर भी जैन और बौद्ध अनीश्वरवादी दर्शन ही माने जाते है।

न्याय दर्शन ईश्वरवादी है तथा ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करता है। ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए नैयायिकों ने कई प्रमाण दिये है न्याय में ईश्वर को विश्व का स्रष्टा माना गया है तथा वह इस संसार की सृष्टि नित्य परमाणुओं और दिक्काल, आत्मा तथा मन के द्वारा करता है। वैशेषिक भी न्याय दर्शन की तरह ईश्वर का समर्थ है तथा ईश्वर एक आत्मा है जो चेतना से युक्त है। वैशेषिक ने आत्मा के दो प्रकार बताये है। 1. जीवात्मा, 2. परमात्मा। ईवर को ही परमात्मा कहा है जो विश्व का स्रष्टा, पालक और संहारक है।

सांख्य दर्शन में ईश्वर को लेकर उसके समर्थकों में वाद–विवाद भी है। विज्ञान भिक्षु ईश्वरवादी है। उनके अनुसार सांख्य अनीश्वरवादी नहीं है। ष्सांख्य ने केवल इतना ही कहा है कि ईश्वर के अस्तित्व के लिए कोई प्रमाण नहीं है। ईश्वर असिद्ध है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि साँख्य अनीश्वरवादी है, अमान्य प्रतीत होता है। इसके विपरीत साँख्य ईश्वरवादी है। विज्ञान भिक्षु का कहना है कि यद्यपि प्रकृति से समस्त वस्तुएँ विकसित होती है तथापि अचेतन प्रकृति को गतिशील करने के लिए ईश्वर के सानिध्य की आवश्यकता होती है। उनके अनुसार युक्ति तथा शास्त्र दोनों से ही ऐसे ईवर की सिद्धि होती है । परन्तु सांख्य की यह ईश्वरवादी व्याख्या अधिक मान्य नहीं है। अधिकांश टीकाकारों ने सांख्य को निरीश्वरवादी (Atheistic) ही माना है।'' ईश्वर का अस्तित्व नहीं है इसके लिए सांख्य ने कई युक्तियाँ भी दी है।

ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए योग दर्शन ने कई युक्तियाँ दी है। योग में ईश्वर के स्वरूप का वर्णन करते हुए ''महर्षि पतंजली ने कहा कि– "क्लेशकर्माविपाकाशयेरपरामृष्टः पुरुषविशेषः ईश्वरः'' अर्थात् क्लेश, कर्म, विपाक और आशयों से रहित पुरूष विशेष ईश्वर है। योग दर्शन में ईश्वर का व्यावहारिक महत्व भी बताया गया है। योग दर्शन का मुख्य लक्ष्य चित्त वृत्तियों का निरोध है और इसकी प्राप्ति ईश्वर प्राणिधान से ही संभव मानी गई है। अर्थात् ईश्वर की भक्ति करना। ध्यान के सर्वश्रेष्ठ विषय के रूप में भी ईश्वर को ही योग दर्शन में माना गया है। ''प्रणव (ॐ) ईश्वर का प्रतीक माना गया है।''

मीमांसा दर्शन निरीश्वरवादी है। मींमासा में अनेक देवों को स्वीकार किया है लेकिन सृष्टि कर्ता के रूप में ईश्वर को स्वीकार नहीं करता है। ''न्याय – वैशैषिक मत में ईश्वर के अस्तित्व के लिए दिए गए प्रमाणों को ये दोनों ही मत (प्रभाकर एवं कुमारिल) स्वीकार नहीं करते।'' मींमासा दर्शन ईश्वरवादी नहीं है फिर भी वह आस्तिक है।

अद्वेत वेदान्त में शंकर ने ईश्वर को केवल व्यावहाकि दृष्टि से ही सत्य माना है परमार्थिक दृष्टि से नहीं। परमार्थिक दृष्टि से तो शंकर ने ब्रह्म को एकमात्र सत्य माना है। ''शंकर ने ईश्वर को जगत् की तरह व्यवहारिक सत्ता के अन्दर रखा है।'' ईश्वर के अस्तित्व को शंकर ने श्रुति के द्वारा प्रमाणित किया है। ''शंकर ने ब्रह्म को ''सच्चिदानंद'' कहा है। ''सच्चिदानंद का अर्थ है सत् (existence) + चित् (consciousness) + आनन्द (bliss)। ब्रह्म, सत्ता, विशुद्ध चेतना एवं आनंदमय है।'' विशिष्टाद्वैत वेदान्त में रामानुज ने ब्रह्म और ईश्वर को अभिन्न माना है। शंकर ने ब्रह्म और ईश्वर में भेद किया है। लेकिन रामानुज ब्रह्म और ईश्वर को एक मानते हैं। ब्रह्म को शंकर ने निर्गुण तथा रामानुज ने सगुण माना है। रामानुज के अनुसार ''ब्रह्म ही ईश्वर है। ब्रह्म ईश्वर होने के कारण सगुण है। वह पूर्ण है। वह जीवों को उनके शुभ और अशुभ कर्मों के अनुसार सुख, दुःख प्रदान करता है। वह कर्म–फलदाता है। वह उपासना का विषय है। वह भक्तों के प्रति दयावान रहता है। ईश्वर की कृपा से ही मोक्ष प्राप्त है।''

इस प्रकार भारतीय दर्शन में भी ईश्वर पर विचार विमर्श किया गया है। जिसमें अरविन्द, विवेकानन्द, राधाकृष्णन, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांधी आदि ने अपने दर्शन में ईश्वर को केन्द्र बिन्दू बनाया है।

बी.एड छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण और मूल्यों का अध्ययन

वैष्णव शशिबाला
शोधार्थी, शिक्षा संकाय
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय
जोधपुर (राजस्थान)

प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली
शोध पर्यवेक्षक
प्रोफेसर शिक्षा संकाय
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)

सारांश –

पारिवारिक वातावरण और मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण के दो अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है। परिवार ही वह पहली संस्था है जहां बालक को जीवन के प्रारंभिक संस्कार और नैतिक दिशा प्राप्त होती हैं।

बी.एड के छात्र–छात्रा जो भविष्य के शिक्षक है, समाज के मूल्य निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाने वाले होते है। इसलिए यह जानना आवश्यक है कि उनके जीवन में पारिवारिक वातावरण ने किस प्रकार के मूल्य विकसित किए है।

पारिवारिक वातावरण से तात्पर्य है परिवार में व्याप्त प्रेम, स्नेह, अनुशासन, संवाद, विश्वास, मूल्य, और व्यवहार का समुच्चय जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को प्रभावित करता है। यह वातावरण मुख्यतः दो प्रकार का हो सकता है।

सकारात्मक पारिवारिक वातावरण में खुला संवाद, पारस्परिक सम्मान, भावनात्मक सुरक्षा, प्रोत्साहन और समर्थन, समान व्यवहार और न्याय की भावना, तथा शैक्षिक और व्यक्तिगत लक्ष्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यमान होता है। ऐसे वातावरण में पले–बढ़े छात्र अधिक आत्मविश्वासी, स्थिर और सामाजिक रूप से जिम्मेदार बनते हैं।

नकारात्मक पारिवारिक वातावरण में निरंतर कलह और तनाव, भावनात्मक उपेक्षा या हिंसा, असुरक्षा की भावना, अनुचित अपेक्षाएं और दबाव, तथा संवाद और समझ का अभाव देखने को मिलता है। ऐसे परिवेश में बड़े हुए छात्रों में आत्म–सम्मान की कमी, सामाजिक संबंधों में कठिनाई, और शैक्षिक प्रेरणा में कमी देखी जाती है।

वर्तमान समय में जहाँ प्रतिस्पर्धा, तकनीकी तनाव और सामाजिक दबाव बढ़ रहे हैं, वहाँ परिवार की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। छात्र–छात्राओं के लिए परिवार का भावनात्मक समर्थन उन्हें न केवल मानसिक स्थिरता देता है, बल्कि उन्हें संवेदनशील और मानव–केन्द्रित योग्य व्यक्ति तथा शिक्षक बनने के लिए भी प्रेरित करता है। ऐसा शिक्षक समाज में शिक्षा को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उसे जीवन–मूल्यों से जोड़ता है।

प्रस्तावना –

शिक्षा मानव जीवन की वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति केवल ज्ञान प्राप्त नहीं करता, बल्कि जीवन जीने की कला भी सीखता है। शिक्षक इस प्रक्रिया का वह केंद्रीय स्तंभ है जो ए जो न केवल ज्ञान का प्रसार करते हैं बल्कि छात्रों में मूल्यों का विकास भी करते हैं। ऐसे में शिक्षक बनने की तैयारी कर रहे बी.एड. छात्र–छात्राओं के लिए पारिवारिक वातावरण एक आधारशिला के समान है, जो उनके विचार, व्यवहार, दृष्टिकोण और शिक्षण की भावना को गहराई से प्रभावित करता है। पारिवारिक वातावरण किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व, विचारों, व्यवहार और शैक्षिक प्रदर्शन पर गहरा प्रभाव डालता है। बी.एड. छात्र–छात्राओं के लिए यह वातावरण महत्वपूर्ण होता है क्योंकि वे भविष्य के शिक्षक हैं और उन्हें समाज में ज्ञान के प्रकाश को फैलाने की जिम्मेदारी निभानी है। बी.एड के छात्र–छात्राओं के स्वयं के मूल्य क्या हैं और उनका पारिवारिक वातावरण कैसा है, क्योंकि ये दोनों कारक उनके शिक्षण कौशल और दृष्टिकोण को प्रभावित करते

हैं।

शिक्षक इस प्रक्रिया के केंद्र में होते हैं बी.एड पाठ्यक्रम भावी शिक्षकों को तैयार करने वाला महत्वपूर्ण कार्यक्रम है जो उन्हें शिक्षण कौशल के साथ–साथ मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित करता है। पारिवारिक वातावरण एक ऐसा कारक है जो व्यक्ति के विकास, मूल्यों के निर्माण और व्यवहार को बहुत गहराई से प्रभावित करता है। जैसा कि क्लेयर ने कहा है, परिवार माता–पिता और बच्चों के बीच संबंधों की एक प्रणाली है। आज के तेजी से बदलते और हमेशा परिवर्तनशील दुनिया में, उच्च–गुणवत्ता वाली शिक्षा तेजी से महत्वपूर्ण होती जा रही है। छात्रों को न केवल शैक्षिक और व्यावसायिक सफलता के लिए, बल्कि जीवन में आने वाली विभिन्न चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक जीवन कौशल और मूल्यों से लैस करने की आवश्यकता है।

पश्चिमी राजस्थान का भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश अपनी विशिष्टता के लिए जाना जाता है। इस क्षेत्र के प्रमुख जिले जैसे जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर और जैसलमेर अपनी सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं और मूल्यों के लिए प्रसिद्ध हैं। इन क्षेत्रों की जनसांख्यिकीय और सामाजिक–आर्थिक विशेषताएँ भी भिन्न हैं, जो स्थानीय परिवारों के वातावरण और मूल्यों को प्रभावित करती हैं।

पारिवारिक वातावरणः

परिवार ही वह प्रथम विद्यालय है जहाँ व्यक्ति जीवन के आरंभिक मूल्य, नैतिकता, अनुशासन और व्यवहार के संस्कार ग्रहण करता है। माता–पिता का स्नेह, भाई–बहनों का सहयोग, तथा घर का समग्र माहौल किसी भी विद्यार्थी की मानसिक और भावनात्मक दिशा को तय करता है। यदि परिवार में संवाद, प्रोत्साहन, और सम्मान का वातावरण विद्यमान हो, तो छात्र के भीतर आत्मविश्वास और जिम्मेदारी की भावना पनपती है। वहीं, यदि घर का माहौल विवादों, असमानता या उपेक्षा से भरा हो, तो विद्यार्थी के व्यक्तित्व में अस्थिरता, चिंता और हीनभावना का प्रवेश हो जाता है। परिवार अपने आप में एक अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र है जिसमें बालक समाज में निर्दिष्ट मूल्यों, आचरणों एवं व्यवहारों का अवलोकन करता है। माता–पिता का आचरण, उनकी भाषा, उनका परस्पर व्यवहार, और समाज के प्रति उनका दृष्टिकोण सभी बच्चों के मन–मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ते हैं। यही छापें आगे चलकर उनके व्यक्तित्व, निर्णय क्षमता और सामाजिक संबंधों का आधार बनती हैं। बी.एड. का विद्यार्थी केवल एक शिक्षार्थी नहीं होता, बल्कि एक प्रशिक्षु शिक्षक होता है। उसे शिक्षा का उद्देश्य, पद्धतियाँ, मनोवैज्ञानिक समझ और नैतिक उत्तरदायित्व सीखना होता है। इस सीखने की यात्रा में पारिवारिक वातावरण उसकी प्रेरणा का मुख्य स्रोत बनता है। घर में सकारात्मक संवाद और सहयोग मिलने पर छात्र अधिक संवेदनशील, विवेकशील और सामाजिक .ष्टिकोण रखने वाला शिक्षक बनता है। वह न केवल विद्यार्थियों की शैक्षणिक आवश्यकताओं को समझता है, बल्कि उनके भावनात्मक और सामाजिक विकास में भी सहायक बनता है।

शब्दों का परिभाषीकरण

पारिवारिक वातावरण– पारिवारिक वातावरण वह सामाजिक–पर्यावरणीय स्थिति है जो परिवार के सदस्यों के बीच अंतःक्रिया और संबंधों से उत्पन्न होती है। मूस के अनुसार, पारिवारिक वातावरण के तीन आयाम हैं– संबंध आयाम, व्यक्तिगत विकास आयाम, और प्रणाली रखरखाव आयाम।

मूल्य– मूल्य का अर्थ है –किसी वस्तु, विचार या आचरण का वह गुण जो उसे वांछनीय बनाता है। सरल शब्दों में मूल्य वे मानक है जिनके आधार पर व्यक्ति तय करता है कि क्या सही है और क्या गलत,क्या अच्छा है और क्या बुरा।

डॉ.राधाकृष्णन के अनुसार –मूल्य वे मानदंड है जो व्यक्ति के चरित्र, आचरण और जीवन को दिशा देते है। मिल्टन रोकीच के अनुसार– एक स्थायी विश्वास है जो एक विशिष्ट आचरण या अंतिम स्थिति को व्यक्तिगत या सामाजिक रूप से वरीयता देता है। मूल्य दो प्रकार के होते हैं– साधनिक मूल्य (पसंदीदा व्यवहार के तरीके) और अंतिम मूल्य (अस्तित्व की वांछनीय अंतिम स्थितियाँ)।

बीएड छात्र–छात्राएँ– बीएड (शिक्षा स्नातक) के छात्र–छात्राएँ वे व्यक्ति हैं जो शिक्षक बनने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। यह एक व्यावसायिक पाठ्यक्रम है जो

छात्रों को शिक्षण सिद्धांतों, शिक्षाशास्त्र, और व्यावहारिक शिक्षण कौशल से परिचित कराता है।

तुलनात्मक अध्ययन–तुलनात्मक अध्ययन एक ऐसी अनुसंधान विधि है जिसमें दो या अधिक समूहों के बीच समानताओं और अंतरों का विश्लेषण किया जाता है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि विभिन्न समूह किस प्रकार एक दूसरे से भिन्न हैं और इन अंतरों के क्या कारण हो सकते हैं।

समस्या की आवश्यकता

आज के युग में भौतिकवाद तकनीकी जीवनशैली के कारण पारंपरिक मूल्यों में गिरावट देखी जा रही है। ईमानदारी, सेवा भावना, सहयोग जैसे नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है। ऐसे में भविष्य के शिक्षक बी. एड विद्यार्थियों में मूल्य आधारित सोच का विकास अत्यंत आवष्यक है क्योंकि वही आगे आनेवाली पीढ़ी के मार्गदर्शक बनते है।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध प्रबंध का मुख्य समस्या कथन बीएड छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण और मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन है, जिसमें जोधपुर राजस्थान के बी एड छात्र–छात्राओं का अध्ययन किया गया है।

निष्कर्षः

अतः यह कहा जा सकता है कि पारिवारिक वातावरण किसी भी बी.एड. छात्र–छात्रा के जीवन का मौन निर्देशक है। यह वातावरण जितना सशक्त और सकारात्मक होगा, शिक्षा–जगत उतना ही संवेदनशील, सृजनशील और मानवीय बनेगा। पारिवारिक प्रेम, संवाद और नैतिक मूल्यों से पोषित शिक्षक ही आने वाले समाज को दिशा देने की क्षमता रखते हैं।

शिक्षा तभी प्रभावशाली बन सकती है जब उसके मूल में परिवार का स्नेह, संस्कार और सहयोग समाहित हो। जो शिक्षक प्रशिक्षु अपने परिवार से सकारात्मक ऊर्जा और मूल्य प्राप्त करते हैं, वे न केवल बेहतर शिक्षक बनते हैं, बल्कि समाज में परिवर्तन के वाहक भी बनते हैं। इसलिए, शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए यह आवश्यक है कि हम पारिवारिक वातावरण के महत्व को पहचानें और उसे मजबूत बनाने के प्रयास करें। एक स्वस्थ परिवार, स्वस्थ शिक्षक और स्वस्थ समाज का निर्माण करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

बी के माहेश्वरी – मूल्य और मानव अधिकारों की शिक्षा

श्री वास्तव, एस पी– मूल्य षिक्षा और चरित्र निर्माण – आगरा विनोद पुस्तक

यादव एस के – शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान

शुक्ल एच एल – शिक्षा मे मूल्य और नैतिकता

त्यागी आर एस – शिक्षक शिक्षा के सिद्धान्त और व्यवहार

सिंह आर पी – शिक्षा और समाज

Mangal S K - Essentials of educational psychology.

Rokeach M - The Nature of Human Values

www.ncert.nic.in

विभिन्न स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थियों की करियर–अनुकूलशीलता का अध्ययन

कमलेश वैष्णव
शोधार्थी
पीएच.डी. छात्र, शिक्षा संकाय,
जनार्दन राय नागर राजस्थान
विद्यापीठ (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय)
उदयपुर

डॉ. प्रमिला पूर्बिया
पर्यवेक्षिका
सहायक आचार्य, शिक्षा संकाय
लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण
महाविद्यालय, डबोक, उदयपुर (राज.)

सार–संक्षेप

प्रस्तुत शोध लेख में ''विभिन्न स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थियों की करियर–अनुकूलशीलता'' का तुलनात्मक अध्ययन है, जिसमें उदयपुर जिले के 600 उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों (300 उच्च एवं 300 निम्न स्तर की अध्ययन आदतों वाले) को चयनित कर सर्वेक्षण विधि से दत्त संकलित किये गये। स्वनिर्मित करियर–अनुकूलशीलता मापनी तथा आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन और टी–परीक्षण का उपयोग किया गया। निष्कर्षो से ज्ञात हुआ कि उच्च अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी करियर–जागरूकता, भविष्य की योजना, समस्या–समाधान, सूचना–संग्रहण एवं उपयोग, निर्णय क्षमता, आत्म–विश्वास और तनाव सहनशीलता में अधिक सक्षम हैं, जबकि निम्न अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी अपेक्षाकृत कमजोर पाए गए। हालाँकि लचीलापन, स्व–प्रेरणा और सामाजिक समर्थन के क्षेत्रों में दोनों समूह समान रूप से सक्षम रहे। इस प्रकार प्रस्तुत परिकल्पना आंशिक रूप से सत्य सिद्ध हुई और समग्र रूप में अस्वी.त हुई। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सुदृढ़ अध्ययन आदतें विद्यार्थियों की करियर–अनुकूलशीलता को मज़बूत बनाती हैं और आज के बदलते शैक्षिक एवं व्यावसायिक परि.श्य में सफलता के लिए अनिवार्य हैं।

मुख्य शब्द :– अध्ययन आदत, करियर–अनुकूलशीलता

प्रस्तावना :–

विद्यार्थी किसी भी राष्ट्र की प्रगति की नींव होते हैं। उनकी पढ़ाई की आदतें उनकी पहचान और सफलता तय करती हैं। पढ़ाई की आदतें सिर्फ समय और जगह तक सीमित नहीं होतीं, बल्कि इसमें ध्यान, समय का सही उपयोग, आत्म–अनुशासन और याद रखने की कला भी शामिल होती है। आजकल ऑनलाइन लर्निंग और डिजिटल साधनों ने पढ़ाई की आदतों को बदल दिया है। कुछ विद्यार्थी अच्छी तरह योजनाबद्ध पढ़ते हैं, कुछ औसत रूप से पढ़ते हैं, जबकि कुछ लापरवाही या असंगठित तरीके से पढ़ते हैं।

अच्छी पढ़ाई की आदतें रखने वाले विद्यार्थी लक्ष्य तय करते हैं, समय का सही इस्तेमाल करते हैं और नोट्स बनाने, पुनरावृत्ति करने जैसी सक्रिय पद्धतियाँ अपनाते हैं। वहीं औसत स्तर वाले विद्यार्थी थोड़ी मेहनत से भी काम चला लेते हैं, जबकि कमजोर आदतों वाले विद्यार्थी अक्सर पीछे रह जाते हैं। यही पढ़ाई की आदतें विद्यार्थियों की करियर–अनुकूलशीलता यानी बदलते हालात में खुद को ढालने की क्षमता को भी प्रभावित करती हैं। अच्छी आदतें उन्हें आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर और समस्या–समाधान में सक्षम बनाती हैं। करियर–अनुकूलशीलता को एक मनोसामाजिक ताकत के रूप में परिभाषित किया गया है जो व्यक्ति का आत्म–नियमन को सूची और दस्तावेजों के बीच में अन्तर करने में सक्षम है।

हर विद्यार्थी की आदतें और रुचियाँ अलग होती हैं, इसलिए वे करियर का चुनाव भी अलग–अलग तरीके से करते हैं। यह शोध इसी बात को जानने की कोशिश है कि क्या उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी नियमित समय–सारणी से पढ़ते हैं, कठिन विषयों के लिए अतिरिक्त स्रोतों का सहारा लेते हैं और भविष्य के करियर विकल्पों की जानकारी जुटाते हैं। इस अध्ययन से यह समझने में मदद मिलेगी कि अच्छी अध्ययन आदतें विद्यार्थियों के

व्यक्तित्व विकास और करियर की दिशा तय करने में कैसे सहायक होती हैं।

उद्देश्य :–

1. उच्च स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों की करियर–अनुकूलशीलता का अध्ययन करना।

2. निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों की करियर–अनुकूलशीलता का अध्ययन करना।

3. उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों की करियर–अनुकूलशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

1. उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्याथियों की करियर– अनुकूलशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

विधिशास्त्र :–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए उदयपुर जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय की कक्षा 11 से यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा 600 विद्यार्थियों का चयन किया जिसमें 300 उच्च व 300 निम्न स्तर वाले (अध्ययन आदतों) विद्यार्थियों का चयन किया गया। चयनित विद्याथियों से दत्तों का संकलन करने हेतु स्वनिर्मित करियर–अनुकूलशीलता मापनी का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के संकलन के पश्चात् उनका विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि का प्रयोग किया गया।

संख्यात्मक व गुणात्मक विश्लेषण :–

सारणी संख्या 1

उच्च स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों की करियर–अनुकूलशीलता का मध्यमान के आधार पर विश्लेषण

क्र.सं.	आयाम	मध्यांक	गणात्मक मध्यमान
1.	करियर–जागरूकता	20	26.42
2.	भविष्य की योजना	20	25.75
3.	लचीलापन	20	21.45
4.	समस्या समाधान क्षमता	20	27.55
5.	स्व–प्रेरणा	20	22.33
6.	सूचना–संग्रहण और उपयोग	20	24.99
7.	निर्णय क्षमता	20	26.25
8.	आत्म–विश्वास	20	28.11
9.	सामाजिक समर्थन	20	23.69
10.	तनाव सहनशीलता	20	29.05

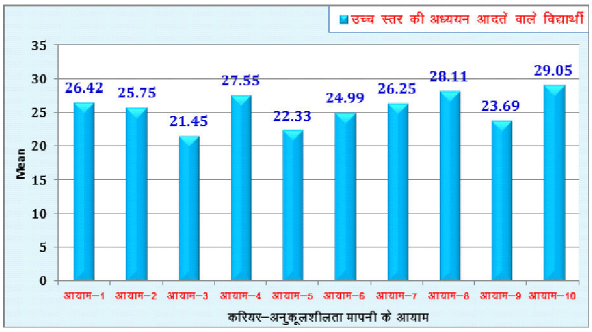

परिणामों की विवेचना :–

1. उच्च स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''करियर–जागरूकता'' आयाम पर प्राप्त 26.42 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह दर्शाता है कि इन विद्यार्थियों का करियर–जागरूकता स्तर उच्च और सकारात्मक है।

2. उच्च स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''भविष्य की योजना'' आयाम पर प्राप्त 25.75 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह दर्शाता है कि इन विद्यार्थियों की भविष्य योजना बनाने की क्षमता सकारात्मक और सशक्त है।

3. उच्च स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''लचीलापन'' आयाम पर प्राप्त 21.45 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह संकेत करता है कि इन विद्यार्थियों में करियर संबंधी लचीलापन सकारात्मक रूप से विकसित है।

4. उच्च स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''समस्या समाधान क्षमता'' आयाम पर प्राप्त 27.55 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह दर्शाता है कि इन विद्यार्थियों में समस्या समाधान की क्षमता उच्च और सकारात्मक है।

5. उच्च स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''स्व–प्रेरणा'' आयाम पर प्राप्त 22.33 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह संकेत करता है कि इन विद्यार्थियों में स्व–प्रेरणा का स्तर उच्च है।

6. उच्च स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''सूचना–संग्रहण और उपयोग'' आयाम पर प्राप्त 24.99 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह दर्शाता है कि इन विद्यार्थियों में करियर से संबंधित जानकारी को एकत्र करने और उसका उपयोग करने की

क्षमता अधिक है।

7. उच्च स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''निर्णय क्षमता'' आयाम पर प्राप्त 26.25 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह दर्शाता है कि इन विद्यार्थियों की निर्णय लेने की क्षमता उच्च स्तर की है।

8. उच्च स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''आत्म–विश्वास'' आयाम पर प्राप्त 28.11 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह दर्शाता है कि इन विद्यार्थियों का आत्म–विश्वास उच्च स्तर का है।

9. उच्च स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''सामाजिक समर्थन'' आयाम पर प्राप्त 23.69 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह संकेत करता है कि ये विद्यार्थी सामाजिक समर्थन का प्रभावी उपयोग करने में सक्षम हैं।

10. उच्च स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''तनाव सहनशीलता'' आयाम पर प्राप्त 29.05 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह स्पष्ट करता है कि ये विद्यार्थी तनाव को सहन करने और दबावपूर्ण परिस्थितियों से निपटने में सक्षम हैं।

सारणी संख्या 2

निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों की करियर–अनुकूलशीलता का मध्यमान के आधार पर विश्लेषण

क्र.सं.	आयाम	मध्यांक	गणात्मक मध्यमान
1.	करियर–जागरूकता	20	23.68
2.	भविष्य की योजना	20	22.81
3.	लचीलापन	20	21.88
4.	समस्या समाधान क्षमता	20	24.49
5.	स्व–प्रेरणा	20	22.91
6.	सूचना–संग्रहण और उपयोग	20	21.32
7.	निर्णय क्षमता	20	23.10
8.	आत्म–विश्वास	20	25.51
9.	सामाजिक समर्थन	20	24.05
10.	तनाव सहनशीलता	20	26.27

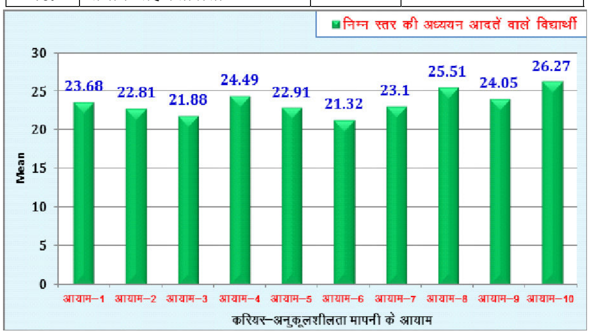

परिणामों की विवेचना :–

1. निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''करियर– जागरूकता'' आयाम पर प्राप्त 23.68 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह इंगित करता है कि यद्यपि इनकी अध्ययन आदतें निम्न स्तर की हैं, फिर भी इनमें करियर–जागरूकता सकारात्मक रूप में विद्यमान है।

2. निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''भविष्य की योजना'' आयाम पर प्राप्त 22.81 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि निम्न स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी अपने जीवन हेतु करियर लक्ष्य निर्धारित करते हैं और उसका समय–समय पर मूल्यांकन भी करते हैं, जो उनकी सकारात्मक सोच को दर्शाता है।

3. निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''लचीलापन'' आयाम पर प्राप्त 21.88 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह स्पष्ट करता है कि निम्न स्तर पर होते हुए भी विद्यार्थियों में करियर संबंधी लचीलापन सकारात्मक है।

4. निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''समस्या समाधान क्षमता'' आयाम पर प्राप्त 24.49 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह संकेत करता है कि समस्या समाधान क्षमता निम्न स्तर पर होने के बावजूद सकारात्मक दिशा में है।

5. निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''स्व–प्रेरणा'' आयाम पर प्राप्त 22.91 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह संकेत करता है कि स्व–प्रेरणा निम्न स्तर पर होते हुए भी सकारात्मक है।

6. निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''सूचना–संग्रहण और उपयोग'' आयाम पर प्राप्त 21.32 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह दर्शाता है कि सूचना–संग्रहण एवं उपयोग की क्षमता निम्न स्तर पर है, परंतु सकारात्मक रूप से उपस्थित है।

7. निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''निर्णय क्षमता'' आयाम पर प्राप्त 23.10 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह इंगित करता है कि निर्णय क्षमता भी निम्न स्तर पर होते हुए

सकारात्मक है।

8. निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''आत्म–विश्वास'' आयाम पर प्राप्त 25.51 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह दर्शाता है कि आत्म–विश्वास का स्तर निम्न होते हुए भी सकारात्मक है।

9. निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''सामाजिक समर्थन'' आयाम पर प्राप्त 24.05 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह दर्शाता है कि सामाजिक समर्थन का उपयोग करने की क्षमता निम्न स्तर की है, लेकिन सकारात्मक रूप से मौजूद है।

10. निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों के ''तनाव सहनशीलता'' आयाम पर प्राप्त 26.27 का गणात्मक मध्यमान, जो कि मध्यांक 20 से अधिक है, यह स्पष्ट करता है कि तनाव सहनशीलता का स्तर निम्न होते हुए भी सकारात्मक है।

सारणी संख्या – 3

उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों की करियर–अनुकूलशीलता का टी–मान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

क्र. सं.	क्षेत्र	मध्यमान		मानक विचलन		टी–मान	सार्थकता का स्तर
		उच्च	निम्न	उच्च	निम्न		
1.	करियर–जागरूकता	26.42	23.68	2.66	2.38	13.30	**0.01**
2.	भविष्य की योजना	25.75	22.81	2.59	2.33	14.62	**0.01**
3.	लचीलापन	21.45	21.88	4.15	3.19	1.42	**असार्थक**
4.	समस्या समाधान क्षमता	27.55	24.49	2.79	2.45	14.27	**0.01**
5.	स्व–प्रेरणा	22.33	22.91	3.93	4.79	1.62	**असार्थक**
6.	सूचना–संग्रहण और उपयोग	24.99	21.32	2.53	2.19	19.00	**0.01**
7.	निर्णय क्षमता	26.25	23.10	3.99	2.48	11.58	**0.01**
8.	आत्म–विश्वास	28.11	25.51	3.11	2.72	10.90	**0.01**
9.	सामाजिक समर्थन	23.69	24.05	3.23	1.98	1.65	**असार्थक**
10.	तनाव सहनशीलता	29.05	26.27	2.91	2.69	12.15	**0.01**

स्वतंत्रता के अंश = 598

0.05 विश्वास स्तर का मान = 1.96

0.01 विश्वास स्तर का मान = 2.58

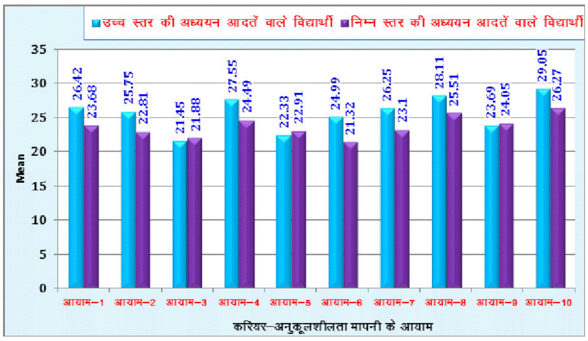

क्षेत्रवार विश्लेषण :–

1. करियर–अनुकूलशीलता मापनी के क्षेत्र ''करियर–जागरूकता'' के सभी पदों के प्राप्तांकों पर उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 26.42, 23.68 तथा 2.66, 2.38 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के लिए टी–मान 13.30 मिला जो कि स्वतन्त्रता के अंश 598 के 0.01 स्तर के सारणीमान 2.58 से अधिक है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूहों के बीच ''करियर–जागरूकता'' के स्तर में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर मौजूद है।

2. करियर–अनुकूलशीलता मापनी के क्षेत्र ''भविष्य की योजना'' के सभी पदों के प्राप्तांकों पर उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 25.75, 22.81 तथा 2.59, 2.33 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के लिए टी–मान 14.62 मिला जो कि स्वतन्त्रता के अंश 598 के 0.01 स्तर के सारणीमान 2.58 से अधिक है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूहों के बीच ''भविष्य की योजना'' के स्तर में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर मौजूद है।

3. करियर–अनुकूलशीलता मापनी के क्षेत्र ''लचीलापन'' के सभी पदों के प्राप्तांकों पर उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 21.45, 21.88 तथा 4.15, 3.19 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के लिए टी–मान 1.42 मिला जो कि स्वतन्त्रता के अंश 598 के 0.05 स्तर के सारणीमान 1.96 से कम है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूहों के बीच ''लचीलापन'' के स्तर में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4. करियर–अनुकूलशीलता मापनी के क्षेत्र ''समस्या समाधान

क्षमता'' के सभी पदों के प्राप्तांकों पर उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 27.55, 24.49 तथा 2.79, 2.45 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के लिए टी–मान 14.27 मिला जो कि स्वतन्त्रता के अंश 598 के 0.01 स्तर के सारणीमान 2.58 से अधिक है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूहों के बीच ''समस्या समाधान क्षमता'' के स्तर में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर मौजूद है।

5. करियर–अनुकूलशीलता मापनी के क्षेत्र ''स्व–प्रेरणा'' के सभी पदों के प्राप्तांकों पर उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 22.33, 22.91 तथा 3.93, 4.79 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के लिए टी–मान 1.62 मिला जो कि स्वतन्त्रता के अंश 598 के 0.05 स्तर के सारणीमान 1.96 से कम है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूहों के बीच ''स्व–प्रेरणा'' के स्तर में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं है।

6. करियर–अनुकूलशीलता मापनी के क्षेत्र ''सूचना–संग्रहण और उपयोग'' के सभी पदों के प्राप्तांकों पर उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 24.99, 21.32 तथा 2.53, 2.19 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के लिए टी–मान 19.00 मिला जो कि स्वतन्त्रता के अंश 598 के 0.01 स्तर के सारणीमान 2.58 से अधिक है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूहों के बीच ''सूचना–संग्रहण और उपयोग'' के स्तर में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर मौजूद है।

7. करियर–अनुकूलशीलता मापनी के क्षेत्र ''निर्णय क्षमता'' के सभी पदों के प्राप्तांकों पर उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 26.25, 23.10 तथा 3.99, 2.48 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के लिए टी–मान 11.58 मिला जो कि स्वतन्त्रता के अंश 598 के 0.01 स्तर के सारणीमान 2.58 से अधिक है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूहों के बीच ''निर्णय क्षमता'' के स्तर में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर मौजूद है।

8. करियर–अनुकूलशीलता मापनी के क्षेत्र ''आत्म–विश्वास'' के सभी पदों के प्राप्तांकों पर उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 28.11, 25.51 तथा 3.11, 2.72 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के लिए टी–मान 10.90 मिला जो कि स्वतन्त्रता के अंश 598 के 0.01 स्तर के सारणीमान 2.58 से अधिक है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूहों के बीच ''आत्म–विश्वास'' के स्तर में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर मौजूद है।

9. करियर–अनुकूलशीलता मापनी के क्षेत्र ''सामाजिक समर्थन'' के सभी पदों के प्राप्तांकों पर उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 23.69, 24.05 तथा 3.23, 1.98 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के लिए टी–मान 1.65 मिला जो कि स्वतन्त्रता के अंश 598 के 0.05 स्तर के सारणीमान 1.96 से कम है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूहों के बीच ''सामाजिक समर्थन'' के स्तर में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं है।

10. करियर–अनुकूलशीलता मापनी के क्षेत्र ''तनाव सहनशीलता'' के सभी पदों के प्राप्तांकों पर उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 29.05, 26.27 तथा 2.91, 2.69 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के लिए टी–मान 12.15 मिला जो कि स्वतन्त्रता के अंश 598 के 0.01 स्तर के सारणीमान 2.58 से अधिक है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूहों के बीच ''तनाव सहनशीलता'' के स्तर में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर मौजूद है।

शोध निष्कर्ष :–

शोधार्थी द्वारा प्राप्त दत्तों के विश्लेषण के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए :–

उच्च स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों की करियर–अनुकूलशीलता :–

– उच्च स्तर अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी विभिन्न करियर विकल्पों और भविष्य में उपलब्ध अवसरों की अच्छी जानकारी रखते हैं तथा अलग–अलग करियर के लिए आवश्यक योग्यताओं से भी परिचित होते हैं। अपने जीवन के लिए स्पष्ट करियर लक्ष्य निर्धारित करते हैं और लक्ष्य तक

पहुँचने के लिए व्यवस्थित, यथार्थवादी एवं व्यावहारिक योजना बनाते हैं। परिस्थितियों और समय के अनुसार अपने करियर विकल्पों में बदलाव करने के लिए तत्पर रहते हैं तथा नए करियर विकल्पों पर विचार करने में हिचकिचाते नहीं हैं। करियर से जुड़ी समस्याओं के समाधान हेतु कई विकल्पों पर विचार करते हैं और कठिन परिस्थिति में भी सही निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। ऐसे विद्यार्थी करियर के लिए मेहनत करने को हमेशा तत्पर रहते हैं तथा सफलता पाने की तीव्र इच्छा रखते हैं। करियर से जुड़ी जानकारी के लिए विभिन्न स्रोतों जैसे इंटरनेट, किताबें, पत्र–पत्रिकाएँ, शिक्षक और विशेषज्ञों से मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं तथा सहपाठियों के अनुभवों से भी सीखते हैं। करियर से संबंधित मामलों में जल्दी और सही निर्णय ले सकते हैं तथा सभी विकल्पों का विश्लेषण करने के बाद ही निर्णय लेते हैं। उन्हें अपने निर्णय पर पूर्ण भरोसा होता है और वे दूसरों के दबाव में निर्णय नहीं लेते। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की क्षमता पर विश्वास रखते हैं और कठिन परिस्थितियों का सामना करने से नहीं डरते। उन्हें अपनी क्षमताओं पर भरोसा होता है तथा वे अपने करियर के चुनाव को सही मानते हैं। अपने परिवार से करियर संबंधी मार्गदर्शन लेते हैं, शिक्षकों और विशेषज्ञों से परामर्श लेने में संकोच नहीं करते तथा मित्रों से जानकारी साझा करते हैं। ये विद्यार्थी परीक्षा या प्रतियोगिता के दबाव में भी शांत रहते हैं, कठिन परिस्थितियों में आत्म–नियंत्रण बनाए रखते हैं और असफलता के बाद भी हार नहीं मानते।

निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों की करियर–अनुकूलशीलता :–

– निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों की यद्यपि अध्ययन आदतें निम्न स्तर की हैं, फिर भी इनमें करियर–जागरूकता सकारात्मक रूप में विद्यमान है। ये विद्यार्थी करियर विकल्पों के प्रति सजग रहते हैं तथा यह समझते हैं कि भविष्य में कौन–से करियर अवसर उपलब्ध हैं और उन तक पहुँचने के लिए कौन–सी योग्यताएँ आवश्यक हैं। ये विद्यार्थी अपने जीवन हेतु करियर लक्ष्य निर्धारित करते हैं और उसका समय–समय पर मूल्यांकन भी करते हैं, जो उनकी सकारात्मक सोच को दर्शाता है। निम्न स्तर पर होते हुए भी विद्यार्थियों में करियर संबंधी लचीलापन सकारात्मक है। ये विद्यार्थी बदलती परिस्थितियों और समय की मांग के अनुसार अपने करियर विकल्पों में आवश्यक परिवर्तन करने के लिए तत्पर रहते हैं। समस्या समाधान क्षमता निम्न स्तर पर होने के बावजूद सकारात्मक दिशा में है। निम्न स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी करियर से संबंधित समस्याओं को हल करने के लिए वैकल्पिक उपायों पर विचार करते हैं और कठिन परिस्थितियों में भी उचित निर्णय लेने का प्रयास करते हैं। स्व–प्रेरणा निम्न स्तर पर होते हुए भी सकारात्मक है। ऐसे विद्यार्थी अपने करियर में सफलता पाने के लिए परिश्रम करने को तैयार रहते हैं और उपलब्धि की प्रबल इच्छा रखते हैं, जो उनके सकारात्मक दृष्टिकोण का परिचायक है। सूचना–संग्रहण एवं उपयोग की क्षमता निम्न स्तर पर है, परंतु सकारात्मक रूप से उपस्थित है। विद्यार्थी विभिन्न स्रोतों जैसे – इंटरनेट, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, शिक्षकों और विशेषज्ञों से जानकारी प्राप्त कर उसका करियर में उपयोग करते हैं। निर्णय क्षमता भी निम्न स्तर पर होते हुए सकारात्मक है। ऐसे विद्यार्थी करियर से जुड़े निर्णय सोच–समझकर लेते हैं, विकल्पों का विश्लेषण करते हैं और तथ्यों के आधार पर सही विकल्प चुनने का प्रयास करते हैं। आत्म–विश्वास का स्तर निम्न होते हुए भी सकारात्मक है। ये विद्यार्थी अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की क्षमता पर विश्वास रखते हैं और कठिनाइयों का सामना करने से पीछे नहीं हटते, जो उनके आत्म–बल का परिचय है। सामाजिक समर्थन का उपयोग करने की क्षमता निम्न स्तर की है, लेकिन सकारात्मक रूप से मौजूद है। ये विद्यार्थी परिवार, मित्रों और शिक्षकों से सहयोग व मार्गदर्शन प्राप्त करने में सक्रिय रहते हैं और करियर से जुड़ी जानकारी साझा करने में संकोच नहीं करते। तनाव सहनशीलता का स्तर निम्न होते हुए भी सकारात्मक है। ये विद्यार्थी परीक्षा अथवा प्रतियोगिता के दबाव में शांत रहने का प्रयास करते हैं, आत्म–नियंत्रण बनाए रखते हैं और असफलता को हार मानने के बजाय सीखने का अवसर मानते हैं।

उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदते वाले विद्यार्थियों

की करियर–अनुकूलशीलता की तुलना :–

– उच्च स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी विभिन्न करियर विकल्पों और अवसरों की जानकारी रखते हैं, अलग–अलग करियर के लिए आवश्यक योग्यताओं को समझते हैं, करियर से जुड़े परिवर्तनों की नियमित जानकारी लेते हैं, अद्यतन सूचनाओं का उपयोग करते हैं, अपने रुचि वाले करियर की विशेषताओं और संभावित चुनौतियों को समझते हैं तथा करियर चयन में रुचि और अवसर दोनों को ध्यान में रखते हैं। साथ ही वे अपने विषय से जुड़े संभावित करियर विकल्पों से अधिक परिचित होते हैं और सही जानकारी पाने के लिए अनेक स्रोतों का उपयोग करते हैं। इसके विपरीत, निम्न स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थियों की ''करियर–जागरूकता'' अपेक्षाकृत कम पाई गई।

– उच्च स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी अपने जीवन के लिए स्पष्ट करियर लक्ष्य तय करते हैं, व्यवस्थित और यथार्थवादी योजना बनाते हैं, लक्ष्य प्राप्ति के लिए समय–सीमा निर्धारित करते हैं, आगे की पढ़ाई और तैयारी की दिशा तय करते हैं, संभावित बाधाओं की पहचान कर उनका समाधान खोजते हैं, संसाधनों का सही उपयोग करते हैं तथा दीर्घकालिक और अल्पकालिक दोनों प्रकार के लक्ष्य निर्धारित कर नियमित रूप से अपनी योजना की समीक्षा करते हैं। इसके विपरीत, निम्न स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थियों में ''भविष्य की योजना'' बनाने की क्षमता अपेक्षाकृत कम पाई गई।

– उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी परिस्थितियों और समय के अनुसार अपने करियर विकल्प बदलने के लिए तैयार समान रूप से रहते हैं, नए विकल्पों पर विचार करने में हिचकिचाते नहीं, तकनीकी व सामाजिक परिवर्तनों के अनुरूप स्वयं को ढालते हैं, असफलता की स्थिति में अन्य अवसर तलाशते हैं और बदलती रुचियों व परिस्थितियों को ध्यान में रखकर नए विकल्प स्वीकार करने में सक्षम पाए गए।

– उच्च स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी करियर से जुड़ी समस्याओं का विश्लेषण करके समाधान खोजने, कठिन परिस्थितियों में सही निर्णय लेने, विभिन्न विकल्पों पर विचार करने, विशेषज्ञ से मार्गदर्शन लेने, असफलताओं से सीखने, समस्याओं को अवसर के रूप में देखने और दबाव में भी सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने में अधिक सक्षम हैं। इसके विपरीत, निम्न स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थियों में ''समस्या समाधान क्षमता'' अपेक्षाकृत कम विकसित है।

– उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी अपने करियर के लिए मेहनत करने, सफलता पाने की तीव्र इच्छा रखने, लगातार प्रयास करने, कठिन परिश्रम में आनंद लेने, स्वयं को सुधारने, असफलताओं से निराश न होने, आत्मनिर्भर रहने, स्वयं प्रेरणा पाने और अपने लक्ष्य को समय पर प्राप्त करने में समान रूप से सक्षम हैं।

– उच्च स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी करियर से जुड़ी जानकारी एकत्र करने, विभिन्न स्रोतों का उपयोग करने, इंटरनेट, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं और विशेषज्ञों से मार्गदर्शन लेने, सहपाठियों के अनुभवों से सीखने, सही सूचना का चयन करके उसका उपयोग करने, प्रतियोगी परीक्षाओं और नवीनतम अवसरों की जानकारी समय पर लेने तथा उपलब्ध जानकारी का तुलनात्मक अध्ययन करने में अधिक सक्षम हैं। इसके विपरीत, निम्न स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थियों में ''सूचना–संग्रहण और उपयोग'' अपेक्षाकृत कम विकसित है।

– उच्च स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी करियर से संबंधित निर्णय जल्दी और सही ढंग से लेने, सभी विकल्पों का विश्लेषण करने, सही–गलत का अंतर पहचानने, तथ्यों को प्राथमिकता देने, दूसरों के दबाव में निर्णय न लेने, समय पर सही निर्णय लेने और निर्णय की जिम्मेदारी लेने में अधिक सक्षम हैं। इसके विपरीत, निम्न स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थियों में ''निर्णय क्षमता'' अपेक्षाकृत कम विकसित है।

– उच्च स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने, कठिन परिस्थितियों का सामना करने, अपनी क्षमताओं पर भरोसा रखने, करियर चयन में सही निर्णय लेने और अवसरों का पूर्ण उपयोग करने में अधिक आत्म–विश्वासी हैं। इसके विपरीत, निम्न स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थियों में यह ''आत्म–विश्वास'' अपेक्षाकृत

कम विकसित है।

– उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी अपने करियर के लिए परिवार, शिक्षक, मित्र और विशेषज्ञों से मार्गदर्शन लेने, जानकारी साझा करने, कार्यशालाओं/सेमिनारों में भाग लेने और समूह चर्चा के माध्यम से सही जानकारी जुटाने में समान रूप से सक्रिय और समर्थ हैं।

– उच्च स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी परीक्षा या प्रतियोगिता के दबाव में भी शांत रहते हैं, कठिन परिस्थितियों में आत्म–नियंत्रण बनाए रखते हैं, असफलताओं से सीखते हैं और दबावपूर्ण परिस्थितियों में भी सकारात्मक रहते हुए सही निर्णय लेने और कार्य की गुणवत्ता बनाए रखने में अधिक सक्षम हैं। इसके विपरीत, निम्न स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी ''तनाव सहनशीलता'' के संदर्भ में अपेक्षाकृत कम सक्षम हैं।

परिकल्पना का सत्यापन :–

परिणामों से स्पष्ट होता है कि करियर–अनुकूलशीलता मापनी के 10 क्षेत्रों में से ''लचीलापन'', ''स्व–प्रेरणा'' तथा ''सामाजिक समर्थन'' इन 3 क्षेत्रों में उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थियों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जिससे इन क्षेत्रों में परिकल्पना स्वीकृत होती है। जबकि ''करियर–जागरूकता'', ''भविष्य की योजना'', ''समस्या समाधान क्षमता'', ''सूचना–संग्रहण और उपयोग'', ''निर्णय क्षमता'', ''आत्म–विश्वास'' तथा ''तनाव सहनशीलता'' इन 7 क्षेत्रों में दोनों समूहों के बीच सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया, इसलिए इन क्षेत्रों में परिकल्पना अस्वीकृत होती है। इस प्रकार समग्र रूप से शोधार्थी द्वारा प्रतिपादित परिकल्पना ''उच्च एवं निम्न स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थियों की करियर–अनुकूलशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है'' अस्वीकृत होती है।

प्रासंगिकता :–

वर्तमान समय में शिक्षा और करियर की चुनौतियाँ तेजी से बदल रही हैं, ऐसे में यह अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि उच्च स्तर की अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी करियर–अनुकूलशीलता के अधिकांश पहलुओं.जैसे करियर–जागरूकता, भविष्य की योजना, समस्या–समाधान क्षमता, सूचना–संग्रहण, निर्णय क्षमता, आत्म–विश्वास और तनाव सहनशीलता.में अधिक सक्षम पाए गए, जबकि निम्न स्तर की आदतों वाले विद्यार्थी अपेक्षाकृत कमजोर रहे। साथ ही कुछ पहलुओं जैसे परिस्थितियों के अनुसार करियर विकल्प बदलने की क्षमता, मेहनत और मार्गदर्शन प्राप्त करने में दोनों समान रूप से सक्रिय दिखे। इस प्रकार यह शोध आज के विद्यार्थियों को यह समझने में मदद करता है कि सुदृढ़ अध्ययन आदतें न केवल शैक्षिक सफलता बल्कि बदलते व्यावसायिक परिदृश्य में सफलतापूर्वक अनुकूलन के लिए भी आवश्यक हैं।

सन्दर्भ :–

1. ढ़ोढ़ियाल, एस.एन. एवं फाटक, ए.बी. (1993). ''शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र'', राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।

2. हेनरी ई. गेरिट (1979). ''शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग'' (अनुवादित संस्करण) कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

3. Hirschi, A. (2018). Career adaptability: A review of conceptual and empirical developments. Journal of Vocational Behavior, 98, 120-133.

4. Savickas, M. L., & Porfeli, E. J. (2012). Career Adapt-Abilities Scale: Construction, Reliability, and Measurement Equivalence Across 13 countries. Journal of Vocational Behavior, 80(3), 661-673.

5. Young, P.V. (1954). "Scientific Social Surveys and Research", Prentice-Hall of India Pvt.Ltd.

A comparative study on online and offline business models in modern era

Dr. Madhuri Soni
Assistant Professor
Nirwan University, Jaipur (Raj.)
Mob. 8005781005

Introduction

The landscape of commerce has undergone profound transformation with the advent of digital technologies and internet penetration. Traditional offline business models have relied on physical presence, face-to-face interactions, and localized markets to deliver goods and services. In contrast, online businesses leverage electronic platforms, digital marketing, and worldwide connectivity to reach consumers beyond geographical boundaries. This divergence has created distinct operational frameworks and marketing dynamics, driving a fundamental debate about the comparative effectiveness, sustainability, and future of online versus offline business models. Online businesses offer unprecedented advantages such as 24/7 accessibility, global reach, lower overhead costs, and the ability to harness data analytics for personalized customer experiences. The convenience and variety offered by online platforms cater to the increasing demand for flexible and time-efficient shopping.However, the offline business model continues to hold significant value through direct human interaction, sensory experience of products, and immediate fulfillment. Physical stores foster brand trust and loyalty by providing customers a tangible sense of quality and service that digital formats cannot fully replicate. Particularly in product categories where touch, taste, or trial is important - such as apparel, electronics, and fresh produce - offline businesses remain indispensable. This comparative study aims to dissect the critical factors that differentiate these two paradigms, including operational costs, consumer behavior, marketing strategies, and technological challenges. Furthermore, the paper examines the rise of hybrid or omnichannel business models that combine online and offline strengths, reflecting shifting consumer preferences and the evolving digital ecosystem. Understanding the nuanced strengths and limitations of online and offline businesses is essential for entrepreneurs making strategic decisions, policymakers designing supportive frameworks, and consumers navigating increasingly complex purchasing environments. This research contributes to this understanding by providing a detailed comparative analysis backed by empirical data and theoretical insights.

Objectives

Compare the operational frameworks of online and offline businesses. Examine consumer buying behavior and preferences related to both channels. Identify the key advantages and hurdles facing each business model. Explore the impact

of technological advancements on market dynamics. Assess the potential and challenges of hybrid models.

Hypotheses

Online businesses exhibit lower operational and startup costs compared to offline businesses. Offline businesses provide higher customer trust through direct interaction. Online businesses face considerable challenges in cybersecurity and digital logistics. Consumer preference skews towards offline businesses for tactile product categories. Hybrid business models will become dominant due to their versatility and consumer-centric approaches.

Methodology

This research employs a mixed-methods approach combining quantitative surveys and qualitative case studies. Data were collected from 500 consumers across demographics via structured questionnaires gauging shopping preferences and satisfaction levels for online versus offline purchases. Secondary data from industry reports and academic studies were analyzed to compare operational costs, scalability, and market trends. Statistical tools such as regression analysis and SWOT frameworks were applied to interpret findings.Operational Characteristics of Online BusinessOnline businesses operate through digital storefronts requiring robust IT infrastructure, secure payment gateways, and comprehensive logistics networks. Their low overhead costs, scalability, and ability to reach international markets epitomize efficiency. Marketing relies heavily on data analytics, digital advertising, and social media engagement, allowing personalized consumer targeting. Challenges include cybersecurity threats, payment fraud risks, logistical complexities in delivery, and difficulties in replicating in-person customer service. Online businesses also face fierce competition in crowded digital marketplaces, necessitating constant innovation and customer loyalty programs. Operational Characteristics of Offline BusinessOffline businesses demand physical locations, requiring substantial investment in real estate, staff, and inventory management. They benefit from direct customer contact, immediate sales, and face-to-face service, fostering loyalty and trust. Local marketing such as signage, walk-in traffic, and community engagement drives brand recognition. However, offline businesses suffer from high fixed costs, geographic limitations on reach, and slower adaptation to market shifts. Scaling requires significant capital expenditure and logistics coordination.Consumer Behavior and PreferencesSurvey results reveal a demographic split; younger consumers display a preference for online shopping driven by convenience, vast options, and often better pricing. Older demographics favor offline stores for products needing physical inspection, valuing personalized service and immediate possession of goods.Key factors influencing channel choice include price sensitivity, product type, trust in seller, and desired shopping experience. Hybrid consumers alternate between channels depending on need, highlighting omnichannel retailing's importance.

Advantages and Disadvantages

Online Business Advantages include cost efficiency, access to global markets, and 24/7 availability. Disadvantages entail cybersecurity risks, impersonal service, and delivery delays.

Offline Business Advantages are direct interaction, customer trust, and immediate product satisfaction. Disadvantages are high operating costs, limited reach, and inflexible hours. Challenges online businesses wrestle with digital fraud, platform dependence, and complex logistics, while offline businesses struggle with high upkeep costs and limited scalability. Both face evolving consumer expectations brought by technological innovation. Emerging Trends and hybrid models the retail landscape increasingly favors hybrid models combining the flexibility of online platforms with tangible offline experiences. Click-and-collect services, in-store digital kiosks, and integrated loyalty programs exemplify the omnichannel approach, enhancing customer engagement and operational resilience.

Discussion

The comparative analysis of online and offline business models reveals a nuanced and evolving retail landscape shaped heavily by technological advancements, changing consumer behaviors, and market dynamics. Online businesses have leveraged their inherent advantages of lower operational costs, extensive market reach, and convenience to rapidly grow and capture significant market share. The capability to operate 24/7 without geographical constraints offers sellers and consumers unparalleled flexibility. Moreover, online platforms use sophisticated data analytics and digital marketing tools to provide personalized shopping experiences, boosting customer engagement and retention. However, this research highlights that online businesses face considerable challenges, particularly with cybersecurity threats, concerns over data privacy, and difficulties in replicating the tactile and experiential components of shopping that many consumers value. Additionally, logistics and timely delivery remain critical constraints that affect customer satisfaction. High competition in the digital space also compels online businesses to continuously innovate, which can increase operational complexity and costs. Offline businesses, by contrast, retain distinctive strengths through direct customer interactions that build trust and foster brand loyalty. Physical stores provide immediate access to products and enable consumers to inspect, try, and experience goods first-hand, factors that strongly influence purchase decisions, especially for tactile or high-involvement products. Moreover, offline stores contribute to local economies by generating employment and supporting community networks. Yet, offline businesses are saddled with high fixed costs - such as rent, utilities, and staff salaries - and limited scalability due to physical space and geographic constraints. The recent global shift during events such as the COVID-19 pandemic has underscored offline retail's vulnerability to disruptions. Offline businesses must also continuously adapt traditional marketing and customer engagement strategies to remain competitive. A critical insight from this study is the rising adoption of hybrid, omnichannel business models that integrate the benefits of both online and offline realms. Examples include click-and-collect services, in-store digital interactions, and seamless customer loyalty programs that span channels. Such models are well-positioned to meet diverse consumer needs by balancing convenience and experiential shopping.Businesses that

strategically embrace digital transformation while maintaining strong offline presences are more agile and resilient amid market uncertainties. Policymakers and industry stakeholders should facilitate infrastructure development, encourage cybersecurity preparedness, and support innovations that enhance integration between online and offline commerce. The limitations of this research include reliance on secondary data in some parts and the ongoing evolution of e-commerce technology and consumer trends, which may influence future dynamics beyond current observations. Future research should focus on longitudinal studies to understand long-term impacts and explore sector-specific variations within the online-offline continuum.

Conclusion

This study conclusively demonstrates that both online and offline business models have unique advantages and constraints, shaped by operational realities and consumer expectations. Online businesses excel with their flexibility, lower upfront costs, and expansive reach, making them ideal for scale and convenience-driven markets. Offline businesses continue to provide the essential human touch, immediate access to products, and experiential value that digital formats have yet to fully replicate. The interplay between these two models is complex and dynamic rather than zero-sum. Rather than viewing online and offline businesses as competitors, a complementary perspective is gaining traction. Hybrid business models that combine the strengths of online reach with the authentic, tactile benefits of offline experiences are emerging as the future of retail.Entrepreneurs should evaluate product types, target demographics, and market environments carefully to select or blend business models that align with their goals. Investment in digital infrastructure, security, and integrated customer engagement platforms will be crucial. Simultaneously, offline businesses must innovate to offer value-added services and immersive experiences that strengthen local brand loyalty. Ultimately, the marketplace of the future will likely be omnichannel, where seamless integration allows consumers to move fluidly between digital and physical touchpoints. This blending enhances customer satisfaction, operational efficiency, and business sustainability.In summary, the path forward is one of adaptation and strategic synergy between online and offline commerce, leveraging each model's unique strengths to meet evolving consumer needs in a fast-changing global economy. These expanded sections provide a deeper synthesis of the research findings with actionable insights and a forward-looking perspective suitable for a detailed academic paper.

REVISITING INDIAN AESTHETICS THROUGH INDIAN LITERATURES IN ENGLISH

Kishan suthar
Assistant professor (English)
Government college bajju, bikaner
Mob. 94140 64644
Email :Princebik82@gmail.com

ABSTRACT:

Indian aesthetics, rooted in classical traditions such as Rasa, Dhvani, Aucitya, and *Nāmyaśāstra*, offers a profound framework for understanding literary and artistic expression. With the rise of Indian literatures in English, these indigenous aesthetic principles have been reimagined, negotiated, and reasserted in a global linguistic medium. This paper explores how Indian English writers engage with classical aesthetic theories, particularly in poetry, fiction, drama, and translation, to articulate a uniquely Indian literary sensibility. Through a multidisciplinary lens, the study examines how Indian philosophical thought, emotional landscapes, eco-aesthetics, and spiritual suggestion shape contemporary narratives, reclaiming aesthetic identity in the aftermath of colonial encounter

Introduction

Indian aesthetics is not merely a set of artistic principles but a philosophical worldview that integrates emotion, ethics, and metaphysics. Classical texts such as Bharata's *Nāmyaśāstra*, Abhinavagupta's commentaries on *Rasa*, and Anandavardhana's *Dhvani* theory have long informed Indian literary traditions. With the advent of Indian writing in English, especially post-independence, these aesthetic frameworks have found new expressions. This paper revisits Indian aesthetics through selected sub-themes, analyzing how Indian literatures in English serve as a site of cultural negotiation, spiritual depth, and aesthetic innovation.

Rasa and Dhvani in Indian English Poetry

Indian English poetry, from Toru Dutt to contemporary voices like Arundhathi Subramaniam, often embodies the *Rasa* theory—evoking emotional states that transcend linguistic boundaries. Subramaniam's spiritual poems, for instance, invoke *Śānta Rasa* (tranquility) through minimalist language and suggestive imagery, aligning with *Dhvani* (suggestion) as theorized by Anandavardhana. The subtle interplay between what is said and what is evoked allows Indian English poetry to retain its indigenous aesthetic core while engaging with modernist and postmodernist forms.

Adaptations

The *Nāmyaśāstra* offers a comprehensive theory of drama, integrating gesture, emotion, and moral instruction. Indian theatre in English—such as Girish Karnad's *Hayavadana* or Mahesh Dattani's *Final Solutions*—adapts these principles to contemporary contexts. Karnad's use of masks, myth, and transformation reflects *Nāmyaśāstra's* emphasis on symbolic representation and *Rasa* **Revisiting Nāmyaśāstra: Indian Dramatic Aesthetics**

and English Theatre. Dattani's plays, while modern in form, often evoke *Karuna* (compassion) and *Raudra* (anger), engaging audiences in ethical reflection through aesthetic experience.

Adaptations

The *Nāmyaśāstra* offers a comprehensive theory of drama, integrating gesture, emotion, and moral instruction. Indian theatre in English-such as Girish Karnad's Hayavadana or Mahesh Dattani's Final Solutions-adapts these principles to contemporary contexts. Karnad's use of masks, myth, and transformation reflects *Nāmyaśāstra* 's emphasis on symbolic representation and Rasa Revisiting *Nāmyaśāstra* : Indian Dramatic Aesthetics and English Theatre. Dattani's plays, while modern in form, often evoke Karuna (compassion) and Raudra (anger), engaging audiences in ethical reflection through aesthetic experience.Indian philosophical systems-Vedanta, Buddhism, and Bhakti-deeply inform Indian English literature. Raja Rao's The Serpent and the Rope is a metaphysical novel steeped in Advaita Vedanta, exploring the illusory nature of reality and the quest for self-realization. Similarly, Sri Aurobindo's writings blend poetic form with spiritual philosophy, making Indian English literature Indian Philosophical Thought and Its Literary Manifestations in English

a vehicle for philosophical inquiry. These texts do not merely narrate stories but enact philosophical journeys, aligning with the Indian aesthetic ideal of literature as a path to truth.

The Concept of Aucitya (Appropriateness) in Indian English Narratives

Aucitya, or appropriateness, governs the harmony between content and expression in classical aesthetics. In Indian English fiction, this principle manifests in narrative tone, character development, and thematic coherence. R.K. Narayan's novels, for example, maintain a balance between humor and pathos, aligning with the *Aucitya* of middle-class Indian life. Jhumpa Lahiri's restrained prose in *Interpreter of Maladies* reflects the emotional appropriateness of diasporic dislocation, where understatement becomes a powerful aesthetic tool.

Rasa Theory and Emotional Landscapes in Contemporary Indian Fiction

Contemporary Indian fiction in English often explores complex emotional terrains through the lens of *Rasa*. Manju Kapur's *Difficult Daughters* evokes *Vīra Rasa* (heroism) and *Karuna Rasa* (compassion) in its portrayal of women's resistance during Partition. Similarly, Anuradha Roy's *An Atlas of Impossible Longing* navigates longing and loss through lyrical prose, creating an emotional landscape that resonates with classical aesthetic categories. These narratives demonstrate how *Rasa* continues to shape reader response and narrative structure.

The Aesthetics of Silence, Suggestion, and Spirituality in Indian Women Writers in English

Indian women writers in English—such as Kamala Das, Anita Desai, and Kiran Desai—often employ silence and suggestion as aesthetic strategies. Kamala Das's confessional poetry uses pauses and ellipses to evoke unspoken trauma, aligning with *Dhvani*. Anita Desai's *Clear Light of Day* explores familial silence and spiritual yearning, invoking *Śānta Rasa*. These writers challenge patriarchal narratives by reclaiming spiritual and emotional depth through subtle aesthetic cues.

Translation, Transcreation, and the Aesthetic of Cultural Negotiation

Translation in Indian English literature is

not mere linguistic conversion but a form of *transcreation*—a concept championed by P. Lal and A.K. Ramanujan. Ramanujan's translations of classical Tamil and Kannada poetry retain the aesthetic essence of the original through rhythmic fidelity and cultural nuance. This process involves negotiating between source and target cultures, preserving *Rasa* and *Dhvani* while adapting to English idioms. Translation thus becomes an aesthetic act of cultural mediation.

Eco-Aesthetics and the Indian Sense of Nature in English Literature

Indian aesthetics views nature not as backdrop but as sacred presence. This eco-aesthetic sensibility is evident in Indian English literature, where nature is imbued with spiritual and emotional significance. Ruskin Bond's stories celebrate Himalayan landscapes with reverence, invoking *Śānta* and *Vātsalya Rasa*. Arundhati Roy's environmental activism and literary imagery in *The Ministry of Utmost Happiness* reflect an ecological consciousness rooted in Indian traditions of harmony with nature

Indian Aesthetics and Cinematic Representations in English and Bilingual Films

Indian aesthetics also permeates cinematic narratives, especially in English and bilingual films. Mira Nair's *Monsoon Wedding* and Deepa Mehta's *Water* evoke *Rasa* through visual storytelling, music, and emotional intensity. These films blend Indian aesthetic principles with global cinematic techniques, creating hybrid forms that resonate with both Indian and international audiences. The use of suggestion, emotional layering, and symbolic imagery reflects the enduring influence of classical aesthetics in contemporary visual media.

Conclusion

Indian literatures in English, far from being alienated from indigenous traditions, actively engage with and reinterpret classical aesthetic frameworks. Through poetry, fiction, drama, translation, and cinema, Indian writers in English articulate a literary sensibility that is both rooted and cosmopolitan. By revisiting concepts like *Rasa*, *Dhvani*, *Aucitya*, and *Nāmyaśāstra*, these texts reclaim aesthetic identity in a postcolonial world, offering readers a rich tapestry of emotional, philosophical, and cultural experience. Indian aesthetics, thus, continues to thrive—not in isolation, but through dynamic dialogue with global forms and languages

Sources:

- Reflection of Indian Aesthetics in English Literature
- Revisiting Masterpieces of Literature Through Indian Aesthetics

A Correlational study of Scientific Aptitude and Academic Achievement among senior secondary boys and girls after virtual Chemistry teaching

Dr. Reetu Gupta
Assistant Professor
S. S. Jain Subodh Mahila Shikshak Prashikshan Mahavidyalaya, Sanganer, Jaipur.
Email - vrpagupta@gmail.com
Mob- 9828247759

Abstract - The present study aims to examine the correlation between Scientific Aptitude and Academic Achievement among senior secondary boys and girls after virtual Chemistry teaching. The study aims to shed light on how virtual Chemistry teaching influences scientific aptitude of students which can increase their academic achievement. In this study, researcher used the virtual Chemistry teaching for 25 boys and 25 girls of class XI in rural government school of Jaipur district in Rajasthan. In this study, experimental method was used and standardized test on scientific aptitude and self made test on academic achievement were taken. For analysis and interpretation of data, Spearman rank correlation method was used. On the basis of results, researcher concluded that very high positive correlation was found between scientific aptitude and academic achievement in both boys and girls. This research is useful for teachers, students, parents and even for society because the results of this study clearly indicate that if the scientific aptitude of both boys and girls would increase then their academic achievement would also increase.

Key words - Scientific Aptitude, Academic Achievement, Virtual Chemistry teaching etc.

Introduction -

Science can be viewed as a continuing human effort to systematize knowledge for describing and understanding nature. The branch of science of that study the preparation, properties, structure and reaction of material substances is called Chemistry. Chemistry plays an important role in meeting human needs for food, healthcare products and other materials aimed at improving the quality of life. Chemistry provides methods for the isolation of life saving drugs from natural sources and makes possible synthesis of such drugs. In this way, Chemistry deals with the composition, structure, properties and interaction of matter and is of much use to human beings in daily life.

In recent times, virtual teaching has covered a lot of ground and the interface is more user-friendly. The most telling difference between learning in the traditional and virtual modes is the kind and extent of interaction. In the traditional classroom, the teachers employ the lecture mode as the predominant method of instruction. In the virtual classroom, technology supports collaborative learning, heterogeneous groupings, problem-solving and higher order thinking skills etc. educational processes that a lecture format cannot facilitate. Therefore, virtual teaching allows

teachers to reach learners virtually, enhances convenience and strengthens educational opportunities.

Objective -

To determine the relation between Scientific Aptitude and Academic Achievement among senior secondary boys and girls after virtual Chemistry teaching

Hypotheses -

1. There does not exist any relation between Scientific Aptitude and Academic Achievement of senior secondary boys of experimental group.
2. There does not exist any relation between Scientific Aptitude and Academic Achievement of senior secondary girls of experimental group.

Research Methodology - In this study experimental method was used.

Sample - Out of 100 students, 50 students comprising 25 boys and 25 girls of class XI have been selected as an experimental group from rural government school of Jaipur district in Rajasthan.

Tools - Standardized test on Scientific Aptitude and self made pre test and post test on each unit for Academic Achievement were used.

Statistical Technique - Spearman's Rank difference method of calculating coefficient of correlation was used.

Analysis of data -

Population	Variable	N	Correlation Coefficient	Extent of Correlation
Boys of Experimental group	Scientific Aptitude	25	0.95	Very high positive correlation
	Academic Achievement			
Girls of Experimental group	Scientific Aptitude	25	0.92	Very high positive correlation
	Academic Achievement			

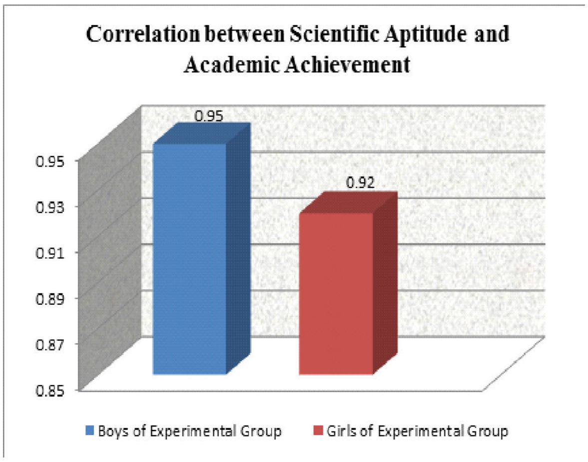

Very high positive correlation indicated that there exist positive correlation between Scientific Aptitude and Academic Achievement among senior secondary boys and girls after virtual Chemistry teaching.

Conclusion - When boys and girls of experimental group were taught Chemistry by effective and interactive virtual teaching then both of them develops capacity to acquire scientific skills by which their judgment, abstraction and generalization skills are developed and interest would be created to read the recent discoveries in scientific field. They can understand the language of science in terms of definitions of important terms, acquaintance with important theories and principles of science that can develop scientific aptitude among them by which their academic outcome has increased that indicate the extent to which they have achieved their learning goals. Both of them acquired knowledge and educational skills to understand the complex concepts of Chemistry by which their academic achievement would increase. In this way, Scientific Aptitude and Academic Achievement of senior secondary boys and girls are highly correlated.

Delimitations -

1. The problem was limited to the sample of 50

students.

2. The problem was limited to Chemistry subject only.

3. The problem was confined to virtual teaching only.

Suggestions -

1. Similar study can be conducted at other level of students like secondary level or college level.

2. Similar study can be conducted in urban government schools.

3. Similar study can be conducted in other districts or states as well.

References -

- Saxena Radharani, Innovative Teaching Strategies, Rajasthan Hindi Granth Academy, Jaipur.

- Pearson, Essentials of Educational Technology and Management, Dorling Kindersley PVT LTD, Delhi.

- Kulshreshtha S. P., Kulshreshtha A. K., Foundations of Educational Technolgy, R. Lall Book Depot, Meerut.

- Gupta Mukul, Gupta Deepa, Research Methodology, PHI Learning Private Limited, Delhi.

- Sharma R. A., Advanced Statistics in Education and Psychology, R. Lall Book Depot, Meerut.

- Dr. Packiam S. Statistics - Applied in Educational Research, Neelkamal Publications PVT. LTD. Hyderabad.

- Textbook Development Committee Chemistry Textbook Part I, National Council of Educational Research and Training.

- Indian Journal of Psychometry and Education, A biannual interdisciplinary peer reviewed refereed research journal.

- Indian Journal of Educational Technology, NCERT, New Delhi.

- Indian Journal of Open Learning, Indira Gandhi National Open University, Maidan Garhi, New Delhi.

- www.sciencedirect.com

- www.onlinelibrary.wiley.com

- www.learntechlib.org

- www.academia.edu

विभिन्न संकाय के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

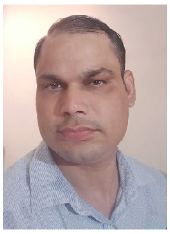

डॉ. पंकज शर्मा
शोध निर्देशक, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय,
चिकानी, अलवर (राजस्थान)

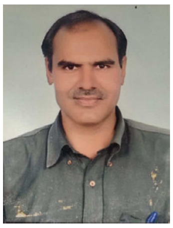

जल सिंह
शोधार्थी, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय,
चिकानी, अलवर (राजस्थान)

सारांश –

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न संकायों – कला, विज्ञान एवं वाणिज्य के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन करना है। शिक्षण प्रक्रिया में कुशलता एवं अभिप्रेरणा का विशेष महत्त्व है क्योंकि यह न केवल अध्यापक के व्यवहार को प्रभावित करती है, बल्कि शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर भी गहरा प्रभाव डालती है। इस शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति अपनाई गई है। अध्ययन हेतु राजस्थान के विभिन्न बी.एड. महाविद्यालयों से 150 शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों का चयन उद्देश्यपूर्ण नमूना विधि से किया गया, जिनमें 50–50 प्रशिक्षार्थी कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय से लिए गए।

शिक्षण कुशलता के मापन हेतु 'टीचिंग एफिशिएंसी स्केल' तथा अभिप्रेरणा के मापन हेतु 'टीचर मोटिवेशन इन्वेंटरी' का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं 't' परीक्षण के माध्यम से किया गया।

अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि विभिन्न संकायों के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण कुशलता में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अन्तर पाया गया, जबकि अभिप्रेरणा के स्तर में आंशिक अन्तर दृष्टिगत हुआ। विज्ञान संकाय के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण कुशलता का स्तर कला एवं वाणिज्य संकाय के प्रशिक्षार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया। अभिप्रेरणा के क्षेत्र में विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में आन्तरिक अभिप्रेरणा का स्तर उच्च था, जबकि कला संकाय के विद्यार्थियों में बाह्य अभिप्रेरणा अधिक पाई गई।

यह अध्ययन इस तथ्य की पुष्टि करता है कि शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण कुशलता का अभिप्रेरणा से घनिष्ठ संबंध होता है तथा दोनों कारक मिलकर शिक्षक की प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों की उपलब्धियों को प्रभावित करते हैं।

मुख्य शब्दः शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी, शिक्षण कुशलता, अभिप्रेरणा, संकाय, वर्तमान परिप्रेक्ष्य

प्रस्तावना –

शिक्षा मानव जीवन के विकास का मूल आधार है। यह व्यक्ति के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं नैतिक पक्षों को विकसित करती है। शिक्षक वह माध्यम है जिसके द्वारा समाज की भावी पीढ़ी को दिशा दी जाती है। अतः शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाएँ ऐसे शिक्षक तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं जो न केवल विषय–विशेषज्ञ हों, बल्कि शिक्षण–कुशल, प्रेरित एवं नवाचारी भी हों।

शिक्षण कुशलता का आशय शिक्षक की उन योग्यता, दक्षता एवं व्यवहारिक क्षमताओं से है, जो उसे शिक्षण कार्य में प्रभावी बनाती हैं। वहीं अभिप्रेरणा वह आन्तरिक अथवा बाह्य शक्ति है जो व्यक्ति को लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रेरित करती है। शिक्षक के लिए यह प्रेरणा केवल ज्ञान के प्रसार तक सीमित नहीं, बल्कि छात्रों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास से जुड़ी होती है।

वर्तमान युग में शिक्षण–प्रशिक्षण का स्वरूप अत्यंत गतिशील एवं तकनीकी बन गया है। ऐसे में यह जानना

आवश्यक हो जाता है कि विभिन्न संकायों (कला, विज्ञान, वाणिज्य) के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा का स्तर किस प्रकार का है, तथा इन दोनों में क्या परस्पर संबंध है। यही इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।

समस्या का परिचय –

वर्तमान समय में शिक्षण केवल पाठ्य विषयों के संप्रेषण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सृजनात्मक, प्रेरक एवं विश्लेषणात्मक प्रक्रिया बन चुका है। शिक्षण कुशलता इस प्रक्रिया का केन्द्रबिंदु है, जो शिक्षक की प्रभावशीलता को मापती है। दूसरी ओर अभिप्रेरणा वह मनोवैज्ञानिक घटक है जो व्यक्ति को कार्य के प्रति सक्रिय रखता है।

शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी, जो भविष्य के शिक्षक हैं, यदि शिक्षण में निपुण एवं अभिप्रेरित होंगे, तभी शिक्षा प्रणाली में गुणात्मक सुधार सम्भव होगा। इसलिए यह अध्ययन इस दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है कि इससे यह ज्ञात हो सके कि विभिन्न संकायों के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा का स्तर कैसा है तथा क्या इनमें कोई सार्थक अंतर विद्यमान है।

अध्ययन का महत्व, उद्देश्य, परिकल्पनाएँ एवं अनुसंधान पद्धति

1. अध्ययन का महत्व –

शिक्षा का सम्पूर्ण तंत्र शिक्षक की गुणवत्ता पर आधारित होता है। शिक्षक न केवल ज्ञान का संवाहक होता है, बल्कि समाज के भविष्य का निर्माता भी होता है। अतः शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों का प्रमुख उद्देश्य ऐसे शिक्षकों का निर्माण करना है जो शिक्षण में निपुण हों, सृजनशील हों तथा उच्च अभिप्रेरणा से युक्त हों।

वर्तमान समय में यह देखा गया है कि विभिन्न संकायों कृ कला, विज्ञान एवं वाणिज्य से आने वाले शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की सोच, दृष्टिकोण एवं व्यवहारिक दृष्टि में पर्याप्त अंतर पाया जाता है। विज्ञान संकाय के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी प्रायः विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, जबकि कला संकाय के विद्यार्थी भावनात्मक एवं सृजनात्मक प्रवृत्ति के होते हैं। वाणिज्य संकाय के विद्यार्थी व्यावहारिकता एवं परिणामोन्मुख दृष्टि के होते हैं।

इन्हीं भिन्नताओं के कारण उनकी शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा में भी विभिन्न स्तर देखे जा सकते हैं। यह अध्ययन निम्न कारणों से महत्वपूर्ण है –

1. यह यह स्पष्ट करेगा कि किस संकाय के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण कुशलता अधिक है।
2. यह बताएगा कि अभिप्रेरणा के कौन से आयाम (आन्तरिक / बाह्य) शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में अधिक प्रबल हैं।
3. यह शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों को प्रशिक्षण प्रक्रिया में सुधार हेतु दिशानिर्देश प्रदान करेगा।
4. यह शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा के आपसी संबंध पर उपयोगी साक्ष्य प्रस्तुत करेगा।
5. यह नीति–निर्माताओं एवं शिक्षण–प्रशिक्षकों को यह समझने में सहायता देगा कि विभिन्न संकायों के विद्यार्थी कैसे प्रेरित होकर अपनी शिक्षण क्षमता को बढ़ा सकते हैं।

2. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. विभिन्न संकायों के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण कुशलता का अध्ययन करना।
2. विभिन्न संकायों के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।
3. शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा के मध्य संबंध का परीक्षण करना।
4. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण कुशलता में अंतर ज्ञात करना।
5. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की अभिप्रेरणा में अंतर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा के प्रभाव का

शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के लिंग (पुरुष / महिला) के आधार पर विश्लेषण करना।

3. अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन निम्न परिकल्पनाओं पर आधारित है –

1. विभिन्न संकायों के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण कुशलता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. विभिन्न संकायों के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण कुशलता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
4. पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
5. शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा के मध्य एक धनात्मक सहसंबंध होगा।

4. अनुसंधान पद्धति

(क) अनुसंधान की प्रकृति :

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं सर्वेक्षण आधारित अनुसंधान है। इसमें विभिन्न संकायों के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

(ख) जनसंख्या

राजस्थान राज्य के विभिन्न बी.एड. महाविद्यालयों में अध्ययनरत सभी शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी इस अध्ययन की जनसंख्या रहे।

(ग) नमूना

अध्ययन हेतु 150 शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों का चयन उद्देश्यपूर्ण नमूना विधि से किया गया।

इनमें –

50 शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी कला संकाय से,

50 शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी विज्ञान संकाय से, एवं

50 शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी वाणिज्य संकाय से चयनित किए गए।

लिंग के आधार पर 75 पुरुष एवं 75 महिला प्रशिक्षार्थियों को सम्मिलित किया गया।

(घ) अनुसंधान उपकरण –

1. शिक्षण कुशलता मापन हेतु कृ डॉ. एस. एन. शर्मा द्वारा निर्मित "Teaching Efficiency Scale" का प्रयोग।
2. अभिप्रेरणा मापन हेतु कृ डॉ. के. सी. चौधरी द्वारा विकसित "Teacher Motivation Inventory" का उपयोग।

(ङ) आँकड़ों के संग्रह की विधि :

शोधकर्ता ने चयनित बी.एड. कॉलेजों का व्यक्तिगत रूप से भ्रमण किया। प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को उपकरणों के प्रश्नावली रूप में उत्तर देने हेतु स्पष्ट निर्देश दिए गए। उत्तर पत्रकों का संग्रह कर उनके अंकों की गणना निर्धारित मानकों के अनुसार की गई।

(च) सांख्यिकीय तकनीकें

संग्रहीत आँकड़ों का विश्लेषण निम्न सांख्यिकीय तकनीकों द्वारा किया गया–

माध्य (Mean)

मानक विचलन (Standard Deviation)

't' परीक्षण (t-test)

सहसंबंध (Correlation)

5. अध्ययन की सीमाएँ

1. यह अध्ययन केवल राजस्थान राज्य के कुछ चुनिंदा बी.एड. महाविद्यालयों तक सीमित रहा।
2. अध्ययन में केवल तीन संकायों (कला, विज्ञान एवं वाणिज्य) के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया गया।
3. शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा मापन हेतु केवल दो विशिष्ट मानक उपकरणों का प्रयोग किया गया।
4. अध्ययन का विश्लेषण केवल मात्रात्मक आँकड़ों पर आधारित रहा।
5. प्राप्त परिणामों को अन्य राज्यों या भिन्न शिक्षण संस्थानों पर सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता।

आंकड़ों का विश्लेषण, विवेचन, निष्कर्ष एवं सुझाव

1. आंकड़ों का विश्लेषण एवं विवेचन –

प्रस्तुत अध्ययन में संकलित आँकड़ों का विश्लेषण उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं के अनुरूप किया गया। प्रत्येक

उद्देश्य के अंतर्गत विभिन्न संकायों (कला, विज्ञान, वाणिज्य) के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा के माध्य, मानक विचलन तथा 't' परीक्षण के मानों की गणना कर तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया।

(क) शिक्षण कुशलता के संबंध में विश्लेषण

शिक्षण कुशलता का तात्पर्य शिक्षक के शिक्षण–संबंधी व्यवहार, विषय प्रस्तुति, संप्रेषण क्षमता, कक्षा–नियंत्रण, शिक्षण सामग्री के प्रयोग एवं विद्यार्थियों के साथ संवाद की दक्षता से है।

प्राप्त आँकड़ों से निम्न परिणाम पाए गए–

विज्ञान संकाय के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों का औसत शिक्षण कुशलता स्कोर सर्वाधिक था।

वाणिज्य संकाय के प्रशिक्षार्थियों का स्थान द्वितीय रहा, जबकि कला संकाय के विद्यार्थियों का शिक्षण कुशलता स्तर तुलनात्मक रूप से निम्न पाया गया।

't' परीक्षण से यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया।

व्याख्या :

विज्ञान संकाय के विद्यार्थी प्रायः प्रयोगात्मक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, जिससे उनकी शिक्षण शैली में तार्किकता, स्पष्टता एवं योजना–सिद्धता अधिक होती है। दूसरी ओर, कला संकाय के प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण शैली भावनात्मक एवं सृजनात्मक होती है, किंतु तकनीकी दक्षता अपेक्षाकृत कम रहती है।

(ख) अभिप्रेरणा के संबंध में विश्लेषण –

अभिप्रेरणा व्यक्ति के कार्य–निष्पादन का प्रमुख मनोवैज्ञानिक घटक है। इसमें दो प्रमुख प्रकार होते हैं–

1. आन्तरिक अभिप्रेरणा – जब व्यक्ति अपने कार्य से स्वयं संतुष्ट होता है।
2. बाह्य अभिप्रेरणा – जब व्यक्ति पुरस्कार, मान्यता, पद या उपलब्धि हेतु प्रेरित होता है।

इस अध्ययन में –

विज्ञान संकाय के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में आन्तरिक अभिप्रेरणा का स्तर उच्च पाया गया।

कला संकाय के प्रशिक्षार्थियों में बाह्य अभिप्रेरणा अपेक्षाकृत अधिक थी।

वाणिज्य संकाय के प्रशिक्षार्थियों में दोनों प्रकार की अभिप्रेरणा का संतुलित स्तर पाया गया।

't' परीक्षण से यह अंतर आंशिक रूप से सार्थक पाया गया, जिससे स्पष्ट होता है कि संकाय के प्रकार का प्रभाव अभिप्रेरणा पर सीमित परन्तु उल्लेखनीय है।

(ग) शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा के मध्य संबंध

सहसंबंध गुणांक की गणना से पाया गया कि शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा के मध्य धनात्मक सहसंबंध विद्यमान है।

इसका अर्थ है कि जिन शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में अभिप्रेरणा का स्तर अधिक था, उनकी शिक्षण कुशलता भी अधिक रही।

यह निष्कर्ष इस तथ्य की पुष्टि करता है कि प्रेरित शिक्षक न केवल अधिक प्रभावी ढंग से पढ़ाते हैं, बल्कि विद्यार्थियों को भी प्रेरित करते हैं।

(घ) लिंग के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

लिंग के आधार पर प्राप्त आँकड़ों से ज्ञात हुआ –

महिला शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण कुशलता का औसत पुरुषों से थोड़ा अधिक था।

अभिप्रेरणा के स्तर में भी महिलाओं में आन्तरिक प्रेरणा का स्तर अधिक पाया गया।

यह अंतर यद्यपि बहुत अधिक नहीं था, तथापि 'ज' परीक्षण से यह सार्थक अंतर सिद्ध हुआ।

व्याख्या :

महिला प्रशिक्षार्थियों में संवेदनशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं कार्य–निष्ठा के तत्व अधिक पाए गए, जो शिक्षण कार्य को प्रभावी बनाते हैं।

2. अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष

1. विभिन्न संकायों के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण कुशलता में सार्थक अंतर पाया गया।
2. विज्ञान संकाय के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण

कुशलता का स्तर सर्वाधिक पाया गया।

3. अभिप्रेरणा के स्तर में आंशिक अंतर पाया गया — विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में आन्तरिक अभिप्रेरणा अधिक थी।

4. शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

5. महिला शिक्षक—प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा दोनों का स्तर पुरुष प्रशिक्षार्थियों की अपेक्षा अधिक पाया गया।

6. कला संकाय के प्रशिक्षार्थियों में सृजनात्मकता तो अधिक रही, परन्तु शिक्षण—कुशलता का व्यावहारिक पक्ष अपेक्षाकृत कमजोर पाया गया।

7. अध्ययन यह इंगित करता है कि शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में संकाय आधारित अभिप्रेरणा—वृद्धि कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

3. निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा एक—दूसरे के पूरक हैं।

जहाँ अभिप्रेरित शिक्षक अपने शिक्षण में नवाचार, स्पष्टता एवं आत्मविश्वास प्रदर्शित करता है, वहीं कुशल शिक्षक अपने विद्यार्थियों में सकारात्मक अभिप्रेरणा उत्पन्न करता है।

विज्ञान संकाय के शिक्षक—प्रशिक्षणार्थियों का उच्च प्रदर्शन उनके विश्लेषणात्मक एवं प्रयोगात्मक दृष्टिकोण के कारण है। कला संकाय के विद्यार्थी भावनात्मक दृष्टि से सशक्त हैं, पर उन्हें व्यवहारिक दक्षता की दिशा में प्रशिक्षण की आवश्यकता है। वाणिज्य संकाय के प्रशिक्षार्थियों में व्यावहारिकता एवं योजना—प्रबंधन की प्रवृत्ति पाई गई, जो शिक्षण को परिणामोन्मुख बनाती है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षण कुशलता और अभिप्रेरणा का समन्वय ही प्रभावी शिक्षण का आधार है।

शिक्षक—प्रशिक्षण संस्थानों को प्रशिक्षण कार्यक्रमों में ऐसे घटक सम्मिलित करने चाहिए जो प्रशिक्षार्थियों की आन्तरिक प्रेरणा को बढ़ाएँ और व्यावहारिक शिक्षण कौशल को सुदृढ़ करें।

4. सुझाव

1. शिक्षक—प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अभिप्रेरणा आधारित गतिविधियाँ जैसे — गुरु—दर्शन, नवाचार प्रतियोगिता, उत्कृष्ट शिक्षण प्रस्तुति आदि सम्मिलित की जानी चाहिए।

2. प्रशिक्षण संस्थानों में व्यावहारिक शिक्षण कुशलता विकसित करने हेतु माइक्रो—टीचिंग, सिमुलेशन, फीडबैक प्रणाली को और सशक्त बनाया जाए।

3. कला संकाय के प्रशिक्षार्थियों को वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षण विधियों से परिचित कराया जाए।

4. विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता एवं मानवीय संवेदनाओं को विकसित करने हेतु विशेष कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ।

5. लिंग—संतुलन बनाए रखने हेतु पुरुष प्रशिक्षार्थियों में अभिप्रेरणा—वृद्धि हेतु परामर्श कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए।

6. शिक्षा नीति—निर्माताओं को शिक्षक—प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में "शिक्षण कुशलता एवं अभिप्रेरणा" को एक पृथक अनिवार्य मॉड्यूल के रूप में सम्मिलित करना चाहिए।

5. सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल, एस. पी. (2019). शिक्षा मनोविज्ञान. नई दिल्ली, शारदा प्रकाशन।

2. मिश्र, के. एस. (2018). अभिप्रेरणा और अधिगम मनोविज्ञान. आगरा— नटराज पब्लिशिंग हाउस।

3. शर्मा, एस. एन. (2017). Teaching Efficiency Scale Manual. लखनऊरू ए.पी. हाउस।

4. चौधरी, के. सी. (2016). Teacher Motivation Inventory Manual जयपुर आर.बी.डी. पब्लिशर्स।

5. हॉल, सी. एस. एवं लिंडसे, जी. (2014). Theories of Personality- न्यूयॉकरू वाइली एंड सन्स।

Analysis of Loopholes in Indian Labour Laws and Their Impact on Workers (2019-2024): A Comprehensive Study

Dr. Meenu Bhati
Guest Faculty
Kamla Nehru College, Jodhpur (Raj.)
M. 8000482964

Abstract

This comprehensive study examines the structural loopholes in India's four new Labour Codes (2019-2024) and their differential impact across various employment sectors. Employing a mixed-methods approach combining legal textual analysis and secondary data review, the research identifies significant regulatory gaps in contract labor systems, gig worker classification, collective bargaining rights, and enforcement mechanisms. The study reveals that approximately 85% of India's workforce in unorganized sectors remains excluded from legal protections despite legislative reforms. Findings indicate urgent need for sector-specific amendments and strengthened implementation frameworks to achieve inclusive labor protection.

Keywords: Labour Reforms, Informal Sector, Social Security, Gig Economy, Contract Labour, Enforcement Mechanisms

1. Introduction

The period 2019-2024 marked a transformative phase in Indian labor jurisprudence with the consolidation of 29 central labor laws into four comprehensive Labour Codes. This legislative overhaul aimed to simplify regulatory compliance, attract foreign investment, and extend social security coverage to all workers (Ministry of Labour and Employment, 2020). However, preliminary evidence suggests that the new framework contains critical structural deficiencies that perpetuate worker vulnerability, particularly in the unorganized sector comprising 90% of India's workforce.

This paper presents a systematic analysis of these regulatory gaps through sector-wise examination of workforce distribution and legal protections. The study contributes to existing literature by providing empirical evidence of implementation challenges and proposing concrete, sector-specific solutions.

2. Literature Review

2.1 Historical Context of Indian Labor Laws

Indian labor legislation has evolved from colonial-era regulatory frameworks focused primarily on organized industrial workers(Sharma, 2019). The post-independence period saw progressive labor protection measures, but implementation remained inconsistent across states and sectors.

2.2 Recent Labour Reforms

The 2019-2024 reforms represent the most significant restructuring of Indian labor law since independence. While government sources

highlight potential benefits of simplification and formalization (Economic Survey 2022-23), independent researchers have raised concerns about dilution of worker protections (Sundar, 2021).

2.3 Identified Research Gaps

Existing literature lacks comprehensive sectoral analysis of how new Codes affect different worker categories. This study addresses this gap through detailed examination of eight major employment sectors.

3. Research Methodology

3.1 Research Design

This study employs a mixed-methods approach combining:

- Doctrinal legal research analyzing statutory texts of four Labour Codes
- Secondary data analysis from NSSO, Economic Survey, and Ministry reports
- Comparative analysis of pre- and post-reform worker protection metrics

3.2 Data Sources

- Primary Sources: Labour Codes (2019-2020), Parliamentary Standing Committee Reports
- Secondary Sources: NSSO Reports (2019-2023), Economic Survey (2020-2024), ILO publications.

3.3 Analytical Framework

The study uses a sectoral vulnerability index based on:

1. Percentage of workforce in unorganized employment
2. Coverage under social security schemes
3. Implementation of minimum wage standards
4. Access to grievance redressal mechanisms

3.4 Limitations

1. Reliance on secondary data sources
2. Non-inclusion of primary field surveys
3. Ongoing implementation of Labour Codes in some states

Table 1: Sector-wise Distribution of Indian Workforce (2024)

Sector	Workforce %	Estimated Number (Millions)	Organization / Unorganised	Labour Code Coverage
Agriculture	45%	228.00	Unorganised	Limited 20%
Construction	12%	62.50	Unorganised	Partial 50%
Manufacturing	11.2%	56.00	Mixed 60%	Better 80%
Retail Trade	10.8%	54.00	Unorganised	Limited 30%
Transport	4.5%	22.50	Mixed 70%	Partial 60%
Hotel / Restaurant	3.8%	19.00	Unorganised 75%	Partial 55%
Gig Economy	1.5%	7.50	Unorganised 95%	Minimal 15%
Other Service	10.1%	50.50	Mixed 65%	Partial 45%

Source: NSSO 2023, Labour Ministry Annual Report 2024

4. Sectoral Analysis of Loopholes and Impacts

4.1 Agriculture Sector: The Largest but Most Neglected

Statistical Overview:

· Workforce: 228 million (45.6% of total)
· Women workers: 60% of sector workforce
· Average daily wage: ?250-350 (varies by state)
· Social security coverage: <15%

Identified Loopholes:

1. Exclusion from OSH Code: Agricultural establishments excluded regardless of workforce size
2. Wage Code Implementation: Lack of monitoring mechanism for minimum wage payment
3. Social Security Code: No mandatory coverage provisions

Impact Assessment:

· 85% agricultural workers lack written

employment contracts

· 70% receive wages below state-mandated minimum wages

· 90% have no access to social security benefits

· Women workers earn 30% less than male counterparts

4.2 Construction Sector: Perennial Informality

Statistical Overview:

· Workforce: 62.5 million (12.5%)

· Migrant workers: 40% of sector workforce

· Fatal accidents (2023): 1,247 reported cases

· Social security coverage: 35%

Identified Loopholes:

1. Contract Labor System: Multi-layered subcontracting avoids principal employer responsibility

2. Inter-State Migrant Workers: Registration requirements diluted in new Codes

3. Safety Regulations: Reduced inspection frequency in OSH Code

Impact Assessment:

· Only 25% workers receive provident fund benefits

· 60% experience wage payment delays (2-3 months average)

· 45% lack access to safe drinking water at worksites

· 80% migrant workers without proper accommodation

4.3 Manufacturing Sector: Organized but Vulnerable

Statistical Overview:

· Workforce: 56 million (11.2%)

· Women workforce: 25% (concentrated in low-skill jobs)

· Average monthly earnings: ?12,000-18,000

· Union membership: 15% of workforce

Identified Loopholes:

1. Threshold Manipulation: Factories maintaining workforce just below Code applicability limits

2. Fixed-term Employment: Unlimited contract renewals without permanent status benefits

3. Collective Bargaining: 51% membership requirement for negotiating union status

Impact Assessment:

· 40% factories operate with workforce below OSH Code thresholds

· 55% women workers experience workplace harassment

· 30% workers in fixed-term contracts for over 3 years

· 65% establishments without active works committees

4.4 Gig Economy: The New Frontier of Informality

Statistical Overview:

· Workforce: 7.5 million (1.5%)

· Growth rate (2020-2024): 25% annually

· Average working hours: 10-12 hours/day

· Social security coverage: <10%

Identified Loopholes:

1. Worker Classification: "Partners" instead of "employees" avoiding statutory benefits

2. Social Security Fund: No clear timeline or contribution mechanism established

3. Algorithmic Management: No regulation of automated decision-making systems

Impact Assessment:

· 85% gig workers without health insurance

· 70% earn below state minimum wage standards

· 60% work without weekly offs

· 90% lack access to grievance redressal mechanisms

Table 2: Labour Law Enforcement Statistics (2023)

S.No.	Parameter	Statistics	Gap Analysis
1.	Labour Inspector Positions	40% Vacant	Critical shortage affecting monitoring
2.	Establishment per Inspector	580 Average	Unmanageable workload
3.	Inspections Conducted	35% of Target	Inadequate Coverage
4.	Violations Detected	2,45,867 Case	Under-reporting evident
5.	Penalties Imposed	45% of detected cases	Weak deterrence value
6.	Case Resolution Time	3-5 Years	Juice Delivery delayed

Source: Labour Ministry Enforcement Data 2023

5. Cross-Cutting Issues

5.1 Enforcement Mechanisms

Labour departments face critical staff shortages with 40% vacant positions. A single labour inspector monitors an average of 580 establishments, representing an unmanageable workload.

5.2 Social Security Coverage

Table 3: Social Security Coverage Across Sectors (2024)

Sector	EPFO Coverage	ESIC Coverage	Pension Schemes	Maternity Benefits
Agriculture	2%	1%	5%	3%
Construction	25%	20%	15%	18%
Manufacturing	65%	60^	45%	55%
Retail Trade	8%	6%	4%	7%
Gig Economy	3%	2%	1%	4%
National Average	28%	24%	18%	22%

Source: Social Security Code Implementation Report 2024

6. Discussion

The findings reveal a paradoxical situation where comprehensive labour reforms have failed to address fundamental protection gaps for most workers. Several key patterns emerge:

6.1 Structural Exclusion

The high thresholds for Code applicability systematically exclude small establishments where most workers are employed. This design flaw affects approximately 70% of total workforce.

6.2 Implementation Deficit

Even where legal protections exist, enforcement mechanisms remain critically understaffed and under-resourced. The vacancy rate in labour departments exceeds 40% in most states.

6.3 Emerging Challenges

The gig economy represents a new frontier of informality where traditional employer-employee relationships are being redefined to avoid statutory obligations.

7. Recommendations

Based on the analysis, the study proposes the following evidence-based recommendations:

7.1 Legislative Reforms

1. Universal Coverage: Remove all thresholds for Labour Code applicability
2. Gig Worker Status: Legally classify platform workers as "employees"
3. Joint Liability: Strengthen principal employer responsibility in contract labor
4. Social Security: Mandatory universal registration and coverage

7.2 Administrative Reforms

1. Enforcement Capacity: Fill all vacant positions in labour departments by 2025
2. Technology Integration: Implement digital inspection and monitoring systems
3. Fast-Track Courts: Establish specialized labour courts for time-bound dispute resolution

7.3 Sector-Specific Interventions

1. Agriculture: Include under OSH Code with special provisions
2. Construction: Mandatory registration and welfare board membership
3. Gig Economy: Algorithm transparency and minimum earnings guarantee

8. Conclusion

The 2019-2024 labour reforms represent a significant step towards legal consolidation but fall short of providing comprehensive worker protection. The structural loopholes identified in this study perpetuate the exclusion of most workers from legal safeguards, particularly in the unorganized sector. The sectoral analysis reveals distinct challenges requiring tailored solutions rather than one-size-fits-all approaches.

Future reforms must prioritize universal coverage, strengthened enforcement, and adaptation to emerging employment relationships. Only through such comprehensive approach can India achieve the constitutional goal of decent work and social security for all workers.

9. References

1. Government of India (2020). The Code on Wages, 2019. New Delhi: Ministry of Law and Justice.
2. National Statistical Office (2023). Periodic Labour Force Survey 2022-23. New Delhi: Ministry of Statistics and Programme Implementation.
3. International Labour Organization (2022). World Employment and Social Outlook Trends 2022. Geneva: ILO.
4. Sundar, K. R. S. (2021). Labour Law Reforms in India: All in the Name of Jobs. New Delhi: Oxford University Press.
5. Ministry of Labour and Employment (2024). Annual Report 2023-24. New Delhi: Government of India.
6. World Bank (2023). India Development Update: Navigating the Storm. Washington DC: World Bank Group.
7. Sharma, A. (2019). Evolution of Labour Law in India: Historical and Contemporary Perspectives. Indian Journal of Industrial Relations, 55(2), 45-62.

हिन्दी साहित्य में नामवर सिंह की आलोचना दृष्टि

राजेश कुमार
शोधार्थी (हिंदी विभाग)
राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर (राज.)
मोबाइल नंबर –9828984049
ई मेल–rajeshyadav2234@gmail.com

शोध सारांश –

हिंदी आलोचना के इतिहास में नामवर सिंह एक ऐसे आलोचक के रूप में सामने आते हैं, जिन्होंने आलोचना की परंपरागत सीमाओं को तोड़ा और एक नए विमर्श के क्षेत्र में रूपांतरित किया हिंदी आलोचना आचार्य रामचंद्र शुक्ल और रामविलास शर्मा की आलोचना के बाद नामवर सिंह ने आलोचना को केवल साहित्यिक मूल्यों के विवेचन तक सीमित न रखकर उसे सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और वैचारिक संदर्भों से जोड़ा। उनकी आलोचना दृष्टि का मूल स्वर यह था कि साहित्य और समाज के बीच का संवाद निरंतर चलता रहे।

नामवर सिंह का आलोचना दर्शन बहुआयामी एक और मार्क्सवादी चेतना से प्रभावित होकर साहित्य को वर्गीय संरचनाओ, संघर्ष और ऐतिहासिक द्वन्द्व की कसौटी पर परखते हैं तो दूसरी और वे तुलनात्मक साहित्य भाषा–विज्ञान और सांस्कृतिक अध्ययन की पद्धतियों को भी आलोचना में स्थान देते हैं उनका मानना था कि किसी रचना को खंडित करने का उपकरण नहीं है। बल्कि उसके भीतर छिपे अर्थ–स्तरों को उद्घाटित करने और नए विमर्शों की संभावनाओं को सामने का माध्यम है । कविता के नए प्रतिमान में उन्होंने कविता की समीक्षा के लिए भावुकतावादी कसौटियों से हटकर नए सामाजिक–ऐतिहासिक प्रतिमान स्थापित किए छायावाद ग्रंथ में उन्होंने छायावाद को केवल "रहस्यवाद" यह "व्यक्तिवाद" मानने की रूढ धारणाओं को तोड़कर उसे हिंदी काव्य परंपरा का महत्वपूर्ण चरण सिद्ध किया दूसरी परंपरा की खोज छायावाद नामवर सिंह की आलोचना दृष्टि में संवाद और बहस को विशेष स्थान प्राप्त है। वे मानते थे कि आलोचना में असहमति भी सार्थक होती है, क्योंकि वही नए .ष्टिकोण को जन्म देती हैं यही कारण है, कि उनके आलोचना लेखन में गहन अध्ययन तार्किकता, भाषा कि सहजता और तर्क–संगता का अद्भुत सन्तुलन दिखाई देता है ,आज जब हिंदी आलोचना उत्तर आधुनिकता ,नारीवाद, दलित विमर्श, उपनिवेशोत्तर चिंतन और सांस्ःतिक अध्ययन की ओर बढ चुकी , तब भी नामवर सिंह की आलोचना .ष्टि में आलोचना का कार्य यह तय करना नहीं है, कि कोई रचना श्रेष्ठ है या नहीं,बल्कि यह है कि वह अपने समय और समाज से किस प्रकार जुड़ती है और किस प्रकार नए प्रश्न उठाती है।

इस शोध आलेख का उद्धेश्य नामवर सिंह की आलोचना दृष्टि का गहन विश्लेषण करता है। इसमें इनके प्रमुख आलोचनात्मक ग्रंथो का परीक्षण, उनकी विचार परंपरा के विकास, उनके आलोचना दर्शन के आयामों और हिन्दी आलोचना में उनके योगदान की विवेचना की गई साथ ही उनके पूर्ववर्ती आलोचकों तथा समकालीन आलोचना–विचारधाराओं से तुलनात्मक अध्ययन भी किया जाएगा।

नामवर सिंह हिंदी आलोचना को आधुनिक बौद्धिक विमर्श से जोड़ने वाले ऐसे आलोचनक थे जिन्होने साहित्य को समाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन का उपकरण मानते हुए आलोचना को उनकी नई भूमिका सौपी यह कारण है कि वे "हिंदी आलोचना के सम्राट" कहे जाते है और उनकी आलोचना दृष्टि आज भी शोधार्थियो और पाठकों को निरंतर प्रेरित करती है।

बीज शब्द – नामवर सिंह, हिन्दी आलोचना, आलोचना दृष्टि, मार्क्सवादी आलोचना, युगीन चेतना, तुलनात्मक

साहित्य, परंपरा और आधुनिकता, दूसरी परम्परा, छायावाद, कविता के नये प्रतिमान, इतिहास और आलोचना, सामजिक यथार्थ, सांस्कृतिक विमर्श आलोचना का अंतर, हिंदी साहित्य परंपरा, संवादात्मक आलोचना, साहित्य और समाज का संबंध।

परिचय – हिन्दी साहित्य के आलोचना विवेचन में नामवर सिंह का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रतिष्टित रूप से लिया जाता है वे केवल आलोचक ही नहीं, बल्कि एक विचारक दर्शनिक और साहित्य विमर्श की नई दिशा देने वाले व्यक्ति थे उन्होने हिंदी आलोचना को एक बौद्धिक अनुशासन का रूप प्रदान किया और आलोचना को सहज "साहित्य" की परंपरागत धारा से निकलकर उसे सामाजिक–सांस्कृतिक विर्मश को आधार बनाया आलोचना का इतिहास देखें तो आर्चाय रामचंद्र शुक्ल ने इसे सामाजिक यर्थाथ और इतिहास से जोडा, हजारी प्रसाद द्विवेदी ने परम्परा और आधुनिकता के बीच सेतु का कार्य किया रामविलास शर्मा ने मार्क्सवादी दृष्टि से आलोचना का रूपान्तराण किया लेकिन नामवर सिंह इन सबसे से अलग इस अर्थ में थे उन्होने आलोचना को एक संवाद परंपरा का रूप दिया उनके अनुसार आलोचना का कार्य किसी रचना को "स्वीकार या अस्वीकार" करना नहीं बल्कि उससे संवाद करना है, उसके भीतर किये नए अर्थ स्तरों को उद्धाटित करना और उसे समाज इतिहास के परिप्रेक्ष्य में समझना है।

नामवर सिंह का जन्म जुलाई 1926 को बनारस (वाराणसी) में हुआ शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हुई प्रारम्भिक जीवन से ही उनमें साहित्य और चिंतन के प्रति गहरी रूची दिखाई दी उन्होने अध्यापन, संपादन और लेखन के माध्यम से हिंदी साहित्य को नई उचाईयॉ दी वे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह भी कि वे आलोचन को केवल साहित्यक रसास्वादन का माध्यम न मानकर उसे वैचारिक मंथन और सामाजिक चेतना का उपरकण समझते थे उनके लिए आलोचना को अर्थ यह था सतत् संवाद बहस और विमर्श हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में नामवर सिंह का आगमन उस समय हुंआ जब हिन्दी साहित्य नई चुनौतियों का सामना कर रहा था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में राजनीति, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन तेजी से बदल रहा था। औपनिवेशिक चेतना से मुक्त होकर एक नई भारतीय पहचान गढ़ने की प्रक्रिया चल रही थी ऐसे समय में साहित्य और आलोचना दोनो की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई थी। नामवर सिंह ने इन चुनौतियों का पहचाना और आलोचना का सामाजिक ऐतिहासिक संदर्भो से जोड़ते हुए उनका पुननिर्माण किया।

उनका पहला चर्चित ग्रंथ "कविता के नई प्रतिमान" या इससे उन्होने कविता के मूल्यांकन के लिए नएं मानदंड प्रस्तुत किये ये हिन्दी आलोचना के लिए क्रांतिकारी क्षण था क्योंकि इससे पहले कविता के मुल्यांकन में प्रायः छंद, अलंकार और भावुकता पर बल दिया जाता था। नामवर सिंह ने यह स्थापित किया कि कविता को केवल उसकी काव्य–भाषा या सौन्दर्यशास्त्र के आधार पर नही, बल्कि उसके सामाजिक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भो में देखा जाना चाहिए। इसी प्रकार उनका ग्रंथ 'छायावाद' आलोचना के क्षेत्र में एक नई दृष्टि प्रस्तुत करता है। हिंदी आलोचना में लंम्बे समय तक छायावाद को केवल भावुकतावाद और रहस्वाद की संज्ञा दी जाती है। लेकिन नामवर सिंह ने यह सिद्ध किया कि छायावाद हिंदी साहित्य में एक संक्रमण कालीन धारा है। जिसने आधुनिक संवेदनाओं को जन्म दिया उन्होने छायावाद को केवल व्यक्तिवादी आंदोलन न मानकर उसे भारतीय काव्य, परम्परा के विकास का एक महत्वपूर्ण अध्याय बताया।

नामवर सिंह कि सबसे चर्चित कृति दुसरी परंपरा की खोज 1982 है इस कृति ने हिंदी आलोचना में परंपरा को लेकर चली आ रही धारणाओं की पूरी तरह बदल दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी साहित्य की मुख्यधारा केवल संस्कृतिकनिष्ठ शास्त्रीय परंपरा उन्होने कहा कि हिंदी साहित्य की मुख्यधारा केवल सांस्कृतिक शास्त्रीय परंपरा नही है। बल्कि उसकी एक दूसरी धारा भी है जो लोक और बल्कि भक्ति साहित्य से निकलती है। यह "उसकी परंपरा" ही हिंदी साहित्य का वास्तविक आधार है। जिसमें जन–चेतना सामजिक समानता और लोकतांत्रिक भावनाएँ समाहित है इस प्रकार उन्होने पंरपरा और आधुनिकता के द्वंद्ध की नए ढंग से प्रस्तुत किया।

इतिहास ओर आलोचना 1977 में नामवर सिंह ने आलोचना को ऐतिहासिक दृष्टिकोण से मोडते हुए। यह प्रतिपादित किया कि साहित्य का मूल्यांकन उसके युगीन संदर्भो से कहकर नही किया जा सकता। आलोचना को केवल साहित्य' रस की खोज तक सीमित रखना आलोचना का अपमान है। उनका यह दृष्टिकोण आलोचना को अधिक गंभीर और बौद्धिक बनाता है।

नामवर सिंह का आलोचना–दर्शन बहुआयामी था। वे आलोचना को "संवाद" मानते थे। उनके अनुसार आलोचना का उद्धेश्य किसी लेखक या कृति को अस्वीकार करना नही। बल्कि उसके साथ विचार विमर्श करना और नए अर्थ स्तरो की खोज करना है यही कारण है कि उनकी आलोचना शैली में तर्क और उदाहरणों के साथ साथ एक संवादात्मकता दिखाई देती है वे जटिल से जटिल मुद्दो को भी सरल भाषा में प्रस्तुत करने की क्षमता रखते थें आज जब हिंदी आलोचना उत्तर आधुनिकता, नारीवादी, दलित, पर्यावरण चिंतन और वैश्विक सांस्कृतिक विमर्श की ओर बढ़ रही है। तब भी नामवर सिंह की आलोचना दृष्टि प्रांसागिक है उनकी दृष्टि हमें यह सिखाती है कि आलोचना किसी विचारधारा की गुलाम नही होनी चाहिए, बल्कि उसे समाज और साहित्य के बीच सतत् संवाद के रूप में काम करना चाहिए। इस प्रकार नामवर सिंह हिंदी आलोचना के ऐसे सम्राट है जिन्होने आलोचना की परंपरा को समुह करते हुए दिशा दी उनमें आलोचना दर्शन ने हिंदी साहित्य को वैश्विक विमर्श से जोड़ा और आलोचना को केवल साहित्य विवेचन न बनाकर उस एक जींवत सांस्कृतिक और सामाजिक प्रक्रिया का रूप दिया।

मूल आलेख :–

नामवर सिंह और हिंदी आलोचना की भूमिका उन्होने आलोचना को "संवाद" के रूप में प्रस्तुत किया। उनके अनुसार आलोचना का उद्देश्य लेखन को नकारना नहीं, बल्कि नए विमर्श को जन्म देता है इसलिए उन्हें "हिंदी का आलोचना सम्राट" कहा जाता है।

प्रमुख कृतिया : कविता के नए प्रतिमान, छायावाद, दुसरी परंपरा की खोज, इतिहास और आलोचना, आलोचना का अंतर। योगदान : हिंदी आलोचना में नए विमार्शो को स्थापित करना, विशेषता मार्क्सवादी दृष्टि और परंपरा–आधुनिकता के द्वंद पर गहन चिंतन।

आलोचना दृष्टि के प्रमुख आयाम –

नामवर सिंह की आलोचना में मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव देखा जा सकता है। वे साहित्य को समाज की वास्तविक परिस्थितियों और वर्ग–चेतना से जोड़कर देखते थें। "साहित्य का मूल्याकन उसकी सामाजिक उपयोगिता और युगीन संघर्षो में उसके योगदान से किया जाना चाहिए।"1

युगीन चेतना और समकालीनता– उनका मानना था कि साहित्य अपने समय और समाज से कटकर नही रह सकता। आलोचना को युग की समस्याओं और प्रश्नो से संवाद करना चाहिए। भाषा शिल्प की दृष्टि उन्होने कविता और गद्य दोनो में भाषा और शिल्प की बारीकियों पर गंभीर विचार किया। कविता के नए प्रतिमान में उन्होने भाषा की राशि को नए दृष्टिकोण से समस्या प्रस्तुत की है। तुलनात्मक दृष्टि नामवर सिंह तुलनात्मक आलोचना के भी पक्षधर थे वे भारतीय और पाश्चात्य साहित्य–विचारो क बीच सेतु बनाते थे। परंपरा और आधुनिकता दूसरी परंपरा की खोज में उन्होंने भारतीय परंपरा को पुनः परिभाषित करते हुए यह दिखाया कि आधुनिकता केवल पश्चिम से आयातित अवधारणा नहीं है बल्कि भारतीय साहित्य परंपरा में भी इसके बीज हैं। प्रमुख ग्रन्थो पर विमर्श : कविता के नए प्रतिमान – इस ग्रंथ में उन्होंने कविता के मूल्यांकन के लिए नए मापदंड सुझाए। यहां वे कहते हैं "कविता के मूल्यांकन के लिए केवल छंद और भावुकता पर्याप्त नहीं है। बल्कि उसके सामाजिक ऐतिहासिक संदर्भ भी देखे जाने चाहिए।"2

"भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं है बल्कि सांस्तिक चेतना का वाहक है"3

छायावाद इस ग्रंथ में नामवर सिंह ने छायावाद को केवल व्यक्तिगत ना मानकर उसे भारतीय काव्य परंपरा में एक महत्वपूर्ण चरण बताया। दूसरी परंपरा की खोज – यह उनकी सबसे चर्चित कृति है इसमें उन्होंने भारतीय साहित्यीक परंपरा को "लोक और भक्ति साहित्य" की धारा से जोड़ते हुए इसे "दूसरी परंपरा" कहा "हिंदी साहित्य का वास्तविक आधार लोक और भक्ति की परंपरा है ना की संस्कृतनिष्ठ शास्त्रीयता" ।4 इतिहास और आलोचना –

यहां वे आलोचना को ऐतिहासिक पर्यवेक्षण से जोड़ते हैं और साहित्यिक .तियों का मूल्यांकन उनके सामाजिक ऐतिहासिक संदर्भ में करते हैं। आलोचना का अंतर – "आलोचना का कार्य न केवल यह बताता है कि क्या श्रेष्ठ है बल्कि यह भी बताता है कि क्यों श्रेष्ठ है" ।5 समकालीन आलोचना से तुलना–रामविलास शर्मा की आलोचना जहाँ ऐतिहासिक मौखिक दृष्टिकोण पर केंद्रित थी, वही नामवर सिंह ने उनमें सांस्.तिक विमर्श और तुलनात्मकता जो कि हजारी प्रसाद द्विवेदी परंपरा की सकारात्मक रूप में देखते थे वही नामवर सिंह ने परंपरा और आधुनिकता की द्वंद्व की आलोचना का आधार बताया। नामवर सिंह की आलोचना दृष्टि के आयाम आलोचना को संवाद के रूप में देखना नामवर सिंह का सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने आलोचना को केवल 'मूल्यांकन' की प्रक्रिया न मानकर उसे 'संवाद' की प्रक्रिया माना है वह कहते हैं। "आलोचना का कार्य किसी रचना की श्रेष्टता अथवा हीनता का निर्णय करना मात्र नहीं है, बल्कि यह समझना है की रचना अपने समय, समाज और संस्.ति से किस प्रकार 'संवाद' करती है।"6

इस दृष्टि से आलोचना अधिक लोकतांत्रिक और जीवंत बन जाती है। मार्क्सवादी दृष्टिकोण और सामाजिक और सामाजिक सरोंकार नामवर सिंह पर मार्क्सवाद का गहरा प्रभाव था। उनका मानना था कि साहित्य को समझने के लिए उसके सामाजिक और आर्थिक संदर्भों को समझना आवश्यक है। इतिहास और आलोचना में उन्होंने साफ कहा है कि किसी भी साहित्य कृति को उसके ऐतिहासिक संदर्भ और साहित्यिक संघर्षों से काटकर नहीं समझा जा सकता। उदाहरण स्वरूप उन्होंने प्रेमचंद की कहानियों का मूल्यांकन केवल कलात्मक कसौटियों पर नहीं, बल्कि उनके सामाजिक–आर्थिक यथार्थ के आधार पर किया। परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व नामवर सिंह ने परंपरा को नकारा नहीं, बल्कि उसमें आधुनिता की बीज खोजे। "दुसरी परम्परा की खोज में उन्होने यह प्रतिपादित किया कि लोक और भक्ति साहित्य को पराम्परा ही हिन्दी साहित्य की असली नींव है। वे लिखते है– "यदि हम केवल संस्कृत निष्ठ परंपरा को ही अपना मानेगे तो हमारी आलोचना अधूरी रह जायेगी, लोक और भक्ति की परंपरा की आधुनिकता की वास्तविक आपार भूमि है।"7 भाषा और शिल्प पर सजग दृष्टि नामवर सिंह का मानना था कि भाषा केवल संप्रेषण का साधन नही बल्कि और चेतना का वाहक है। कविता के लिए प्रतिमान में उन्होने कहा कि कविता की बात केवल उसकी भावुकता में नही बल्कि उसकी भाषा संरचना और सामाजिक संदर्भो में निहित है। उन्होने नागार्जुन, त्रिलोचन और मुक्तिबोध की कविताओं का विश्लेषण करते ही दिखाया कि भाषा कैसे सामाजिक चेतना की अभिव्यक्त करती है। तुलनात्मक साहित्य और अंतर्राष्ट्रिय दृष्टि नामवर सिंह तुलनात्मक दृष्टि को आलोचना का महत्वपूर्ण अवरण मानते थे वे भारतीय साहित्य की तुलना पाश्चात्य साहित्य से करते हुऐ लिखा "किसी भी साहित्य को केवल उसकी सीमाओं में बंद करके नहीं समझा जा सकता उसका वास्तविक मूल्य तभी सामने आता है जब उसे विश्व साहित्य से जाना जाए।"8 उनका कथन "विश्व साहित्य से संवाद किये बिना कोई राष्ट्रिय साहित्य पूर्ण नहीं हो सकता" छायावाद पर पुनर्विचार – छायावाद ग्रंथ में नामवर सिंह ने इस काव्य–आंदोलन की पुनः व्याख्या की उन्होने उसे केवल "आत्मकेन्द्रित" या "रहस्यवादी" आन्दोलन नहीं माना, बल्कि भारतीय आधुनिकता के एक महत्वपूर्ण चरण के रूप में देखा। उनका मत था कि छायावादी कवियों ने हिंदी कविता को आत्म अन्वेषण और आत्म स्वीकृत का नया आयाम दिया। प्रेमचंद और प्रगतिवाद पर दृष्टि नामवर सिंह ने प्रेमचन्द को केवल यथार्थवादी कथाकार न मानकर उन्हे समाजवादी यथार्थ का प्रणेता बताया। वे मानते थे कि प्रेमचंद ने साहित्य को "कला के लिए कला" की संकीर्णता से मुक्त कर "कला समाज के लिए" की परंपरा स्थापित की। प्रगतिवाद को वे आवश्यक मानते थे, किंतु उसकी सीमाओं को भी रेखांकित करते हैं। आलोचना और इतिहास का संबंध नामवर सिंह का मानना है की आलोचना को इतिहास से अलग नहीं किया जा सकता। इतिहास और आलोचना में उन्होंने प्रतिपादित किया की साहित्यिक .ति का मूल्यांकन उसके ऐतिहासिक संदर्भो में ही संभव है। वे लिखते हैंः– "इतिहास और आलोचना में थो है, परंतु दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे हैं" दूसरी परंपरा की खोज : लोक भक्ति का महत्व इस ग्रंथ में उन्होंने यह स्थापित किया कि हिंदी

साहित्य की असली परंपरा और लोक और भक्ति साहित्य की परंपरा है जिसे "दृष्टि परंपरा" के रूप में पुनः खोजा जाना चाहिए। तुलसीदास कबीर सूरदास और मीरा की रचनाओं को उन्होंने हिंदी साहित्य की जन आधारित परंपरा का मूल बताया। उन्होंने इस परंपरा की आधुनिक संवेदना और लोकतांत्रिक चेतना से जोड़कर प्रस्तुत किया। आलोचना में संवाद और असहमति का स्थान नामवर सिंह बहस और असहमति को आलोचना के लिए आवश्यक मानते थे उनका कहना था "यदि आलोचना में असहमति न हो तो वह नीरस और निष्प्राण हो जाती है। असहमति ही नए विचारों की जननी" ।10 समकालीन विमर्श और नामवर सिंह नामवर सिंह ने प्रत्यक्ष रूप से नारीवाद, दलित विमर्श या उत्तर आधुनिकता का विस्तार से नहीं लिखा, परंतु उनकी आलोचना यदि इन विमर्शों के लिए जमीन तैयार करती है उन्होंने साहित्य को वंचित वर्गों और लोक जीवन से जुड़ने की आवश्यकता पर बल दिया, जो आगे चलकर दलित और स्त्री बीच विमर्श के लिए आधार बना। आलोचना की भाषा शैली – नामवर सिंह की आलोचना रस शैली विद्वतापूर्ण होने के साथ–साथ रोचक भी है। वे जटिल ऐतिहासिक बातों को भी सहज और प्रभावशाली भाषा में प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण स्वरूप कविता के लिए प्रतिमान में उन्होंने आलोचना को केवल "सूक्ष्म विवेचन" न बताकर "विचारों का रोचक संवाद" बना दिया।

निष्कर्ष– नामवर सिंह की आलोचना दृष्टि ने हिंदी साहित्य को नया आयाम दिया। उन्होंने आलोचना को बौद्धिक विमर्श बनाया। परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित किया। आलोचना को समाज, इतिहास और संस्कृति से जोड़ा। तुलनात्मक साहित्य और भाषा विज्ञान के नए दृष्टिकोण को हिंदी आलोचना में शामिल किया। नामवर सिंह ने हिंदी आलोचना को एक ऐसे बौद्धिक मंच के रूप में विकसित किया जहाँ साहित्य केवल सौंदर्य बोध की वस्तु नहीं बल्कि सामाजिक ऐतिहासिक प्रक्रिया का का दर्पण बनकर सामने आता है। उन्होंने परंपरा और आधुनिकता, रचना और सामाज साहित्य और राजनीति, आलोचना और विमर्श, इन सबको एक सूत्र में जोड़ने का प्रयास किया। उनकी आलोचना दृष्टि का सार यह है कि साहित्य की सार्थकता उनके सामाजिक दायित्व और मानवीय संवेदना में निहित है। अतः यह कहा जा सकता है कि नामवर सिंह हिंदी आलोचना के इतिहास में केवल एक आलोचक नहीं बल्कि एक परंपरा–निर्माता और दिशा–निर्देशिक व्यक्तित्व थे उनकी आलोचना दृष्टि में न केवल हिंदी आलोचना को नए आयाम दिए बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी मार्ग प्रस्तुत किया यही कारण है कि उन्हें हिंदी "आलोचना का सम्राट" कहा जाता है और उनकी आलोचना दृष्टि आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उनके जीवनकल में थी।

संदर्भ :

1. नामवर सिंह : इतिहास और आलोचना, वाणी प्रकाशन, 1977 पृ.सं.–54

2. नामवर सिंह : कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1966 पृ.सं. – 112

3. नामवर सिंह : कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1966 पृ.सं. – 131

4. नामवर सिंह : दूसरी परत्परा कि खोज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1989 पृ.सं.– 89

5. नामवर सिंह : आलोचना का अंतर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995 पृ.सं.– 47

6. नामवर सिंह : आलोचना का अंतर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995 पृ.सं. – 43

7. नामवर सिंह : दूसरी परम्परा की खोज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1989 पृ.सं. – 112

8. नामवर सिंह : इतिहास और आलोचना, वाणी प्रकाशन, 1977 पृ.सं. – 167

9. नामवर सिंह : इतिहास और आलोचना, वाणी प्रकाशन, 1977 पृ.सं. – 23

10. नामवर सिंह : नामवर सिंह : इतिहास और आलोचना, वाणी प्रकाशन, 1995 पृ.सं. – 57

11. नामवर सिंह : इतिहास और आलोचना, वाणी प्रकाशन, 1977 पृ.सं. – 69

CHHAVI National Journal of Higher Education (ISSN : 2319-9679) PEER REVIEWED

OUR ADVISORY BOARD

DR. CHANCHAL B.
Texas U S A

PROF. SHAD AHMAD KHAN
Sultanate of Oman

DR. BIMLA RAI
Thimphu Bhutan

SANDEEP JOSHI
N.C.T.E.,New Delhi

PROF. (DR.) SAROJ GARG
Educationist, Udaipur

DR. SANTOSH SHARMA
Educationist, Jodhpur

DR. DINESH CHAND
U.G.C., New Delhi

DR. REKHA LALWANI
Educationist, Jhalawar

OUR EDITORIAL BOARD

DR. OM PRAKASH MEHRARA
Educationist, Hanumangarh

PROF (DR.) BABITA JAIN
Educationist, Bikaner

PROF. (DR.) BHAGIRATH BISHNOI
Educationist, Jalore

DR. NIRANJAN K. BOHRA
Educationist, Jodhpur

DR. PAWAN K. GUPTA
Director & Educationist, Jaipur

DR. MAHESH C. GURJAR
Educationist, Kotputli

DR. SAMINA
Educationist, Jodhpur

PROF. (DR.) SUNITA
Educationist, Jalore

DR. SUBHASH CHANDRA SAINI
Principal & Educationist, Dundlod, Jhunjhunu

DR. RITU BAIRAGI
Educationist, Udaipur

DR. DEEPIKA SHARMA
Educationist, Jaipur

DR. ASHA SHARMA
Educationist, Jodhpur

DR. GAYATRI BAIRWA
Educationist, Jaipur

Dr. Kashmir Singh Khunda
Educationist, Amritsar, Punjab

DR. JAKIR HUSAIN ANSARI
Educationist, Hindoli, Bundi

DR. PRATIMA GUPTA
Educationist, Jaipur

DR. BHARTI SANKHLA
Educationist, Bikaner

DR. ALPANA SHARMA
Educationist, Bikaner

DR. VIMLA KHATRI
Educationist, Bikaner

DR. SHWETA GUPTA
Educationist, Jaipur

ACADEMIC EDITOR

PROF. SHREESH PAL SINGH
Chief Academic Editor

PROF. (DR.) RAJENDRA K. SHRIMALI
Chief Editor

DR. PRIYANKA SHRIMALI
Associate Editor

ABOUT THE JOURNAL

CHHAVI National Journal of Higher Education is a reviewed periodical published in January, April, July and October in every year by the Shubham Education, Research & Information Centre, Bikaner, Raj.

Journal registered by National Institute of Science Communication and Information resources, New Delhi's Letter NSL/ISSN/INF/2012/2816 Dated December 04, 2012 and assigned ISSN (Print) 2319-9679. Bilingual journal's broad subject is Psychology, Philosophy and Sociology is the special reference of focus subject is Education.

Journal Title	:	CHHAVI : National Journal of Higher Education
Publication Language	:	Bilingual Hindi & English both.
Publication Frequency	:	Quarterly
Publication Nature	:	Print & Online
ISSN	:	2319-9679
Broad Subject	:	Psychology, Philosophy, Sociology
Focus Subject	:	Education
Published by	:	Shubham Educational, Research and Information Centre
E-mail	:	shrimalidrrajendra@gmail.com
website	:	www.chhavinjhe.in
Contact No.	:	9414742973, 9413471252, 8209618803

GUIDELINES FOR CONTRIBUTORS

Membership registration fees can be sent in the shape of at per cheque / cash or online transfer. Cheque shall be prepared in favour of Shubham Shrimali and Online Deposit Phone-Pay Number. - 9352628093.

Name of Bank	:	State Bank of India
Branch	:	Dauji Road, Bikaner
Account Name	:	Shubham Shrimali
Account No.	:	37051542804
IFSC Code	:	SBIN0031447
MICR Code	:	334002039

PIN : 31447

Youth Publisher

The subscription rates are as under :

Single Copy	₹ 350
Annual Subscription	₹ 1000

Youth Editor

Communication Address : PROF. (DR.) RAJENDRA KUMAR SHRIMALI
Behind Karni Mata Temple, Outside Jassusar Gate, Bikaner-334004 (Raj.)
Mobile: 9414742973, 9413471252, 8209618803
Google Scholar Profile : https://scholar.google.com/citations?user=kNxjU_8AAAAJ&hl=en
Social Science Research Network ID : 4556183

Print at : Rajasthan Computger & Printers, Bikaner M. : 9352999951